ज्ञानकृष्ण

मानव, नियति, अनंतता

अथवा

महान एकता का दर्शन

ज्ञानकृष्ण की पुस्तक महान एकता का दर्शन

‘‘मानव -- सर्वोच्च सत्य है

सब कुछ मानव में एकात्म है,

मानव एकात्म है सब कुछ से

मानव में ही ईश्वर को नमन करो

मानव में ही ईश्वर का गुणगान करो

मानव में ही ईश्वर से प्रेम करो’’

मानवजाति की सर्वश्रेष्ठ प्रज्ञा सदा-सर्वदा ही ऐसे शाश्वत प्रश्नों का उत्तर ढूँढती रही है कि जीवन का उद्देश्य क्या है और उसका तात्पर्य क्या है ? दुःख क्या है और उसका स्वरूप क्या है ? मृत्यु के भय को कैसे दूर किया जा सकता है?काल के सम्पर्क का आधार क्या है?क्या मानव की इच्छा शक्ति स्वतन्त्र है या वह भी प्रकृति और जीवन के निरन्तर जारी रचनाक्रम में निर्दयी भाग्य के हाथों शामिल कर ली गई सिर्फ एक तुच्छ तिनका भर है? ये सब प्रश्न समय समय पर मिथकों और दन्तकथाओं नीतिकथाओं, ऋषियों और मुनियों की देववाणियों, धार्मिक अवधारणाओं, दार्शनिक सिध्दान्तों और कलाओं में अभिव्यक्त किए जाते रहे। प्राचीन भारत, चीन, मिस्र और मैसोपोटामिया के ऋषियों व मुनियों, इजरायल के नबियों और पैगम्बरों, यूनान के दार्शनिकों, ईसाई धर्म के संत, प्रवर्तकों, अरब विव्दानों और धन्वंतरियों, पुनरूत्थानकाल के सर्वज्ञानियों, पश्चिमी दर्शनिकों और कवियों --इन सभी ने मानवजाति के आत्मिक- क्षितिज पर अपनी अविस्मरणीय छाप छोडी है।

आपके हाथ में इस समय जो पुस्तक है, वह एक अनूठी पुस्तक है। इस पुस्तक के लेखक ज्ञानकृष्ण(मिखाइल कॉफमन) हमारे समकालीन दार्शनिक, गुरू और योगी हैं और रूस के सरातोफ नगर के निवासी हैं। उनकी यह मानवतावादी पुस्तक ‘‘मानव, नियति, अनंतता अथवा महान एकता का

दर्शन'' जीवन के अर्थ और उसके उद्देश्य तथा हमारी इस दुनिया में मानव का स्थान और उसकी भूमिका जैसे आम मानवीय सवालों को उठाती है। ज्ञानकृष्ण की इस पुस्तक ''महान एकता का दर्शन'' के मुख्य विचार भारतीय पुरातन धार्मिक ग्रंथों और उपनिषदों में व्यक्त उस प्रमुख विचार पर आधारित हैं, जिसे हम महान एकात्म जीवन–अस्तित्व का विचार कह सकते हैं। यह विचार है -: ''वास्तव में यह वह है। जो यहाँ है, वही वहाँ है, जो वहाँ है, वही यहाँ है मृत्यु से मृत्यु की ओर वही बढ़ता है जो यहाँ (कुछ न कुछ) अन्तर के रूप में देखता है (कथा उपनिषद ,११,१,९–१०)।

अपने दार्शनिक विचार अभिव्यक्त करते हुए ज्ञानकृष्ण इस परिणामपर पहुँचते है कि ''- --पूर्वी और पश्चिमी दर्शन जैसा कुछ नहीं है, केवल एक सामान्य दर्शन है जो सत्य के बारे में विद्या,अनंतता के बारे में विद्या, जीवन–अस्तित्व के सर्वोच्च यथार्थ के रूप में मानव के बारे में ज्ञान, जीवन-अस्तित्व के सर्वोच्च निष्कर्ष के रूप में मानव के बारे में ज्ञान, जीवन-अस्तित्व की वास्तविक सच्चाई के रूप में मानव के बारे में ज्ञान, जीवन अस्तित्व के महान एकात्म केन्द्र के रूप में मानव के बारे में ज्ञान है ।'' सभी शाश्वत प्रश्नों को इस पुस्तक के लेखक ने एक ही प्रश्न में, एक प्रमुख दार्शनिक प्रश्न में,समहित कर दिया है : ''कैसे, क्यों और किसलिए सम्पूर्ण सापेक्षिक (मामूली) में बदल जाता है और नित्य,अनन्त और शाश्वत बदलकर अनित्य (क्षणिक) ,अंतिम और अस्थिर हो जाता है ?''

इस ''अन्तिम सामान्यीकरण'' को भारतीय और पाश्चात्य दार्शनिक विचारों से समन्वित करते हुए लेखक यह प्रश्न उठाता है कि जीवन का सर्वोच्च सत्य क्या है, जीवन का सर्वोच्च नियम क्या है, जीवन का सर्वोच्च उद्देश और सर्वोच्च अर्थ क्या है?

ज्ञानकृष्ण के दर्शन के मुख्य आधार की रचना इस प्रकार से हुई है:

--''जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च सत्य सभी वास्तविकताओं की एकता है और मानव इस जीवन- अस्तित्व की महान एकता, जीवन-अस्तित्व की सर्वोच्च वास्तविकता और जीवन-अस्तित्व के सर्वोच्च मूलतत्व का केन्द्र-बिन्दू है।

--जीवन -अस्तित्व का सर्वोच्च नियम --अनिवार्य रूप से न्यायपूर्ण कर्म का वह नियम है, जिसे महान परिवर्तन का नियम कहा जा सकता है, जिसका उपयोग जीवन -अस्तित्व की महान एकता के रूप में मानव की स्वार्थी कामना और सम्पूर्ण स्वतन्त्रता की इच्छा पर आधारित होता है, अर्थात मानव कामना करने के लिए स्वतन्त्र है,लेकिन उसे उसका फल भी भुगतना होगा --कर्म के नियम का यही सार है।

---जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च प्रयोजन--मानव व्दारा आत्मसंज्ञान और आत्मावलोकन करना तथा अपने सम्पूर्ण वास्तविक स्वरूप की अमरता और अपनी असीम गरिमा का बोध करना है।

जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य,जीवन का सर्वोच्च अर्थ--कष्टों और दु:खों से मुक्ति, कर्म के बंधनों से मुक्ति, अज्ञान के जाल से पूरी मुक्ति, मुक्ति के बडे.भ्रम से मुक्ति, व्दिविधा से मुक्ति तथा एक दूसरे में अवतरित होने वाले जन्म और मृत्यु के विद्यमान और अनुपस्थित लगातार घूम रहे चक्र से मुक्ति पाना है।

ज्ञानकृष्ण का ‘‘महान एकात्म का दर्शन’’ विभिन्न अंशों से मिलकर तैयार हुआ है। इसमें सूक्तियाँ (‘‘बिजली की चमक’’), काव्य- चिन्तन (‘‘उपनिषदों के गीत’’, ‘‘ध्यान गीत) और दार्शनिक सत्यान्वेषण अर्थात दार्शनिक - इलहाम (उपनिषदीय- कविता ‘‘ज्ञानगीता’’ और दार्शनिक - संकेन्द्रण ‘‘विज्ञानपद’’) समाहित हैं।

समाधि की अवस्था में एकाग्र ध्यान की गहराईयों के फलस्वरूप उत्पन (प्रजनित) संन्यासी के मठ जैसे एकान्त में तपस्वी ज्ञानकृष्ण व्दारा लिखी गई यह पुस्तक ‘‘महान एकता का दर्शन’’ पाठक को आध्यात्मिकता की ऊँचाइयों पर ले जाती है और महान एकता के सत्य के मार्ग पर चल रहे लोगों के भीतर प्रेरणा और उत्साह का संचार करती है।

उद्देश्य और गंतव्य

पुनि- पुनि अनंत राह पर-- पल पल बहती है सदियाँ

पुनि- पुनि लहराए मन में सकल वासना का सागर

पुनि-पुनि मंडल में कौंधे-- असंख्य सूर्यों की ज्योति

पुनि-पुनि मानव भरता है इस ज्योति से मन की गागर

<u>उद्देश्य और गंतव्य</u>

दार्शनिक निबन्ध

वाद- विवाद और बकझक कोरी सुन
अज्ञानी मन हो जात बहरा
सुन अन्वेषण, निस्वार्थ, प्रेम धुन
करता है सोच- विचार गहरा

फसल काटने के लिए यह आवश्यक है कि पहले खेत को जोता जाए,उसमें बीज डाला जाए लगातार कईकई दिन सूर्योदयों की प्रतिक्षा की जाए, फसल की देखभाल की जाए आदि -आदि । आपको भी अपने विवेक के खेत को अपनी अविचल इच्छा शक्ति के हल से जोतना होगा, फिर सचमुच में पूरी दृढता के साथ उसमें ज्ञान के बीज डालने होंगे फिर अहंकार, अभिमान, दम्भ, झूठ, पाखन्ड ,ढोंग, संयमहीनता और लालच का घास–पात साफ करना होगा, जागृत आत्मा के सूर्योदय की उष्मा से उसे गरमाना होगा,अपने मन के भीतर बढती हुई आस्था, अपनी अनन्त शक्ति, अपनी स्वार्थहीनता और व्यापक प्रेम की जीवनदायक उष्मा के सूर्योदयों की प्रतिक्षा करनी होगी और तभी आप अपनी प्रज्ञा,अपने सर्वोच्च ज्ञान,अपनी वेदनाओं से उत्तरोत्तर मुक्ति की,अपनी वास्तविक अनश्वर स्वरूप की अनभिज्ञता और अपने निष्ठूर कर्मो की बेडियों से मुक्ति की फ़सल काटना शुरू करेंगे।

किशोरावस्था में मैं गम्भीर रूप से बिमार हो गया था। मेरा खयाल है कि इसका कारण रही विश्व विद्यालय में दाखिला लेने के लिए दी जानेवाली प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी। इसके अलावा व्दितीय विश्वयुध्दों के वर्षो में गुजरा मेरा अभावग्रस्त बचपन भी एक सीमा तक इसका कारण रहा। युध्द के शुरू

में ही मेरे पिताजी मारे गए और हमारे परिवार को युध्द के वर्षों में और युध्द समाप्त हो जाने के बाद के वर्षों में भी भारी मुसीबतें झेलनी पडी !

संक्षेप में कहे तो विश्वविद्यालय में प्रवेश करने के बाद पहले ही साल में मुझे किसी गम्भीर बिमारी से ग्रस्त होकर अस्पताल की शरण लेनी पडी। करीब साल भर के लिए मेरी पढाई–लिखाई पुरी तरह से छूट गई और तभी शुरू हुआ दुखों से परिष्कार का मेरा वह पन्द्रह वर्षीय महाकार्यक्रम।

दुःखों का स्वरूप और उनके सार के बारे में हम आगे बात करेंगे, यहाँ तो मैं बस रूसी कवयित्री मरीना स्विताएवा की कविता यातना और आटा के कुछ शब्द प्रस्तुत करना चाहता हुँ :

लोगों, विश्वास करो, हम जिवित है विषाद सें
हम जीतते हैं ऊब को अवसाद सें
सब चकनाचूर हो जाएगा ?बन जाएगा आटा?
बेहतर हो वह बन जाए यातनाओं का ज्वार भाटा !

अपनी बिमारी से संघर्ष करते हुए गुजारे जीवन के इन वर्षों में मैंने उस असाध्य रोग से मुक्त होने के लिए क्या क्या प्रयत्न नहीं किए,लेकिन कडे परिश्रम के बाद जो भी लाभ दिखाई देता था, वह फिर से नष्ट हो जाता था और मुझे पूरी तरह से निराश होकर विवशतावश फिर से अस्पताल में दाखिल होना पडता था।

लेकिन अपनी जिजीविषा के कारण मुझे यह विश्वास हो गया था कि यदि पूरी तरह से आशाहीन और हतोहत्साहित न हुआ जाए और पूरी जिद्द के साथ लम्बे समय तक कोशिश जारी रखी जाए तो कहीं न कहीं से सहायता मिलती ही है जो पहली दृष्टि में आकस्मिक लग सकती है, मानो कोई ऐसी क्षुद्र वस्तु हो जिसके पास से आप यूँ ही गुजर जाते हैं, यदि आप इस आकस्मिकता के लिए मन ही मन पहले से ही तैयार नहीं हों।

अपनी पत्नी के साथ आपसी बातचीत में मज़ाक में इस आकस्मिकता को हम ‘‘अन्तरिक्षीय क्षुद्रता’’ कहकर पुकारते हैं । ‘‘अन्तरिक्षीय’’ इसलिए क्योंकि यह ‘‘क्षुद्रता’’ प्राय: जीवन को अचानक

इस तरह बदल देती है कि व्यक्ति आगे फिर सारा जीवन कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखता है ।

लेकिन फिर भी थोडा आगे भागते हुए मैं पूरी दृढ़ता के साथ यह कहना चाहता हूँ कि जीवन और दर्शन सम्बन्धी मेरी सभी खोजें इस बात की पुष्टि करती हैं कि इस दुनिया में आकस्मिक रूप से कुछ भी नहीं होता। सब कुछ पारस्परिक रूप से निर्भर और पारस्परिक रूप से सम्बन्धित है। बस,ऐसा होता है कि इन आकस्मिकताओं के बीच अदृश्य और बेहद बारीक सम्बन्धों का जो धागा है, हमारी बुध्दि उसे समझ पाने में असमर्थ रहती है ।

इस बारे में बातचीत हम आगे करेंगे। फिलहाल तो मैं यह बताना चाहता हूँ कि एक बार जब फिर से मैं बीमार होकर अस्पताल में भरती हुआ तो संयोगवश अन्य रोगियों व्दारा की जा रही बातचीत के कुछ अंश मेरे कान में पडे। बात शारीरिक योगासनों और श्वास सम्बन्धी उन योगासनों की हो रही थी जो कई तरह की बीमारियों का इलाज कर सकते हैं ।

योग के बारे में मैंने पहले भी कई बार सुना था, लेकिन तब यह बात हमेशा मेरे सिर के ऊपर से गुजर गई थी शायद इस वरदान से परिचित होने के लिए इतने भारी कष्ट उठाने जरूरी था। जब यह बातचीत मेरे कानों में पडी.तब तक मैं जीवन के तैंतीस वसन्त पार कर चुका था। शायद यह उम्र ही ऐसी होती है कि प्राय: व्यक्ति के जीवन में एक बड़ा बदलाव लेकर आती है संयोगवश अपने कान में पड़ गई इस बातचीत में मैं गहरी रूचि लेने लगा। मेरे अनुरोध पर १९६९ में प्रकाशित ‘‘सेलस्कया मलाद्योझ’’ (ग्रामीण युवा) नामक वह पत्रिका मुझे वहीं अस्पताल में लाकर दे दी गई। उस पत्रिका में अनातोली निकालायविच ज़ुब्कोफ़ का साक्षात्कार प्रकाशित हुआ था जो हाल ही में भारत की लम्बी यात्रा करके वापिस स्वदेश लौटे थे। उस साक्षात्कार में दी गई सभी सूचनाओं को मैंने पूरी तरह से आत्मसात कर लिया था। उसके बाद उस साक्षात्कार और उसके साथ ही प्रकाशित योगासनों के बारे में दी गई सारी जानकारी को भी मैंने नकल करके अपने पास रख लिया। फिर मैं उसी अस्पताल में उन योगासनों का अभ्यास करने लगा हालाँकि अस्पताल योगाभ्यास के लिए उचित जगह नहीं होती है, लेकिन जैसा कि कहावत है - -‘‘जहाँ देखी तवा परात, वहीं बिताई सारी रात’’, मुझे अस्पताल भी योगाभ्यास के लिए

ठीक ही लग रहा था।

उसके बाद जैसे मेरी दुनिया ही पूरी तरह से बदल गई। योग मेरे लिए न केवल शारीरिक और श्वास सम्बन्धी कसरतों की एक आवश्यक क्रिया हो गई, बल्कि वह मेरे लिए जीवन का मंत्र हो गया, वह मेरी जीवन पध्दति हो गया, कहना चाहिए कि वो पूरी तरह से मेरा जीवन ही हो गया।

भारत ! विचारकों और दार्शनिकों का एक अनुपम देश है। वह अनन्त अमर जनता की आश्चर्यजनक भूमि है, वह चेतस और निष्काम प्रेमी जनता का देश है। प्राचीन आर्यावर्त ! युगों युगों से चली आ रही प्रज्ञा की मातृभूमि, दुनिया को असंख्य प्रतिभाशाली चिन्तक और दार्शनिक उपलब्ध कराने वाली महान धरती, महान योगियों ,धुरन्धर विव्दानों, मन को काबू में करने वाले विवेकवान ऋषियों और मुनियों का देश, मानवजाति के सर्वोत्तम महात्माओं और सर्वश्रेष्ठ तपस्वियों की कर्मभूमि !

योगासनों का अभ्यास शुरू करते है मेरे भीतर शक्ती का संचार होने लगा। मैंने महसूस किया कि मेरे भीतर स्फुर्ति की अदम्य तरंगें फुटने लगी हैं। मेरे भीतर आत्मविश्वास बढ़ने लगा। मेरे मन में यह जीवन जीने और अपना वह काम करने की कामना पैदा हो गई जिसे पूरा करने के लिए ही मैंने इस धरती पर जन्म लिया था और जिसे अपनी पूरी क्षमता के साथ मुझे पूरा करना चाहिए।

पता नहीं क्यों कुछ लोग यह मानते हैं कि योग मनुष्य को जीवन की वास्तविकताओं से अलग करता है । वह मनुष्य को संभ्रमों और सपनों की किसी पारदर्शी और काल्पनिक दुनिया में ले जाता है लेकिन इस बात में जरा भी सच्चाई नहीं है । चिन्तनशील जीवन ही वास्तव में इस दुनिया में सर्वोत्तम जीवन है क्योंकि वह मनुष्य के सामने उन रहस्यों की पर्तें खोल देता है जो वस्तुओं और घटनाओं के प्रादुर्भाव से तथा उनके प्रयोजन से गहरे जुड़ी होती हैं । लेकिन इसका मतलब यह कभी नहीं होता है कि यह चिन्तन मनुष्य को जीवन की वास्तविकताओं से काटता है ।

जैसा कि चीनी दर्शन परम्परा में दक्षिणी चान पध्दति के प्रवर्तक पितामह, चीनी विचारक होय हेन (६३७-७१३ ई ०) ने उचित ही कहा है कि सत्य का मोती ढूँढ़ने के लिए किसी वन या रेगिस्तान में जाने की जरूरत नहीं है, बल्कि वहाँ चौराहे पर लगने वाले भीड़ भरे बाज़ार में दिखाई दे रहे जीवन की

तलछट में घुसने की आवश्यकता है।

हाँ यह बात भी मानी जानी चाहिए कि कुछ विशेष परिस्थितियों में एक निश्चित अवधि के लिए एकान्तवास मनुष्य के लिए लाभकारी हो सकता है। लेकिन किसी भी परिस्थिति में यह एकान्तवास ही मनुष्य का प्रमुख उद्देश्य नहीं बन जाना चाहिए। यदि ऐसा होता है तो एकान्तवास न केवल उसके लिए लाभकारी नहीं होगा, बल्कि वह मनुष्य के लिए एक अपूरणीय क्षति में बदल जाएगा।

मुझे रूसी कवयित्री मरीना स्विताएवा की एक अन्य कविता की पंक्तियाँ याद आ रही हैं : "...इसलिए कि, ज़मीन पर खड़ी हूँ मैं ...सिर्फ एक पैर पर..." । इस धरती पर रहते हुए हवा में उड़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, चाहे वह कोशिश आधी अधूरी ही क्यों न हो। धरती पर पैर जमा कर खड़ा होने की जरूरत है दोनों पैरों को ढंग से जमाकर। इसका मतलब है कि स्थिर सिध्दान्तों के आधार पर यह जीवन जीना चाहिए। कम से कम अच्छी तरह यह तो मालूम होना ही चाहिए कि हम इस जीवन से क्या चाहते हैं । जीवन में व्यक्ति को हमेशा अपने सिध्दान्त लागू करने चाहिएँ। और इसके लिए जरूरी यह है कि लगातार अपने ज्ञान का विकास किया जाए और अपनी नैतिक उन्नति की दिशा में लगातार अथक काम किया जाए । ऐसा बुध्दिमान और विवेकशील गुरू भी होना चाहिए जो ठीक समय पर इस राह में आने वाले काँटों और पत्थरों से बचने में हमारी सहायता करे

योगीयों का जीवन के प्रति आलोकन जितना संयमी होता है उतना और किसीका नहीं होता, उनके विचार सामान्य आदमी की तुलना में जादा गहरे होते है। यही कारण है योगी दूसरों की तुलना में इस लौकिक जीवनसे जादा निकट होता है। वस्तुत: जिस व्यक्ति को अन्य लोगों की अपेक्षा में वास्तविकता की गहरी समझ होती है वह इस वास्तविकता से दूर जाना बिल्कुल नामुमकीन है। यदि कोई व्यक्ति अमूर्त रूप में सोचता है तो वह इस वास्तविकता से दूर जाना बिलकुल नामुमकीन है । यदि कोई व्यक्ति अमूर्त रूप में सोचता ही या अमूर्तीकरण की अवस्था में प्रवेश करता है तो इसका मतलब यह नहीं कि वो कहीं बादलों में उड रहा है और इस धरती के वास्तविक जीवन से विमुख हो गया है। दरअसल विपरीत सत्य है । आपको ऐसी परिस्थितीयों में एक असली प्रकटीकरण प्राप्त हो सकता है,

एक अंतर्दृष्टी मिल सकती है जो आपकी जीवन में एक मार्गदर्शक धागा हो सकती है ।

बोडलेर अपनी कविता 'प्रकाश स्तंभ' में लिखते है :

ये महान आत्माए चिल्लाती है उनका दर्द, उनके प्रयास,
निन्दा, शाप, हर्ष और विनती,
चित्तवृत्ति का अद्‌भुत अफिम जो हमें पंख देता है,
और यह भाग्य के भुलभुलैय्या में दिलकी चेतावनी होती है ।

तुफान में फंसे लोगों के लिए प्रकाश स्तंभ यह बोडलेर का अपूर्व बुध्दि के मनुष्यों के बारें में विचार बिलकुल उचित है इन लोगों में गहरी एकाग्रता की बेहतर क्षमता होती है।

एकाग्रता योगीयों के जीवन का उद्देश्य और साथ में गतिक्रम भी है । गहरी एकाग्रता समाधी और सत्य का यथार्थ चिंतन ही योगी की सर्वोच्च आठवी अवस्था है ।

अगर मेरे बारे में बात जारी रखे तो मैं कह सकता हूँ कि केवल योग याने की जिवन के प्रति बहुत ही सकारात्मक दृष्टिकोण व्यक्त करनेवाले भारतीय दर्शनसे मिलाप के कारण ही मैं जीवन में अपना उचित स्थान प्राप्त कर सका हूँ और दृढता से अपने दो पैरों पर खडा रह सका हूँ ।

मैंने अर्थशास्त्र में रूचि खो दी (हालांकि मैंने अर्थशास्त्र के संस्थान से डिग्री प्राप्त की थी)। दर्शन और उसकी गहरी समस्याए यह मेरे चित्त का नया आवेग बन गया था। मैं जादा से जादा जानकारी के लिए व्याकुल हो गया था और दार्शनिक विवरण के बिना केवल योग मुझे संतुष्ट नहीं कर सका। इसलिए सफलता की जादा आशा मन में न रखके मैंने पुस्तकालय में जानेका फैसला किया, हालांकि अप्रत्याशित रूप में मैं जो साहित्य खोज रहा था वो मुझे बडि तादाद मे मिल गया। मेरी नयी दार्शनिक समस्याओं में रूचि बढने लगी और इसी कारण मेरी नये साहित्य की जरूरत भी बढने लगी।

सबसे पहले मैंने एस राधाकृष्णन के ''भारतीय दर्शन'' इस ग्रंथ के दो खंडों को पढने का फैसला किया। मुझे लगता है कि ये भारतीय दर्शन के आजतक रूसी भाषा में अनुवादीत की गयी सबसे अच्छी

किताब है। मैंने उसे छोटी सी अवधी में पढने का और समझने का निर्धार किया। यह एक दु:खदायी हार थी। मैं समझ गया कि यह किताब पढे बिना मैं आगे नहीं जा सकता, लेकिन उसके लिए मुझे बहुत सारी बाधाओंको दूर करना जरूरी था। इसी समय तक मुझे पुरा यकिन हो गया था कि दर्शन याने अनंतता, सत्य और मानव का शास्त्र यही मेरा असली व्यवसाय है ।

सत्य एकरूप है और सभी सजीव सृष्टी में व्याप्त है । इसलिए दर्शन को पूर्वी और पश्चिमी दर्शन में विभाजीत करना बहुत ही सापेक्ष है समस्याओंको कुछ अलग ढंगसे प्रस्तुत किया जा सकता है, लेकिन उनका अर्थ याने की मूल सार जीवन अस्तित्व के नियम, जिवन और मृत्यु, परिवेश और समय अंतत: सभी विचारको और लोगों की केवल एकही मूल प्रश्न की ओर ले जाता है और यह प्रश्न है : शाश्वत और क्षणिक के बिच में सहसंबंध, जीवन अस्तित्व की महान एकता।

भारतीय विचारक एकता के लिए उत्सुक थे, इसलिए उन्होंने विवरण के प्रति अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया, जबकि पश्चिमी दर्शन किसी भी विशिष्ट प्रश्न सूचित करने में जादा यथार्थ था, लेकिन अन्तिम सामान्यीकरण के समय वह कुछ हद तक सन्दिग्ध था ।

एस. राधाकृष्णन की पुस्तक के साथ मेरी असफलता का फिरसे जिक्र करते हुए मुझे कहना होगा कि कुछ काम को शुरू करने के बाद उसे अधूरा छोड देना मेरे लिए बहुत अप्रिय बात है। यह घटित हो गया क्योकि उस समय इस कार्य को पूरा करने के लिए मेरे पास पर्याप्त शक्ति नही थी। यहाँ मुझे एक पूर्वी मुहावरा याद आता है ''किसीका चेहरा खो देना''। मुझे लगता है की इसका मतलब आत्मसन्मान, आत्मविश्वास और अपने क्षमताओंमे विश्वास खो देना यही हो सकता है । भगवान की तरह मानव की क्षमताए भी अटूट और असिमीत है और अपनी क्षमताओं को कम समझना सत्य से भटक जाना है ।

इसलिए मैने अपने सूक्ति मे ''जिवन यात्री के लिए'', जिसमे योगीयोके लिए बारा आज्ञा समाविष्ट है, सबसे पहले लिखा है : आप सुनिश्चित नही है तो कोई काम शुरू नही करना, यदि आप कोई काम शुरू करेंगे तो उसे अधुरा नही छोडना।

हर किसी मनुष्य को कुछ असाधारण कार्ये के माध्यम से आत्म–अभिव्यक्ती की जरूरत महसुस

होती है, जैसे की बडे और छोटे हरक्यूलिस कारनामे। मुझे लगता है कि रोजमर्रा की जिंदगी की वीरता, अपने सिध्दांत कायम रखने की क्षमता, आत्म-सुधार और आत्म-नैतिक सुधार के लिए काम करना ही सबसे महत्त्वपूर्ण हरक्यूलिस करतब है। अगर आपको किसी काम मे दिलचस्पी नही है तो वह काम करना आसान नही है। लेकिन आत्म-पृष्टीकरण के स्वरूप मे यह दिलचस्प हो सकता है, इसे आप अपने भितर नि:स्वार्थता विकसीत होना भी समझ सकते है । यह दिलचस्प है क्योंकि आप परिणामो से जुडे हुए नही है ।

जब सही समय आया तो मैंने अपने आपको जांचने का फैसला किया। पश्चिमी दर्शन मे इम्मानुएल कांट के ग्रंथो को समझना सबसे कठिन है। मैंने आलोचत्माक साहित्य नही बल्की उनके मूलपाठ को पढने का फैसला किया। मैंने सोचा : ‘‘अगर मैं यह काम कर सकता हूँ तो मै बाकी सब समझनेके लिए तैयार हूँ ’’। मैंने कांट के सभी छह खंडो को पढने के लिए छह महिने बिताये, साथमे मैने अपने कापी में बहुत सारी टिप्पणी की और जब अंतमे मैने यह काम समाप्त कर दिया, मेरी भावनाए बिलकुल बदल गयी। मै एक साथ संतुष्ट भी था और निराश भी था।

कांट को अक्सर दो हजार साल बाद पैदा हुया बुध्द ऐसा कहा जाता है, जो बिलकुल सच है। मुझे लगता है कि बुध्द धर्म का दर्शन ऐसा मार्ग है जो हमे कही भी नही ले जाता, यह एक रेत की भव्य इमारत है। उसकी कोई नींव नही है, सिर्फ परिपूर्ण नीतिशास्त्र है। मैंने दुनिया के तिनो प्रमुख धर्मोंके मूल ग्रंथ पढे है। कुरान को समझना मेरे लिए सबसे मुश्किल हो गया था,जब कि ‘‘ धम्मापद’’ मेरी विचारधारा के सबसे निकट था। ‘‘ धम्मापद’’ मे बुध्द के उपदेश को उक्तियोंके स्वरूप में (विनोद पूर्ण उक्तियोंके स्वरूप में) लिखा गया है। इसे भक्ति के प्रकाश के बिना पढना असंभव है क्योंकि यह गहरा ज्ञान और मानवता के प्रति प्यार से परिपूर्ण है।

एस. राधाकृष्ण ने बुध्द का बहुत ही प्रतिभावान शब्दोमे वर्णन किया है : प्रत्येक कल्पनाशक्ती धारण करनेवाला व्यक्ती यह पता लगने से आश्चर्य चकित हो जाएगा कि ईसा मसीह के जनमसे छह सदियो पहले भारत मे एक राजा रहता था, वह आत्मिक निःस्वार्थता मे परिपूर्ण था, उनके उदात्त आदर्श

थे, उनके जिवन मे कुलीनता थी और लोगो के प्रति उनके दिलमे बेहद प्यार था। उसके पहले और बाद मे कोई भी राजा मे इतने सारे महान गुण नही थे। उन्होने आगे लिखा है : उनके चेहरे की स्पष्टता और कोमलता, उनके जिवनका सौंदर्य और प्रतिष्ठा उनके प्यार की गंभीरता और उमंग, उनके विवेक और सुवक्तता से परिपुर्ण उपदेश इन सारी बातो से लाखो पुरूषो और महिलाओं का दिल जीत लिया था। (एस. राधाकृष्णन, भारतीय दर्शन : मास्को : विदेशी साहित्य, १९५६, पन्ना : २९५, २९७ - २९८)

तथापि बौध्द धर्म के अध्ययन के बाद भी मैने बेचैनी और असंतोष महसुस किया। उनके सिध्दांतोमे निश्चित रूप में कुछ कमी थी। बाद मे, जब मैने भारतीय दर्शन का गहरा अध्ययन किया, मुझे एक बात स्पष्ट हो गई : केवल नीतिशास्त्र जीवन के पथ पर आगे जाने के लिए पर्याप्त नही है, अन्य बातो के साथ ज्ञान, महान एकता को समझना भी बहुत जरूरी है, बौध्द धर्म मे इन सारी बातो का उल्लेख नही है। मै यहाँ जोर देकर कहना चाहता हूँ कि महान एकता के सत्य को समझना यह एक अव्यक्त व बोधगम्य न होने वाली दुर्बोध बातो के बारे मे खाली आध्यात्मिक विवाद नही है। दरअसल इसका मतलब गहरे एकाग्रता की स्थिती को, योगी के अंतर्ज्ञान को, सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन की स्थिती और समाधी की अवस्था को प्राप्त करना है ।

हिंदु धर्म मानता है कि भगवान ने असुरो को, राक्षसोको नष्ट करने के लिए ही भगवान बुध्द और उनके गलत उपदेश को निर्माण किया था और यह विचार किसी प्रकार की आकस्मिकता नही थी। बुध्द के जन्म स्थान होने के बावजुद भी बौध्द धर्म भारत मे स्थायी रूपमे स्थापित नही हो पाया। कुछ लोग कहते है कि हिंदु धर्म ने अपने बंधुत्वपुर्ण प्रेमालिंगन से बौध्द धर्म को दबाया। जो कुछ भी हो, बौध्द धर्म समकालीन भारतीय जीवन का बहुत महत्त्वपूर्ण हिस्सा नही है ।

एक दिलचस्प बात की और ध्यान देना आवश्यक है। जब बुध्द को ऐसे सवाल पुछे जाते थे, जिनका अन्तिम और तर्कसंगत जवाब देना मानवी मन के लिए संभव नही है, तब वह मौन रखता था। इसके अलावा, इसी परंपरा को जारी रखते हुए इम्मानुएल कांट ने दृढता से साबित किया कि जब मनुष्य अपने मन के पहुँच से बाहर होनेवाले सवालों का जवाब देनेका प्रयास करता है तो वह अपने आपसे

कभी हल न होने वाले संघर्ष मे प्रवेश करता है । अपने चार प्रसिध्द ॲन्टीनोम्स मे कांट ने एक ही सवाल के बिल्कुल परस्पर विरोधी जवाब दिये है। उनके सिध्दांत के अनुसार अपने मनके बाहर होनेवाला सबकुछ अप्राप्य है । इसे कांट ने 'चिज का अपने आप मे' होना ऐसा कहा है। यह कांट के आलोचनात्मक दर्शन का मुख्य दोष है। वह केवल इंन्द्रियगम्य अनुभव और ज्ञान को ही मानता था। हालांकि, एक महत्वपूर्ण घटक अंतर्ज्ञान का कांट ने उल्लेख नही किया है। यह दार्शनिक के शक्तिशाली इच्छाशक्ती से नियंत्रीत होनेवाली प्रक्रिया है। यहाँ हम गहरी एकाग्रता मे समाधी की अवस्था मे सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन की बात कर रहे है।

एक बार एक बौध्द साधु राजा के पास आया, उसे राजा ने परमेश्वर क्या होता है यह समझाने के लिए कहा। वैसे भारत में साधु और संतो का परमेश्वर की तरह आदर किया जाता था, इसलिए वह राजा के पास आकर उसके साथ सत्य के बारे मे बात कर सकता था, और राजा ने भी उसे उपहार दिए और उसके प्रति कृतज्ञता प्रगट की। यह प्राचिन काल से भारतीय राष्ट्र की महानता प्रकट करनेवाले अनेक तथ्योमे से एक है, यह एक शाश्वत विवेक की बहुत अच्छी मिसाल है।

एक बार सेनापती तिमूर ने कहा था कि जब साधू और संत अपने लोगों को छोड के जाते है, फौजी नेता उनकी जगह लेते है। दूसरे शब्दोंमे, ऐसे लोग हमलावर के शिकार हो जाते है, या वे खुद आक्रमक हो जाते है। दोनो मार्ग घातक परिणामोकी ओर ले जाते है।

यदि किसी देश मे विवेक और साधु, संतो के उन्नती के लिए जगह नही होती, अगर आदरणीय व्यक्तीयों का सन्मान नही किया जाता और लोग सत्य के बारे में बिल्कुल नही सोचते तो ऐसे देश मे निश्चित रूप से गंभीर नैतिक संकट हावी हो सकता है। ऐसें आत्मिक संकट के बाद नैतिकता काफी हदतक घट जाती है और अपराध मे अचानक वृध्दि हो जाती है। संक्षेपमे कहा जाए तो चारो ओर अशांती और अव्यवस्था फैल जाती है। फिर भी कही भितर गहराई मे दया और आत्मिक पुर्नजन्म के बीज छिपे होते है और वह सबसे पहले लोगो के बुध्दि, दया और शाश्वत चिजों के प्रति बढते आकर्षण के रूपमें प्रगट होते है। मै लोगों के समझ से बाहर चिजो के प्रति बेहद आकर्षण को सत्य न समझने के

कारण पैदा हुई उदासीनताही कह सकता हूँ ।

ऐसे कई उदाहरण है। हम प्राचिन समय मे वापस जाकर मानवजाती के एक सबसे महान किताबो मे से एक बाइबल को याद करते है। अगर मैं गलत नही हूँ तो वेनीआमीन मे इजरायल की एक पिढी धर्मगुरू के उपदेश को भूल गई। मादकता और कामुकता बढ गई, समाज के नैतिक सिध्दांतोको क्षति पहुँचाई गयी। अंतमे आतिथ्य का पवित्र नियम टूट गया था। वेनीआमीन के पुत्रों ने अतिथीयोपर अत्याचार किये। धर्मगुरूके उपदेश उस समय बहुत महत्त्वपूर्ण थे प्राचिन यहूदियों ने पवित्र क्रोध मे वेनीआमीन परिवार को मार डाला, हालांकि बाद मे इसके बारे मे उन्होने दुःख महसुस किया।

महाभारत मे ऐसी ही स्थिती का वर्णन किया गया है (महाभारत एक भारतीय महाकाव्य है)। जब गांधारी का शाप कृष्ण के वंश के लिए सच साबित हुआ तो ऐसी ही परिस्थिती निर्माण हो गई थी। यादव कबीला नैतिकता भुल गया, पवित्र परम्पराए टुट गयी, विवेक और साधु - संतोंका सन्मान नही किया गया। इस के परिणाम के रूप मे यादवो ने उन्हे मिलने आये तिन पंडितो का मजाक उडाया, उनमे से एकने क्रोधमे यादवोंको शाप दिया और कुछ समय बाद इसी कबिलेके सभी व्यक्ती आपसी संघर्षमे मारे गये।

अब हम बौध्द साधु और राजा की ओर फिरसे लौट जाते है। राजा ने परमेश्वर के बारेमे पुछा था, लेकिन साधुने मौन रखा। राजा ने अपना सवाल एक बार फिर दोहराया, लेकिन फिरभी उसे जवाब नही मिला। अंतमे राजाने अपना संयम खो दिया और साधु को तिसरी बार परमेश्वर के बारे मे पूछा। साधु ने कहा ‘‘मैं तुम्हें जवाब दे रहा हूँ, लेकिन आपके समझमे नही आ रहा है ’’। यहाँ विचार स्पष्ट है। शब्दों का उपयोग करके समझ के बाहर होनेवाली चिजों का वर्णन करना, अकल्पनीय चिजों को समझना या अव्यक्त चिजों का स्पष्टीकरण देना असंभव है। हालांकि इसका यह मतलब नही है कि हम सत्य के बारे मे नही सोचे और उसे प्राप्त करने की कोशिश बंद कर दे। व्यक्ती का मन समझ के बाहर होनेवाली चिजों को समझ नही सकता, लेकिन फिर भी हमे अपने मनका उपयोग करके सत्यको खोजना चाहिए। यहाँ हमे दुनिया के सबसे बडे विरोधाभास के बारे में सोचना चाहिए। जब हमारा मन सोचने की

प्रक्रिया मे बिल्कुल निश्शक्त हो जाता है तभी हम सत्य को समझेंगे और उसके बारे मे चिंतन कर सकेंगे।

बादमे हम विस्तार मे इस समस्या पर चर्चा करेंगें। यहाँ मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूँ कि कांट के आलोचनात्मक दर्शन मे और बौध्द धर्म के विचारा मे सत्य के समस्या का विवेचन संतोषजनक नही है और सोचनेवाला कोई भी व्यक्ती उसके खिलाफ आक्षेप प्रकट कर सकता है।

हकीकत मे हम असंभव चिजोंको वास्तवमे नही ला सकते और अव्यक्त चिजोंका स्पष्टीकरण नही दे सकते, लेकिन हमने उनके हमारे दुनिया की उच्चतम अभिव्यक्तीकी बात करनी चाहिए और हो सकता है हम अप्राप्य चिजोंके करीब जा सकते है, हालांकि हम हर हालत मे उन्हे पुरी तरह हासिल नही कर सकते (कम से कम विचार की प्रक्रिया मे यह संभव नही है)। मानवता कई सदियोसे इस सवाल का हल करने की, अव्यक्त चिजोंको प्रकट करने का प्रयास कर रही है।

यहॅा मै ‘विचारक’ इस शब्द का उसके पुरे अर्थमे उपयोग कर रहा हूँ। विचारक यह केवल दर्शन के अध्ययन करनेवाला व्यक्ती नही है। यहाँ मैं अपूर्व बुध्दीका मनुष्य, अनंतता के गित गानेवाले प्रेरित गायक, कवि, कलाकार, संगीतकार, याने की वो सभी व्यक्ती जो अपने रचनात्मक खोजके माध्यम से ज्ञान और पाण्डित्य के शिखर तक पहुँच जाते है, उनको विचारक मानता हूँ। यह ‘‘भाग्य के भुलभुलैय्या मे दिलकी चेतावनी’’ सांस्कृतीक संपत्ती निर्माण करती है और वह लोगो की सबसे बडी संपत्ती होती है। शब्दोमे व्यक्त की गयी बातो का महत्त्व अव्यक्त बातोंमे प्रगट हो जाता है।

अगर ईश्वर क्या हैं यह सवाल मुझे पुछा गया तो मैं भारतीयोंकी तरह ही इसका जवाब दूँगाः ईश्वर सत-चित-आनंद, शाश्वत, विवेकी परम सुख, बल, मन, प्यार है।

और अगर ऐसा है और सबकुछ शाश्वत, विवेकी परम सुख, और बल - मन - प्रेमसे ही नियंत्रीत है, तो वास्तवमे बुराई का अस्तित्व नही होता ऐसी हमारी धारणा हो सकती है, पर यहाँ सिर्फ कम दयालुता या भलाई होती है।

कोई कमजोरी नही होती, बस एक कम हो रही शक्ति होती है, जो बाद मे फिरसे बढ जाती है और एक अपरिमित शक्ति, ईश्वरीय बल बन जाती है। कोई पूर्ण अज्ञानता और अंधेरा नही होता,

लेकिन कम ज्ञान और सत्य का कम हो रहा प्रकाश, मनकी कम हो रही शक्ती ऐसी बाते होती है, लेकिन जल्दी या बाद मे उनका विवेक, योगीका अंतर्ज्ञान, अनंत ज्ञान और प्रकटीकरण मे परिवर्तन हो जाता है।

पूर्ण बुराई नही होती। वो सिर्फ कम होनेवाला प्यार होता है, जो अंत मे फिरसे बढ जाता है और बादमे वो हमे ज्ञानके आधारपर स्थापित हो जानेवाले विश्वव्यापी प्रेमके महान एकता के सत्यकी ओर ले जाता है।

वैसे मै एक बात का जरूर निर्देश करना चाहूँगा : एक तरफ तो हम कहते हैं कि पूर्ण बुराई नही होती और दुसरी तरफ हम उसके बारे में बात भी करते है,लेकिन इसका मतलब यह नही हैं कि मै खुदके विचारोंका खंडन करता हूँ । दयालुता इस हद तक कम हो जाती है कि हम उसे बुराई कहना शुरू कर देते है। लेकिन इसके बारेमे हम और जादा बात नही करेंगे। बुराईका मतलब कम दयालुता, और जादा कुछ भी नही।

अब मुझे लगता है की आप को क्लेश के बारे मे, उसके गहरे मूलतत्त्व के बारे मे बताने का समय आया है। ज्ञान से बल प्राप्त होता है, लेकिन उसके बाद अनिवार्य रूप मे शुध्दता होना जरूरी है। इसके लिए उच्च स्तर की नैतिक परिपूर्णताकी आवश्यकता है। अन्यथा आत्मिक बल, सत्य के बल इन सब के बाद आपको भारी क्लेश का सामना करना पड सकता है। जब आत्मिक उन्नती का स्तर और नैतिक शुध्दता का स्तर अलग होते है तो इसी अवस्थाको मै शुध्दता की कमी कहता हूँ । उसे शुध्दताकी ओर ले जानेवाले क्लेश से दूर किया जा सकता है।

बुराई आत्म-विनाशकारी है। बुराई निर्दय कर्म से अपने आप में फिर वापस आ जाती है और क्लेश के शुध्द करने वाले ज्योती मे जल जाती है। यही वजह है कि हम क्लेश की परिभाषा इस प्रकार कर सकते है : क्लेश शुध्दता का महान साधन, शुध्द करनेवाली ज्योती और नैतिकता की संरक्षक है। यह अज्ञान से निर्माण होनेवाली बुराई की जलने की चिरस्थायी प्रक्रिया है, अधिक निश्चीत रूपमे हम कह सकते है : यह खुदके अंदरकी बुराई जलाने की प्रक्रिया है, जब बुराई हमारे अंदर वापस आ जाती है। सरल शब्दोमे हम कह सकते है कि क्लेश यह बुराई के जलने की प्रक्रिया है, क्लेश के माध्यम से हम

अपने पहले की बुराई को जला देते है। क्लेश से लोग निर्मल हो जाते है यह बात सच है । अगर हम परम सुख से जल्दी या बाद मे थक जाते है, तो क्लेश हमे साफ कर देता है।

इसके बारेमे सोचो, विचारशील, आत्माओ।

आपको परिपूर्णताकी ओर ले जाने वाला सबसे तेज घोडा पीडा महसुस कर रहा है।

क्लेश पित्त की तरह कड़वा होता है।

क्लेश से जादा कड़वा कुछ नही होता, जबकी क्लेश की अवस्था को पार करने से जादा मीठा कुछ नही होता।

यह शहद से जादा मीठा होता है।

(मेइस्टर एक्हार्ट : आध्यात्मिक उपदेश और चेतावनी)

इसलिए पतंजलीके राजयोग के आठ स्तरोमे से पहले दो स्तरो मे नीतीशास्त्र की तैयारी को शामिल किया गया है, यह कोई आकस्मिकता नही है। योग के प्रथम स्तर को ‘यम’ कहा जाता है, उसमे पांच महान नैतिक प्रतिज्ञा है जिनको सभी लोगोने व्यवहार मे अमल करना आवश्यक है, भलेही आप योगी हो या न हो। योग सुत्र मे कहा गया है :

किसी का नुकसान नही करना, सत्यवादी बनना, दूसरोकी चिजोंको हड़पना नही, उपहार नही लेना –ˉ इसको यम कहा जाता है।

इन विश्वव्यापी प्रतिज्ञाओं पर समय का, स्थान का, इरादो का और जात का कुछ भी असर नही पड़ता। (पतंजली योग सूत्र व्दितीय ३०, ३१)

ये है योग के दूसरे स्तर की ˉ नियम की पाच प्रतिज्ञाए : आंतरिक और बाहय शुध्दि, संतोष, संयम, ज्ञान प्राप्त करना और सत्य की पूजा।

हम आम तौर पर आत्माकी शक्ति, आध्यात्मिकता के बारे मे बात करते है। लेकिन आध्यात्मिकता क्या है ? पूर्वोक्तके अनुसार हम ऐसे तीन बातो के ऐक्यपूर्ण संयोग के रूपमे समझाने की कोशीश करते है: वो तीन बाते है शक्ति, बुध्दी और प्यार। निश्चित रूप से आध्यात्मिक व्यक्ति वो है

जो सूरज की तरह अन्य लोगो के दिल को आकर्षित कर सकती है इस दृष्टिकोनसे जो व्यक्ती अधिक शक्तीशाली होता है, वो जादा आध्यात्मिक होता है । लोग हमेशा शक्तिशाली व्यक्ति की ओर आकर्षित हो जाते है, हालांकि शक्ति हमेशा दयालुता की ओर नही ले जाती है। आप जितने जादा चतुर है, याने की स्पष्ट रूप से आप विवेकी है उतने की जादा आध्यात्मिक है। एक चतुर व्यक्ति अनिवार्य रूप से दूसरे लोगोंको आकर्षित करता है। और अंतमे, आप जितने जादा दयालु है, उतनेही जादा आध्यात्मिक है। यहाँ कोई जादा टिप्पणी की आवश्यकता नही है। दयालु व्यक्ती केवल दुसरोके दिलको आकर्षित नही करता, बल्की जैसा की योग सूत्र मे कहा गया है :

''जिनका अस्तित्व किसी नुकसानका कारण नही है और दुसरो के प्रति शत्रुता की भावना बस गायब हो जाती है ''। (पतंजली योग सूत्र व्दितीय, ३९)

इस प्रकार, हम जितने जादा मजबूत होते है, उतने ही जादा आध्यात्मिक होते है । हम जितने जादा चतुर होते है, उतने ही जादा आध्यात्मिक होते है। हम जितने जादा दयालु होते है, उतने ही जादा आध्यात्मिक होते है। यहाँ आपके सामने इन तिनो घटको का ऐक्यपूर्ण संयोग है : अध्यात्मिक शक्ती, महान शक्तीमे और बाद में महान इच्छा-शक्ति मे बदल जाती है। हम इस तरह ऐसे मनको प्राप्त करते है, जो बादमे सबसे उँचे स्तर के मनमे बदल जाता है और अंतमे दैवी प्रकटीकरण, विवेक, योगी के अंतर्ज्ञान, योगी के अंतर्ज्ञान तक उँचा उठ जाता है। आखिरकार हम चिरस्थायी प्यार को प्राप्त करते है। इन घटको के ऐक्यपूर्ण संयोग से एक पंडित, एक विचारक, एक योगी बनता है।

इन सब बातो के बारे मे बोलना और लिखना बहुत मुश्किल है। वास्तविकता के कगार पर मेरे कहने का मतलब है मन और अंतर्ज्ञान के मोड पर हमने संतुलन कायम रखना आवश्यक है। इस मोड से, किसी भी समय, आप ''रेझर ब्लेड'' की तरह फिसल सकते है - यह इन्हान एफ्रेमोका प्रसिध्द वचन है। यहाँ से आप दूध और पानी की तरफ फिसल सकते है या दूसरी चरम सीमा तक, याने घने अंधेरे की तरफ फिसल सकते है, जहाँ आप का साथ देनेवाला कोई भी नही होगा।

पहली सम्भावना मे सत्य अनंत अनुच्छेदो मे, परिभाषांओमे, खंडो मे और कठिन शब्दो मे डुब

जाता है। इस कहानी को थोडा छोटा करके बताए जाए तो यह मुर्खतापूर्ण पांडित्य, शब्दोंके बारेमे शब्द की बौछार बन जाता है। दुसरी सम्भावना मे सत्य धीरे-धीरे तत्व मीमांसा मे पिघल जाता है यह हमारे ध्यान से बाहर हो जाता है और उसे इस प्रकार व्यक्त करनेवालों के लिए और उनका पालन करनेवालो के लिए अप्राप्य बन जाता है।

सूक्ष्म सवालों को सूक्ष्म जवाबों की आवश्यकता है। यहा सूक्ष्मता के सरलता के परिमाणोंका पालन करने की आवश्यकता है। केवल एकाग्रता का प्रशिक्षणही इस 'रेझर ब्लेड' को आसानी से और सूक्ष्मता और सरलता के योग्य परीणामोंका पालन करके, कठिन चीजोको सरलता से स्पष्ट करके, पार करने की कठीन समस्या का हल करने मे मदद कर सकता है। इस तरह के प्रशिक्षण का योग मे समावेश किया गया है। विवेकानंदने कहा है कि योग यह वैज्ञानिक तरीके से बनाया गया गहरी एकाग्रता की तरफ ले जानेवाला आठ स्तरीय पथ है। इस तरह के प्रशिक्षण का योग मे समावेश किया गया है। विवेकानंद ने कहा है कि योग यह वैज्ञानिक तरिके से बनाया गया गहरी एकाग्रता की तरफ ले जानेवाला आठ स्तरीय पथ है।

जब आप मोटे तौरपर सूक्ष्मता को समझाते है, वह 'अपवित्रता' बन जाती है। यह आपको सही लगता है, लेकिन वास्तवमे यह इतना गंवार होता है की वो निश्चिंत रुप से विरोध प्रदर्शन और संताप का कारण होगा।

यदि आप सूक्ष्मता की हद पार करते है और जब आवश्यकता नही हो तब सूक्ष्मता का उपयोग करने की कोशीश करते है तो यह कपटी और प्रभावित हो जाएगा। ऐसी चीजे हमेशा सूदूर पूर्व की संस्कृती मे मिलती है। यह पहली संभावना की तरह इतना विनाशकारी नही है, बल्की यह विचारो के बोध को रोकता है।

जब कोई व्यक्ती बोलने के बजाय सिर्फ शब्दोंका 'उच्चारण' करती है तो मै सचेत हो जाता हूँ। ऐसे लोग कुछ रहस्यमय, काल्पनिक और जटील बातोंका उच्चारण करते है, इसलिए उनको समझना बिल्कुल असंभव हो जाता है। अगर कोई बुध्दिमानी से बात नही करता तो उसके मन मे तरकीब और

सामान्य धारणा नही होती। सरलता पाण्डित्य की छाया है। सत्यका प्रकाश पाते ही परमानंद मे, सुखमे मग्न होना, हर जगह, हर किसी को उपदेश करना विचारशून्यता है। निश्चित रुपसे हर कोई ऐसी चरम बातोंके जालमे फँस जाता है और इसे सही समये रोकना आवश्यक है।

भारत मे लोग कहते है‘जब शिष्य तैयार होता है, गुरु उसके पास आता है। मुझे लगता है कि यह गुरु के बारेमे भी सच है। जब गुरु तैयार है,अच्छे शिष्य उसके पास आ जाते है। आप इस दुनिया को तुरंत बेहतर बनाने का और अपने विचारोको एक साथ, सभी लोगोपर थोपने की कोशीश न करे तो बेहतर होगा। जब कोई निद्रित अवस्था मे होता है तो उसे अपने चेहरेपर सूरज की रोशनीका प्रहार बिल्कुल अच्छा नही लगेगा। इसी तरह जब कोई व्यक्ती तैयार नही है, और हम उसको कुछ सिखानेकी कोशीश करेंगे और बलपूर्वक सत्य से परिचय करवा देंगे,तो उसका परिणाम भी विपरीत होगा। बेशक, इसके खिलाफ जोरदार निषेध अभियान चलाया जाएगा।

हमे आत्मसंज्ञान और आत्मपरिपूर्णता के रास्तेपर आगे जाना चाहिए। उसके बाद आप सूरज से जादा चमकोगे। आपको अपने भितर चमकने के लिए रोशनी की आवश्यकता है।

एक नये योगी की तुलना छोटे झरनेसे की जा सकती है, ऐसा झरना लोगोको पीनेका पानी प्रदान कर सकता है, लेकिन वह लोगोके पानी पीनेकी एक सार्वजनिक जगह नही होनी चाहिए, क्योंकि वह फिर झरना नही रह जाएगा। उदाहरणार्थ, हम लेव टॉलस्टॉय की ‘फादर सेर्गेई’ इस कथा की और ध्यान दे सकते है। वास्तविक जीवन मे बहुत सारे ऐसे उदाहरण है, जब लोग खुदको और अपनी क्षमता को नष्ट कर देते है, अपने शक्ती का विवेकरहित तरीके से उपयोग करते है, और अंतमे वो अपने मुख्य लक्ष्यों को प्राप्त करने से नाकामयाब हो जाते है।

सत्य को समझना बहुत मुश्किल है। लोगोको अपना ज्ञान देना इस से भी अधिक कठिन है और उनको ज्ञान नही देना बिल्कुल असंभव है। अपनी प्रतिकात्मक कविता“इस प्रकार जरतुस्त्र बोले” मे फ्रेडरिक नीत्शे लिखता है “ मैं अपने ज्ञान से तंग आ गया हूँ ।, मेरी अवस्था बहुत शुध्द मध एकत्र करनेवाली मधुमक्खी की तरह हो गई है, मै मुझे मदद करनेवाले हाथो को पहुँचनेकी प्रतिक्षा कर रहा

हूँ''। उनके इस अवस्था के बारेमे आगे लिखा गया है : अकेलेपन मे महिने और साल बीत गये, लेकिन उसका ज्ञान बढ गया और उसकी परिपूर्णता से उसे दर्द होने लगा।

जीवन-अस्तित्व की महान एकता को ध्यान मे रखते हुए स्वामी विवेकानंद ने कहा कि अगर आदमी अपने आपको किसी गहरे तहखाने मे ताला लगा के बन्द कर देता है और कुछ फुर्तिले विचारोंका निर्माण करता है, वे तत्काल लोगोकी आम संपत्ती बन जाते है। छोटे प्रवाह का बर्फ पतले छिलको के बीच निर्माण हो जाता है और बादमे वो उसे पार करके बाहर आ जाता है, उसी तरह ऐसे विचारोंका अस्तित्व हमेशा होता है और वो हमारे आस-पास कही भ्रमण करते है और अंतमे लोग उन्हे ढूँढ लेते है। जब ये विचार लोगोके मन के भितर तक पहूँच जाते है, तो लोग राहत की सांस लेते है। ऐसे विचार, भावना या कविता, या संगीत रचना और दार्शनिक किताब ऐसे किसी भी माध्यम से व्यक्त हो जाते है। हम सभी माध्यमों का एक साथ भी उपयोग कर सकते है, लेकिन यहॉ सब से महत्वपूर्ण सार या मूलतत्व है।

हेगेल ने इस विचारको बेहतर तरीके से कुछ इस तरह व्यक्त किया है : हमने हमेशा ध्यान मे रखना चाहिए कि ठीक समय आनेपर सत्य हमेशा अपने लिए रास्ता खोलता है और प्रकट हो जाता है। इसलिए सत्य कभी भी समय से पहले किसी को नही प्राप्त होता और इसी तरह अपरिपक्क लोग भी सत्य को कभी नही प्राप्त कर सकते।(हेगेल, खंड : एम,सोव्हिएत संघ की अकादमी, दर्शन संस्थान १९५९, खंड-चार, एस. ३९), इसी विचार का इससे जादा बेहतर तरिके से वर्णन असंभव है। अगर मन और सत्य को समझने मे उसको मुख्य भूमिका के बारेमे बात चल रही है, तो मै घोडे से पहले गाडी रखने की कोशिश करते हुए आपको मेरे जीवनके सत्रह साल के दार्शनिक शोध और मेरे जीवन अनुभव के बारेमे बताता हूँ। मेरे सब निष्कर्ष से मैने चार दार्शनिक नियम और जीवन-अस्तित्व के तिन महान रहस्य लिखे है। मै इन नियमों को दार्शनिक विचारो मे जादा कठिन नही बनाना चाहता, लेकिन फिर भी ये नियम इस प्रकार है :

१. जीवन-अस्तित्व के स्वरुप का सूत्र-कारणोंके पदानुक्रम का नियम

२. जीवन–अस्तित्व के ज्ञान का सूत्र – मन के आंतरिक विरोध का नियम

३. जीवन–अस्तित्व के महान एकता का सूत्र – शाश्वत प्रतिबिम्ब का नियम

४. जीवन–अस्तित्व का एक ही दार्शनिक सूत्र – महान आत्म–अवशोषण का नियम

मै आपको मन के आंतरिक विरोध के बारेमे बताना चाहता हूँ। मै इसे 'जीवन–अस्तित्व के ज्ञान का सूत्र' क्यो कहता हूँ? जैसा कि आप जानते है यहा हम दर्शन के ज्ञान शाखा के बारेमे बात कर रहे है। यह नियम अनुभूति के प्रक्रिया का तार्किक अंत है। यह दर्शन का अंतीम शब्द या कम से कम ज्ञान के सिध्दांत का अंतीम शब्द जैसा लगता है। यह सही नही है। दर्शन मे अंतीम शब्द कहा गया है यह हम कभी नही कह सकते। यह कभी नही हो सकता क्योंकि यह असंभव है।दर्शन यह सोचनेकी शाश्वत प्रक्रिया है, यह एक अव्यक्त चीजों को व्यक्त करनेवाली अंतहिन प्रक्रिया है, यह एक पूर्ण को सापेक्ष के रुपमे व्यक्त करने का विफल प्रयास है। इसलिए हर परिपूर्ण दार्शनिक प्रणाली की जगह अधिक परिपूर्ण दार्शनिक प्रणाली लेती है।

मेरी रायमे महान और पवित्र ध्वनी 'ओम' मे सबसे परिपूर्ण दार्शनिक प्रणाली है। (इसका उच्चारण ओ ऊ म ऐसा होता है), जो भारत मे भगवान के नाम के रुप मे, पूजा जाता है। यह तार्किक दृष्टी से सही है। यह महान ध्वनी हम उच्चारण कर सकनेवाले सभी संभाव्य ध्वनी से बना है। यह सभी ध्वनीयोंको, शब्दो को सभी धारणाओंका वास्तव मे ला सकनेवाली संभावना है। दूसरे शव्दोमे, इसमे सभी वाणीयोंका, धारणाओं का और पूरे जीवन–अस्तित्व का समावेश है। अगर कल्पना विचारोंकी गठरी है (उसका वजन गहरे एकाग्रता के साथ बढ जाता है) तो यह पवित्र ध्वनी सभी संभाव्य विचारों की, जीवन–अस्तित्व के निव तक के विचारों की एकता है। इसमे अलगाव और आत्म–जागरुकता जैसे धारणाओंका ही समावेश है। सीमित को अनंत से जोडना यह इस पवित्र ध्वनी के उच्चारण का परिणाम है।

यह कहा जाता है कि इस ध्वनी का उच्चारण हमारे शरीर मे कुछ सूक्ष्म कंपन का निर्माण करता है और उसका लाभदायक प्रभाव होता है। मैं अपने अनुभव से यह साबित कर सकता हूँ। जब मुझे शांत

होने की आवश्यकता महसूस होती है, कुछ व्याकुलता या अचानक पैदा होनेवाली भावना का सामना करना पडता है, तो मै सांस लेते समय 'ओम' का उच्चारण एक लय मे करता हूँ। आपने 'ओम' ध्वनी का उच्चारण अपने सांस मे कृत्रिम रुप से फिट नही करना चाहिए। बस,आप हमेशा की तरह सांस लिजिए,और हर सांस लेते समय और छोडते समय मन मे 'ओम' का उच्चारण किजिए। आपकी सांस अधिक समान गती से, अधिक लयबध्द, और अधिक धीमी हो जाएगी। लेकीन मै दृढतासे कहता हूँ कि यह प्रक्रिया स्वाभाविक होनी चाहिए। जब आप एक लय मे सांस लेते है, तो आपके विचार भी स्थिर हो जाते है। इस ध्वनी का जोर से उच्चारण करने का एक व्यायाम है, लेकिन मै योग के तकनिकी पक्ष के बारेमे बात नही करना चाहता, इसलिए हम कुछ समय के लिए इस बातकी और ध्यान नही देंगे। योग व्यायाम बहुत है और आप उनके बारेमे जानकारी प्राप्त कर सकते है, लेकिन मैं आपको चेतावनी देना चाहता हूँ कि योग सिखने की शुरुआत करते ही आप इन सभी व्यायामा को न करे। आपको इन व्यायामों का चुनाव, विशेषत: सांस के व्यायामों का चुनाव करते समय बहुत सावधान रहना होगा, कोई दवा देते समय जैसे आप सावधानी बरतते है,उसी तरह आपको योग के व्यायाम करते समय सावधानी बरतनी चाहिए।

अब हम दर्शन की और वापस आते है।

सीमित और अनंत का संपूर्ण संगम, जब अनंत सीमित को निगलता है, शाश्वत क्षणिक को निगलता है,जब प्रकृती अपने मूल की तरफ लौट जाती है, तो यह सब हमारे मन की सीमा से बाहर घटित होता है, इसका मतलब यह सब योग अंतर्ज्ञान मे, समाधी मे योग के सर्वोच्च आठवे स्तर मे घटित होता है।

मन की मदद से मन के उपर उठने से, उसकी गतिविधियॉ रोकने से हम क्लेश के माध्यम से क्लेश से मुक्ती प्राप्त करते है। हम अहंकारी इच्छाओं से मुक्ती प्राप्त करते है। हम अपने शाश्वत स्वरुप के अज्ञान के जाल से अपने पूर्ण सार से पूर्ण मुक्ती प्राप्त करते है। हमे मुक्ती और कर्म इन धारणाओंपर विशेष रुपसे ध्यान केंद्रित करना है, इसका मतलब है हमे हमारे साथ वर्तमान और अतीत मे घटीत होनेवाले सभी घटनाओं के बीचमे अटूट बंधन के बारेमे बात करना है (मै यहॉ अतीत शब्द का उसके पूर्ण अर्थ मे

इस्तेमाल करता हूँ।) यह संपूर्ण भारतीय दर्शन का, भारतीय विचार–धारा का आधार है। हमारे पश्चिमी मन के लिए यह विचार अजीब और असामान्य लगते है और हम बडी मुश्किल से उन्हे समझते है। उन्नीसवी–बीसवी सदी के एक सिध्द भारतीय विचारक, सामाजिक कार्यकता समाज को प्रबुध्द करनेवाले महान इन्सान, जिनके विचारोंका हम आगे आनेवाले कुछ पन्नो मे याद करेंगे, स्वामी विवेकानंद अपने मनके बारेमे एक भाषन मे बताते है कि मन कम प्रतीरोध के मार्ग से बहनेवाले विद्युत प्रवाह जैसे होता है, हमारा मन हमेशा आम चीजों के साथ काम करना पसंद करता है और हमेशा परिचीत मार्ग को कायम रखने की कोशीश करता है। जब मन को कोई नयी या अनजान चीजों का सामना करना पडता है, तो उन्हे कम से कम शुरुआत मे विरोध करता है। आपको मन को शांत करने के लिए और उसे अनंत–अचल–शाश्वत की और मोडने के लिए और इसके माध्यम से अंतमे ज्ञान–प्रेम–नि:स्वार्थता के मार्ग पर प्रवेश करने के लिए मजबूत इच्छाशक्ती की आवश्यकता है।

मै एक और टिपण्णी करना चाहता हूँ : कभी–कभी हर एक नयी चीज के खिलाफ विरोध घृणित और अस्वीकार्य रुपों मे व्यक्त किया जा सकता है।इस तरह के विरोध का स्वरुप आध्यात्मिकता के स्तर पर निर्भर करता है। समाज मे जीतनी कमजोर आध्यात्मिकता होती है उतनाही विरोध का स्वरुप तीव्र होता है, घातक उपहास, गुस्सेवाली अंगोाक्ति,कठोर और उदंड हमले और कभी–कभी सिर्फ असभ्य अश्लीलता के रुपमे यह विरोध प्रगट होता है।

मुझे लगता है कि रोमन लोगो के एक प्रसिध्द अभिव्यक्ती का यही विचार है: ज्युपीटर, तुम गुस्से मे हो इसलिए तुम गलत हो। अवश्य, मुझे यह वचन किसने और कब कहा यह पता नही है, और शायद मैने कुछ हद तक गलत ढंग से पेश किया होगा। फिर भी उसका मूलतत्व मुझे काफी स्पष्ट लगता है: आध्यात्मिकता, सहनशीलता, संयम और बस दया का अभाव।

यदि हमारा मन या हमारा दिल इस क्षण में कुछ समझ नही सकते, तो इसका मतलब यह नही है कि ये सब बाते बेतुकी, बकवास, जंगलीपन और पागलपन में किया हुआ प्रलाप है। नई बातोंको और उनके मूलतत्व को समझना आपके दिल और दिमाग के लिए बहुत मुश्किल है। जिन चीजोंके बारेमे

आप कभी नही सोचते, विशेष रुपसे जब हमारी वास्तविकता इन नई बातोंकी आदी नही है, तब उन्हे अधिकारी व्यक्ति और लोगोंकी राय स्विकार नही करती।

यह हर मानवीय ज्ञान के क्षेत्र में सच है। उदाहरण के लिए हम लुडविग वान बीथोवेन के शानदार नौवे सिम्फनी पर विचार करेंगे। उस जमाने के सबसे उँचे आध्यात्मिक ढंगसे इसका निर्माण किया गया, इसिलिए उसके समकालीनोने इसका वर्णन,'' एक सायक्लोपीन प्रतिमाओंका बेतुका संग्रह'' इन शब्दोंमें किया था (रोमन रोलाड ने अपने बीथोवेन के इसी महान संरचना को समर्पित किताब में इसी प्रकार एक सिम्फनी पर टिप्पणी लिखी है) केवल वागनेर और गोथे के महान प्रयास और क्लेश के बाद नौवे सिम्फनी को लोगोने स्विकार किया। बहुत साल बाद सेर्गेइ राचमानीनोव्ह ने ''इससे जादा अच्छे संगीत का निर्माण नही हो सकता''यह सार्वलौकिक राय व्यक्त की है। मैं इस राय से पूरी तरह सहमत हूँ।

आम तौर पर बीथोवेन का संगीत इतना असामान्य है कि उसके प्रसिध्द समकालिन के शब्दों को समझना आसान है, जिन्होने बीथोवेन के संगीत में कुछ अलौकीक और अमानवीय विशेषताएं है ऐसा कहा था। वास्तव में, यदि आप इस संगीत को, विशेष रुप से नौवे सिम्फनी को, एकाग्रता से सुनते हो, अपने मर्जी के खिलाफ भी सुनते हो, तो यह संगीत आपको इतनी उँचाई पर ले जाएगा और आपके साँस को आपसे इस तरह अलग कर देगा कि आप इस क्षणमें ऐसे आध्यात्मिक उँचाई के लिए तैयार नही है यह बात आप जरुर महसूस करेंगे। आपको ऐसा लगेगा कि आप अस्तित्वहीन स्थिती का सामना कर रहे है, और आप घातक कायरता की अवस्थामे पहुँच गये हो। जैसा कि आप जानते है बीथोवेन ने अपने नौवे सिम्फनी में ''आनंद का गीति-काव्य'' इस रचना के हर शब्द को संगीत के रुप मे व्यक्त किया है।अवश्य, मैं संगीतकार नही हूँ, लेकिन नौवे सिम्फनी ने मुझे मेरे लेखन में निश्चित रुपसे प्रेरित किया है। मुझे लगता है कि यह संगीत सुनने के कारण ही मैं अपने कविता-उपनिषद, ज्ञानगिता के पहले पहले दो अध्याय अच्छी तरह लिख सका (बादमें मैने छह अध्याय लिखे)। मुझे लगता है कि ज्ञानगिता में नौवे सिम्फनी को शब्दोंमे व्यक्त किया गया है। अवश्य इसमे और शिलर के कविता मे कुछ भी समानता नही है।

यदी आप क्सिी क्षण किसी भी कारण की वजह से कुछ बाते समझ नही सकते, कारणोंकी गहराई मे नही जा सकते लेकिन इसका मतलब यह नही है कि ऐसी बातें विवेकहीन, अजीब, बकवास और पागलपन का भ्रम होता है।

मुझे कहना होगा कि एक दुसरे से बिल्कुल विरोधी लगनेवाली बाते वास्तव मे एक जैसी होती है। उदाहरण के लिए मैं एक बात कहना चाहता हूँ : भारत मे एक ज्ञानी व्यक्ति को ‘‘मुनी’’ कहा जाता है।‘‘मुनी’’ शब्द का अर्थ है मौन। वस्तुत:, यह एक ही विशेषता अज्ञानी और मूर्ख लोगोंके लिए भी उचित है, जो एक स्टँप की तरह हमेशा चुप रहते है। प्रथम अवसर मे हम ज्ञान के विवेकी मौन को देख सकते है, ऐसे लोग पहले ही सब कुछ कह चुके होते है, दूसरे अवसर मे हमे अज्ञानता और मूर्खतापूर्ण चुप्पी का सामना करना पडता है क्योंकि ऐसे लोगों के पास कहने के लिए कुछ भी नही होता है। इस तरह उपर से समान दिखनेवाली बातोंमे अंदरसे बहुत बडा फर्क है। ऐसा फर्क कृत्रिम और प्राकृतिक चिजोंके बीचमें होनेवाले फर्क की तरह होता है। उदाहरण के लिए हम खुश होनेवाले हालत के बारेमे बात कर सकते है । कुछ लोग ऐसे स्थिती को उत्तेजना के माध्यम से प्राप्त करते है और कुछ लोग ऐसी स्थिती को दार्शनिक की चिंतन अवस्था के माध्यम से, विचारक और योगी के गहरी एकाग्रता से प्राप्त करते है। लेकिन दुसरी अवस्था को प्राप्त करने के लिए हमे अपनी दुर्बलता के प्रती उदासीनता और बल के प्रती अविचल निष्क्रीयता को छोडना होगा । यह सब मूल बातोंकी प्रतिलिपी या परछाई की तरह होती है।

सहिष्णुता और स्वतंत्र सोच के बारेमे कहा जाए, तो मै हिंदू धर्म की तुलना आध्यात्मिक महासागर से करना चाहता हूँ । यह महासागर धीरे धीरे सभी छोटे झरनोंका, छोटे-बडे नदीयोंका, प्रवाहोंका अवशोषण करता है, और इस अध्यात्मिकता की कुछ छोटी बूँदे (याने जीन बातोंमे कुछ विवेक या साधारण ज्ञान होता है) भी कमसे कम अध्यात्मिकता का कुछ अंश या सत्य की कोई भी पहलू या छाया को व्यक्त करती है।

कर्म की शिक्षा और नियमों के अनुसार मौत बस एक शरीर से दूसरे मे होनेवाला, एक अवतार से दूसरे मे होनेवाला संक्रमण है । हमारे भविष्य का अवतार हमारे इस जीवन के कारनामों पर निर्भर करता है, और हमारे इस जनम की स्थिती हमारे पिछले जिंदगी पर निर्भर होती है। यह जन्म और मृत्यू के लगातार क्रम को संसार, अवतारोंका चक्र कहते है। कर्म की शिक्षा ने मुझे यह कहने का हक दिया है कि इस दुनिया मे कुछ भी आकस्मिकता से नही होता और हर आकस्मिकता एक अंधी आवश्यकता है। मैने 'अंध' शब्दका इस्तेमाल किया है क्याकि कर्म के सभी पतले और असंख्य बन्धनों को देखना हमारे मन के लिए असंभव है। समय के बन्धनो की निव होनेवाला कर्म का नियम सर्वव्यापी है। यह नियम केवल लोगों को नही, बल्की अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजोंका अभिग्रहण करता है। सभी प्रसिध्द रुसी सहित पश्चिमी विचारकोने किसी तरह इन अविचल बन्धनो को ढूँढा है। उदाहरण के लिए हम लोस्की के महान एकता के विचार का उल्लेख कर सकते है। इसके बारेमे लोस्की कहते है,'' हर चीज दूसरी से जुडी होती है, इसका मतलब दुनियामे सब चीजे आपसी संबंधोसे बध्द है। हर चीज दूसरे मे शामिल है। जब हम कर्म के नियमो की बात करते है, याने जन्म और मृत्यू के निरंतर श्रृंखला की, जो एक दूसरे का स्थान ग्रहण करते है, और पुर्ननिर्माण के निरंतर घुमनेवाले चक्र की बात करते है, तो हमे महान भगवदगीता की (दिव्य गीता की), एक भारतीय महाकाव्य, महाभारत के सर्वश्रेष्ठ दार्शनिक मूलपाठ की कुछ पंक्तिया याद रखनी चाहिए।

तुम और मै हमेशा एक थे।
और सभी लोगों की तरह हम हमेशा और इसके बाद भी एक रहेंगे।
जिस प्रकार बचपन,परिपक्कता, और बुढापे की अवस्था के
अनुरुप हमारे अंदर बदल हो जाते है,
उसी प्रकार हमारे शरीर बदल जाते है और इसमें कोई उलझन नही है।
बुध्दिमान और विवेकी व्यक्ती को इस संक्रमणका कोई खेद नही होता है।
यह कोई रुकावट और विनाश नही है,

जहॉ अनंत का अस्तित्व बिना किसी रुकावट से कायम है।

हमारे शरीर संक्रमक है: वे आत्मा के अमर साँस के

बिना मर चुके है । हम खस्ताहाल पोशाक फेंक देते है

और नयी पोशाक पहनते है।

उसी तरह आत्मा पुराने शरीर को छोडकर नये शरीर मे प्रवेश करती है।

(बिव्हीएल महाभारत रामायण मास्को बेललेटर्स प्रकाशन गृह- पन्ने १७४-१७५)

तथ्य की बात के रुपमे कहा जाये तो मृत्यु का शाश्वत रहस्य इतना गहरा नही है। एक जिवन से दूसरे मे महान संक्रमण एक अवतार से दूसरे अवतारमे संक्रमण, शरीर का परिवर्तन हमारे इस जन्म के कर्मो पर,इच्छा-शक्ति और अबिलाषाओं पर निर्भर रहेगा। अपने दिव्य स्वरुप की उपेक्षा करनेवाले लोग इसे मृत्यु से मृत्यु तक का संक्रमण मानते है। यह महान संक्रमण,मृत्यु के प्राचिन गूढ पहेली को हम जीवन-अस्तित्व के प्रथम महान धार्मिक संस्कार के रुप मे निर्दीष्ट कर सकते है।

लोगों के कल्पना के अनुसार उँचे आसमान के बादलोमे बसनेवाला परमेश्वर नही होता है। परमेश्वर मनुष्य है, मनुष्य ही ईश्वरीय खेलमे व्यस्त परमेश्वर है, वही इस ब्रह्मांड का निर्माता और मालिक है। वह एक सर्वशक्तीमान, सर्वज्ञ और उदार प्रभु है, जो हमारे निष्ठुर और निरपेक्ष कर्मोकी दुनिया पर राज करता है। मनुष्य भगवान के सामने बिल्कुल तुच्छ है इससे जादा बेतुका वक्तव्य नही हो सकता है। मनुष्य ने निष्ठुर भाग्य के आगे दास की तरह पेश आना चाहीए, और दुसरी तरफ मनुष्यने अपने भाग्य के खिलाफ अंधा विद्रोह करना चाहीए ये दोनो बाते बिल्कुल गलत है।

वास्तव मे ''भाग्य'' या दैव क्या होता है? यह हमारे पास वापस आनेवाला हमारा अतीत, हमारे पिछले कर्मोका परिणाम है। जैसा की मैने पहले ही कहा है कि कर्मका नियम सर्वव्यापी है। कर्म की यह विश्वव्यापकता जीवन-अस्तित्व के महान एकता के सत्य पर आधारीत है, जिसमे मनुष्य मे जीवन-अस्तित्व की महान एकता शामिल है। एकता अनेकाता का निर्माण करती है, बादमे अनेकता बन जाती है। लेकिन अपने एकता का मुल स्वरुप कायम रखती है। यह जीवन अस्तित्व का दुसरा महान

धार्मिक संस्कार है। यह जीवन–अस्तित्व के महान एकता मे सर्वव्यामी सत्य की एकता मे, सत्य के सागर मे, मानव मे शामिल सभी वास्तविकता की एकता मे प्रगट होता है। इसलिए हम शाश्वत को परिमित की शाश्वतता, संक्रमण की अनंतता, अनेकता की एकता, अस्तीत्वहीनता का जीवन–अस्तित्व कह सकते है।

मृत्यु सिर्फ भूसे से भरा शेर है। मृत्यु का डर जीवन–अस्तित्व का सबसे बडा डर है, लेकिन यह सिर्फ ज्ञान की कमी है, जिसे प्राप्त किया जा सकता है। मृत्यु का भय जीवन के अभी प्राप्त न हुए लक्ष्य के बारेमे, याने की मुक्ती के बारेमे, अस्पष्ट चेतना होती है। मृत्यु का भय संभावित क्षमता की एक झलक होती है। जीवन–अस्तित्व की महान एकता के सत्य को हम समझ नही सके है। यह जीवन–अस्तित्व के सर्वोच्च मूलतत्व के रुपमे होनेवाली मनुष्य की अनंत महानता का छिपा हुआ सत्य है। मनुष्य ही जीवन अस्तित्व की सर्वोच्च की सर्वोच्च वास्तविकता, जीवन–अस्तित्व के महान एकता का केन्द्र है।

वर्तमान का निर्माण अतीत से होता है,जबकि भविष्य वर्तमानपर आधारित है। एक व्यक्ती अलगाव के महान भ्रम के साथ खेलनेवाला, परमेश्वर है। यह अपने ईश्वरीय स्वरुप के अज्ञान के साथ खेलनेवाला भगवान है, उसे अपने सच्चे शाश्वत और संपूर्ण मुलतत्व का ज्ञान नही है। अमरत्व – यही मृत्यु के रहस्य का जवाब हो सकता है। यह जन्म और मृत्यु के, पुर्ननिर्माण और निर्भर अस्तित्व के चक्र के महान रहस्य का हल है।

मृत्यु को बुरा या अशुभ नही समझना चाहिए। यह सिर्फ अस्तित्व की अनिवार्य शर्त शाश्वत और संक्रमण का नियम, जीवन–अस्तित्व की अनिवार्य शर्त है। इसी महान संक्रमण पर ही कर्म का नियम आधारीत है। कर्म का नियम जीवन–अस्तित्व का सर्वोच्च नियम है, जो घटनाओं के कारणो के परिणामों पर और शाश्वतता मे चल रहे रचना के प्रवाह पर आधारीत है।

लोग अपनी इच्छा संकल्प और कृती की माध्यम से अपने आप को कठोर कर्मकी श्रृंखला से बांध देते है और बादमे अपने आपको बंधीत,अपूर्ण और नश्वर मानने लगते है। लेकीन वास्तव मे हम

अभी भी बिल्कुल मुक्त रह सकते है। हमारा स्वरुप अमर है। हमारी क्षमताए असीम है, हम ईश्वरीय है और हमारा मुलतत्व पूर्ण है।

यह जीवन-अस्तित्व का तिसरा महान धार्मिक संस्कार है। महान भ्रम, माया, अज्ञान, जिसमे लोग अपने मनमे अपने पूर्ण मुलतत्व के अज्ञान के कारण कायम रखने की कोशीश करते है। लोग अपने सच्चे ''स्व'' को अपने शरीरमे, भावनाओंमे, मनमे देखना चाहते है और उसे निंदमे निर्माण होनेवाली अतृप्त प्यास की तरह अहंकारी इच्छा के माध्यम से प्रकट करना चाहते है।

लोग अपने आपको वंचित, कमजोर मानते है, जबकि हम हमेशा बिल्कुल मुक्त है, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ भगवान की तरह है, हम अपनी अथाह, महानता और अमर स्वरुप कभी नही खोते है।

कारण और परिणामोंका यह खेल अस्तव्यस्त लग सकता है, लेकीन वह कर्म के शाश्वत नियमोसे नियमित है। यह नियम अपने तर्क मे कठोर है और उसमे निर्दय संगति है। इस नियम को हम जीवन-अस्तित्व का शाश्वत नियम कह सकते है। यह सर्वोच्च न्याय का नियम हमारी अहंकारी इच्छा, अहंकार, हमारे ''स्व'' से हमारा अलगाव और हमारा काल्पनिक व्यक्तीत्व और उनके साथ हमारी पूर्ण स्वतंत्रता और हमारा सच्चा पूर्ण मूलतत्व इन्ही बातोंपर आधारीत है।

कर्म और कर्म का नियम हमारी स्वतंत्रता की आवश्यक शर्त है। मनुष्य को अपने अहंकारी इच्छा का फल भोगने की यह आवश्यक शर्त है। यह नियम मनुष्य की पूर्ण स्वतंत्रता की, मनुष्यकी इच्छा-शक्ती की आवश्यकताओं से निर्माण होता है क्योंकि मनुष्य ही जीवन-अस्तित्व की महान एकता की सत्य का केन्द्र और वाहक है। मनुष्य अपने मर्जी के अनुसार मन मे कोई भी इच्छा प्रकट होने के लिए स्वतंत्र है, लेकिन उसे इस का फल भोगना ही पडता है। यह कर्म के नियम का सार है। लोगोंके पास अपने इच्छा-शक्ती की संपूर्ण स्वतंत्रता है, क्योंकि लोग ही महान एकता की कल्पना के वाहक है। इच्छा-शक्ती की पूर्ण स्वतंत्रता, सभी मौजूदा चीजों की तुलना मे मनुष्य का विशेष स्थान, उसकी असीम

महानता, अनंत शक्ती और अनंत ज्ञान, आत्मज्ञान की अमूल्य माध्यम से प्रगट होते है। सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन के माध्यम से मनुष्य अपने आप को जीवन-अस्तित्व के सर्वोच्च सत्य के रुप मे समझ सकता है।

अपने आपको चिंतन के माध्यम से समझना, सर्वोच्च अंतर्ज्ञान, गहरी एकाग्रता और समाधी इन चीजों के कारण हम जीवन-अस्तित्व के महान एकता का केंद्र बन जाते है। इसी कारण हम सर्वशक्तीमान, सर्वज्ञ, अपने सच्चे और पूर्ण स्वरुप से, हमारे अमर मूलतत्व से हमारे असली महानता से खेलनेवाले मानव के रुप मे परमेश्वर बन जाते है।

इसी प्रकार लोग अपनी संपूर्ण इच्छा-शक्ती और इच्छाओंका उपयोग करके अपने आपको कर्मकी अटूट श्रुंखला से,अपने इच्छाओं के परिणामोंकी श्रुंखला से बांध देते है। यह श्रुंखला स्वतंत्रता की आवश्यक शर्त है। अपने मुक्त इच्छा-शक्ती के कारण मनुष्य अहंकार, अलगाव और द्वंद्व के जाल मे फँस जाता है। हमे अपने खुद की इच्छाओं के, अपने महान मुलतत्व की अज्ञान के ,हमारे अहंकार के और जनम और मृत्यु के एक दूसरे मे बदलनेवाले अनुक्रम के एकही संपूर्ण भाग से काल्पनिक अलगाव के फलोंको भोगना पडता है।

अलगाव के महान भ्रम से(जिसका वास्तविकता मे अस्तित्व नही होता, लेकीन हम उसके मोहमे फँस जाते है।) मुक्ती यह जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य, जीवन का मुख्य अर्थ है। इस भ्रम और अज्ञान पर विजय प्राप्त करना, अपने आपमे जीवन-अस्तित्व के सर्वोच्च सत्य को अस्तित्व मे होनेवाली सभी चीजोंकी एकता को साकार करना यही जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य है। मानवता, महान एकता की सर्वोच्च कल्पना के वाहक के रुपमे खुदको साकार करती है और अपने शाश्वत स्वरुप को, अपनी असीम महानता को अपनी अनंत शक्ती और अनंत ज्ञान को समझती है, खुदको सर्वोच्च वास्तविकता के रुपमे जानती है। उसके बाद हम काल्पनिक व्यक्तित्वको त्याग देते है, और हम क्लेश और अहंकारी इच्छाओं से, कर्म की श्रुंखला से, अहंकार के बंधन से माया के जादू से, द्वंद्व से, काल्पनिक कमजोरी और दुर्बलता से, प्रतिष्ठा, अधिकार, धन की न मिटनेवाली प्यास से जीवन-अस्तित्व की न मिटनेवाली प्यास से,

आसक्ति से, संक्रमण अवस्था की बहुलता से, क्षणिक की अनंतता से मुक्ती पा लेते है,अज्ञान के जाल से पूर्ण मुक्ती पा लेते है।

मै आपको मनके आंतरिक विरोध के नियम के बारेमे बताना चाहता हूँ क्योंकि हम एकाग्रता और उसकी आंतरिक विचार-तत्व के बारेमे, उसके दार्शनिक मूलतत्व के बारेमे और एकाग्रता को प्राप्त करने मे मन की भूमिका के बारेमे बात कर रहे है।योग का मतलब ही एकाग्रता है। पतंजली योग-सूत्र के पहले दो सूक्ति मे हमे एकाग्रता की परिभाषा मिल सकती है, इन्ही दो सूक्ती मे सूचित किया गया है कि एकाग्रता की परिभाषा ही योग की परिभाषा है।

१. यहाँ एकाग्रता का वर्णन है।

२. योग का मतलब ही चित्त को वृत्ती से अलग करना है (इसका मतलब विचारोंको विभिन्न प्रतिमाओंसे अलग करना है।)

(पतंजली योग-सूत्र भाग १- १,२)

बेहतर यह कहना होगा कि योग का मतलब मन को रोकना, उसे अपने इच्छा के अनुसार कार्य करने के लिए मजबूर करना यही है । मनको रोकने का, उसकी गतिविधियों को शांत करने का और उसे विभिन्न मानसिक प्रतिमाओंकी तरफ मोडने से रोकना इसका मतलब यह नही है कि मन मे असंगत खालीपन निर्माण करना। इसका मतलब है दूसरे स्तरपर, सर्वोच्च स्तरपर-योग अंतर्ज्ञान के स्तर पर सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन के, समाधी के स्तरपर संक्रमण करना।

योग-सूत्र का मुख्य उद्देश गहरी एकाग्रता को, समाधी को प्राप्त करने के आठ स्तरीय मार्ग को समझना यही है। यह मार्ग एकाग्रता की पूर्व-कथित परिभाषा से ही निकलता है। हालांकि योग-सूत्र भारत के दृढ रुढीवादी दार्शनिक प्रणालीमेसे एक है (इसका मतलब है यह दार्शनिक प्रणाली वेदों के अधिकार को मानती है।)

मै अपने इस किताब मे योग-सूत्र की दार्शनिक पहलू को मजबूत बनानेका, एकाग्रता का दार्शनिक पहलू समझानेका प्रयास कर रहा हूँ । मनका किस प्रकार सर्वोच्च अंतर्ज्ञान मे, सत्य के प्रत्यक्ष

चिंतन मे परिवर्तन होता है यह दिखानेका भी मै प्रयास कर रहा हूँ (सत्य की निरंतर खोजमे अंतमे मन के साथ यह हो जाता है)। इस मायने मे महान एकता के दर्शन का मुख्य भाग– विजनानपद योग–सूत्र का ही एक अगला भाग बन जाता है और उसमे दार्शनिक पहलू को मजबूत बनाता है। हालांकि शुरुआत मे मेरा यह समग्र उद्देश्य नही था, मै बस उसे लिख रहा था, और अब अंतिम परिणाम अपके सामने है ।

यहाँ मै मनकी परिभाषा से शुरुआत करुंगा। मन, विचार प्रक्रिया का मतलब है एकता का कर्ता और वस्तुओ की अनेकता के द्वंद्व मे विघटन होना और आखिर मे अनेकता का एकता मे, गहरी एकाग्रता की माध्यमसे विलय करके अनेकता का एकता मे वापस आना यही है।

मन का अपने गतिविधियोंके स्वरुप के कारण कर्ता और वस्तुओं के द्वंद्व को मान लेना अनिवार्य है। मन हमेशा वस्तुओंका निर्माण करता है और उनकी ओर हमारे विचार निर्देशन करते है और यहाँ हमेशा विचार करनेवाला कर्ता होता है। दूसरे शब्दोंमे विचार–प्रक्रिया मे हमारा किसी बाहरी चिजों से अलगाव शामिल है।

मनका अंतिम लक्ष्य क्या है? विचार–प्रक्रिया का अंतिम उद्देश्य क्या है?

मन का अंतिम लक्ष्य वस्तु के उसके साथ विलय के साथ जुडे जाने के माध्यम से, गहरी एकाग्रता, समाधी का सहारा लेकर विचार–प्रक्रिया से निर्माण हुए वस्तु मे सत्य का प्रत्यक्ष चिंतन यही है। मन आखिर मे सत्य को समझने की दिशा मे ही जाता है। सत्य का सार है अस्तित्व मे होनेवाली सभी चीजों की एकता और मनुष्य जीवन–अस्तित्व की महान एकता का केंद्र है।

इस प्रकार मन के स्वरुप मे ही कभी हल न होनेवाला विरोधाभास, आंतरिक विरोध शामिल है, जिसे दूर करना आवश्यक है। विचार–प्रक्रिया कर्ता और विचारसे निर्माण हुए वस्तु के विरोध के माध्यम से चलती है। उसका अंतिम लक्ष्य इस द्वंद्व को नष्ट करना, अलगाव और अहंकार की और आत्मकेंद्रित वृत्ती को दूर करना यही है। और उसके लिए मनुष्य के अपने असली पूर्णस्वरुप के बारेमे अपनी असली महानता के बारे मे अज्ञान को नष्ट करना आवश्यक है। आपको पता लगेगा कि इस मन के आंतरिक विरोध मे निरपेक्ष को सापेक्ष के माध्यम से प्राप्त करने के, शाश्वत को संक्रमणीय के माध्यम से, परिमित

का अनंतता के माध्यम से प्राप्त करने के अनगिनत प्रयास शामिल है। असफल मन एकता को संक्रमणीयता की अनेकता मे संक्रमणीयता के माध्यम से डालकर एकता के सत्य को प्राप्त करने का प्रयास करता है ।

मन के खुद के साथ ही जारी इस आंतरिक संघर्षको हल करना (यह संघर्ष मन के कार्य के कारण ही निर्माण होता है।), मन का उद्देश और उसे प्राप्त करने के साधनो के बिच निर्माण हुआ विरोध, विचार–प्रक्रिया और उसके अंतिम लक्ष्य के बिच निर्माण हुआ विरोध नष्ट करना इसका मतलब है विचार–प्रक्रिया को विचार–प्रक्रिया के माध्यम से ही गहरी एकाग्रता मे मनकी मदद से और सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन के माध्यम से दूर करना यही है।

अब हम कह सकते है कि मन का अंतिम लक्ष्य है खुदको प्रत्यक्ष चिंतन, गहरी एकाग्रता, कर्ता और विचार–प्रक्रिया से निर्माण हुए वस्तु के विलय के माध्यमो से खुद से दूर करना यही है।

विचार–प्रकिया को विचार प्रक्रिया मे ही नष्ट करना, कर्ता का विचार–प्रक्रिया से निर्माण हुए वस्तुमे क्रमिक विलय, वस्तुओं के और घटनाओं के गहरे मूलतत्व को समझना विचार के माध्यम से संभव नही है क्योंकि हमारा मन खूद ही अपनी मर्यादा निर्धारीत करता है। प्रत्यक्ष चिंतन की संभाव्य क्षमता हमारे मन के भितर होती है। इसके बावजूद, इन सभी बातोंपर ध्यान न देते हुए हमारा मन महान एकता के शाश्वत सत्य को प्राप्त करने मे सर्वव्यापी भूमिका निभाता है।

इसलिए मनका अंतीम उद्देश्य मन कभी प्राप्त न करनेवाला उद्देश्य होता है। यह उद्देश्य कभी प्राप्त नही हो सकता, लेकिन फिर भी उसमे बदलाव नही आता। हम इस उद्देश्य की तरफ बढते है, लेकिन उसे कभी प्राप्त नही कर सकते। इस वास्तव मे कभी प्राप्त न होनेवाले उद्देश्य का निरंतर पीछा करते हुए, अव्यक्त को व्यक्त करने के प्रयासोंमे,(जो पहलेसेही सफल नही होंगे यह मालूम होते हुए भी) विचारों मे व्यक्त न होनेवाली चीजोंका विचारो मे व्यक्त करने के प्रयासों मे, कभी प्राप्त न होनेवाली चीजों को प्राप्त करने के विफल प्रयासो मे, मन का सार व्यक्त होता है। मन अपने मूलतत्व के अनुसार शब्द और धारणाओं के जालमे न आनेवाली विचारों मे व्यक्त न होनेवाली चीजों को कभी प्राप्त न होनेवाली

चीजोंको उसी जालमे पकडनेका निरंतर प्रयास करता है।इसी व्यर्थ प्रयासो मे मन अपनी सभी क्षमताओंका उपयोग कर देता है और अपने मर्यादा के बाहर जाकर गहरी एकग्रता मे पहुँच जाता है। खुदको विचारोमे निर्माण हुए वस्तुओंमे डुब देता है,इन वस्तुओं मे अपना विलय कर देता है, समाधी की अवस्था को प्राप्त करता है।

इस प्रकार मन या तो अपने मूलतत्व के अनुसार कभी प्राप्त न होनेवाली चीजों का निरंतर पिछा करता है, नही तो विचारोकी मर्यादा के बाहर चला जाता है। ''संवेदनशील बुध्दी प्यारभरे अलिंगन मे पुरे दुनिया दौड के पार करने से भी प्राप्त न होनेवाली सत्य को समझ लेती है'' (निकोलाय कुझानस्की, दार्शनिक संस्थान, सोव्हिएत संघ के शास्त्र अकादमी ने और 'मिसल' प्रकाशन संस्थान ने प्रकाशित की हुई किताब, मास्को १९८९, खंड १, पन्ना ५०) – इन्ही शब्दोमे निकोलाय कुझानस्कीने मन के सत्य के निरंतर खोज के प्रयास का, कभी न समझ सकनेवाली चीजों को समझनेकी, कभी न बुझनेवाली प्यास का, मनके अचल, अनंत और शाश्वत चीजों को समझनेके निरंतर प्रयास का वर्णन किया है।

अब हम गहरी एकाग्रता मे, समाधी मे सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन के मनके अंतीम उद्देश्य का इस प्रकार वर्णन कर सकते है : मन के इस अंतीम उद्देश्य का मतलब है मन की मदद से और मन के माध्यम से मन के उपर उठना, विचार-प्रक्रिया की मदद से और विचार-प्रक्रिया के माध्यम से विचारोंको दूर करना।

मन एक तरफ से अपना ध्यान परिमीत, क्षणिक, बदलनेवाली, संक्रमणता की अनेकता पर केंद्रित करता है। दूसरी तरफ से मन अचल, अनंत, सत्य की एकता की तरफ आकर्षित होता है । मन का यह द्वंद्व सबसे पहले मन के अनेकता मे एकता देखने के, और अधिक ठीक शब्दोंमे कहा जाए तो परिमीत चीजों की अनंतता मे एकता स्थापित करने के निरंतर प्रयास मे व्यक्त होता है।

इसलिए मन, विचार-प्रक्रिया संक्रमण और चिरंतन, आन्तरिक और बाह्य, सापेक्ष और निरपेक्ष, सत्य और असत्य के बीच का एक प्रकार का पुल है। और इस पुलकी लम्बाई गहरी एकाग्रता के मात्राा के अनुरुप बदलती है, जितनी जादा गहरी एकाग्रता, उतनी कम इस पुल की लंबाई। इसके विपरीत,

जीतनी कम गहरी एकाग्रता उतनी जादा इस पुलकी लंबाई। एकाग्रता जितनी जादा गहरी हो जाती है उतना ही जादा मन ध्यान मे, चिंतन मे घुल जाता है, सापेक्ष का निरपेक्ष मे उतना ही जादा विलय हो जाता है(अधिक ठिक शब्दोमे कहा जाए तो सापेक्ष निरपेक्ष के अंदर चला जाता है) शाश्वत और अशाश्वत अनंत और परिमीत, संक्रमक और अचल के बीच की सीमा कम हो जाती है और अंतमे लुप्त हो जाती है।

इस प्रक्रिया की तुलना हम विरल होनेवाले वायुमंडल से कर सकते है, इस वायुमंडल का विरल होते हुए अंतमे असीम ब्रह्मांड मे विलय हो जाता है। वायुमंडल और वायुमंडल न होनेवाले अन्तरिक्ष के बीच स्पष्ट सीमा नही होती और हो भी नही सकती। एक का दूसरे मे क्रमिक परिवर्तन हो जाता है। उसी प्रकार एकता वस्तु और घटनाओंकी अनेकता मे बदल जाती है, लेकीन इसके कारण एकता का अस्तित्व नष्ट नही होता है, बाद मे अनेकता एकता मे घुल जाती है, लेकिन इस एकता मे हमेशा अनेकता की संभावना कायम रहती है।

उसी प्रकार मन और अंतर्ज्ञान मे, विचार-प्रक्रिया और चिंतन मे, और अंत मे मुक्त और बंधीत मे सीमा नही होती और हो भी नही सकती।

सिर्फ मनुष्य मे ही विचारोंको खुद की तरफ निर्देशीत करनेकी और इस प्रकार विचार-प्रक्रिया को विचार-प्रक्रिया से ही दूर करनेकी क्षमता प्राप्त है, इसका मतलब है दृष्टी को अपने अंदर अपने पर केंद्रित करने को ही प्रत्यक्ष चिंतन कहते है और यही चिंतन की भी परिभाषा है। मनुष्य खुद के बारेमे अपने 'स्व' के बारेमे विचार नही कर सकता, (इसके बारेमे पहलेही बहुत बार बताया गया है) क्योंकि मनको कर्ता और वस्तु को एक दूसरे के विरोध मे पेश करने की निस्संदेह आवश्यकता महसूस होती है। इस प्रकार का विरोध चिंतन मे मनुष्य के खुद को विरोध जैसा लग सकता है, और यह संभव नही है। अगर यह संभव हो भी सकेगा तो सिर्फ अप्रत्यक्ष रुपमे। मेरे कहने का मतलब है जब हम हमारे बाहर होनेवाली, हमारे 'स्व' के बाहर होनेवाली चीजों के प्रति सोचते है तो ऐसा लग सकता है। जब विचार-प्रक्रिया मे हमारा 'स्व' जो 'स्व' नही होता उसे विरोध करता है और अंतमे विचार-प्रक्रिया के माध्यम से

ही वह गहरी एकाग्रता मे,सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन मे, लगातार गहरे आत्मसंज्ञान मे इस विरोध को मिटा देता है।

विचार–प्रक्रिया का मतलब है निरपेक्ष का सापेक्ष को विरोध। अगर और अधिक ठीक शब्दोंमे कहा जाए तो इसका मतलब है सापेक्ष ने निरपेक्ष को मिटा देना, और जादा ठीक शव्दोमे कहा जाए तो सापेक्ष ने अपने विपरीत स्वरुप की धारणा का निर्माण करना, सापेक्ष और संक्रमण के स्वरुप मे निरपेक्ष को मिटा देना, इस मिटा देनेवाली प्रक्रिया को ही मिटा देना, सापेक्ष का निरपेक्ष मे विलय करना। इसका मतलब है हमारे मन को अंतर्ज्ञान के बदल देना, गहरी एकाग्रता की प्रक्रिया मे विचार–प्रक्रिया का चिंतन मे विलय करना।

ये एकाग्रता क्या होती है ?

एकाग्रता का मतलब है मन का चिंतन मे परिवर्तन करना, मन को अंतर्ज्ञान मे घुलाना, कर्ता का विचार–प्रक्रिया से निर्माण हुए वस्तु मे विलय करना। इसका मतलब है विचार–प्रकिया के माध्यम से, विचाराधीन वस्तुपर एकाग्रता के माध्यम से और बादमे विचार–प्रक्रिया से निर्माण हुए वस्तु पर मनन करके और बादमे प्रत्यक्ष चिंतन से हमारे मनको दूर करना।

इस अर्थ मे जीवन–अस्तित्व का मतलब है चिंतनसे विचारों के निर्माण की निरंतर चलनेवाली प्रक्रिया और बादमे गहरी एकाग्रता के माध्यम से इस विचार–प्रक्रिया का चिंतन मे परिवर्तन करना। यह निर्माण की (अतर्ज्ञान का मन मे संक्रमण , 'स्व' के वियोग के कारण कर्ता और वस्तु के द्वंद्व के माध्यम से चिंतन का विचार–प्रक्रिया मे परिवर्तन) पालन की (विचार–प्रक्रिया, कर्ता का वस्तु को, ज्ञान को विरोध, ज्ञान को प्राप्त करना और उसका संचय करना) और नाश की (कर्ता का वस्तु मे विलय,मन का अंतर्ज्ञान मे घुलना, विचारों का गहरी एकाग्रता की माध्यमसे चिंतन मे घुलना) शाश्वत प्रक्रिया एक क्षण भी नही रुकती और हमारे कभी न मिटनेवाली अहंकारी इच्छाओं के माध्यम से, कारण और परिणामों की अपरिमीत कतारो मे, विकास के कारण परिणामोके धाराओं मे बदल जाती है। मन के इस धारा का

स्त्रोत चिंतन के महासागर मे है और उसका बादमे गहरी एकाग्रता के कभी समाप्त न होनेवाले मौन के शाश्वत महासागर मे विलय हो जाता है।

मन और विचार-प्रक्रिया हमारे 'स्व' के धारणा पर आधारित है। आत्म-चेतना और हमारी इच्छाएँ ये'स्व' के परम आवश्यक लक्षण है। हमारी एकाग्रता विचार प्रक्रिया मे जैसे जैसे गहरी हो जाती है, हमारे मनका प्रत्यक्ष चिंतन मे जैसे जैसे विस्तार हो जाता है, वैसे ही किस तह संज्ञान का कर्ता लुप्त हो जाता है। वह ज्ञान के वस्तु मे घुल जाता है और उसका सभी जगह व्याप्त सत्य मे विलय हो जाता है और इसके कारण मनुष्य अपने भितर जीवन-अस्तित्व के महान एकता के सत्य को लगातार समझ लेता है।

हमारे व्यक्तित्व ने निर्धारीत की हमारे 'स्व' की सीमा क्रमिक रुप से अधिक और अधिक गहरे आत्मसंज्ञान मे लुप्त हो जाती है। मनुष्य अस्तित्व मे होनेवाली सभी वस्तुओं से अपनी एकता को लगातार महसूस करता है, अपने दिल से अस्तित्व मे होनेवाली सभी चीजों की एकता को समझता है और हम अस्तित्व मे होनेवाली सभी चीजों के केंद्र मे है यह समझ लेता है। ज्ञान आत्मसंज्ञान के बहुत नजदीक पहुँच जाता है। इसका मतलब है हम सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन तक पहुँच जाते है। सभी चीजों को समझनेसे ही मै खुद को, अपने असली स्वरुप को समझता हुँ । इसलिए अपने अंदर सत्य के चिंतन के माध्यम से मै जीवन-अस्तित्व को समझ लेता हुँ क्योंकि सत्य अस्तित्व मे होनेवाली सभी चीजों मे व्याप्त है। मुक्ती के मार्ग पर होनेवाली मुख्य रुकावटों का वियोग, आत्मवाद और अहंकार- क्रमिक विलय हो जाता है।

मेरा अस्तित्व सभी मे है और सभी का अस्तित्व मेरे अंदर है। मुक्ती का यह सूत्र मन को मन के माध्यम से दूर करने के मनके अंतिम उद्देश्य को साकार करता है । मन की अपनी क्षमताए समाप्त हो जाती है और वह खुद को सत्य के प्रत्यक्ष अनुभुती मे घुला देता है, जीवन-अस्तित्व के इस गहरे मूलतत्व मे मनुष्य का अपने असली अमर स्वरुप का प्रत्यक्ष चिंतन शामिल है। आपकी एकाग्रता जैसे जैसे गहरी हो जाती है, वैसे ही आपके ज्ञान का सर्वोच्च ज्ञान मे विलय हो जाता है, और वह आत्म-संज्ञान की कृती बन जाते है। इसी आत्मसंज्ञान के माध्यम से ही मनुष्य खुद को जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च सत्य मानता

है, यह प्रक्रिया प्रत्यक्ष चिंतन के माध्यम से पूरी होती है और वह अस्तित्व मे होनेवाली सभी चीजों मे व्याप्त है।

मुक्ती यह जीवनका सर्वोच्च उद्देश्य, सर्वोच्च अर्थ है, और इसका मतलब है गहरी एकाग्रता और एकता के सत्य को मानने की प्रक्रिया मे आत्मसंज्ञान की गहराई और विस्तार को प्राप्त करना। यह आत्मसंज्ञान के रुपमे प्रकट होता है, और यह मनुष्य के अपने पूर्ण स्वरुप के प्रत्यक्ष चिंतन जैसा, मनुष्य के जीवन–अस्तित्व के महान एकता के चिंतन जैसा होता है। यह मनुष्य के अंदरका सत्य, उसके अंदर होनेवाली सर्वोच्च वास्तविकता है। मनुष्य अपने चिंतन के माध्यम से समझ लेता है कि वह सभी अस्तित्व मे होनेवाली चीजों के महान एकता का केंद्र है, जीवन–अस्तित्व के महान एकता के निरपेक्ष कल्पना का वाहक है।

एकाग्रता गहरी हो जाने के साथ ही वस्तु और घटनाओं का गुप्त मूलतत्व पूर्ण रुप मे प्रगट होता है। हमारा मन ज्ञान के महासागर के गुप्त गहराई या जितनी मात्रा मे हासिल करता है, खुद को उसी समय सभी जगह व्याप्त सत्य को प्रत्यक्ष अंतर्ज्ञानीय चिंतन मे घुला देता है, खुद को जितनी मात्रा मे विवेक, प्रकटीकरण और मन के सर्वोच्च अवस्था मे बदल देता है, इसका मतलब है आत्मसंज्ञान और आत्मचिंतन मे बदल देता है, उसी मात्रा मे इसी प्रक्रिया की गती बढती है।विचार–प्रकिया का अंतर्ज्ञानीय चिंतन मे विलय हो जाता है। निष्कर्ष के कारण परिणाम पंक्तियो का अटूट तर्क टूटने लगता है। हमारी एकाग्रता गहरी हो जाने के साथ ही हम सत्य को सीधे समझ लेते है। वह विचार–प्रक्रिया के माध्यम के बिना ही हमारे अंदर किसी तरह से पहुँच जाता है। मनका अंतर्ज्ञान मे विलय, विचार–प्रक्रिया को विचार–प्रक्रिया के माध्यम से ही दूर करना यह अब दार्शनिक के इच्छा–शक्ती की कृती बन जाता है, और उसके लिए दृढ एकाग्रता और विचारोंकी आवश्यकता है।

यह विचार–प्रक्रिया को गहरी एकाग्रता के माध्यमसे विचार–प्रक्रिया की मददसे ही दूर करना जीवन–अस्तित्व के ज्ञान का सूत्र है और वह मन के आंतरिक विरोध के नियम से मन को मन की मदद से ही मन के उपर उठाने की प्रक्रिया मे व्यक्त होता है ।

विचार–प्रक्रिया इस कृती मे हमारे मन को और अधिक गहरी एकाग्रता की महत्वाकांक्षा होती है और वह सर्वोच्च दार्शनिक सत्य के बारेमे विचार करते समय विशेष रुप से प्रकट होती है। एकाग्रता की तीव्रता बढने का मतलब है मनका लगातार अंतर्ज्ञान मे घुल जाना, मनका गहरी एकाग्रता मे खुद को अपने आप से धिरे धिरे दूर करना,और समाधी मे सभी जगह व्याप्त सत्य का प्रकटीकरण या प्रत्यक्ष चिंतन।

यहां हम विचार–प्रक्रिया के द्वंद्वात्मक नियम को सुत्रित कर सकते है, जो की जीवन–अस्तित्व के ज्ञान का सूत्र है और उसे मन के आंतरिक विरोध का नियम कहते है। उसका सार इस प्रकार है : जितनी जादा गहरी एकाग्रता, उतना हमारा मन प्रत्यक्ष चिंतन की ओर बढ जाता है, उसका अंतर्ज्ञान मे विलय हो जाता है, उसका प्रकटीकरण हो जाता है, वह सत्य के किनारा न होनेवाले महासागर के तरफ बह जाता है, ज्ञान के,अस्तित्वहीनता के, सर्वोच्च अस्तित्व के महासागर की तरफ समाधी की तरफ बह जाता है।

विचार–प्रक्रिया को भी एकाग्रता की, विचाराधीन वस्तु पर मन के एकाग्रता की आवश्यकता होती है। इसी कारण कर्ता का, इसका मतलब है विचार करनेवाले का विचार–प्रक्रिया से निर्माण हुई वस्तु मे लगातार विलय हो जाता है, कर्ता वस्तु मे पूरी तरह घुल जाता है। इसीका ही मतलब है विचार–प्रक्रिया को विचार–प्रक्रिया की माध्यम से दूर करना, मन को विचार–प्रक्रिया की कृती से, गहरी एकाग्रता की माध्यम से दूर करना।

मन को मन की मदद से गहरी एकाग्रता के माध्य्म से मनके उपर उठाने की चिरंतन महत्वाकांक्षा यही मनके आंतरिक सहज–विरोध का, मनके आंतरिक विरोध का सार है। गहरी एकाग्रता की कृती का मतलब है समाधी मे सत्य का प्रत्यक्ष चिंतन। यही मनुष्य का अपने अंदर के सत्य का प्रत्यक्ष चिंतन, आत्मसंज्ञान, आत्मचिंतन,अंतर्ज्ञान, सर्वोच्च ज्ञान है।

दूसरे शब्दोमे आखिर मे विचार–प्रक्रिया को दूर करना ही विचार–प्रक्रिया मे शामिल है। विचार प्रक्रिया एकाग्रता पर आधारित है, और एकाग्रता का उद्देश्य आत्मसंज्ञान की प्रक्रिया मे कर्ता के वस्तुके

साथ विलय की माध्यम से आखिर मे विचार-प्रक्रिया को दूर करना ही है। यह आत्मसंज्ञान मन के गहराई तक पहुँचता है और बाहर सभी जगह व्याप्त होता है।

सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन मे क्रमिक रुप से घुलना, गहरी एकाग्रता के साथ अंतर्ज्ञान मे परिवर्तन, गहरी एकाग्रता के सर्वोच्च अंतर्ज्ञान मे विलय यही मनुष्य के अलग लक्षण है। सिर्फ मनुष्य मे ही अमूर्त विचार करने की, खुद के अंदर सत्य के चिंतन के माध्यम से, गहरी एकाग्रता मे, समाधी मे आत्मसंज्ञान को प्राप्त करने की क्षमता है। यही क्षमता मनुष्य को दूसरे सभी अस्तित्व मे होनेवाली चीजों से अलग करती है और उसको विश्व का सर्वशक्तीमान सर्वज्ञ दयालू स्वामी बना देती है, यही स्वामी कर्म के कठोर और निष्पक्ष दुनिया पर राज करता है।

मै इस शुध्द दार्शनीक समस्याओं की थकानेवाली सफर के लिए माफी चाहता हूँ।, लेकिन यहाँ हम योग के बारेमे, उसके गुप्त सार के बारेमे,उसके विचार-तत्व के बारेमे बात कर रहे है, जो और जादा पेचीदा है। एकाग्रता के दार्शनिक पहलू का विस्तार मे वर्णन किए बिना हम इन चीजोंके बारेमे बात नही कर सकते। गहरी एकाग्रता को प्राप्त करने का जब हम प्रयास करते है तब हमारे मन की स्थिती क्या होती है यह जानने के बिना हम इन चीजों को समझ नही सकते। जब एकाग्रता और गहरी हो जाती है तो मन अपनी सीमा पार करके प्रत्यक्ष चिंतन की तरफ,योग के अंतर्ज्ञान की तरफ क्यों बढता है?

मैं एक के बाद एक अनेक उपयोगी और बेकार किताबे पढता था। बेकार किताबों से हम छुटकारा नही पा सकते। निटझशे ने इसके बारेमे कहा है कि जब तक तोडते नही तब तक कडे छिलके का फल उपयोगी है या बेकार है यह हम नही समझ सकते। किस किताब मे आपको उपयोगी जानकारी मिलेगी यह आप बता नही सकते। अपने अंतर्मन की गहराई मे डुबने के बाद नई कल्पना उचित समय पर उचित रुप मे बाहर आ जाती है।

सबसे पहले हट-योग के बारे मे किताबे मिलती थी, जिन्होंने जल्दी ही पश्चिमी देशों मे लोगों का ध्यान आकर्षित किया था। आठ स्तरीय पतंजली योग मे हट-योग शामिल है। हट-योग के दो भाग है : आसन और प्राणायाम। दूसरे शब्दोंमे उसमे सारी शारीरीक स्थिती, व्यायाम और साँस के व्यायाम

शामिल है। मैं आपको हट-योग के बारे मे जादा नही बताऊंगा क्योंकि दूसरे लोगो ने पहले ही इसके बारेमे बताया है। इन किताबों के माध्यम से मै खुद के लिए सबसे बेहतर व्यायाम चुनने मे सफल हुआ। यहॅा एक बात बताना बहुत जरुरी है: ये सब योगासनो के, याने की शरीर की विभिन्न स्थिती और शरीर के स्थिर आसनों को कार्यान्वित करना बहुत मुश्किल है। उदाहरण के लिए मै बताना चाहता हूँ : कमल के स्थिती को (याने पद्मासन को) सिखने के लिए मुझे करीब छह महने लग गए और मोर की स्थिती को (याने की मयुरासन को) सिखने मे मुझे तीन महीने से जादा समय लगा।

मैने आसनोंकी रानी कहा जानेवाले शिर्षासन को (सिरपर खडे रहना) कुछ ही क्षणों मे पुरी तरह सिख लिया, लेकिन मै अपने खुदके दर्दभरे अनुभव से सिख लिया था कि केवल किसी चीजको कार्यान्वित करनेका तकनीक सिखना पर्याप्त नही है। मैं पहले भी आपसे कह चुका हूँ और फिरसे दोहराता हूँ कि योगासनों को चुनते समय आपने बहुत सावधान रहना चाहिए, जब कठिन योगासनोंके और सांस के व्यायाम को चुनते है तो आपको और जादा सतर्क रहना चाहिए, आसनोंकी तकनीक की यथार्थता भी बहुत महत्वपूर्ण है। इसके बारेमे जादा बात करने की आवश्यकता नही है। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण घटको के समूह को ध्यान मे रखना चाहिए। कुछ आसन विशिष्ट व्यक्ती के लिए बिलकुल योग्य नही होते है। मै अपने खुद के अनुभव से बता सकता हूँ कि कुछ आसन अभी किसी व्यक्ती को योग्य नही होते है, लेकिन भविष्य मे उसे उनकी आवश्यकता महसूस हो सकती है। इसलिए अनुभवी सलाहगार से योगासन सिखना उचित होगा और अगर किसी कारण आपको ऐसा सलाहगार नही मिल सकता तो आपको अपने अंतर्ज्ञान पर निर्भर रहना पडेगा। अपने अंदर की आवाज को सुनना सिख लो। जहाँ तक मेरी अपनी बातो का मामला है, ये सब मेरे साथ इसके पहले भी घटित हुआ था, और अभी भी हो रहा है। फिर भी सलाहगार होना अच्छा है। पहली कृती करना और फिर गलतीयों से सिखना- इस रीति के गंभीर और प्रतिकुल परिणाम हो सकते है। मै बहुत जादा बिमार था, इसलिए अपने ‘‘श्रृंखला’’ के अलावा मेरे पास खोने के लिए कुछ भी नही था, इसलिए मै योगासनो की दुनिया मे जादा सोचने के बिना और अपनी पूरी शक्ति का इस्तेमाल करके कूद पडा।

फिर भी ‘‘सिरपर खडे रहना’’, ‘सर्वांगासन’, ‘विपरीत-करनी’ मेरे लिए बहुत कठिन साबीत हुआ और इन आसनो को सिखने लिए बहुत जादा समय लगा। यहाँ मै तकनीकी पहलू की बात नही कर रहा हूँ, वह इतना कठिन नही था। मै बहुत गरम स्वभाव का मनुष्य हूँ (मेरा यह स्वभाव अभी भी कायम है)। इसलिए मैने इस स्थिती को बडी शिघ्रता से प्राप्त किया और बहुत देर तक मै ऐसी स्थिती मे कायम रहा। यह सब मैने आसनो को सिखने की शुरुआत करते ही हासिल किया। उसके बाद मेरे गरदन मे इतना जादा दर्द शुरु हुआ कि अपना सिर भी नही हिला सका। मुझे ऐसा लगा कि मेरे अंदर कुछ उन्मत और अनियमीत उर्जा ने प्रवेश किया है। मैने अती तनाव और चिडचिडापन महसूस किया। योग और चिडचिडापन एक साथ नही रह सकते, वो एक दूसरे के बिलकूल विपरीत है। योग का सबसे महत्वपूर्ण अर्थ है संतुलन, संयम और आत्मनियंत्रण। जैसा की महान माता को समर्पित मंत्र मे कहा गया है ‘योग का अर्थ है अचल शांती और संपूर्ण समझ’

यहा मै और एक बातका जीक्र करना चाहता हूँ। अपने मन का तनाव दूर करने के लिए मुझे अपने खुद के आसन की खोज करने पडी- मैने इस आसनको ‘‘ बिल्ली की स्थिती’’ ऐसा नाम दिया था। आप पिठ पर लेट जाओ अपने हाथ के साथ पूरे शरीर को उपर उठाओ और उसी समय अपने कंधे जमीनपर स्थिर रखते हुए और अपनी ठुड्डी छाती को लगाकर सिर उपर उठाओ।

कुछ क्षण आप इसी स्थिती मे रहो और बादमे मूलस्थिती मे वापस आ जाओ। इस आसनो को बार बार दोहराओ। आप इस आसन मे कुछ बदल कर सकते है और अपने कंधोको जमीन से उपर उठा सकते है। यह स्थिती हमे अपने पेटको साफ करनेवाली बिल्ली की याद दिलाती है। इस आसन के कारण बहुत शिघ्र मैने गरदन के दर्द से छुटकारा पाया, विशेषत: शुरु की अवस्था मे मैने इसे और जादा महसूस किया। यह आसन बिलकूल हानिकारक नही है, लेकीन उसको अपने एक मर्यादा के बाहर नही करना चाहिए। स्पष्ट रुप से अती तनाव और बादमे शिथिलता के कारण आपका खून दर्दवाले भाग को पुरी तरह साफ कर देता है और आप जल्दी ही बिलकूल ठिक हो जाते है।

जहाँ तक उलट स्थिती का सवाल है, तो मुझे सर्वांगासन को छोडना पडा। अब मै ‘विपरित-करनी’ यह आसन करता हूँ और दोनो स्थितीयों के परिणाम समान होने के कारण अब मै आनंद महसूस करता हूँ। बहरहाल वे एक ही दिशा मे कृती करते है। सिरपर खडे रहना(शिर्षासन) ये बहुत ही अलग मामला है। मैने इस आसन को करनेका बहुत प्रयास किया, लेकिन बुरे परिणामों के कारण मुझे इस दिशा मे किये गये प्रयास को अधुरा छोडना पडा। मै इसके बारेमे पहले आपको बता चूका हूँ। बादमे इसके लिए क्या करना चाहिए यह मेरे समझ मे आ गया। बहुत समय के विराम के बाद मैने पांच सेकंद के लिए शिर्षासन करना शुरु किया और उसके बाद मै इस स्थितीका काल अवधी हर सप्ताह मे पांच सेकंद बढाया। इस तरह अंतमे मै इस आसनों की रानी (जैसा की उसे कहा जाता है) याने शिर्षासन की स्थिती मे पांच मिनट तक रहने मे कामयाब हो गया। इसके लिए मुझे पांच सालका समय बिताना पडा, लेकिन ये काल अवधि मैने बिल्कुल उचित काम के लिए बिताया।

अब मेरे पास आसनों का पक्का समूह है और उसमे मै कभी कभी थोडा सा परिवर्तन करता हूँ। मै अभी भी अनातोली निकोलायवीच झुबकोव के आसनों के समुह मे से कुछ पहले आसन करता हूँ। जब भी संभव है, मै नियमित आसन करता हूँ, लेकिन अब मेरे लिए हट-योग का प्रशिक्षण शुरु मे जितना महत्वपूर्ण था, उतना अब नही रहा है। जब पौधा विकसित अवस्था मे नही होता, तब उसके लिए बाड की आवश्यकता होती है, लेकिन एक बार पुर्ण विकसीत होने के बाद उसके लिए भविष्य मे बाड की कोई आवश्यकता नही होती। लेकिन जब हम शरीर और सांस के व्यायाम की बात करते है, तो जीवन के हर काल अवधि मे कसरत की आवश्यकता होती है। बिमारी योग के मार्ग मे बाधा होती है और आपको हमेशा अपने आरोग्य के बारे मे सतर्क रहना चाहिए। जब हम महान एकता का सत्य जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च सत्य है ऐसी बात दार्शनिक दृष्टिकोन से करते है, तो आपका शारीरीक और नैतिक आरोग्य यह सिर्फ हमारा काम ही नही बल्की हमारा समाज और सभी लोगो के प्रती कर्तव्य भी है। ये बात तुच्छ लग सकती है, लेकिन ये सत्य है।

सभी प्रारंभिक जानकारी मे मै विशेष रुप से आपका ध्यान रामाचराकी के किताबो की और आकर्षित करना चाहता हूँ (बादमे मुझे पता चला की ये सज्जन अमेरिका के पेनसिल्वानीया मे रहते है और उनका असली नाम विल्यम अटकीनसन है)। भारत मे रामाचराकी की किताबे लोगो को बिल्कुल अच्छी नही लगती और उनके बारेमे लोगोके मनमे कुछ हद तक संताप भी है। भारत मे बहुत लोग मानते है कि उनकी किताबो का योग की परंपराओ से कुछ भी संबंध नही है। लेकिन मुझे उनके किताबों मे कुछ तर्कयुक्त विचार मिले। इस संदर्भ मे मै दो किताबो का निर्देश करना चाहता हूँ : ‘‘ भारतीय योगीयों का सांस का शास्त्र’’ और ‘‘ राज-योग’’। मैने दूसरी किताब से लाभ उठाया- मुझे व्यावहारिक लाभ हुआ क्योंकि मै अपने मन का सही दिशामे उपयोग करना सिख लिया। हमारा मन और शरीर हमारे साधन है, इसलिए सबसे पहले हमे उनको ठिक अवस्था मे रखना चाहिए और बादमे हमने उनकी सभी क्षमताओं का उपयोग करना सिखना चाहिए। हम अपने मन को तीन हिस्सों मे बांट सकते है, वो इस प्रकार है: अंर्तमन, मन का स्पष्ट हिस्सा और उपरी मन (उच्च मन)। हमारे मन का बहुत सारा कार्य निचले स्तर मे याने अंतर्मन मे होता है। उदाहरण के लिए हम एक बात कह सकते है : जब आप किसी चीज को याद करने का प्रयास करते है, लेकिन ऐसा हम नही कर सकते। इसके लिए आपको कोई जादा तकलीफ उठाने की आवश्यकता नही है- आप इस चीज से संबंधीत दुसरी सारी चीजों को याद करके उन्हे अपने अंतर्मन मे रख दिजीए और अपने अंतर्मन को ठोस आज्ञा दिजीए। कुछ समय के लिए इस समस्या को अपने हाल मे छोड दिजीए और कुछ देर बाद आपका अंर्तमन आपको जो जवाब चाहिए वो दे देगा। मैने इस रीती का बहुत बार उपयोग किया है और मेरे परिश्रमी और जागृत सेवक ने मेरा कार्य हमेशा सही ढंग से पूर्ण किया है (जहाँ तक और जब ये संभव हो तब)। हमारे विचार-प्रकिया का बहुत सारा हिस्सा अंर्तमन मे ही पूर्ण होता है, इसलिए विचार करनेवाले व्यक्ती ने उसका उचित ढंगसे उपयोग करना सिखना चाहिए।

इसके अलावा कुछ मौलिक समस्याओं को हम अंर्तमन को सौंप सकते है और अंर्तमन को भविष्यमे पूर्ण रुपसे इन्ही समस्याओं के बारेमे सोचने की, उनका हल ढूँढने की, आज्ञा दे सकते है।

उदाहरण के लिए मै यह बात कह सकता हूँ : मुझे कुछ समस्याओं का सामना करना पडा, उनका मै अभी तक हल नही खोज सका और उनके बारेमे मै हमेशा सोचता रहा लेकिन इन सवालों का मै मनचाहा जवाब नही खोज सका, कम से कम मेरे विकास के इस स्तरमे तो यह नामुमकीन था। ये समस्याए मेरे मन मे स्पष्ट रुप से प्रकट होती है और यह अप्रत्यक्ष विचार–प्रक्रिया जारी रहती है।

अब मन के तिसरे हिस्से के बारे मे याने उच्च मन के बारे मे बात करने का समय आया है। यह अंतर्ज्ञान है जो विचार–प्रक्रिया के बीना ही हमारे सवालोंका जवाब देता है।हमने पहले अंतर्ज्ञान के बारेमे कामकी सारी बाते की है। यहाँ मै बताना चाहता हूँ कि अंतर्ज्ञान अलग ढंग का भी हो सकता है। वह चमकनेवाली दिप्ती जैसा होता है, आकाश मे चमकनेवाली बिजली जैसा होता है, जो अपने इर्द–गिर्द होनेवाले अंधेरे मे उजाला पैदा करता है और कुछ क्षण बाद अंधेरा फिर लौट आता है। दूसरी तरफ अंतर्ज्ञान एक नियंत्रीत कृती भी है, यह दार्शनिक के शक्तीशाली इच्छा–शक्ति का परिणाम है। इस अंतर्ज्ञान को ज्ञान रोशनी देता है और वह विचारक, योगी के शक्तिमान इच्छा–शक्ति के नियंत्रण मे होता है।

इस प्रकार का अंतर्ज्ञान पाण्डित्य (इस के सर्वोच्च अर्थ मे) है और उसका निर्माण गहरी एकाग्रता की स्थिती से, जिसे हम समाधी कहते है, होता है। यह योग का सर्वोच्च आंठवा स्तर है। एकाग्रता की गहराई, सबसे पहले ज्ञान के यथाक्रम संग्रह का और उसके साथ एकाग्रता के दृढ प्रशिक्षण का परिणाम है। इसके साथ ही गहरी एकाग्रता के लिए नि:स्वार्थता, सर्वव्यापी प्रेम, आत्मविश्वास के लिए नियमीत काम इन चीजों की जरुरत होती है, इसका मतलब है अपने मन और शरीर को शाश्वत नैतिक मापदण्डो से साफ करना चाहिए, जो इस प्रकार है: किसी को हानी नही पहुँचाना, दयालु होना, कभी गुस्से मे नही आना, सत्यवादी होना, दूसरे की चीजे कभी नही हडपना, इमानदार होना, आदरणीय होना, संतुलीत होना, कामुक नही होना, कभी उपहार नही लेना उदार होना, पैसोंकि लालच मे नही आना, दूसरों के बारेमे बुरे विचार मन मे नही लाना, आंतरिक और बाह्य शुध्दता,

समाधान,आत्मनियंत्रण, पंडित, ज्ञानी और मुनीयो के विचारों को आत्मसात करना, उन्हे दोहराना, सत्य के प्रति हमेशा एकनिष्ठ रहना।

हटयोग का संपूर्ण साहित्य मेरे लिए अवश्य बहुत ही महत्वपूर्ण था, लेकिन अब मुझे योग के दार्शनिक पहलू मे, उसके विचार–धारा मे, योग एक जीवन–पध्दती के रुपमे जादा दिलचस्पी है। आखिर मे हमे एक बात हमेशा याद रखनी चाहिए: योग का मतलब सिर्फ शारीरिक और सांस के व्यायामोका समूह नही है, ये चीजे भी महत्वपूर्ण है और इनके बारेमे मैं पहले भी बता चूका हूँ, लेकिन गहरी एकाग्रता की अवस्था मे विचार–प्रक्रिया, आत्मविश्वास के लिए निरंतर काम, अपने अंदर मे महान एकता के सत्य को आलेकित करना, ये भी मेरे लिए महत्वपूर्ण है। अब हम दृढता से कह सकतै कि जीवन योग ही है, नियमीत योगासन ही जीवन है, योग के मार्गपर, सत्य के मार्गपर आगे जाना ही जीवन क सर्वोच्च उद्देश्य होना चाहिए।

मुझे एक सवाल हमेशा पूँछा जाता है : योग की शिक्षा एक तरफ होती है और जीवन की वास्तविकता,जीवन की समस्याए हमे उस शिक्षा के बिल्कुल विपरीत करने के लिए विवश करते है, ऐसी स्थिती मे हमे क्या करना चाहिए? सबसे पहले विचार–प्रक्रिया की सही दिशा बहुत महत्वपूर्ण है, उसके बाद हमे योग की दिशा मे आत्मविश्वास के लिए निरंतर काम करना चाहिए। मै फिर एक बार दोहराना चाहता हूँ : योग के मार्ग पर हमे अपनी गती से आगे जाना चाहिए, उसके लिए हमे जल्दी नही करनी चाहिए, खुद को इस मार्गपर जबरदस्ती से दौडाना नही चाहिए, लेकिन इस मार्गपर बिना रुके हमेशा चलते रहना चाहिए। भारतीय योगी रामकृष्ण के शब्दोमे कहा जाए तो‘‘ मार्ग– यह घर नही है’’ रामकृष्ण को विवेकानंद अपना गुरु मानते थे और उन्हे उन्नीसवी सदी के सबसे अधिकारीक योगी माना जाता है और ये बात बिल्कुल उचित है।

किसी भी चीजको हठधर्मिता, अपरिवर्तनीय, किसी भी परीस्थीती मे बाध्यकारी नही मानना चाहिए। हमेशा विवेक का इस्तेमाल करना चाहिए और वो हमेशा हर चीज मे प्रभावी होना चाहिए। ये बात योग के लिए भी, जीवन–मार्ग के लिए भी उचित है। इसका मतलब है: समय और स्थान का विचार

करने की क्षमता, मर्यादा का पालन करना और लोगो के प्रती हमेशा परिवर्तनशील और संवेदनशील रहना।

उदाहरण के लिए हम कह सकते है: अगर आपके नजदीकी दोस्त ने आपके जनमदिन के अवसरपर उपहार दिया, उसी समय हमे योग के 'अपरिग्रह' की शिक्षा का पालन करना है(इसका मतलब है दूसरोसे कभी भी उपहारो का स्विकार नही करना)। अब ऐसी स्थिती मे हमे क्या करना चाहिए? हमे दोने मे से कम बुरा काम करना चाहिए। जहॉ तक मेरा सवाल है, मै बिना किसी दुविधा से ये महत्वपूर्ण नैतिक नियम तोड सकता हूँ, लेकिन मै दोस्त को अपने जीवनमूल्य के बारे मे बताऊंगा और भविष्य मे मुझे कोई उपहार न देने के लिए दृढता से कहूँगा। अपने दोस्त या रिश्तेदारों को केवल उन्हे योग के तत्व मालूम नही है या इन तत्वों को वो मानते नही है इसलिए दु:ख देना या उन्हे भद्दे स्थिती मे डालना उचित नही है। लेकिन उसके साथ ही अगर आपने योग के नैतिक तत्वो को स्विकार किया है तो ऐसे उपहारो की मन मे अभिलाषा नही रखनी चाहिए।

उपहार का स्विकार नही करना इस तत्व के सार का विचार किया जाए तो यहाँ हम मनुष्य के स्वतंत्रता के बारेमे बात कर रहे है यह नही भूलना चाहिए। मै अपने निजी जीवन मे स्वतंत्रता को सबसे जादा महत्व देता हूँ। दार्शनिक दृष्टीकोन से सोचा जाए तो स्वतंत्रता ही मनुष्य के जीवन का सार है, उसके जीवन का गहरा विचारतत्व है। मनुष्य ही परमेश्वर है, भ्रम मे फँसा हुआ परमेश्वर है,अपने शाश्वत स्वरुप के बारेमे ज्ञान प्राप्त न होनेवाला और अपने आपसे ही इसी अज्ञान के कारण खेलनेवाला परमेश्वर है। इच्छा-शक्ती की निरपेक्ष स्वतंत्रता यह मनुष्य की विशेषता है और अगर ये निरपेक्षता सापेक्षता का स्वरुप धारण करती है, कभी कभी तो यह कर्म के पूर्णनियोजीत निर्धारीत परिणामो मे व्यक्त होती है, तो ये सापेक्षता निरपेक्षता की आवश्यक शर्त है और सापेक्षता का मूल स्त्रोत निरपेक्षता मे है। अलगाव के महान भ्रम, माया जीवन-अस्तित्व का मूलतत्व है। यहॉ मै एक बात स्पष्ट करना चाहता हूँ : मनुष्य के इस इच्छा शक्ति की निरपेक्ष स्वतंत्रता के बारेमे मै उँचे दार्शनिक दृष्टीकोन से बात कर रहा हूँ। मेरे शब्दोको अक्षरश: नही समझना नही समझना चाहिए। इसका मतलब यह है कि अगर इच्छा-शक्ती की

निरपेक्ष स्वतंत्रता यह मनुष्यकी विशेषता है तो इसका मतलब यह नही है कि मनुष्य मन मे पैदा हुई इच्छा के अनुसार सब कुछ कर सकता है और उसके लिए नैतिक बंधनोका भी कोई महत्व नही है, वह इन बंधनो को भी पार करके सब कुछ कर सकता है। वास्तविकता बिलकूल विपरीत है। दार्शनिक दृष्टीकोन से, मनुष्य के इच्छा-शक्ति का निरपेक्ष स्वतंत्रता का सबसे पहले मतलब है गहरी शुध्दता (इस शब्द का सर्वोच्च अर्थ यहॅा हमे ध्यान मे रखना चाहिए।)

मै फिर दार्शनिक सत्य की तरफ खिंचा गया। चलो, अब हम फिर उपहारोका स्विकार न करने के बारेमे बात करते है। जब मनुष्य कोई उपहार का स्विकार करता है, कुछ चीजे भेट लेता है और अगर वह इसके बदलेमे तुरंत कुछ देनेका प्रयास नही करता है, फिर भी वह कुछ हद तक अपनी स्वतंत्रता खो देता है। अपने को उपहार देनेवाले व्यक्ती के बारे मे उसके मन मे निर्भरता की भावना निर्माण होती है उपहार देनेवाले को उपहार के बदलेमे कुछ तो देना अपना कर्तव्य है ऐैसा वह महसूस करने लगता है। ऐसी परिस्थीती मे किसी के कर्ज मे रहने की भावना मनुष्य के लिए बहुत अपमानजनक होती है। ऐसा होना हम टाल सकते है, इसके लिए हमे उपहार का स्विकार नही करना चाहिए और अगर स्विकार करना पडा तो उपहार देनेवाले को इसके बदलेमे उचित मुआविजा देकर निर्भरता की भावना नष्ट करना चाहिए।

अगर हम योग के नैतिक मापदंडो के बारेमे बात कर रहे है तो आपको मै योग के उर्वरीत नैतिक मापदंडो के बारेमे भी बताना चाहता हूँ । जहॅा तक योग के पहले तीन मापदंड- किसी को हानी नही पहुंचाना, सत्यवादी होना, दूसरोकी चीजे कभी नही हडपना का सवाल है, तो यहॅा जादा स्पष्टीकरण की बिल्कुल आवश्यकता नही है। एक बात तो हम स्पष्ट रुपसे कह सकते है- लोगोके प्रति हमने दयालू, इमानदार और आदरणीय रहना चाहिए। हम दूसरी तरह लोगो से पेश नही आ सकते। अगर आप आपके साथ कुछ विपरीत होना नही चाहते, तो आप दूसरों के साथ भी ऐसा न करे। मै आपका ध्यान विशेष रुप से चौथे नैतिक मापदंड की और आकर्षित करना चाहता हूँ । चौथा मापदंड है- संतुलित और संयमीत होना। मुझे लगता है की व्यापक अर्थ मे इसका मतलब है कामुकता को छोड देना, मै पहले ही बता चूका हूँ कि यह योग के मार्ग का सर्वोच्च लक्ष्य, मूल और प्राप्ती है। संकुचित अर्थमे इसका मतलब है हर

चीज मे संतुलन और संयम। और अंत मे अगर आप इस नैतिक मापदंड को अक्षरश: समझना चाहते है तो इसका मतलब है संपूर्ण तटस्थता या उदासिनता।

यहॅा एक बात बताना आवश्यक है-प्राचिन भारत मे मनुष्य के जीवन को चार काल अवधी मे अलग किया गया था। उनको आश्रम कहते थे। पहला ब्रह्मचार्य आश्रम-ये काल अवधी २४ साल का था इस काल अवधी मे मनुष्य कर्तव्यशील विद्यार्थी होता था। उसके बाद की अवस्था को गृहस्थ कहते थे। इस काल अवधि मे मनुष्य घर-गृहस्थी चलाता था और अपने ज्ञान और क्षमता का उपयोग समाज के लिए करता था। उसके बाद जब उसके बच्चे बडे हो जाते थे तो मनुष्य वानप्रस्थ आश्रम मे प्रवेश करता था, इस अवस्था मे मनुष्य इस दुनिया और दुनियादारी को छोडकर गहरे विचार मे मग्न रहता था और आत्म-परिपूर्णता कीा प्रक्रिया को निरंतर चालू रखता था। और आखिर मे मनुष्य 'सन्यासी' अवस्था मे प्रवेश करता था, सन्यासी का मतलब है भटकनेवाला पंडित या मुनी, इस अवस्था मे मनुष्य इस दुनिया से दूर रहता था और उसे किसी चीज के या व्यक्ती के प्रती कोई बंधन नही रहता।

पहले काल अवधी मे मनुष्य अपने गुरु के घर मे रहता था और सभी प्रकार के अकुशल काम आनंद और कृतज्ञता के भाव से करता था। उसका गुरु उसे ज्ञान देता था, उसकी आध्यात्मिकता का ख्याल रखता था, उसके आत्मिक निर्देशक के रुप मे काम करता था। इस २४ साल के काल अवधी मे ब्रह्मचर्य और तटस्थता पूर्णत: बाध्यकारी थे।

पहले काल अवधी मे मनुष्य अपने गुरु के घर मे रहता था और सभी प्रकारके अकुशल काम आनंद और कृतज्ञता के भाव से करता था। उसका गुरु उसे ज्ञान देता था, उसकी आध्यात्मिकता का ख्याल रखता था। इस २४ साल के काल अवधी मे ब्रह्मचर्य और तटस्थता पूर्णत: बाध्यकारी थे।

यह प्रश्न बहुत नाजुक है और उसके लिए विशेष निर्माण भूमिका की आवश्यकता है। मामला यह है, जैसा की योग-सूत्र मे कहा गया है, तटस्थता या उदासीनता के कारण बहुत जादा मात्रा मे उर्जा मुक्त हो जाती है और उससे हमे आत्मिक बल प्राप्त होता है। सिर्फ शुध्द मनुष्य ही इस उर्जा को अपने और अपने आसपास होनेवाले दूसरे लोगोंके फायदे के लिए प्राप्त कर सकता है। ऐसे मनुष्य के पास ज्ञान होता

है और वह गहरे सर्वोच्च नैतिक तत्वों का पालन करता है। अगर ऐसा नही है, तो यह उर्जा आपको और दूसरे लोगोंको हानी पहुँचा सकती है। भारतीय पौराणिक कथाओं के अनुसार परमेश्वर आकाश के बालिकाओंको, याने अप्सराओंको, ऋषी और मुनियोंके पास उनको मोहित करके उनकी आध्यात्मिक बल कम करने को भेजते थे, अगर ऐसा नही होता तो यह ऋषि मुनी ''अपने मन की शक्ती से पुरी दुनिया को जला देते''। देवताओंका राजा इंद्र एक अप्सरा को पौराणीक विश्वामित्र ऋषि के पास उन्हे मोहित करने के लिए भेजा था। विश्वामित्र ने अपने तप से जबरदस्त शक्ती प्राप्त की थी। जब अप्सरा ने अपनी बेहिको विश्वामित्र के पास भेजा तो उन्होने गुस्से मे आकर उसे शाप दिया और वह दस हजार साल तक पत्थर बनके रही। इस शापसे इस ऋषि की अपूर्णता स्पष्ट होती है, उनकी अध्यात्मिक शक्ती और नैतिक परिपूर्णता के स्तर मे बहुत जादा अंतर था।

इसलिए आपको तटस्थता के मामले मे बहुत सावधान रहना चाहिए। कामवासना और कम न होनेवाला भावावेग ये अलग चिजे है। नि चिजोंको खुदके अंदरसे बिना किसी पछतावेसे बाहर करना चाहिए। लेकिन यहाँ भी आपने जल्दबाजी और खुदपर जबरदस्ती नही करनी चाहिए। इस समस्योको पुरी तरह जानकर ही उसे हल करना चाहिए।

जो भावनावेग की ज्योती को बुझाना चाहता है
जो वायु के मिश्रण से आग बुझाना चाहता है,
जो इच्छाओंसे भावनाओं को मिटाना चाहता है
वह अपनी ही परछाई मे
दाह से छिपने का प्रयास कर रहा है।

वस्तुत: अगर हम अपने इच्छाओं को हमारे उपर हावी होने देते है, उन्हे तुष्ट करनेका प्रयास करते है और उन्हे बार-बार पुरा करने का प्रयास करते है, तो हमारी अवस्था लकडी से आग बुझानेवाले मनुष्य की तरह या अपने ही परछाई मे दाह से छिपने का प्रयास करनेवाले मनुष्य की तरह ही हो सकती

है। पहली घटना मे शुरु मे तो आग ढक जाएगी, लेकिन बादमे चारो ओर फैलेगी, दुसरी घटना मे आप अपने परछाई का हमेशा पीछा करते रहेंगे, लेकिन उसमे आप कभी भी कामयाबी हासिल नही करेंगे।

एक भारतीय विचारकने इसके बारेमे बहुत अच्छी बाते कही हे। अगर मनुष्य स्वादिष्ट भोजन खाता है, अच्छी तरह सोता है, उसके पास सुख और आराम के लिए सभी सुविधाए उपलब्ध है, लेकिन आत्मा मर चुकी है, तो ऐसे मनुष्य का जिवन निरर्थक है। लेकिन रामकृष्ण ने यह बात भी कही थी : ''धर्म खाली पेटोके लिए नही होता है।'' मै भी कह सकता हूँ कि सत्य खाली पेटोके लिए नही होता है, लेकिन आपने यह बात माननी चाहिए की भर पेट खाना सबसे महत्वपूर्ण नही है। मनुष्य सिर्फ रोटीपर ही जिंदा नही रह सकता। यह बात सही है की आपकी प्रतिदिन की आवश्यकताओं को पुरा करने के लिए आपने सभी संभाव्य उपाय करने चाहिए। आप नयी प्रतिदिनकी आवश्यकताओं के निर्माण की और उन्हे पूरा करने की प्रक्रिया निरंतर जारी रख सकते है, लेकिन जब तक आप समाज के आध्यात्मिक आरोग्य के प्रश्न के उपर ध्यान केंद्रित नही करते तब तक ये सब चिजे व्यर्थ है। जब तक समाज मनुष्य के आत्मिक आवश्यकताओं को पुरा करने के लिए योग्य स्थिती निर्माण नही करता तब तक मनुष्य का जिवन अर्थ पूर्ण नही हो सकता। यहाँ मैं एक बात विषेश रुपसे कहना चाहता हूँ : हम हमेशा आध्यात्मिकता को सौंदर्य-शास्त्र की आवश्यकताओं मे मिला देते है।यह बात पुरी तरह सही नही है। आध्यात्मिकता यह संकल्पना सौंदर्य-शास्त्र या सिर्फ कला से जादा गहरी है। उसमे नीती-सास्त्र, ज्ञान, सत्य को समझना, नि:स्वार्थता, शुध्दता और दूसरी अनेक चिजे, जिनसे शब्दोमे वर्णन नही किया जा सकता, समाविष्ट होती है। भारतीय लोग ऐसी चिजोको ओजस कहते है, इसका मतलब है मनुष्यके अंदर होनेवाली कुछ ऐसी विशेषता, जो दूसरो के दिल को आकर्षित करती है। मै इस प्रकारकी 'चिज' को योग की शक्ती कहता हूँ।

मै फिरसे दोहराना चाहता हूँ : आप अर्थव्यवस्था की शक्तिशाली इमारत बांध सकते है, लेकिन जब तक यह इमारत निरंतर बढनेवाले आध्यात्मिकता के नीव पर नही खडी होती और जब तक आप समाज के आध्यात्मिक आरोग्य की चिंता नही करते, आध्यात्मिक वातावरण मे सुधार का प्रयास नही

करते, समाज के हर पुरुष और स्त्री के आध्यात्मिक परिपूर्नता की ओर ध्यान नही देते, तब तक यह इमारत कितनी भी विशाल हो सकती है, लेकिन वह बालू परही खडी रहेगी, उसकी कोई नीव नही होगी, कोई आधार नही होगा।

जब मनुष्य अकेला पुस्तकों के साथ काम नही कर सकता, तो उसे सलाहगार की, आध्यात्मिक गुरु की आवश्यकता होती है। यह गुरु उसे हमेशा सलाह देता है और सही दिशा दिखाता है, उसे मदद करता है, उसके मनकी शक्ती बढाता है और उसे सत्य के प्रकाश मे अच्छे काम के लिए निर्देशीत करता है। धर्म ने सभी देशो के लोगों के लिए यह भूमिका हमेशा निभायी है।

भारत देश के महान पुत्र, राष्ट्रीय महावीर महात्मा गांधी ने कहा था (महात्मा का मतलब है महान आत्मा) : नैतिकता यह धर्म का सार है और सत्य नैतिकता का सार है। इसलिए नैतिकता के माध्यमसे सत्य यही धर्म का सार है, यहाँ हम नैतिकताको व्यापक अर्थ मे लेते है। महात्मा गांधी के धर्म के बारेमे ये विचार बिल्कुल सही है। श्रध्दा धर्म का आधार है। लेकिन यह श्रध्दा क्या होती है ? श्रध्दा का अर्थ है मनुष्य के सत्य के प्रति शाश्वत आकर्षण का प्रकटीकरण और मनुष्य का ईश्वरीय सार यही उसका मुख्य कारण है। मनुष्य ही परमेश्वर होता है, जो अपने आपसे, अपने ईश्वरीय स्वरुप के अज्ञान से खेलता है। निर्दय कर्म की मदद से इस ईश्वरीय खेलमे हम अपने लिए कौनसी भुमिका निर्धारीत करते है इस बातका कुछ महत्व नही होता है, हमारे अंदर गहराई मे हमेशा हमारे शाश्वत और सत्य स्वरुप के गुप्त सर्वोच्च ज्ञान का प्रकाश हमेशा होता है। सवाल इस बात का है कि यह गुप्त ज्ञान किस प्रकार प्रकट होता है: यह श्रध्दा के रुप मे प्रकट हो सकता है, उसे हमेशा अंधश्रध्दा कहा जाता है, यह गहरी एकाग्रता से प्राप्त पाण्डित्य हो सकता है, ईश्वर के आवाज होनी चाहिए, या यह नैतिकता और उसका दूसरा अर्थ–प्रेम हो सकता है, और यह जीवन–अस्तित्व के महान एकता का प्रकटीकरण है।

गुप्त ज्ञान जिस मात्रा मे कम हो जाता है, उसी मात्रा मे वह लगातार अंधश्रध्दा का रुप धारण करता है और जब वह अपने आप मे वापस आ जाता है, वो यह सर्वोच्च ज्ञान गहरी श्रध्दा के रुपमे प्रगट होता है,जिसका बादमे प्रकटीकरण के ज्ञान मे परिवर्तन हो जाता है। ज्ञान जिस मात्रा मे कम हो जाता है,

उसी मात्रा मे ज्ञान का अंधश्रध्दा मे परिवर्तन हो जाता है, अगर अधिक सही शब्दोमे कहा जाए तो ज्ञान अंधश्रध्दा के रुपमे प्रकट हो जाता है। श्रध्दा के गहराई की मात्रा ज्ञान के कभी की मात्रा पर निर्भर करती है। गुप्त ज्ञान जितना जादा अज्ञान मे बदल जाता है (संपूर्ण अज्ञान नही होता, सिर्फ ज्ञान की कमी होती है) उतनी ही मात्रा मे श्रध्दा की गहराई कम हो जाती है। दूसरे शब्दोमे कहा जाए तो ऐसी श्रध्दा का मतलब है क्षिण होते जानेवाला ज्ञान, या कम होते जानेवाला ज्ञान और उसे हम अंधश्रध्दा कह सकते है। मनुष्य जितना जादा खुद को इंद्रियो के परम सुख मे, अहंकार मे, संपत्ती और सत्ता की लालसा मे डुबोता है, याने जिसे हम जिवन-अस्तित्व की प्यास कहते है, उसमे जितना जादा व्यस्त रहता है, उसी मात्रामे उसके अपने निरपेक्ष स्वरुप के सर्वोच्च ज्ञान का अज्ञान मे, याने अपने अमर ईश्वरीय स्वरुप के अज्ञान मे परीवर्तन हो जाता है, मनुष्य के अंदर होनेवाले महान एकताके सर्वोच्च सत्य कि उपेक्षा मे भी यह प्रकट होता है। इसलिए अंतत: इसका परिणाम होता है – सभी श्रध्दा और नैतिकता नष्ट होना।

दुसरी तरफ अतीत का असली श्रध्दालू व्यक्ती का गुप्त ज्ञान लगातार गहरी श्रध्दा के रुप मे प्रकट होता है, जिसका ज्ञान के बढने के साथ पवित्रकरण मे परिवर्तन हो जाता है। श्रध्दा तीव्र हो जाने के बाद नैतिक तत्वो के दृढ पालन की आकांक्षा बढ जाती है। लेकिन ये नैतिकता क्या है? नैतिकता, नैतिक मापदण्ड यह प्रकट होनेवाला,आँखो को दिखाई देनेवाला महान एकता की सत्य का ही एक रुप है। इस स्वरुप मे सत्य को प्राप्त करना बहुत आसान है। नैतिकता (नियम की तरह) सत्य के प्रकटीकरण का माध्यम है, इसलिए गहरी विचार-प्रक्रिया पवित्रकरण के उच्च नैतिकता की आवश्यक शर्त है। इसका मतलब है अंधश्रध्दा का ज्ञान के प्रकाश मे क्रमिक परिवर्तन होना।

नैतिकता जिवन-अस्तित्व के महान एकता के सत्य के प्रकटीकरण का माध्यम है, श्रध्दा मनुष्य के सत्य की अटूट आकांक्षा के प्रकटीकरण का माध्यम है, जो मनुष्य के गुप्त निरपेक्ष स्वरुप मे समाविष्ट है। धर्म जादा और गहरी श्रध्दा पर आधारीत है, श्रध्दा मनुष्य के सत्य की अटूट आकांक्षा के प्रकटीकरण का माध्यम है। श्रध्दा नैतिकता के माध्यम से और जादा मजबूत हो जाती है। नैतिकता एकाग्रता की

क्षमता को पुष्ट कर देता है, और किसी तरह ज्ञान की पुन:स्थापना करती है। श्रध्दा तिव्र होनेकी प्रक्रिया मे सर्वोच्च गुप्त ज्ञान पूर्वरुप मे आता है, और ये गुप्त ज्ञान नैतिकता के माध्यमसे प्रक्ट होता है।

जब श्रध्दा अंधश्रध्दा नही रहती, उसका प्रकटीकरण के ज्ञान मे क्रमिक परिवर्तन हो जाना है। लेकिन ये प्रकटीकरण क्या है? प्रकटीकरण यह मनुष्य का गुप्त ज्ञान है, जो श्रध्दा तिव्र होने की प्रक्रिया मे उसके पास वापस आ जाता है। यह उसके असली ईश्वरीय सार का गुप्त ज्ञान है। नैतिकता बढने के साथ श्रध्दा की तिव्रता बढ जाती है, लगातार नैतिक परिपूर्णता के साथ यह प्रक्रिया और आसान हो जाती है।

मै पहले ही बता चूका हूँ कि नैतिकता मे व्यक्त हुआ सत्य लोग आसानीसे समझ सकते है। प्रेम नैतिकता की सर्वोच्च अवस्था है, जो भी सबको आसानीसे हासिल हो सकती है। प्रेम और नैतिकता का प्रकटीकरण के ज्ञान मे विलय हो जाता है और इससे सर्वव्यापी प्रेम का निर्माण होता है। प्रेम नैतिकता की सर्वोच्च अवस्था है, प्रेम की सर्वोच्च अवस्था सर्वव्यापी प्रेम है, जिसका निर्माण गहरी एकाग्रता के प्रक्रिया मे मनुष्य के अंदर जीवन–अस्तित्व के महान सत्य को समझने के सर्वोच्च ज्ञान मे होता है। प्रकटीकरण का ज्ञान, श्रध्दा, प्रेम, और नैतिकता, मनुष्य के ईश्वरीय स्वरुप का, उसके गहरे गुप्त सार का सर्वोच्च प्रकटीकरण है।

अगर लोग धर्म और उसके साथ जुडी हुई आध्यात्मिकता को खो देते है, और उसके स्थानपर, खाली गपशप, अर्थहीन नारे, बनावटी पुण्य और पाखंड के अलावा कुछ भी नही रखते तो क्या हो सकता है इसकी आप सहजता से कल्पना कर सकते है। इसके कारण समाज मे गहरा अध्यात्मिक संकट और गंभीर आध्यात्मिक बिमारी निर्माण होगी। इस संकट से केवल अर्थव्यवस्था की मदद से हम बाहर नही निकल सकते, हालाँकी हम मनुष्य की न्यूनतम आवश्यकताओ को पूरा करने के महत्व को नजरअंदाज नही कर सकते। लेकिन इस संकट से बाहर आनेका मार्ग आध्यात्मिक क्षेत्र मे है, इसके लिए जिनको आवश्यकता है उनकी आवश्यकताए पुरी करनी चाहिए, समाज के मानसिक आध्यात्मिक वातावरण मे जल्दी ही सुधार करना जरुरी है और मनुष्य के आध्यात्मिक भूख को मिटाना चाहिए। इसके अलावा, और ये बहुत महत्वपूर्ण है, समाज मे आध्यात्मिक गुरु और दार्शनिक (इन शब्दोको हम उनके

सबसे व्यापक अर्थ मे ले रहे है) लोगो के अस्तित्व के लिए आधार निर्माण होना चाहिए। उसी प्रकार समाज मे विचारक और ज्ञानी लोगो के लिए, जो समाज को निरंतर प्रकाश दिखाते है और समाजके भलाई के लिए काम करते है अनकुल वातावरण होना चाहिए, दूसरे शब्दो मे सत्य के मार्ग पर चलनेवाले लोगोका समाज मे भाईचारा बढना चाहिए। तारों की तरह यह आध्यात्मिक गुरु अज्ञान के अंधेरे मे पडे, लोगो के लिए चमकते है और उनके लिए प्रकाश–स्तंभ की भूमिका निभाते है, उनके जीवन–मार्ग पर मार्गदर्शन करते है। अपने सेवा मानवता की, सत्य की नि:स्वार्थ सेवा से सब के सामने आदर्श उदाहरण पेश करते है। ये आध्यात्मिक क्षेत्र के महान व्यक्ती लोगोंको प्रेरणा देते है और उनको सर्वोच्च आध्यात्मिक मूल्य देते है, जिनकी समाजके पीडीत लोगों को बहुत आवश्यकता होती है।

समाचार पत्र और प्रकाशन कार्य समाज के आध्यात्मिक पुनरुत्थान मे, समाज के हर व्यक्ती की आध्यात्मिक जरुरते पूरी करने की महत्वपूर्ण प्रक्रिया मे बडी भूमिका निभा सकते है। हर विचार करनेवाले मनुष्य को उसको जिस किताब की जरुरत हो वह बहुत आसानीसे मिलनेकी सुविधा उपलब्ध होनी चाहिए। लोगो को आध्यात्मिक शिक्षा देना हर तरह से उनकी आध्यात्मिक जरुरतो को बढाना और उनमे सुधार लाना यह प्रकाशको का कर्तव्य है।

जब आपको जिस किताब की आवश्यकता है वह उपलब्ध नही होती तो कितनी मुश्कीले पैदा होती है यह मै खुदके अनुभव से जानता हूँ और जब आपको पुस्तकालय मे भी आवश्यक किताब नही मिलती तो आपको कितना दु:ख और निराशा का सामना करना होगा यह भी अच्छी तरह से महसूस करता हूँ। सब आवश्यक साहित्य प्राप्त करने के लिए मुझे कुछ किताबे अपने हाथोसे फिरसे लिखनी पडी और इसके लिए मुझे काफी समय बिताना पडा।

समय बितने के साथ मुझे गंभीर दार्शनिक कितोबों मे दिलचस्पी पैदा हो गयी । सबसे पहले मुझे भारतीय दर्शन के बारे मे किताबोंकी जरूरत महसूस हुअी । मै फिर एक बार सर्वपल्ली राधाकृष्णान के ''भारतीय दर्शन'' इस किताब के दोनो खंडो की ओर वापस आया । इस किताब का पूरा अध्ययन करने

के लिए मुझे एक सालसे जादा समय बिताना पडा, लेकिन इस किताब के लिए इतना समय बिताना बिल्कुल उचित है। शास्त्रीय पुस्तकालय के विराट किताबों के विभाग में मुझे कुछ और स्त्रोत मिले । इस पुस्तकालय के कर्मचारीयों ने मुसे इनमे से कुछ कितावों को पढने का मौका उपलब्ध कराया, इस के लिए उन्हे विशेष रूप से धन्यवाद देता हूँ क्यों की ये काम उन्होने सिर्फ मेरे लिए नियमों का उल्लंघन करके किया था । इस तरह मैने स्वामी विवेकानंद की खोज की ।

विवेकानंद एक महान व्यक्तित्व था, उनकी अटूट इच्छा-शक्ति, विशाल मन, उबलनेवाली उर्जा और उनकी मनुष्य के प्रति अमर्याद श्रध्दा, प्रकाश और भलाई मे श्रध्दा-इन सभी चिजों के कारण उनका कभी न मिटनेवाला प्रभाव निर्माण हुआ। उनका अविश्वसनीय आध्यात्मिक बल, उनकी शुध्दता, कुलीनता, नि:स्वार्थता और सर्वव्यापी प्रेम के कारण सबसे बडा सन्देहवाली या नास्तिक भी तटस्थ नही रह सकता। अमेरिका मे उनके भारतीय ऋषि-मुनियोंके महान प्रकटीकरण के बारेमे घोषणापत्र के बाद विवेकानंद को ''पागल हिंदू'' ऐसा कहने लगे। विवेकानंद का छोटा और तेजस्वी जिवन (मृत्यु के समय उनकी उम्र चालीस सालकी भी नही थी।) मनुष्य के भलाई के लिए किया गया नि:स्वार्थ काम का, लोगोकी नि:स्वार्थ सेवा का आदर्श उदाहरण है। विवेकानंद के अनेक व्याख्यान और किताबोंने न सिर्फ उनके समकालीन लोगो को प्रभावीत किया, बल्की उनको विवेकानंद के मृत्यु के अनेक सदियो बाद भी लोग याद रखेंगे और उनका पालन करेंगे। उअनके विचार और दार्शनिक किताबे संपूर्ण मानवता के उरप आसमान मे फैले और कभी न बुझनेवाले अग्नी की तरह है। विवेकानंद दुर्बलता को मनुष्य का सबसे बुरा दुर्गुण मानते थे। 'अभय' (डरना नही।) बलवान, वीर बनो- ऐसा उन्होने आव्हान किया। मनुष्य ही परमेश्वर है, और परमेश्वर दुर्बल नही हो सकता। ज्ञान से चमकनेवाला, प्रेम से प्रेरित और नि:स्वार्थता से शुध्द हुआ बल-यही योग के चार भाग का मार्ग है।

मै यहा एक बात विशेष रुपसे स्पष्ट करना चाहता हूँ : जब मै ''योग का मार्ग'' ऐसे शब्दोका इस्तेमाल करता हूँ तो इसका महत्व यह नही है कि यह कोई विशिष्ट लोगो के लिए चुना हुआ खास मार्ग है। यह बिल्कुल गलत अर्थ है। यह मनुष्य के अंदर की अमर्याद क्षमताओकी योगासन, प्राणायाम और

उसके बाद मानसीक प्रशिक्षण की मदद से खोज करने का मार्ग है। योगी मनुष्य जिवन के कोई भी चिजसे अलग नही रहता, ‘‘योग जैसी चिज’’ आम आदमी के लिए कोई पराई नही होती। यहाँ सवाल सिर्फ आम आदमी और योगी के बिच के अन्योन्य सामंजस्य की मात्रा का है।

योग सबसे पहले नैतिक शुध्दीकरण का, आध्यात्मिक निर्माण का मार्ग है। अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजो की एकता यह जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च सत्य है, इसलिए जब मनुष्य आत्म-परिपूर्णता के लिए काम करता है तो इसका मतलब है वह लोगो के लाभ के लिए काम करता है।

सूरज अपने रोशनी देने का काम कभी नही रोकता। शुध्द मनुष्य अपनी शुध्दता से लोगो को सुधारने का काम कभी नही रोकता। आध्यात्मिक पुनरुत्थान के प्रक्रिया मे भलाई का निर्माण सांस लेने की तरह ही महत्वपूर्ण बन जाता है, इसके अलावा भलाई हमारे जिवनका पूरा हिस्सा बन जाती है।

मै जैसे ही इन दार्शनिक समस्याओ की गहराई तक पहुँच गया, विशेष रुप से जब मै इन समस्याओंको सुलझाने का पूरबी और विशेषत: भारतीय दर्शन के दृष्टिकोण मे प्रयास करने लगा तो मुझे वैराग्य और आत्म-संयम की बहुत जादा आवश्यकता महसूस हुई। इस वैराग्य और आत्म-संयम या (ऐसा उसे भारत मे कहते है) के बारेमे मै कुछ और बताना चाहता हूँ। योग के मार्ग पर प्रवेश करनेवाले, महान एकता के सत्य को समझने के मार्ग पर प्रवेश करनेवाले हर मनुष्य को उसी समय या कुछ देर बाद वैराग्य और आत्म-संयम की जरुरत महसूस होती है। यहॉ आपने बहुत जादा सावधान और चौकस रहना चाहिए। भारतीय महाकाव्य महाभारत मे अनेक उपयुक्त सलाह और निर्देशन है,और ‘‘इस तपस का खजाना जिसके पास होता है ’’ उसेही हमेशा तपस्वी और मुनि कहते है। आत्म-संयम या आत्म- दमन से लोगो को अनिवार्य रीति से आध्यात्मिक बल प्राप्त होता है, जो दुसरी चिजोंके साथ इन्द्रिय-ज्ञान के उपर होनवाली योग की क्षमताओ को प्राप्त करने मे व्यक्त होता है। मै योग की शिक्षा के इस भाग का ब्यौरा नही दूँगा क्योंकि मै अभी पुरी तरह तैयार नही हुए पाठक की इस सवाल के प्रति जिज्ञासा नही निर्माण करना चाहता। विवेकानंद ने इन‘‘अदभुत’’ क्षमताओं की तुलना रास्ते मे उगनेवाले फूलोंसे की है और यह तुलना बिलकुल सही है। आप रास्तेसे आगे जाते समय इन फूलोंको तोडकर उनके सुगंध का

आनंद ले सकते है, लेकिन जो यात्री अपने जिवन-पथ पर दृढता के साथ अपने उचित उद्देश्य को प्राप्त करेने की ओर जा रहा है वो कभी भी रास्ते की किनारे मे होनेवाली फूलों की ओर ध्यान देकर अपने मार्ग से कभी नही हटेगा, चाहे वो फूल कितने भी सुंदर और असामान्य क्यों न हो।

आत्म-दमन के आध्यात्मिक बल का'तपस खजाने मे', दार्शनिक और योगी के इच्छा-शक्ति मे परिवर्तन होता है, जो सत्य के प्रकाश की ओर जाती है और मानवता के कल्याण के लिए काम करती है। लेकिन यह तभी संभव है जब इस बल को ज्ञान का निरंतर प्रकाश प्राप्त होता है, प्रेम की प्रेरणा मिलती है, नि:स्वार्थता मे वह शुध्द होता है और तब लोगो की नि:स्वार्थ सेवा की जाती है।

जैसा की मै पहले भी कह चूका हूँ, अगर ऐसा नही होता, यह बल अनिवार्य रीति से मनुष्य के निरंतर बढनेवाले असह्य क्लेश का स्त्रोत बन जाती है। मनुष्य न केवल खुद को हानि पहुँचाता है, बल्कि दूसरे लोगो को भी बहुत जादा हानि पहुँचाता है। बल या शक्ति का बोझ उठाना इतना आसान नही है। यह बोझ आपको निचोड सकता है या आपको कुचल भी सकता है।

इसमे कोई संदेह नही है कि हर मनुष्य का अपने शरीरे और चेतना पर पुरी तरह से नियंत्रण होना चाहिए , लेकिन इसका मतलब आत्म-यातना और खुदको मार देना बिल्कुल नही है। एक अच्छा घुडसवार चाबुक का तभी इस्तेमाल करता है जब इसकी बहुत ही जादा जरुरत महसूस होती है।जैसा की प्राचिन लोग कहते थे ''एक मर्यादा के बाहर बिल्कुल नही''। कोई भी काम का अगर हम अतिरेक करेंगे तो उससे कुछ भी परिणाम नही निकलेगा, कभी-कभी तो उससे विपरित परिणाम भी होगा, अगर आप सही समय पर खुद को रोक नही सकोगे और अपने आवेग को विवेक से शांत नही कर सकोगे।

ऐसा हमेशा होता है कि योग के प्रशिक्षण की शुरुआत मे लोग योग की विचार-धारा से परिचय हो जाने के बाद तुरंत किसी चमत्कार की या अदभुत परिणामों की अपेक्षा करते है। ये बात सही है कि आप जल्दी ही परिणाम देखेंगे और कभी-कभी वो आपके अपेक्षा से अधिक भी हो सकते है। सबकुछ आपके व्यक्तित्व के उपर निर्भर करता है। सवसे पहले आपके प्रयास सही दिशा मे होने चाहिए, अपने अपनी उर्जा का इस्तेमाल सही ढंगसे करना चाहिए उसके बाद ही आपको लाभ प्राप्त हो सकते है। ऐसी

स्थिती मे अपने प्रयासों का सही इस्तेमाल करने का वास्तववादी और हमारी अमर्याद क्षमताओं के प्रकटीकरण का सिर्फ योग यही एक सबसे लाभदायक मार्ग है।योग के चार भागवाले मार्ग मे प्रवेश करने से और बल-ज्ञान-प्रेम-नि:स्वार्थता इस चार सूत्रों का इस्तेमाल करने से हमारे सामने उज्वल भविष्यकी संभावना निर्माण होती है। इस मार्ग पर चलने से ज्ञान के महासागर के गुप्त गहराई तक हम पहुँच सकते है, जिसके बारेमे हम सपने मे भी नही सोच सकते। हमारे चारो ओर की यह दुनिया विलक्षण है, आपको उसे सिर्फ देखना है और समझना है। गहरी एकाग्रता से विचार करना, एकाग्रता का निरंतर दृढ प्रशिक्षण, आध्यात्मिक और नैतिक पुनरुत्थान की दिशामे निरंतर आत्म-परिपुर्णता का प्रयास,आत्मसंज्ञान और सत्य की दिशामे लगातार चलना इन सारी बातों से हम अपने अंदर के ज्ञान की आँख को ढूँढ सकते है, यह शिव का नेत्र होता है और उसकी मदद से हम हमारे अंदर निद्रित अवस्था मे होनेवाली क्षमताओंको और शक्ति का जागृत कर सकते है, जिसकी मदद से हम चमत्कार कर सकते है।

अच्छी फसल प्राप्त करने के लिए आपको भुमिको हल से जोतना चाहिए, उसने बीज बोना चाहिए और उसमे से पौधा निर्माण होनेकी प्रतिक्षा करनी चाहिए और अंतमे इन पौधोंकी अच्छी तरह देखभाल करनी चाहिए। इसलिए आपके मन की भुमि को प्रबल इच्छा-शक्ति के हल मे जोतना चाहिए और ये प्रक्रिया सत्य के प्रति निष्ठा रखके करनी चाहिए. उसके बाद उसमे ज्ञान के बीज बोने चाहिए। और अपने मन के भुमि से गर्व, और आत्म-दंभ,गुस्सा, झुठ,पाखंड, बनावटी पुण्य और लोभ के जंगल घास को काटकर फेंक दो। अपनी जागृत आत्मा को बढते हुए आत्म-विश्वास और अपने क्षमताओंपर विश्वास के साथ सर्वव्यापी प्रेम और नि:स्वार्थतता की मदद से और बलवान बनाओ, उससे आपको ज्ञान,उच्च ज्ञान का फल प्राप्त होगा। आप क्लेश, आपके अमर स्वरुप के बारेमे अज्ञान से और कठोर कर्म की श्रुंखला से मुक्त हो जाओगे। आपको परिणाम की चिंता नही करनी चाहिए, वो अपने आप प्राप्त हो जाएँगे, आपको सिर्फ योगी के सत्य के दिशा मे आत्म-परिपुर्णता के लिए निरंतर काम करना चाहिए, लेकिन इसमे जल्दबाजी नही करनी चाहिए। यहाँ जल्दबाजी दुसरे किसी भी काम की तरह हमे आपत्तिमे

डाल सकती है। यहाँ मुझे एक पुरानी रुसी कहावत याद आती है।''आप सरपट दौडने से भुमिको जोत नही सकते''

जल्दबाजी करने से हम कहाँ जा सकते है, आप इसकी कल्पना कर सकते है? जैसा की कवी कहता है''हम कहाँ दौडेंगे, क्यो दौडेंगे? अगर हम भारतीय कर्म के सिध्दांत को दिल से स्विकार करते है, तो आपके आगे शाश्वतता है, आपके पिछे शाश्वतता थी और इस समय भी आप शाश्वतता मे है - फिर जल्दबाजी करने की, खुद को कष्ट देनेकी, उत्तेजीत करने की क्या आवश्यकता है। कृपया मुझे ठिक तरहसे समझे, मै आपको आलसी और गतिहीन होने के लिए नही कह रहा हूँ, या आपको सपने मे खोने के लिए प्रवृत्त नही कर रहा हूँ। मनुष्य को अपने गती से खुद के कर्तव्य को निभाते हुए अपने मार्गपर,जैसा की भारत मे कहा जाता है ''अपने'' खुद के धर्म का निर्माण करते हुए आगे जाना चाहिए।

हमारा अतीत हमारा कर्तव्य को निर्धारित करता है और उसे सपूर्ण अध्यवसाय से निभाना चाहिए। आपको सौपा हुआ काम ठिक तरह से पूरा करना चाहिए। यह कोई भाग्यवाद नही है और इसका मतलब यह नही है की हमारे उपर किसी अंध भाग्य का नियंत्रण है और उसे विरोध करना बेकार है। मेरे कहने का मतलब बिल्कुल ऐसा नही है। हमारे उपर अगर किसी का नियंत्रण है, या कोई चिज लटक रही है तो वह हमारा अतीत है, अतीत के हमारे कर्म है। और फिर इसका मतलब यह नही है कि कर्म की अटूट श्रृंखलाओं का हम विरोध नही कर सकते। हम अपने अतीत से, कर्म की श्रृंखला से मुक्त हो सकते है क्योंकि हम ने अपनी इच्छासे खुद को इन अटूट दिखनेवाली श्रृंखला मे बांध दिया है। हमारे इस आखरी निष्कर्ष का मतलब है हम अतीत के बोझ से,कर्म की श्रृंखला से मुक्ती प्राप्त कर सकते है, मनुष्य अपने असीम महानता के और सही शाश्वत स्वरुप के बारे मे अज्ञान के जाल से संपूर्ण मुक्ती प्राप्त कर सकता है और यही जीवन का सर्वोच्च अर्थ है, सर्वोच्च उद्देश्य है, हम कह सकते है की इसका मतलब जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च अर्थ भी हो सकता है। योग के मार्ग पर इस उद्देश्य को उसके सर्वोच्च अर्थ मे हम आसानी से प्राप्त कर सकते है। हम योग की शक्ती के मदद से कर्म की इन अटूट श्रृंखला को तोड सकते है। इस समस्या के बारेमे भगवद-गिता मे बिल्कुल ऐसा ही कहा गया है:

आपने मन के तर्क को काफी सुना है।

अब योग के प्रकाश को खोज लो और उसकी आवाज सुनो।

उसके नियमों का पालन करने के लिए तैयार हो जाओ।

और कर्म के बदलेकी श्रृंखला तोड दो।

और उसके बाद :

फल की महत्वाकांक्षा मत रखना, उसके आनंद की

तुम्हे कोई आवश्यकता नही है।

लेकिन तुम्हे कुछ भी कृती न करके भी

बैठना नही चाहिए।

दु:ख और सुख ये संसारी चिंता है।

उनको भुल जाए और योग के संतुलन का आनंद

प्राप्त किजिए।

योग के सामने कोई भी कृती का महत्व नही है

क्योंकि वह बनावटी है।

और अच्छे भाग्य को खोजनेवाले लोग

बेकार होते है।

फल को त्याग दो, जन्म श्रृंखला से

खुद को मुक्त कर दो,

और आप वैराग्य और मुक्ती प्राप्त करेंगे।

(बीव्हीएल, महाभारत, रामायन, मास्को, बेट-लेर्टस प्रकाशन, १९७४, पन्ना-१७७-१७८)

ये उध्दरण थोडा लंबा हो सकता है, लेकिन आप मुझसे सहमत होंगे कि ये बहुत महान शब्द

है । बहुत ही प्रतिभावान शब्द है । इस संकल्पना का वर्णन करने के लिए और अच्छे शब्द नही मिलेंगे । योग के मार्ग को कार्यान्वित करके हम हमारे अंदर के जीवन-अस्तित्व के महान एकता के सत्य को समझते है, हमारे दिलसे हम अपने और अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजों से होनेवाले हमारे बंधन को समझते है । लेकिन भलाई क्या है और बुराई क्या है ? हमें सत्य की ओर ले जानेवाली सभी चिजे भली होती है, सत्य से हमे दूर ले जानेवाली सभी चिजे बुरी होती है । ये बात मेरे लिए बिल्कुल स्पष्ट है :

हमे अलग करनेवाली सभी चिजे बुरी है, हमारे बिच एकता निर्माण करनेवाली चिजे भली है । मेरा अस्तित्व सभी मे है और मेरे अंदर सबका अस्तित्व है - यही जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च सत्य है और इसे हम मुक्ती का दार्शनिक सूत्र कह सकते है या जिवन के गहरे सार का प्रकटीकरण भी कह सकते है ।

अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजों की एकता - यह प्रकाश की विजय है ।

सत्य हमे भलाई और बुराई दिखाता है ।

एकता का निर्माण करनेवाला सब कुछ भला है ।

लोगों को अलग करनेवाला सब कुछ बुरा है ।

अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजों की एकता - यह हमारी दुनिया का सार है ।

एकता को मूर्तरूप देनेकी दिशा में जानेवाला मनुष्य ही ज्ञानी है ।

भला काम करके, बुराई को जलाकर और खुद के अंदर की बुराई को बाहर निकालकर

वह दुसरोंकी भलाई करता है ।

अपने खुद के अंदर सत्य को कैसे कार्यान्वित करना, यह अलग सवाल है । आत्म-दमन और वैराग्य निश्चित रूपसे इस कठिन काम मे महत्वपूर्ण भुमिका निभा सकते है लेकिन यह वैराग्य विवेकी होना चाहिए इसमें कोई संदेह नही है, आपको वैराग्य का उपयोग करनेका अधिकार होना चाहिए, उसके बाद निरंतर आत्म-परिपुर्णता और बढनेवाली नैतिक परिपूर्णता की प्रक्रिया जारी रहेगी । दुसरी सभी चिजोंकी तुलना मे अनुष्य की नैतिक तैयारी तेज होना अधिक उचित है ।

भारत मे जैनवाद नामक एक दार्शनिक शाखा है, यह बुध्दधर्म की तरह अपारंपरिक है, इसका मतलब है यह दार्शनिक प्रणाली वेदों के अधिकार को स्विकार नही करती । इन विचारोंके सबसे उत्साही अनुयायी चलते समय अपने आगे का मार्ग एक विशेष प्रकार के झाडु का इस्तेमाल करके साफ करते है क्योंकि वो किसी भी जिवित किडो-मकोडों को वि हानी नही पहुंचाना चाहते है । उनमेसे कुछ अनुयायी अपने शरिर को अनेक सालो तक साफ नही करते ताकी शरिरपर होनेवाले जन्तु मर न जाए । सभी अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजों के बारे में प्यार यह बहुत ही महान विचार है, लेकिन अहिंसा, दूसरों को हानी नही पहुंचाना इस तत्वको कार्यान्वित करते समय हमने उसको मूर्खता, की चरम सिमा तक नही ले जाना चाहिए । हर मनुष्य ने सभी काम मे मर्यादा और संतुलन की ओर हमशा ध्यान देना चाहिए । मै बार बार दोहराता है कि योग सबसे पहले संतुलन, संयम और चित्त के आवेग का त्याग करना ही है, आपको अगर अच्छा लगता है तो आप योग का यही अर्थ है ऐसा समझ सकते है ।

यहाँ मै एक बात विशेष रूप से कहना चाहता हूँ । अगर कोई मनुष्य योग का मतलब उदासिनता और हस्तक्षेप नही करता ऐसा समझता है तो वह बिल्कुल गलत है । निष्क्रियता और उदासिनता एक जैसे लगते है, लेकिन उनका सार एक दुसरे के बिल्कुल विरोधी है । एक तरफ उदासिन, रूखा और दुसरों के प्रति सहानुभूती नही रखनेवाला मनुष्य होता है, दुसरी तरफ संयमी, खुदपर नियंत्रण होनेवाला और अपने क्रोध को काबु मे रखनेवाला मनुष्य होता है । अहंकार, आत्म-प्रेम, अनियंत्रीत क्रोध, अज्ञान से प्राप्त बनावटी पुण्य यह एक बात है और दार्शनिक ने चित्तके आवेग को त्याग करना, जिसका आधार है : विभिन्न चिजों के और घटनाओंके सार को समझना । यही विचारक, योगी और मुनियोंका चित्तके आवेग को त्याग करना होता है ऐसा आप समझ सकते है ।

चित्त के आवेग को त्याग करने का आधार विवेक या ज्ञान है, उदासीनता का मूल अज्ञान मे है । चित्त के आवेग का त्याग करनेका मतलब है अहंकारी इच्छाओंको छेड देना, उच्च ज्ञान और सर्वव्यापी प्रेम के आधारपर काम के परिणामों के प्रति कोई चिंता या अपेक्षा नही करना । उदासीनता, गुस्सा, झुठ और लोभपर आधारीत है । चित्त के आवेग को त्याग करना यह आपके अच्छे कर्म का परिणाम है और

इसके लिए अपने क्षमताओं पर दृढ विश्वास, अटूट इच्छा शक्ति, आत्म-निर्भरता, भय से मुक्ती, इन गुणोंकी आवश्यकता है। उदासीनता, दुर्बलता, अपनी क्षमताओंपर अविश्वास इन चिजोंपर आधारित है। चित्त के आवेग को त्याग करने से आत्म-दमन और संयम की उज्ज्वल उर्जा प्राप्त होती है, उदासीनता, निरूत्साह, कायरता, अमानुषता और लोगों के प्रति अपमान की भावना इन चिजोंका परिणाम है।

उदासीन बनना बहुत आसान है : ज्ञान की मदद से चित्त के आवेग का त्याग करने का मार्ग बहुत कठिन है। आप बडी सहजता से उदासीनता ही चित्त के आवेग का त्याग करना ऐसा मान सकते है, हर उदासीन अनुष्य कह सकता है, वह रूखा और विचारशून्य नही है, बल्की उसने चित्त के आवेग को त्याग किया है। यहाँ हमारी नैतिक तैयारी के स्तर की बात कर रहे है, सबसे पहले इसका अर्थ है ज्ञान का स्तर। बनावटी चिजोंको को खोजना और गहरे ज्ञान और विचारोंपर आधारीत असली पाण्डित्य और उसका जाली स्वरुप अज्ञान इनमे फर्क महसूस करने के लिए कोई दिव्य दृष्टी की आवश्यकता नही है। बनावटी पुण्य और पाखंड को हम महान एकता के सत्य के ज्ञानपर आधारीत अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजों के प्रति सर्वव्यापी प्रेम से असानी से अलग कर सकते है। उपनिषदों मे (जिनके बारे में आपको बाद में बताऊंगा) कहा गया है ‘‘ उपवास से उंचा वैराग्य नही होता है। सबसे पहले मैने एक साल तक हर सप्ताह एक दिन उपवास किया। बाद में मैने तिन दिन लगातार भोजन के बिना रहने के लिए अपने मन को तैयार किया। उसके बाद मै सालमें लगातार दो सप्ताह भूखा रहा और ऐसा मैं तिन साल तक करता रहा। मै आपको यहाँ चेतावनी देना चाहता हूँ कि भूखे रहने की प्रक्रिया, बहुत खास और जटिल है औस उसका आपने सावधानी से इस्तेमाल करना चाहिए। इस-तिन स्तर के उपवासो ने मुझे न केवल इच्छा-शक्ति मजबूत होने का फायदा हुआ, बल्कि इसके कारण मेरे शरीर में फिरसे यौवन का निर्माण हुआ और मै अच्छा महसूस करने लगा।

उस समय मैने अपने आहार की तरफ विशेष ध्यान दिया। इंद्र देवी ने अपने ‘‘सब के लिए योग’’इस किताब मे कहा है कि तिबेट मे घुमनेवाले एक यात्री ने एक बार किसी बुध्द संन्यासी का पवित्र

स्तोत्र सुना और उसके बाद उसकी मांस खाने की इच्छा नही हुई । इंद्र देव ने खुद के बारे मे कहा है कि कृष्णमुर्ती के प्रवचन सुनने के बाद उनके मन मे इसी प्रकार की इच्छा निर्माण हुई । मै भी इस तरह अपने बारे मे कह सकता हूँ,फर्क सिर्फ इतना है की स्वामी विवेकानंद की किताबे पढने के बाद मांसाहार के खिलाफ मेरे मनमे विपरित भावना निर्माण हुई। उसके बाद मैने मांस, अंडे और मछली खाना छोड दिया और आज तक मै इस मांसाहार न लेनेके संकल्प का पालन कर रहा हूँ।

हमारा आहार बहुत महत्वपूर्ण है । विवेकी, वैराग्य, आत्म-दमन और हमारे बाकी कृत्यों के साथ उसकी महत्वपूर्ण भूमिका है । जिस प्रकार पौधों की शुरूआत मे रक्षा की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार हमे बाहरी बुरी शक्तियों के प्रभावसे बचने के लिए कुछ करना चाहिए। उसके बाद मनुष्य जब आत्म-नियंत्रण करना सिखता है, इन सब चिजों की शुरूवात की अवस्था की तरह इतनी महत्वपूर्ण भुमिका नही रहती है।

भारत मे एक लोकप्रिय कहावत है '' मनुष्य का आहार ही उसका स्वरुप निर्धारीत करता है'' यह सच है क्योंकि जब हम किसी चिज को खाते है तब हम उसका हमारे विचार, चित्तवृत्ती और मानसिक स्थिती पर असर होता है। इसलिए हम आहार का शुध्द और अशुध्द जैसा वर्गीकरण कर सकते है। महान भारतीय दार्शनिक, पंडित, और सामाजिक नेता शंकरने (शंकर यह भारत के सर्वोच्च परमेश्वर शिव का एक और नाम है, उसका अक्षरश: अर्थ है ''आशिर्वाद देनेवाला, सबका भला करनेवाला'') कहा था जी अशुध्द आहार तिन प्रकार का होता है। सबसे पहले हमारा अन्न दुसरे बाहरी चिजों के कारण अशुध्द हो जाता है। दुसरे प्रकार मे हमारा अन्न उसके स्वरुप के कारण अशुध्द होता है। तिसरे प्रकार मे हम अशुध्द हाथोसे अन्न लेनेसे वह अशुध्द हो जाता है। इसलिए प्राचिन भारत मे रसोइया सिर्फ ब्राह्मण होते थे, इसका मतलब है सिर्फ सर्वोच्च जाती के लोग, जिनकी आत्मीक स्तर और उद्देश्यो की शुध्दता सर्वोच्च होती है, रसोइया बन सकते थे। यह कोई आकस्मिकता नही थी।

मै एक महत्वपूर्ण बात की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। आपने कभी भी कोई किताब का अक्षरश: अर्थ नही लेना चाहिए, भले वह किताब कितने भी महान व्यक्तिने या महान हस्ती

ने क्यो न लिखी हो। आपने उनकी सलाह बिना सोचे-समझे नही माननी चाहिए, किसी के विचारोके या किसी किताब के अनुसार काम करने से पहले आपने स्थान, समय और अपना व्यक्तिगत विशेषताए इन चिजो के बारेमे सोचना चाहिए। अगर ऐसा नही करेंगे तो आप खुद को बुरी तरह हानी पहुंचा सकते है, ओर आपके जल्दबाजी मे निकले हुए निष्कर्ष और महान हस्तीयो के मतो के बारेमे आपकी अविवेकी भुमिका इन बातो के घातक परिणामो को दूर करना इतना आसान नही है।

मैने स्वामी विवेकानंद के किताबो मे पढा है कि जो आदमी जल्दी यह प्राप्त करना चाहता है, उसकी आहार मे सिर्फ दूध और रोटी जैसे पदार्थ होने चाहिए। मैने तुरंत अपने आहार मे दूध चावल, गाजर और सब के अलावा और कुछ भी नही रखने का संकल्प किया। दस साल तक मेरे इस आहार मे कुछ भी परिवर्तन नही हुआ। यह बात सही है कि उससे मुझे अच्छे परिणाम प्राप्त हुए, लेकिन यहाँ मेरे जिवनमे और एक सकारात्मक मोड लानेवाली घटना के बारेमे बताना आवश्यक है (उसके बारेमे मै आपको बादमे ब्यौरा पेश करुंगा) इस प्रकार के आहार के बाद मेरे स्वास्थ्य की क्या स्थिती हो जाती यह सिर्फ परमेशवर ही जानता है।

हम समझते है कि योगी के शरीर के अवयव किसी तरह अपनी स्वतंत्र भुमिका निभाने लगते है। मै इस बातमे पूरी तरह सहमत नही हूँ, लेकिन एक बात मै जरुर कहना चाहता हूँ : जब मै सामान्य आहार की ओर वापस आया तो मेरा पेट बहुत ही आलसी और निष्क्रिय हो गया, वह अब दूध और चावल के अलावा कोई भी पदार्थ स्विकार नही करता था। मुझे अपने पेटकी और अंतत: अपने स्वास्थ्य को फिरसे सामान्य स्थिती मे लाने के लिए बहुत प्रयास करने पडे।

मैने आत्मत्याग और वैराग्य के मामले मे और कुछ प्रयोग किए, लेकिन मै आपको उनका ब्यौरा नही देना चाहता हूँ। मै फिर से एक बार दोहराना चाहता हूँ कि आप इन सब बातो मे जादा दिलचस्पी न रखे। एक बात आपको कभी नही भूलनी चाहिए : योग का सबसे महत्वपूर्ण अर्थ है – संतुलन ।

उस समय और बाद मे भी मैने भारतीय दर्शन पढने की और उसे अच्छी तरह समझने की प्रक्रिया निरंतर जारी रखी। इस क्षेत्र की अनेक महत्वपूर्ण और चित्तरंजक किताबों का मैने पूर्ण रुप से अध्ययन

किया। उदाहरण के लिए मै कह सकता हूँ कि मैने महाभारत के संबंध मे हर किताब पढी। भारत के इस महान महाकाव्य के सभी खंडो का रुसी भाषाा मे अनुवाद हो गया है। लेकिन मुझे कभी भी पुर्ण रुप मे समाधान प्राप्त नही हुआ। निरंतर विचार और चिंतन की प्रक्रिया को बढावा देनेवाली कोई भी किताब मुझे प्राप्त नही हुई। सबसे पहले मुझे लगा की पतंजली के योग-सूत्र इस किताब की मुझे सबसे जादा आवश्यकता है। योग-सूत्र मे चार अध्याय समाविष्ट है। प्राचिन भारतीय परंपरा के अनुसार हमे दिनमे चार बार योगासन करने चाहिए : सुबह, दोपहर को, शाम को और मध्यरात को। मै मध्यरात को योगासन नही कर सका, इसलिए मै दिन मे तीन बार योगासन करता हूँ। इसलिए मैने हर योग-सूत्र के किसी एक अध्याय के बारेमे चिंतन करने का फैसला किया। मैने योग-सूत्र का एक अध्याय जबानी याद किया और उसका चिंतन के लिए इस्तेमाल किया,उसके बाद मैने दूसरा अध्याय जबानी याद किया और जब मैने तिसरा अध्याय पढना शुरु किया तो मुझे लगा की मै जिस चिजकी खोज कर रहा हूँ वह इसमे नही है। यह बात अब मेरे लिए बिल्कुल स्पष्ट है, लेकिन उस वक्त यह मेरी बिल्कुल सन्दिग्ध भावना थी या शायद यह मेरे कल्पना का खेल था।

लेकिन जब मै उपनिषदो को पढना शुरु किया, तब मुझे तुरंत महसूस हुआ की मुझे केवल इसी चिजकी प्रतिक्षा थी (यहॉ मै एक बात कहना चाहता हूँ-उपनिषदो को समझना बिल्कुल आसान नही है)। स्वामी विवेकानंद अपने भाषण और चेतावनीयो मे हमेशा लोगोको उपनिषदोका फिरसे अध्ययन करने की अपील करते थे। वो कहते थे ''उपनिषदोके जगमगाते असली और उज्वल दर्शन का फिरसे अध्ययन करो।

मैं पहले भी आपको बता चूका हूँ कि उपनिषद ये विशाल और पवित्र भारतीय ग्रंथ है, जिसका विचार-तत्व और गुप्त अर्थ उसके विस्तार से भी जादा विशाल है। उपनिषद का अक्षरश: अर्थ है '' गुरु के पैरो के पास''। दूसरे शब्दोमे कहा जाए. तो आप अनुभवी गुरु की मदद के बिना उपनिषदोमे छिपा हुआ अर्थ नही समझ सकते है। लेकिन इस नियम का हमेशा अपवाद होता है।

मानवता ने उपनिषदो मे दार्शनिक विचारोंकी जितनी उंचाई हासिल की है उतनी और किसी भी ग्रंथ ,मे कभी भी नही की है। पश्चिमी दार्शनिक आर्थुर श्कोपेनहाउएर उपनिषदो के बारेमे कहते है : ‘‘उपनिषिदो की तरह शास्त्रीय, आनन्दकर और मनुष्य को ज्ञान के उंचाई पर उपर उठानेवाला दूसरा कोई भी ग्रंथ नही है। यह सर्वोच्च ज्ञान का फल है। आज नही तो कल यह लोगो के श्रध्दा का विषय हो जाएगा। उपनिषदो को पढना मेरे लिए जिवन का बहुत बडा आनंद था और मृत्यु के समय यह मेरे लिए दिलासा होगा’’। (भारतीय साहित्य का वाचनालय, भारत की खोज मास्को, बेललेटर्स प्रकाशन संस्था, १९८७, पन्ना ६९)।

तुलनात्मक दृष्टीसे कम विस्तार होने के बावजुद भी उपनिषदो मे विशाल आध्यात्मिक क्षमता समाविष्ट है। उपनिषदोमे गहरे और मौलिक विचारोका समूह है और उसके हमारे विचार-प्रक्रिया को बडी प्रेरणा मिलती है, इन विचारों का और जादा विकास करने की आवश्यकता है।

मुझे उपनिषदोंके तीन ग्रंथोको हाथेमे लिखना पडा, ये ग्रंथ मुझे वाचनालय के रिडींग रुम मे प्राप्त हुए थे। ये काम मैने इसलिए किया क्योंकि ये ग्रंथ मै हमेशा अपने पास रखना चाहता था। उसके बाद मै दिनका पहला हिस्सा उपनिषदो के बारेमे एकाग्रता से विचार करने मे बिताता था। बहुत जल्दी मैने सर्वोत्कृष्ट उपनिषद- बृहदाअरणयक जबानी याद किया ,इस को मै उपनिषदो की माता कहता हूँ और इसके विस्तार की तरह उसका विचार-तत्व और गुप्त अर्थ भी विशाल है। उसके बाद मैने इस उपनिषद को समान हिस्सोमे बांट दिया । योग के हर प्रशिक्षण मै इनमे से एक हिस्सो को दोहराता था, उसके बारेमे विचार करता था। इसी तरह कुछ समय बाद मैने इस उपनिषद की पढाई समाप्त की, उसके बाद मैने इस उपनिषद को बार बार दोहराया। इस प्रक्रिया को पूरा करने के लिए मुझे कई साल बिताने पडे और अंतत: मुझे लगा कि कुछ हद तक मै उपनिषदो को समझ सकता हूँ। उसके बाद उन्होने मुझे कोई प्रेरणा नही दी, मेरे विचारों के लिए कोई नया आधार नही निर्माण किया।

इसलिए मैने पश्चिमी दर्शन की ओर वापस आनेका फैसला किया। सबसे पहले मैने क्लासिकी जर्मन दर्शन का फिरसे अध्ययन शुरु किया। यह एक विशाल दार्शनिक प्रणाली है। शेलींग ने मुझे सबसे

जादा प्रभावित किया। उसके बाद फिश्टे हेगेल और काटं से भी मै प्रभावित हुआ। शेलींग अपने समानता के दर्शन के कारण मेरे सबसे निकट है। शेलींग दर्शन को परिपूर्ण करेंगे ऐसी अपेक्षा व्यक्त की जाती थी, लेकिन ऐसा नही हो सका (और यह स्वाभाविक है) लेकिन उन्होने ऐसा नही किया और वह ऐसा कर भी नही सकते थे। इसके अलावा शेलींग के नये ग्रंथ उसके पुराने और अमोघ ग्रंथो से बिल्कुल अलग है, दुसरे शब्दो मे उसके पुराने ग्रंथ इन नये ग्रंथो की तुलना मे काफी जादा अच्छे थे। शेलींग के इस पतन का फ्रेडरीक एंगल्स इस प्रकार वर्णन करता है : '' वह एक महान भविष्यवक्ता था लेकिन वह खुदको परमेश्वर समझने लगा और इसी कारण उसका पतन हुआ। उसने नये युग के आगमन को पहलेही भांप लिया था, लेकिन वह उस युग-भावना के बहकावे मे आ गया और उसी मे डुब गया। कई बार उसे अपने खुद के शब्दोका अर्थ मालुम नही था। उसने दार्शनिक विचारो के विकास के लिए अपने दरवाजे पुरी तरह खोल दिये क्योंकि वह अमूर्त विचारोंको प्रकृती के सांसो से मूर्त स्वरुप देना चाहता था और वसंत ऋतु की गरम किरणो से संकल्पनाओं के बीजो को बल देना चाहता था। लेकिन वह अग्नी अपने आप बुझ गयी, वीरता लुप्त हो गयी, उनके नये विचार ठिक तरह से स्थापित होने से पहले ही नष्ट हो गये''। (शेलींग, सोव्हिएत संघ की शास्त्र अकादमी, दर्शन संस्थान, 'मिसल' प्रकाशन संस्था, मास्को १९८७. खंड १ पन्ना ५)

पश्चिमी दार्शनिकोमे मुझे स्पिनोझा भी अच्छा लगता है। मै उनके परमेश्वर के स्वरुप के बारेमे तत्व और अर्थ की सराहना करता हूँ। निकोलाई कुझानस्की की ''पांडित्यपूर्ण अज्ञान'' यह संकल्पना मुझे बहुत अच्छी लगती है। लेबनीझ का पर्याप्त कारण का नियम, ग्रिक विचारक विशेषत: प्लेटो की ''कल्पना'' और प्रसिध्द संवाद, इनकी ओर मैने विशेष ध्यान दिया है।

उसके बाद जैसे मै इस दिशा मे आगे बढता गया तो मुझे पुरा यकिन हो गया कि पूर्वी और पश्चिमी दर्शन जैसा कुछ नही है, केवल एक सामान्य दर्शन है जो सत्य, शाश्वतता और मनुष्य के बारेमे एक शास्त्र है। कुछ विशिष्ट परिस्थिती के कारण भारतीय विचारक सत्य को समझने के मार्ग पर पश्चिमी विचारको की तुलना मे बहुत आगे निकल गये।

तिसरी बार दो सप्ताह भूखे रहने को तुरंत बाद मैने अपनी किताब लिखना शुरु किया और यह काम मै आज भी कर रहा हूँ। मैने अपनी पहली सुक्ति लिखकर उसके निचे तारीख डाल दी।उसके बाद मैने अपनी सारी सुक्तिया कालक्रमबध्द स्वरुप मे लिखी। यह मन के विकास और रचना की, संकल्पना गहन होनेकी प्रक्रिया की और योग के मार्ग पर आगे जान की, सत्य को समझने के मार्ग पर आगे जाने की मिसाल है।

१२ साल लगातार लिखने के बाद मुझे लगता है की मैने एक नये उपनिषद की रचना की है, उसको मैने ''महान एकता का दर्शन'' ऐसा नाम दिया है। उसके चार मूलतत्व इस प्रकार है :

१. अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजों की एकता यह जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च सत्य है और जीवन-अस्तित्व के इस सर्वोच्च सत्य का मनुष्य केंद्र है, मनुष्य जीवन-अस्तित्व के वास्तविकता का भी केंद्र है और जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च मूलतत्व है।

२. कठोर और निष्पक्ष कर्म का नियम जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च नियम है। यह अतीत के कर्मोका फल भोगने की अनिवार्यता का नियम है, यह महान संक्रमण का नियम है। मनुष्य की अहंकारी इच्छा-शक्ति की संपूर्ण स्वतंत्रता ये इस नियम का आधार है। मनुष्य जीवन-अस्तित्व की महान एकता का केंद्र है।

३. आत्मसंज्ञान और आत्मावलोकन जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च अर्थ है। इसमे मनुष्य ने अपने असली अमर निरपेक्ष स्वरुप को जानना अपनी असीम महानता को जानना शामिल है।

४. क्लेश से मुक्ती, कर्म की बेडी से मुक्ती, अज्ञान की जालसे संपूर्ण मुक्ती, अलगाव के महान भ्रम से संपूर्ण मुक्ती यह जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य और अर्थ है।

''अगर सच कहा जाए तो जो यहॅा होता है वही वहाँ होता है वह यहॅा भी होता है। वह मृत्यु से मृत्यु तक वही जा सकता है जो यहॅा कुछ न कुछ अंतर के रुप मे देखता है (कथा-उपनिषद, ११,१९-१०)। यह उपनिषदो का मुख्य और सर्वोच्च विचार है और यही जीवन-अस्तित्व के महान एकता का विचार है।

यही विचार आपको महान एकता के संपूर्ण दर्शन मे मिलेगा। उपनिषदोके क्लासिकी विचारोसे इस दर्शन को प्रेरणा प्राप्त हुई है। महान एकता के दर्शन को तीन भाग मे वर्गीकरण किया गया है''।

१. विजनपाद या एकाग्रता का दर्शन, अंतर्ज्ञान का दर्शन, चिंतन का दर्शन।

२. ज्ञान–गिता, आठ अध्यायो से बना हुआ काव्य–उपनिषद।

३. गित–उपनिषद, चिंतन या ध्यान गीत।

विजनपाद या एकाग्रता के दर्शन मे दो किताबे शामिल है। सूक्तियों के शैली के कारण पहली किताब को समझने के लिए लेखक और पाठक दोनो के लिए मन के प्रचंड काम और गहरी–एकाग्रता के साथ विचार–प्रक्रिया जारी रखना बहुत आवश्यक है। पाठको ने लेखक जैसा दर्जा प्राप्त करना चाहिए और उन्होने लेखक के साथ एकरुप होना चाहिए। विजनपाद की दूसरी किताब की शैली प्रकटीकरण की पश्चिमी शैली से मिलती–जुलती है और उसमे भारतीय और पश्चिमी दर्शन के विचारों का संयोग किया है। हमारा विवरण अब समाप्त होनेवाला है। यहाँ मै आपको और एक प्रश्न के बारे मे बताना चाहता हूँ। योग के मार्गपर चलते समय आपको आत्मिक रुप से आप के निकट होनेवाले अनेक लोग मिलेंगे। उसके बाद आप अगर अपेक्षा या प्रतीक्षा नही भी कर रहे हो तो भी यह भेट हो जाएगी। अगर आप ऐसी भेट के लिए तैयार नही है तो वह आपके नजरो से छुट सकती है। मेरे साथ ऐसा ही कुछ हुआ। मै अपनी सहेली से मिला, जैसा की उपर कहा गया है वह मेरे दिल के करीब थी, वह मेरे आईने के प्रतिबिम्ब की तरह थी। इस भेट के कारण मेर जीवन फिर एक बार बदल गया,उसने एक अच्छा मोड लिया। ऐसा लगा की प्रश्न अब दो गुना बढ गये है क्योंकि हमने उनका संयोग किया है, लेकिन वास्तव मे अब हमारे लिए उन प्रश्नो के जवाब खोजना बहुत ही आसान हो गया।

हम दोनो को ऐसा लगा की हम एक–दुसरे को कई सालोसे, कई सदियोसे खोज रहे है, लेकिन खोज नही पाये और अब अचानक हम मिले है। ऐसा लगा की प्लेटों का पारस्परिक आकर्षण का, समान स्वरुप के दो व्यक्तियों के बीच आकर्षण का नियम कार्यान्वित हुआ है। स्त्री के खुले स्वभाव के अनुसार उसने एक कविता लिखी जो मै यहा पेश करना चाहता हूँ :

तुम्हारे लिए

प्रकाश और खोये हुए समय के अंधेरे को पार करके, बिते हुए सालो के धुंद को पार करके,

एक आवाज निरंतर मेरे कानो तक पहुँच रही थी,

मुझे ऐसा लगा की कोई मुझे दूरसे पुकार रहा है।

शाश्वत सपनो के धुंद के निचे मुझे एक गूढ विस्तृत क्षितीज दिखाई देने लगा,

जहाँ मैं असली रुप मे प्रकट होती हूँ और मृगमरीचिका को पार करके आगे बढती हूँ,

जहाँ तुम लोगों के क्लेश दूर करते हो,

निरंतर भटकनेवाले मेरे प्रिय दोस्त, यही तेरे अंदर शांती का प्रवेश होता है।

तू मेरा निरंतर भटकनेवाला यात्री है और मेरा स्त्रोत है।

उन्हे तुम्हारी लालसा है, वह प्यास से तडप रहे है,

उनके बिचमे मैं तुम्हे पाने का प्रयत्न कर रही हूँ,

तुम्हारे साथ मिलकर मै इस प्रारुप मे खुद को रखना चाहती हूँ।

और दूसरो के मिलन और बिछडने की वेदना

और नाजुक हाथोकी फुसफुसाहट, जो मै पहचानती हूँ,

और हर पल खोये हुए क्षण के पहचान का है।

मै तेरे अंदर हूँ, तू मेरी आंतरिक प्रेरणा और आश्रय है,

तू ही मेरा जन्म और मृत्यु है,

अभी तक कायम रहे श्रृंखला का नि:शब्द दर्द मिटा नही है

अभी तक अदृष्य शिखा प्रकट नही हुई है।

हम योग और सत्य के बारेमे, उद्देश्य और मार्ग के बारे मे बहुत कुछ बोल सकते है, यह कभी भी समाप्त न होनेवाला विषय है।

जीवन–अस्तित्व के अर्थ के बारे मे बहुत कुछ कहा गया है,

लेकिन दोस्तो मै फिर भी आप को एक बात बताना चाहता हूँ,

जीवन का मुख्य उद्देश्य जीवन ही है, और जीवन शाश्वत चक्र है,

यह ऐसा मार्ग है, जहां आरंभ और अंत का एक–दूसरे मे विलय हो जाता है।

बिजली की चमक

१.	जैसे शहद मिठाई का राजा होता है,
वैसे ही ज्ञान जीवन–अस्तित्व का शुध्द होता है।

२५–२६/३/१९८१

२.	जीवन–अस्तित्व की दुनिया मे
आत्मसंज्ञान से उंचा कोई ज्ञान नही है।

२५/३/१९८१

३.	संवेदना की आग को तत्परता से बुझाना
इससे जादा माननीय और कठिन प्रयोजन नही होता है।

२५/३/१९८१

४.	जैसे हम हरे घोडे को साज से शांत करते है,
वैसे ही आपने चित्त के आवेग की तीव्रता को संयम की
साज से शांत करना चाहिए।

८–१२/४/१९८१

५.	आप चित्त के आवेग को इच्छाओ मे निश्शक्त नही कर सकते,
उसी तरह आप बुराई को हिंसा मे नष्ट नही कर सकते।

८–१२/४/१९८१

६.	जिस प्रकार बादल सूरज की रोशनी को रोकता है,
उसी प्रकार ज्ञान का प्रकाश माया के पर्दे के पिछे छिप जाता है।

९/४/१९८१

७.	जैसे परवाने ज्योती की तरफ उडने से खुदको रोक नही सकते,
उसी प्रकार विचारों का मण्डलाकार नृत्य सत्य के मण्डल मे गाता है और नाचता है।

९/४/१९८१

८.	अतीत की छाया की तरह

इच्छाओ के मार्ग पर पीडा हमे जरुर खोज लेगी।

९/४/१९८१

९.	स्वच्छ अन्न मे विचारो की शुध्दता की तरह

भाग्य का रहस्य दयालुता मे छिपा होता है,

और बल का उद्‌गम शुध्द इरादो मे छिपा होता है.

५-१६/४/१९८१

१०.	अहंकार का पत्थर अपने साथ अज्ञान को ले जाता है,

हमारे अंदर इच्छाओं के गोले का आकार बढ जाता है

और हम चित्त के आवेग से अन्धेपन के रसातल मे डूब जाते है।

२१-२२/४/१९८१

११.	जिस प्रकार मधुमक्खीयाके रक्षक को उद्विग्न करते है,

उसी प्रकार भावनाओ को वश मे करनेवाले को

विचारों का समुह घेर लेता है,

और इच्छाए एकाग्रता मे ज्ञान का शब्द खिंच लेती है।

२१-२२/४/१९८१

१४.	अगर हम इस दुनिया को एक मानते है,

तो बल इस विश्व की नीव है,

विचार उसकी ईट है, जो आत्म-चेतना और नि:स्वार्थ प्रेम से एकत्र जकड जाते है।

४-५/५/१९८१

१५.	आप अज्ञान को तर्क करने से और मतिहीन गप लगानेसे,

दूर नही कर सकते सिर्फ गंभीर ध्यान, नि:स्वार्थता,

अध्ययन और प्रेम आपको मदद कर सकते है।

१६–१७/४/१९८१

१६. जिस प्रकार सूरज हमेशा आकाश मे चमकता है,
उसी प्रकार प्रेम का न बुझनेवाला प्रकाश हमेशा हमारे अंदर चमकता है,
एकता के सत्य का प्रकाश हमेशा हमारे अंदर चमकता है।

१६–१/५/१९८१

१७. जीवन–अस्तित्व के अर्थ के बारेमे बहुत कहा जा चुका है,
लेकिन फिरभी दोस्ती मै और एक बात कहना चाहता हूँ :
जीवन का मुख्य उद्देश्य जीवन ही है, और
यह जीवन शाश्वत चक्र की तरह होता है,
यह मार्ग ऐसा होता है जहाँ आरम्भ और
अंत का एक दूसरे मे विलय हो जाता है।

१७–२८/५/१९८१

१८. कठोर कर्म के निष्पक्ष बदलेसे जादा
जीवन–अस्तित्व की दुनिया मे उच्च नियम नही है।

२१/९/१९८२

१९. एकता के सत्य को दिल से जानना,
इससे जादा उच्च उद्देश्य इस पृथ्वी पर नही है।

२–३/९/१९८२

२०. इस विश्व का स्वामी – मनुष्य,
जो निर्दय–निष्पक्ष कर्म का भी स्वामी होता है,
इससे उंचा परमेश्वर सूरज और चांद के निचे नही होता है।

२३/९/१९८२

२१. आपके अंदर के शाश्वत सत्य के उपर होनेवाला

माया का आवरण हटाओ,

इसके लिए आपको ज्ञान, प्रशिक्षण,

नि:स्वार्थता और प्रेम की आवश्यकता है।

१९/९/१९८३

ध्यान - गीत

गहराई

क्या हम पहले आनेवाले को रहस्य बता सकते है?
मुझे जो पता है वह मुझे किस को बताना चाहिए?
मेरी इस वक्त स्थिती ऐसी है कि मै
अपने रहस्य का सार दुनिया को नही बता सकता

ओमरखय्याम. रुबायात

फसल बीज बोनेपर निर्भर होती है,
आनेवाला क्षण आ चुका है,
परिणाम कारण मे छिपा हुआ है,
और फिर समय के बन्धन आ पडे है।

पौ फटते ही अंधेरा दूर हो जाता है
एक क्षण मे सदी और युग बदल जाते है,
नया दिन आनेतक सूर्यास्त हो जाता है,
और जनमो की बेडी से मृत्यु पुष्ट हो जाता है।

यह विश्व आशाओ से भरा हुआ है,
हमारी इच्छा– शक्ति का निर्माण इच्छाओ से होता है,
इच्छा–शक्ति के बाद हमारी कृती का अनुगमन होता है,
हमारी कृती हमारे जीवन का अरुणोदय होता है।

जहॅा द्वेष की ज्योती निरंतर जलती है,

जहॅा गुस्सा, लोभ और चित्त का आवेग उबालते है,
झुठ और बेईमानी राज्य करती है,
वहॅा भय,दु:ख और मृत्यु का राज्य होता है।

जहॅा भलाईका प्रकाश हमेशा चमकता है,
जहॅा इमानदारी और सत्य मित्र होते है,
जहॅा उदारता और चित्त का आवेग मुरझाते है
वहॅा जीवन, सुख और आनंद एक साथ रहते है।

जब आपकी कृती नि:स्वार्थ होती है,
जब आपका मन सौम्य होता है,
और आपका दिल प्रेम से साफ हो जाता है,
आप बुध्दि के ज्योती का प्रकाश देख सकते है।

कोई भी भाग्य मनुष्य पर राज्य नही कर सकता,
उसे मुक्त इच्छा–शक्ती का वरदान मिला है,
वह अपने भाग्य को वश मे रख सकता है,
उसका जनम शाश्वतता के चक्र से हुआ है
और वह सुंदर है। १३–१८/२/१९८१

<u>मार्ग</u>

हम महानता का अर्थ समझ सकते है,

सर्वोच्च एकता के चार स्तर के मार्ग का अर्थ है,
योग के प्रकाश का चार स्तर का मार्ग,
यह बल, ज्ञान, प्रेम और नि:स्वार्थतता का मार्ग है।

अतिरेक और संयम के अभाव से,
बिमारी, पूर्ण समाधान की स्थिती और अंधेपन पैदा होते है,
लोग संयम से आरोग्य, मनको लगाम
और धैर्य प्राप्त कर सकते है।

जादा या कम खाने से
हम भावनाओकी पूर्ण शक्ति महसूस करते है,
अगर हम भावनाओ को नियंत्रण मे बही रखते,
तो चित्त का आवेग अपना काम शुरु करता है।

जो एक के बाद एक इच्छाओ का ढेर लगाता है,
वह अपने मन और शरीर का स्वामी नही होता है,
वह अपने क्लेश और यातना बहुत बढाता है,
और उसके भाग्य मे केवल अंधेरा होता है।

अगर भावनाओपर लगाम होता है

और मन शांत होता है
अगर आपके विचार शरीर से उपर उड सकते है,
अगर शुध्द इच्छा-शक्ति का नियम हावी होता है,
तब आपके मन का दिल मे विलय होता है।

जो दयालुता से हमेशा चमकता है,
जो प्रेम का स्त्रोत इस दुनियामे लाता है,
उससे सभी जीवीत व्यक्ति प्रेरणा लेते है
और सूरज की तरह लोग उसे पवित्र मानते है।
जो अहंकार की बेडीया फेंक देता है,
जो मनुष्य के अंदर की नि:स्वार्थतता की प्रशंसा करता है,
जो सजा की श्रृंखला से मुक्त होता है
वह मृत्यु के शक्ति पर विजय प्राप्त करता है।

जो ज्ञान की आँख से मूलतत्व देखता है,
वह शाश्वतता को चमकते मन से पार करता है,
एकता का मार्ग यह उसका पारितोषिक होता है,
वह हम सब को अपने अंदर खोज लेता है।

२०-२४/२/१९८१

प्रकाश की ओर

यम का मतलब है किसी को हानी नही पहुंचाना, ईमानदारी,
दूसरोकी चिज नही हडप करना, संयम और उपहारो का
स्विकार नही करना।
आन्तरिक और बाह्य शुध्दता, तृप्ती, आत्म–दमन और ईश्वर की पूजा यही नियम है।

पतंजली योग–सूत्र ११,३०,३२

अगर दयालुता आपके अंदर निवास करती है,
अगर अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजे आपके दिल के पास है,
अगर आप कभी भी कहाँ भी दूसरो को हानि नही पहुंचाते,
आपका अस्तित्व शत्रुता को मिटा देता है।

जो मनुष्य झुठ पर निर्भयता से प्रहार करता है,
और सत्य की महानता को समझता है
उसका मार्ग ईमानदारी का मार्ग होता है,
और उसके शब्दो को बल प्राप्त होता है।

उसके विचार और शब्द सच्चे होते है,
उसकी कृती हमेशा उचित होती है
दूसरो से कभी भी कुछ न देनेका उसका नियम होता है,

और उसे वैभव और सामर्थ प्राप्त होता है।

जो ज्ञान से अपनी गलतीयाँ सुधारता है,
जो शुध्दता से अपनी भावनाओं को नियंत्रण मे रखता है,
और चित्त के आवेग को संयम से दूर करता है,
उसके अंदर प्रकाश के बल का स्त्रोत निर्माण होता है।

उसके अंदर उदारता चमकती है,
उसे आत्मत्याग का आनंद मालुम होता है,
और वो कभी भी उपहार स्विकार नही करता,
वह समय के पार चला जाता है,

जो खुद के उपर विजय प्राप्त करता है,
और जो शुध्दता को परिधान करता है
उसका शरिर और आत्मा दोनो पवित्र होते है,
वह सर्वोच्च आनंद प्राप्त करता है।

जो जागृति के मार्ग को खोजता है,
जिसकी आत्मा सत्य के करीब होती है,
जो रोजमर्रा की जिंदगी से संतुष्ट है,
वह सर्वोच्च आनंद प्राप्त करता है।

जो संयम के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करता है,

जो क्लेश के माध्यम से शुध्दता प्राप्त करता है,

वह दूरीयो को पुल बांधकर मिटा देता है,

और वह आत्म–दमन के माध्यम से आत्म–खोज करता है।

जो निरंतर विचार करता है,

जिसे पवित्र ग्रंथो का रहस्य पता है,

जो कवि–मुनियो की बात समझता है

उसे पार्वती अपनी प्रतिमा दिखाती है।

जो योग के प्रकाश का सत्य समझता है

उसके अंदर सर्वोच्च संगीत बजता है,

जो लोगो को अपना पूरा जीवन समर्पीत करता है,

वह पवित्र शंबाला के साथ होता है

२७–२–८/३/१९८

अंधेरे मे

लोगो को हमेशा बिना किसी सन्देह से विश्वास होता है कि संक्रमणीय चिजे उन्हे सत्ताधान नही दे सकती।

श्री शंकर आचार्य

विवेकी मनुष्य बाह्य नही बल्कि आंतरिक चिजोपर ध्यान केंद्रित करता है।

लाओ त्सी

जो भौतिक सुख का लक्ष्य सामने रखता है,
जो परम सुख इधर-उधर खोजता है,
वह शाश्वतता को परिमित मे खोजता है,
उसका मार्ग क्लेश और निराशा से भरा होता है।

जो किसी के साथ भी परिचय कर लेता है,
और खाने-पिने मे संयम नही रखता,
जो अव्यवस्था से परिपूर्ण जिवन से एक
प्रणाली का निर्माण करता है,
उसे हमेशा निंद की लालसा होती है ।

जिसे चित्त के आवेग की ज्योती को बुझाना है,
जो वायु के मिश्रण से आग बुझाने का प्रयास करता है,
जिसे अपनी भावनाओ को इच्छा से मिटा देना है,
वह अपने ही छाया मे दाह से छिपाने की
कोशीश करनेवाली चिजो को प्राप्त करता है।

जो अपना जीवन बेकार मूर्खता मे जीवन बिताता है,
जो विचारो को शब्दो के प्रवाह में डुबो देता है,
वह अपना ज्ञान वृथा खो देता है
और वह कभी-कभी अपने आपसे संतुष्ट नही होता है।

जो लोकप्रियता की तलाश मे होता है
और प्रतिष्ठा को महत्व देता है,
जो दंभ से कुचल जाता है,
और जो सन्मान के लिए शांति की दुनिया को भूल जाता है,
वह ईर्श्या के जमिन मे अहंकार के बीज बोता है।

जो नाश होने योग्य वैभव के सपने देखता है
जो संचय के लिए चित्त के आवेग मे चमकता है,
वह लोभ मे अपने आत्मा को जला देता है,
उसके पास सिर्फ राख और धुअें की दुर्गंध रह जाती है।

जिसे खुदको बल के विष से बाधित करना है,
जो गलत प्रतिष्ठा के विषसे बाधित है,
जिसे चापलूसी का पेय पीना है,
वह महानता के स्थान पर तुच्छता को स्विकारता है।

१०-३-१५/३/१९८१

शाश्वतता की छाया

मैं कहता हूँ : इस दुनिया मे कुछ भी स्थिर नही है- सब कुछ बदलता है और हर नयी चिज अनिश्चित लगती है। समय हमेशा आगे बढता रहता है, नदी की तरह समय को भी हम रोक नही सकते। समय सब कुछ मिटा देता

पुब्ली ओव्हिडी नाझोन

रुपान्तर, २५, १७७ - १२१,२३४

तुम निरंतर नष्ट करते हो,
और उसी के साथ निर्माण भी करते हो,
तुम समय हो - सर्वशक्तिमान और लोगो के दु:ख-दर्द मिटानेवाले हो,
तुम एक ही समय मे बच्चा, जवान और बुढे हो।

जिस प्रकार भाग्य मे सत्य का आनंद लिया जाता है
अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजे तुम्हारे अंदर निर्माण होती है,
तुम्हारे अंदर ही जीवन बारिश के साथ बहता है
और तुम्हारे अंदर ही लुप्त हो जाता है ।

तुम वसंत ऋतु मे बहनेवाले झरने का मधुर स्वर हो,
तुम ग्रीष्म ऋतु की मधुमक्खियों की गुनगुनाहट हो,
तुम बारिश के मौसम के दूर तक फैली उदासीनता हो,
और जाडे की ऋतु मे जमिन को ढकनेवाले चंदेरी बरफ हो।

तुम दिन का सत्य और प्रकाश की विजय हो,
तुम रात का अंधेरा और अज्ञान का दु:ख हो,
तुम अमर ज्ञान और सारुप्य का परम सुख हो,
तुम अज्ञान का अंधेरा और क्लेश का कारण हो।

तुम मायावी सपना और प्रतिच्छाया के भ्रम की सीमा हो,
तुम कुहरा से भरी मन की लहरो की पिघलनेवाली मृगमरीचिका हो,
तुम बिजली की चमक मे सुख का कुहरा हो,
तुम आँसुओ के महासागर से निर्माण हुई शुध्दता हो।

तुम परिणाम और कारणो की अनंत और निष्फल अनंतता हो,
तुम बदले की पंक्तिया और इच्छाओ को निगलनेवाले हो,
तुम एक क्षण के लिए प्रकट होनेवाली शाश्वतता हो,
तुम निर्माण का एक शक्तिशाली प्रवाह हो।

वर्ष तुम्हारी प्रतिमा, इस विश्व का आधार है,
सूरज तुम्हारा स्त्रोत, प्रकाश का मालिक है,
तुम्हारी नजर अरुणोदय के पवित्र मुस्कान की तरह है,
मृत्यु और जीवन का अन्न यह तुम्हारा अन्न है।

१७-२०/३/१९८१

समय का बन्धन

फसल बीज बोनेपर निर्भर करती है,
नये क्षण का निर्माण हो चुका है,
परिणाम कारण मे ही छिपा होता है,
और फिर समय का बन्धन आ पडा है।

जिस प्रकार बीज फल का कारण और मूलतत्व होता है,
वर्तमानकाल का गीत अतीत मे ही गाया जाता है,
कलाकार के कल्पना मे साकार हो रहे चित्र की तरह
वर्तमानकाल भविष्य का बीज होता है।

जिस प्रकार पानी का प्रवाह पर्वतो से निचे बहता है,
जिस प्रकार एक-एक क्षण से बनी पंक्तियोसे वर्ष बनता है
इच्छाए अंतहीन बेडीयो मे बांध के रह जाती है,
निर्दय कर्म की गांठ यह मृत्यु की शक्ति होती है।

जिस प्रकार नदी का प्रवाह आगे बहता है,
जिस प्रकार प्रबल क्षण आगे दौडते है
जिस प्रकार लहर के किनारे के पास आते ही फट जाती है,
उसी प्रकार हमारे कृत्य के परिणाम शाश्वतता को
पार करके हमारी ओर वापस आ जाते है।

जो अपने अतीत को समझता है

वह अपने वर्तमानकाल के सार को समझ सकता है

जो वर्तमानकाल का अर्थ समझता है,

उसी के पास भविष्य की चाबी होती है।

जो खुदको जीवन–अस्तित्व के महासागर से अलग करता है,

जो अंधेरे को पार करते समय द्वैत का बोज ढोता है

जो पानी मे से बुंद को अलग करता है,

उसे अज्ञान का कठिन मार्ग ही मिलेगा।

जो एकता के सत्य को समझता है

जो अस्तित्वहीन अवस्था के सामने नही झुकता,

जो माया के बंधन को तोडता है,

वही मृत्यु के शाश्वत रहस्य को समझता है।

जिसे ज्ञान मे जीवन का अर्थ प्राप्त होता है,

जो खुद को आत्मत्याग के साथ स्वार्थ से बचाता है,

जिसकी की नजर अनजान दिशा की तरफ होती है

वही ज्ञान के प्रकाश से चमकता है ।

२७–३–३/४/१९८१

शुध्दता

जब हम इन मर्त्य बंधनो को तोड दिया है,

तब इस मृत्यु की निंद मे हमे कौन से

सपने आ सकते है?

विल्यम शेक्सपिअर. हॅम्लेट

सिर्फ चित्त के आवेग को दूर् करने से और

हमारे विचारो को शांत करके,

बाहर नही बल्कि भितर देखने से ही,

सिर्फ हमारा मन ज्ञान के माध्यम से दिल मे रखने से ही,

हम हमारे अंदर सत्य का महल पा सकते है।

मौन मे दिल की ईश्वरीय आवाज सुनके,

ज्ञान की आँखो से प्रेम का प्रकाश देख के,

भविष्य को मोहित करनेवाला स्वर समझ के,

हम अपने अंदर ज्ञान का अमुल्य उपहार पा सकते है।

अगर हम एक बार त्याग के परम सुख का स्वाद लेते है,

और महान एकता की प्रशंसा करते है,

खुद को प्रेम और सभी शाश्वत चिजो मे घुलाते है,

हम चरम सिमा तक अपने जीवन-अस्तित्व का निर्माण करते है।

चित्त के आवेग के अंधेरे से ज्ञान की प्रकाश की ओर,
संयम से भलाई को संग्रहित करके,
आत्म-दमन से खुद को बुराई से मुक्त करके,
हम सत्य के प्रति निष्ठावान रहकर योग के
स्मृति के गीत गाते है।

हम हमारे शरीर और मन का दमन करते है,
हम दिल से अपने स्वरुप को देखते है,
हम ध्यान मे शाश्वतता और परम सुख को पिते है।
योग के मौन भरे विश्राम मे खुद को डुबो के
और आत्म-दमन से बल प्राप्त करके,
वैराग्य के कवच से खुद की रक्षा करके,
हम अपनी इच्छा-शक्ति को कठिन बनाते है,
और हमारे आत्मा को पुष्ट करते है।
जब दिल तारों के उपर उडते है,
जब शुध्द मन भयंकर यातना का सामना करता है,
हम मनुष्य के प्रति आदर व्यक्त करने के लिए
उसके सामने झुकते है,
हम सुख का बीज बोते है और बैर को मिटा देते है।

अज्ञान की श्रुंखला को तोड दो,
विचार के माध्यम से अपनी सब दुविधाए दुर करो,

मृत्यु के शक्ति को अस्वीकार करो,
और जीवन के अर्थ को समझो और
अमरत्व को महसूस करो।

छोटी चिंताओ की तरफ ध्यान मत दो,
मन के पहुँच तक होनेवाली उंचाई हासिल करो,
मुक्ती की तरफ साहसी उडान को समझो,
आप हर युग मे शाश्वत गीत सुन सकते है।

गलतीया और बुराई को दूर करो,
बंधन के बोझ को फेंक दो,
माया का भ्रम और दुर्बलता का त्याग करो,
हमे अपना मार्ग मिलेगा और हम ईश्वर का
सौपा हुआ काम पुरा करेंगे।

हम अमरत्व की सुगन्ध महसूस करते है,
हम अपने अंदर अमर्याद सहनशीलता निर्माण करते है,
हम विचारो के लिए ज्ञान के अन्न का स्वाद लेते है,
हम भलाई का प्रकाश और चमकनेवाली नम्रता लाते है।
हम क्लेश के पवित्र पानी से खुदको धोते है,
हमारा मन योग्य लक्ष्य की ओर निर्देशीत करते है,
विरक्ती की ढाल से बुराई से रक्षा करते है,

हम शम्बाला के साथ मिलकर माया को पराजीत करेंगे।

अपने विचार शुध्द करने के लिए और इच्छाओंको
काबू मे लाने के लिए,
अपनी भावना और निष्क्रियता के बिच निर्माण
हुई दुविधा को नष्ट करो,
ज्ञान मे शाश्वत शांती प्राप्त करने के लिए
आप के पास विवेक होना चाहिए और
अपने मन को जितना चाहिए।

जब आप एकता का गुप्त अर्थ समझते है,
आत्मसंज्ञान अंधेरा और डर को दूर करेगा,
जब आपके अंदर महानता का खजाना मिल जाएगा,
हम बुराई की राख करके अपनी सीमा को पार करेंगे।

२१/५-१४/७/१९८१

शम्बाला[१] का गीत

तुम्हे जो मदद चाहिए वह तुम्हारे अंदर ही है,
तुम्हारे आगे अमर्याद भविष्य है, आपके भविष्य
का निर्माण करो।

स्वामी विवेकानंद कॉसमॉस,११ मायक्रोझोम

तुम भयंकर आंधी के खिलाफ संघर्ष करते हो,
तुम निले बिजली की साहसी उडान हो,
तुम पवित्र ज्योती का जलना हो,
और सत्य की एकता की ओर प्रेरित उडान हो।

तुम चमकीले दयालुता की मिठास हो,
तुम स्फटिक जैसे इमानदारी का स्त्रोत हो,
तुम सर्वोच्च सत्य और दीप्तिमान आनंद हो
तुम संयम,उदारता और ज्ञान की चंद्रमा जैसी प्रतिमा हो।

तुम चमकनेवाली शुध्दता का आनंद हो,
तुम एकनिष्ठता का प्रकाश और आत्मा का आराम हो,
बल को रोको और पवित्रता को बढाओ
तुम गुप्त मंत्र[२] और शाश्वतता की कुंजी हो।

तुम बुध्दि की शिखा हो, एकाग्रता की शक्ति हो,
तुम सर्वव्यापी प्रेम का प्रकाश-स्तंभ हो,
तुम अमर सत्य हो और फुल की तरह
खिलनेवाली विशालता हो,
तुम उच्च स्तरपर मिलनेवाली नि:स्वार्थतता
के शिकार हो।

तुम परिपूर्णता का मार्ग हो और
इस दुनिया की रक्षा करते हो,
सूरज का प्रकाश तुम्हारा स्वरुप है,
महान शिव, ईश्वरीय योगी का
संरक्षक तुम्हारा स्वामी है।
जो क्लेश के साथ तुम्हारे अज्ञान को जला देता है।

तुम जीवन–अस्तित्व का सर्वोच्च अर्थ, मुक्ती हो,
तुम आत्मा का महासागर और
जीवन–अस्तित्व का स्त्रोत हो,
तुम सन्मानीत स्वामी की विवेकी सहनशीलता हो,
तुम विद्या का आनंद हो,सत्य का मुख्य अर्थ हो।

तुम मन की अनंतता और विचार की असीमता हो,
तुम सर्वोच्च ज्ञान का, शाश्वत विश्राम का रहस्य हो,
तुम योग का सबसे भीतरी प्रदेश हो, ज्ञान की विशालता हो,
और मनुष्य का पवित्र चेहरा हो, जीवन की शिखा हो।

२३/११–८/३/१९८२

१) <u>शम्बाला</u>– प्राचीन एशियाई श्रध्दा के अनुसार यह पौराणिक कथाओं मे शामिल महान योगीयों को, सर्वोच्च मुनीयो का और मानवता के शाश्वत गुरुओ का सबसे भितरी डेरा है।

२) मंत्र- पंडितोकी वाणी, पवित्र सूत्र और भारतीय शिक्षा के अनुसार उसके कुछ विलक्षण गुण होते है।

कर्म

उसे अपने कृति के अनुरुप भाग्य प्राप्त होता है,
उसकी कृति उसके इच्छा-शक्ति पर निर्भर करती है,
और उसकी इच्छा-शक्ति इच्छाओ पर निर्भर करती है।

बृहदअरण्यक उपनिषद, भाग
४,४,५

अमर ज्ञान से सूर्योदय जलता है
सूर्यास्त आशाओ के अंधेरे मे चमकता है,
मनुष्य मृत्यु का रहस्य शाश्वतता मे ले जाता है,
सत्य के सूर्य मे खुशी का खेल शामिल है।

जीवन-अस्तित्व की एकता यह प्रकाश का विजय है,
सत्य भलाई और बुराई की मात्रा दिखाता है,
एकता निर्माण करनेवाला सब कुछ भला है,
अलग करनेवाला सब कुछ बुरा है।

जीवन–अस्तित्व की एकता यह दुनिया का सार है,
इस एकता को मूर्तरुप, देनेवाला ही विद्वान है,
खुद के अंदर भलाई निर्माण करने से दुसरो के
अंदर भी भलाई निर्माण होती है,
और अपनी खुदकी शुध्दता के लिए वह बुराई को जला देता है।

जो खुद के अंदर अमरत्व पाता है वही ज्ञानी है,
जो हमेशा नि:स्वार्थतता की शुध्दता से चमकता है,
जो मार्गपर सर्वव्यापी प्रेम के साथ प्रकाश–स्तंभ बांधता है,
वही उच्च ज्ञान से अज्ञान के अंधेरे को दूर करता है।
जिस प्रकार मूर्तिकार छेन्नी से काम करता है,
जिस प्रकार कलाकार अपने कल्पना को साकार करता है
उसी प्रकार मनुष्य अपने भाग्य का स्वामी और विधाता है,
हम अपने कृती से अपना भविष्य निर्माण करते है।
पुनि–पुनि अनंत राह पर– पल पल बहती है सदियाँ,
पुनि–पुनि लहराए मन में सकल वासना का सागर,
पुनि–पुनि मंडल मे कौंधे – असंख्य सूर्योंकी ज्योति,
पुनि–पुनि मानव भरता है, इस ज्योति से मनकी गागर

२/१–४/३/१९८३

<u>महान एकता</u>

तत् त्वम असी[१]

वस्तुत: बात यही है। सब कुछ हर जगह है। जो यहॅा भिन्नता देखता है वही मृत्यु की और चलता है। यही वह है– इसी प्रकार परम सुख होना चाहिए।

कथा उपनिषद ११,१,९–१०,११,२,१४

‘स्व’ एकता मे छिपा होता है,

वह चित्त के आवेग अथवा अलगाव मे नही होता,

वह अंतहीन मूर्खतापूर्ण गपशप मे नही होता,

महान एकता का गीत जीवन–अस्तित्व का अर्थ है।

जीवन की शक्ती को मिलाकर निर्माण पूरा होता है,

मन के एक हुए महासागर से विचार उत्तेजीत होते है,

रुप और आकार की एकता से विश्व मजबूत हो जाता है,

हम ‘मै हूँ ’ इस शाश्वत स्तोत्र को गाते है।

मै हूँ – यह जीवन–अस्तित्व के गुप्तता का प्राचिन प्रतीक है,

मै हूँ – यह प्रारंभ और अंत का मोहीत करनेवाला भ्रम है,

मै हूँ – यह पूर्णता का गुप्त अर्थ है,

यह स्वामी और विधाता का चमकनेवाला पुष्पचक्र है।

मै मन का बहुत बडा महासागर हूँ, अंतरिक्ष की अनंतता हूँ।

मै विचारो की लहर हूँ, भावनाओं की तरंग हूँ,

मै मनुष्य हूँ, जीवन और मृत्यु की धूसर बालोवाली शाश्वतता हूँ,
मै पवित्र प्रेम के अग्नी से अमरत्व निर्माण करता हूँ।

मै मनुष्य हूँ, दुनिया की एकता का स्वामी और रक्षक हूँ,
मै मनुष्य हूँ जो शाश्वत कर्म के अनुसार
आनेवाले मृत्यु के सामने हार नही मानता,
मै मनुष्य हूँ, मै माया के मोहक शब्द निर्माण
करता हूँ और उनको मिटा देता हूँ,
मैने अविनाशी मृत्यु के सार को देखा है।
विवेक की तटस्थता यह सर्वोच्च ज्ञान का प्रकाश है,
आत्मा की महानता यह दुनिया का आधार है,
सर्वव्यापी प्रेम की आग यह बुध्दी की प्रतिज्ञा है,
क्लेश से मनुष्य जलानेवाली इच्छाओं की श्रुंखला तोड देता है।

एकता मे आप खुद का अमर मूलतत्व प्राप्त करेंगे,
जीवन-अस्तित्व की एकता सत्य का प्रकटीकरण है
अपने खुदके मार्ग का अंत देखने के लिए
अपने अंदर एकता महसूस करो,
यही जीवन और मृत्यु का अंत है, और ज्ञान की समाप्ती है।

१३/३-११/४-१९८३

१.	इसका मतलब है ‘तुम वही हो’। यह वेदांत दर्शन का मुख्य वचन है, दर्शन का मुख्य वचन है, वेदांत भारत के छह कट्टरपंथी दार्शनिक प्रणाली मे से एक है।

शाश्वत मार्ग

हमने जीवन–अस्तित्व के अर्थ के बारेमे बहुत कुछ कहा है,
लेकिन दोस्तो मै फिर भी आप से कुछ कहना चाहता हूँ:
जीवन यही जीवन का उद्देश्य है और जीवन यह एक शाश्वत चक्र है,
जहॉ आरंभ और अंत का एक दुसरे मे विलय हो जाता है।

इस मोहक खेल की गुप्त सीमा
आशाओ के कुहरे के पर्दे से ढक जाती है,
विचार, भावना, चित्त का आवेग और कृती से ढक जाती है,
समय अखंड नदी की तरह बहता है।

हजार साल और सदीया विस्मृती की
गलीचे के अंदर ढक जाती है,
क्षणिक सपने अंतहीन कतार मे बहते है,
ऐसा लगता है कि हमे अपना भाग्य चुनने की स्वतंत्रता नही है,
ऐसा लगता है कि भाग्य का फासा फेंकनेवाले तुम नही हो।

खुद के अंदर शक्ति के स्त्रोत की खोज करो,

शाश्वत सत्य को समझकर आराम प्राप्त करो,
उच्च ज्ञान से निर्माण होनेवाली तटस्थता से मिल जाओ,
सर्वव्यापी प्रेम से लोगो का मार्ग उजागर कर दो।

प्राचिन चमकीले विवेकी उपदेश को ध्यान मे रखो:
अगर कोई सड नही गया तो मर नही सकता,
सिर्फ नि:स्वार्थतता के सूरज की रोशनी कभी कम नही होती,
जीवन, इच्छा-शक्ति, ज्ञान और सत्य कभी रुकते नही।

अपने मार्ग को ज्ञान की उंचाई की तरफ निर्देशीत करो,
सत्य के प्रकाश को इच्छाओंके अंधेरे को दूर करने दो,
अज्ञान की रात मे सत्य को चमकने का आरंभ होने दो,
सत्य दुनिया की एकता है और वह ज्ञान मे चमकती है।
अपने अंदर सर्वशक्तीमान प्रभु को प्राप्त करो
तुम एक ही समय निर्माता और विनाशक भी हो,
जो भविष्य के सभी रहस्य और मार्ग देखता है,
आप अपने सपने सर्वोच्च एकता मे साकार कर सकते है।

३-८/९/१९८३

<u>महान संक्रमण</u>

मनुष्य के मृत्यु के बाद दुविधा(निर्माण होती है) :

कोई कहता है : उसका अस्तित्व है, दुसरा कोई कहता है: उसका अस्तित्व नही है।

मै आपके उपदेश को स्वीकार करता हूँ ----

मृत्यु, हमारे दुविधाओ के बारेमे बताओ, इस महान संक्रमण मे क्या छिपा है यह बता दो ---

कथा उपनिषद, ११-२०;११.२९

विश्वीय मूल का शाश्वत खेल,
जो इच्छा से मन के गहराई मे खेल जाता है,
विचारो की स्थिरता यह इच्छा-शक्ति की नीव है,
कर्म का सर्वोच्च नियम हमारे जीवन-अस्तित्व को चलाता है।

मृत्यु से मृत्यु तक दुर्बलता भटकती है,
भाग्य के उपग्रह दु:ख से हम थक जाते है,
झुठ और क्रोध, चित्त का आवेग और हिंसा के माध्यम से
अज्ञान की रात मे हम मृत्यु से डरते है।

घटनाओं की दुनिया दर्पण जैसे मृगमरीचिका के तरह बहती है।
मौन का महासागर शाश्वतता की सांस लेता है
दर्पण पिघल जाता है और प्रतिबिंब लुप्त हो जाता है,
सार - सभी आरंभ का आरंभ कभी बदलता नही है।

अलगाव अस्तित्वहीन अवस्था का चमकीला सपना होता है,
सपनो का विचीत्र सांधा भाग्य का धागा बांधता है
समय शाश्वतता की शांत छाया की तरह सपनो के माध्यमसे आगे सरकता है,
वर्ष, सदिया और क्षण मन की लहरो से चमकते है।

इच्छाओ की संक्रमकता विचारो से भरी हुई है,
अमरत्व का महासागर खेल के परम सुख से झाग उठता है,
जीवन की अवस्था कच्ची नदी के प्रवाह की तरह होती है,
चमकीले ज्ञान से दुनिया का सांचा बुनता है

खुद के अंदर सत्य को खोजनेका मतलब है अपने आपको
दुनिया से मिला देना,
प्रेम और बल के प्रकाश का सर्वोच्च ज्ञान मिलाप होता है,
ईश्वरीय मृत्यु का रहस्य क्या है? ज्ञान की प्रतिज्ञा क्या है?
आनंद का स्त्रोत क्या है? वह अमरत्व मे छिपा होता है।

जहॅा अमरत्व है वहॅा शाश्वत सत्य की आशा है,
जहॅा नि:स्वार्थतता की शक्ति है, वहाँ प्रेम के झरने
की गूँज सुनायी देती है,

जहॅा संज्ञान का आनंद होता है, वहाँ लाखो सालमे

एकबार आनंद का क्षण आता है ऐसा हम समझते है

जीवन जीवन को पूर्ण करता है और क्लेश क्लेश को निगलता है।

४/१२-१९८३-२७/३/१९८४

<u>ज्ञानी</u>

जो पहले था, जो अभी है, जो बाद मे होगा

वह माध्यम से खुल जाएगा,

मेरे ही माध्यम से गीत और संगीत निर्माण होगा।

पुब्ली ओव्हीडी नासोन, रुपान्तर १,३१७-३१८

मैं सत्य की पूजा करता हूँ, यह सबसे अच्छी श्रध्दा है,

आयबीएन सीना

समय के उपर होनेवाला ज्ञानी, चिरंतन राजा,

जो ज्ञान के प्याले से क्लेश का अमृत पिता है,

तुम सत्य का डेरा हो, चिरंतन गायक हो,

जो प्रकाश के योध्दाओ का बन्धुत्व निर्माण करता है।

ज्ञानी याज्ञवल्क्य और असामान्य बीथोवेन,

सेंट फ्रॅन्सिस ॲसीझकी और 'पागल हिंदू '*

तुम्हारी अभिमानी आत्मा आत्म-मान से और

बुराई से मुक्त है

तुम ज्ञान और इच्छा–शक्ति के दृढ संबंध स्थापित करो।

मोहक शेक्सपीअर और पौराणिक कथाओ का पतंजली,
गानेवाला आयबीएन सीना और चिरतरुण शंकर,
आप अटूट तारो के निचे सदिया पार करके
प्रवास करते हो,
जादुई होलिका की ज्योत मे समय को जलाते हो।

सर्वज्ञ ओमर खय्याम और अपूर्ण बुध्दीका लिओनार्डो,
अजेय डेविड और चमकीला लाओ त्सझी,
रहस्यपूर्ण हेरमेस**, बाद्रायण, कालीदास,
अलेक्झांद्रीन क्लेमेंट और प्लॅटो, और हरक्युलस।

योग के प्रकाश का स्वामी, निर्माता, विनाशक,
चित्त के आवेग के बिना सदियो को जोडनेवाला,
तुम बुराई दूर करते हो, तुम पवित्र योध्दा हो,
तुम ज्ञान का जादुगर हो, शब्द और विचार हो।

तुम गुरुओं का गुरु हो, अपूर्व बुध्दीवाले मनुष्य का निर्माता हो,
सर्वोच्च सत्य के एकता की दुनिया का अग्रदूत हो,
तुम मनुष्य का मूलतत्व हो और अस्तिव का आधार हो।

समय के हक्काबक्का कर देनेवाले अंतर को देख के,
मूलतत्व का अर्थ और सीमा को समझ के,
अज्ञान को नष्ट करके, माया के सपनो को जलाके,
तुम मार्ग उद्देश्य, और प्रकाश के वीर पाईलट हो।

३-१९/४/१९८४

* 'पागल हिंदू' - अमेरिका मे स्वामी विवेकानम्द को ऐसा कहते थे

** रहस्यपूर्ण हेरमेस-हेरमेस ट्रीसमेगीस्ट

समर्पण

जब तक हम जीवित है तब तक हमे नीति और
मन के साथ मिलने के लिए सभी प्रयास करने चाहिए
क्योंकि हम जो पुरस्कार प्राप्त करेंगे और हमारी जो
आशाए साकार होंगी वह सचमुच महान होगी।

(फ्लॅटोन,फ़ेडोन)

१

आन्तरिक चिजो को बाह्य चिजों से, नाजूक चिजों को
रुक्ष चिजो से, शांती और चौकशी से, समझदारी की
सावधानी से और ज्ञान के साहस से अलग करने का
प्रयास करो।

हेरमेस ट्रीसमेगीस्ट, मरकत टिकिया

अंधा मनुष्य अंधे को मार्ग नही दिखा सकता,
मूर्ख मनुष्य दुसरे मुर्ख मनुष्य को चतुर नही बना सकता,
अहंकारी मनुष्य चापलुसी मनुष्य को अभिमानी नही बना सकता।
कंजूस मनुष्य झुठे मनुष्य को सच्चा नही बना सकता।

महत्वाकांक्षी मनुष्य कायर को वीर नही बना सकता,
चापलुसी मनुष्य डोग हाकनेवाले को नम्रता नही सिखा सकता,
विलासी मनुष्य आलसी मनुष्य को काम पे नही लगा सकता,

झुठा मनुष्य कंजूस मनुष्य के लोभपर नियंत्रण नही रख सकता।

अहंकार का पाप धन से नही टल सकता,
नदी को बरफ के बांध से रोका नही जा सकता,
क्लेश की बेडी को कपट से तोडा नही जा सकता,
तुम इच्छाओ के महासागर को कभी नही खोद सकते।

चित्त का आवेग इच्छाओ के धुएँ मे कभी नही मिट सकता,
अज्ञान की श्रृंखलाओ को बकवास करने से तोडा नही जा सकता
आरोग्य का सुख भुक्खडपन को दुर करता है,
परम सुख की गर्म हवा तुम्हारे मन को सुखा देगी।

अंधेरे का कसा हुआ अलिंगन अज्ञान से तोडा नही जा सकता,
आप सपने मे आराम का आनंद नही प्राप्त कर सकते,
भावनाओ की उबलती उथल-पुथल आशाओ से शांत नही हो सकती,
ज्ञानकी भयसे मुक्त अवस्था बुराई मे नही मिल सकती।

निष्पक्ष कर्मका बदला विनती से कम नही हो सकता,
बंधन के अंधापन का आंसुओ से इलाज नही हो सकता,
स्वार्थी लक्ष्यो का बोझ शब्दो से हलका नही हो सकता,
आप अतीत के कृत्यो की दुर्बलता के लिए दु:ख मे रो नही सकते।

मृत्यु की ईश्वरीय प्रभाव को क्षीणता से टाला नही जा सकता,

समय के शांत रसातल मे सुख का कुहरा नष्ट हो जाता है,

बुराई के गड्डे को हिंसा से हराया नही जा सकता

अहंकार की दृढ बेडीयो को इस्पात के ब्लेड से तोडा नही जा सकता।

१६/७-४/१०-१९८१

<u>२</u>

इस वृत्त का आरंभ कहाँ है और अंत कहा है,

हम कहा से आये है और हम यहा से कहा जाएगें?

अपने 'स्व' की तरह मुड के देखो और

तुम कौन हो, तुम कहा हो और बादमे

आप कहां जाओगे इसके बारेमे सोचो।

ओमर खय्याम, रुबायत

हमने दु:ख के बोझ को किस तरह धोना चाहिए?

हमने योग्य सजा के बोझ को कैसे दूर करना चाहिए?

अंधेरे के अधिकार को कैसे हराया जाता है?

हमारी दुविधाए कब दूर हो जाएगी?

ज्ञान के माध्यम से हम मृत्यु के बंधन को कैसे तोडना चाहिए?

गुप्तता के साथ नि:स्वार्थता कैसे प्राप्त की जा सकती है?

मौखिक अंधेरे से प्रकाश को कैसे बचाया जा सकता है?
एकता के सत्य की प्रभा को कैसे समझा जाता है?

इच्छाओ का धुआं भावनाओं के कुहरे को क्यो लपेट लेता है?
जीवन–अस्तित्व की प्यास से बुराई क्यो बढ़ जाती है?
प्रेम का मृगमरीचिका चित्त के आवेग
के धुएं से क्यो निर्माण होती है?
वह कौनसी जगह है जहां हमे अज्ञान ले जाता है?

माया के अनगिनत सांचो को किसने निर्माण किया?
इच्छाओ के अंतहीन बेडीओ का आरंभ कहा है?
आदि अवस्था से चले आ रहे है
इस भ्रामक खेल का अर्थ क्या है?
सुख का लगातार पिछा करने की
इस प्रक्रिया का अंत कहा है?

प्रेम की आकांक्षा का आधार क्या है?
क्लेश की कभी न बुझनेवाली प्यास की सीमा क्या है?
अज्ञान की श्रृंखलाए किस प्रकार बांधी जाती है?
ज्ञानीयो के मृत्यु का भय कहां जल जाता है?

वृक्षो की दुनिया के आरंभ का बीज कौनसा है?

रचना की दिशा का प्रवाह कहां है?

इच्छा कौन से सत्य को छिपाती है?

शाश्वत अवतार का परिणाम क्या है?

मन को कौन से पवित्र उद्देश्य की आकांक्षा होती है?

विचारो का दौर किस तरफ दौडता है?

आत्मा को कौनसी बासुरी मोहित करती है?

जीवन को नष्ट करनेवाले मृत्यु को कौन निर्माण करता है?

२५/१०-१९८१-२१/१-१९८२

<u>३</u>

विचार और शब्दो को जीतने के लिए--

मै तुम्हारी, अस्तित्व मे होनेवाले सभी चिजो के पुरखो के

परमेश्वर की याने शिव और पार्वती की प्रार्थना करता हूँ ,

जहा विचार शब्दो का एक दुसरे मे विलय हो जात है।

कालीदास रघुकुल

शाश्वतता से निर्माण होकर शाश्वतता के माध्यम से

शाश्वतता मे जानेवाला,

भ्रम का पर्दा लेकर मृत्यु से मृत्यु तक जानेवाला

आशाओ के नदी से अनन्तता की ओर निर्देशीत करनेवाला
निरंतर बदलनेवाला अज्ञान बहता है।

किनारा न होनेवाले महासागर मे विचार निर्माण होता है
वाणी परम सुख के गानेवाले हर्ष मे टनटनाहट करती है
अंधेरा पृथ्वी पर उडनेवाले समय के रुप मे पडा रहता है,
मन और वाणी के एकता मे जीवन उबलता है।

सत्य आशा के पर्दे से खुद को ढक देता है,
विचारो की गहराई भावना के पिछे छिप जाती है,
अंधापन ही अंधापन का आधार है,
चित्त के आवेग के अंधेरे मे हम शब्दो की
शक्ति नही देख सकते।

ज्ञान की शांती सपनो के परम सुख मे है,
भावनाओ के छोटे घाटी मे विचारो का झरना
निर्माण होता है,
शाश्वतता के अलिंगन मे कृतियो का समुह छुपता है,
शब्दो की झालर मे सत्य की विस्मृती उबलती है।

ईश्वरीय कर्म का न्याय निष्ठुर होता है,

इच्छा इच्छा-शक्ती से पूरी हो जाती है,
इच्छा-शक्ती कृती से पूरी हो जाती है,
तुम्हारी खुद की बपौती बदले का नियम है,
यह सर्वोच्च नियम है जो इच्छा-शक्ति को पूरा करता है।

जिस प्रकार रुप नीती का चेहरा होता है,
जिस प्रकार शुध्दता परम सुख के कपडे होते है,
सादगी ज्ञान का साथी होता है,
महानता का पुर्ननिर्माण मनुष्य का सार है।

महानता के अर्थ को हम समझ सकते है
सर्वोच्च एकता के चार स्तर के मार्ग का अर्थ है,
योग के प्रकाश का चार स्तर का मार्ग,
यह शक्ती, ज्ञान, प्रेम और नि:स्वार्थतता का मार्ग है।

१५/१-१६/४-

१९८२

४

शक्ति का गीत

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रतिहार,धारणा, ध्यान, समाधी - योग के मुख्य साधन है.
पतंजली 'योग-सूत्र', ११२९

अलघ्य रुकावटो को दूर करना यह मनुष्य की सर्वोच्च महत्ता है।

वुडवीग वॅन बिथोवेन

एकाग्रता की असीम शक्ति,
मन के एकाग्रता की असीम शक्ति
जहां विचारो को क्लेश की शुध्दता से रोका जाता है,
आत्मा की शक्ती और इच्छा-शक्ती की दृढता को
पहचान - सकते है।

किसी को हानी नही पहुंचाना, सत्यता और अपरिमित इमानदारी,
संयम और उपहार नही स्विकारना,
जो इन लक्ष्यो के प्रति सर्वथा एकनिष्ठ रहता है
वह ज्ञान के सर्वोच्च मार्ग पर जाने के लिए तैयार होता है।

आंतरिक और बाह्य शुध्दता, समाधान, आत्म-दमन,
लिखावट को पढना, सपनो के प्रति एकनिष्ठता,
जब इच्छा सर्वोच्च सार की तरफ निर्देशीत होती है,

भय पिघल जाता है और समस्याओ मे दृढता निर्माण होती है।

शरीर के व्यायाम मे दृढता
सख्त इच्छा-शक्ति और सौम्य इच्छा-शक्ति
जहां सर्वोच्च सार राज्य करता है
शाश्वत नाम हर मनुष्य के होठो मे होता है।

प्रकाश की शांती, सांस की एक लय
सूरज का दाह और शितल चांद का प्रकाश
जहां शक्ति दयालुता की असीमता से चमकती है,
जहां विचारो का और कृति का एक दूसरे मे विलय हो जाता है।

बाह्य चिजो से ध्यान हटाना,
सांस की शुध्दता, भावनाओ पर नियंत्रण,
जब आप खुद के अंदर देखते है
विचारो का अहंकार लुप्त हो जाता है।

सर्वोच्च वस्तु के विचार पर विचार केंद्रित करके,
विचारो की गहराई और सत्य की चमक
जहां एकाग्रता ज्ञान के शहद जैसे होती है,
वहां ईश्वरीय योग के ज्ञान का आगमन होता है।

मन के सीमा के उपर उडना,

आत्मा की उंचाई तक उडान भरना,

हम अपना दिल सत्य के चिंतन मे पाते है,

वहां मृत्यु की शक्ति लुप्त हो जाती है, क्षीण हो जाती है

अपरिमित विश्राम का परम सुख

जीवन–अस्तित्व को अस्तित्वहीन

अवस्था से जोडने का आनंद,

जहां पवित्र नाम का पूरा राज्य होता है

हम सर्वोच्च एकता के सुख का निर्माण करते है।

१३/४–२३/८/१९८२

५

ज्ञान का गीत

जो ज्ञान की आंख से मूलतत्व देखता है,

वह चमकीले मन से शाश्वतता को पार करता है,

एकता का मार्ग उसका पारितोषिक होता है

वह अपने अंदर हम सबको पाता है।

ज्ञान का प्रकाश इच्छाओ के अंधेरे को दूर करता है,

विचारो की शांती तुम्हारी दुविधा समाप्त कर देगी,
मन की चमक अंधेरे को लुप्त कर देगी,
ज्ञान की चिनगारी ज्ञान के दुनिया को उजागर कर देगी।

ज्ञान के महासागर से पुराना पाण्डित्य नही है,
शाश्वत एकता के सत्य से पुराना सत्य नही है,
मेरा अस्तित्व सभी मे है लेकिन मेरा किसी से संबध्द नही है,
अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजे मेरे साथ मिली हुई है,
मेरे अंदर है।

आप जीवन–अस्तित्व के रहस्य के निर्माता और स्वामी हो,
आप माया के जादू के शाश्वत विनाशक हो,
आप विचारोकी शक्ति से दुनिया मे नये जीवन निर्माण करते हो,
ज्ञान, इच्छा–शक्ति, सृजन यह मनुष्य का सार है।

दुनिया का गुप्त अर्थ आपके अंदर है,
वो आप है, जो भाग्य के प्रवाह को निर्देशीत करता है,
आप विश्व को चलानेवाला बल और उसका पुष्पचक्र हो,
आत्मसंज्ञान यह मार्ग का अंत है।

आप अनन्तता के लय की आवश्यक उर्जा हो,
आप सभी चिजो का केंद्र और आरंभ हो,

धन, प्रतिष्ठा, बल ये सिर्फ शाश्वत महासागर का झाग है,
मै महासागर हूँ, यह सर्वोच्च ज्ञान और पाण्डित्य का नहर है।

आपने अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजों को समय और स्थान दिखाया,
आपका नि:स्वार्थ प्रेम दुनिया मे उत्साह निर्माण करता है,
आप शाश्वत विवेकी आनंद हो, यह एकता का सर्वोच्च अर्थ और मुक्त प्रकाश है।

आप ज्ञान का महल और पाण्डित्य के रक्षक हो,
आप शाश्वत मृत्यु के रहस्य से सत्य को ढक देते हो,
तुम मनुष्य हो, निर्माता, संरक्षक और विनाशक हो।
यह सार का अर्थ है और ज्ञान की सीमा है।

२-१७/९-१९८२

प्रेम का गीत

प्रेम तूफान मे रास्ता दिखानेवाला प्रकाश-स्तंभ होता है,
जो अंधेरे मे और कोहरे मे धुंधला नही होता,
प्रेम- एक तारा है, जिसकी मदद से नाविक
महासागर मे अपना स्थान निश्चित करता है।

विल्यम शेक्सपिअर, सॉनेट ११६

प्रेम कठोर मनुष्य को कोमल बनाता है,
कायर को साहस देता है,

मूर्ख को बुध्दी से समृध्द बनाता है,
अतिव्ययी को आनंद देता है।

प्रेम मे हमारी सारी दुविधाए दूर हो जाती है,
दुर्गति एक दीप्ती मे लुप्त हो जाती है,
हठी मनुष्य शांत हो जाता है,
और दयालु मनुष्य को सुख की खान प्राप्त होती है।

प्रेम हठी मनुष्य को सौम्य करता है,
अज्ञानी मनुष्य के मन मे ज्ञान के प्रति
आकांक्षा निर्माण करता है,
झुठे मनुष्य के झूठ को रोकता है
ज्ञानी मनुष्य को प्रसन्न विश्राम की आशा दिलाता है।

प्रेम बलवान मनुष्य का पारितोषक है,
दुर्बल मनुष्य के आशा की ढाल है,
प्रेम हमारे मन के लिए आराम है,
हमारी श्रध्दा के लिए दृढता का कडा पत्थर है।

प्रेम हमारे दिलो को जोड सकता है,
हमारे खून मे सांस की उबाल पैदा करता है,
अपने सर्वव्यापी प्रकाश से अंधेरे का ढक्कन उध्वस्त कर देता है।

प्रेम की ज्योती से गरमी पाकर,
उसकी कवच जैसी ढाल से रक्षा प्राप्त करके,
स्तोत्र की दुनिया मे शाश्वतता की आकांक्षा निर्माण होती है,
और मनुष्य प्रेम की दवा से निरोग हो जाता है।

प्रेम सृजन को प्रेरणा देनेवाला बल है,
वह हमे जीवन का अद्‌भुत सपना दिखाता है,
प्रेम एकता का प्रदर्शन है
प्रेम एक शाश्वत नियम है।

४-

११/१०/१९८१

अमरत्व का गीत

इस प्रकार मृत्यु से खुद का पोषण करते हो,
मृत्यु मनुष्य मे अपना पोषण करता है,
और मृत्यु के बाद मरनेका कोई डर नही होता है।

विल्यम शेक्सपियर, सॉनेट १४६

हम कर्म-भाग्य से घटना और चिजों के
चक्र मे फंसे हुए है,
हमारे इच्छाओ के फल मिटा देने चाहिए
तभी हम दूसरे नये दिन अपने कर्म जारी रख सकते है।

निर्माण की शाश्वतता की ओर बहनेवाली कतार मे
हमारा मन झुठ के साथ माया के पर्दे का बीज बोता है,
इच्छा, शब्द और निर्णय के भयंकर कुहरे मे
हम सुख की तरह जीवन–अस्तित्व के लडखडाते
प्रवाह का मूल्यांकन करते है।

अलगाव मे मृत्यु का भय होता है,
प्रतिष्ठा के कारण हम फिर से भाग्य की
मृगमरीचिका निर्माण करते है
जीवन–अस्तित्व के आशा यही क्लेश का आधार है,
अहंकार के कारण सत्य हमारे हाथ से छुट जाता है।

यहा कोई भावना,आनंद और परम सुख नही है,
आप चित्त के आवेग अथवा प्रेम मे आराम
नही प्राप्त कर सकते,
आप संपूर्ण अलगाव से आत्मा की महानता
को महसूस कर सकते है,
आप संपूर्ण ज्ञान से मार्ग का अंत पा सकते हो ।

सपनो से जागो, कर्म की बेडिया तोड दो,
नि:स्वार्थतता से अपने दिल के अंदर

सत्य प्राप्त करो,

समय की सीमा पार करके ज्ञान के मार्ग पर लगातार आगे बढो,

अद्भुत दृष्टी से खुद के अंदर अमरत्व महसूस करो।

गिरने से मत डरना, दु:ख के आगे झुकना नही,

यह मार्ग कठिन और कांटो से भरा हुआ है, लेकिन

आपको प्रकाश दिखायी देगा,

मै अमर हूँ – यह आपकी प्रतिज्ञा है

विनय को समझो और अपना मन साफ करो।

ज्ञान के साथ इस महान संक्रमण को समझो

विचारो के उपर उडो, मन से सारी सीमाए पार करो,

योगी अस्तित्वहीन अवस्था मे जीवन–अस्तित्व को

खोजकर उसकी प्रशंसा करते है,

और क्लेश के माध्यम से सत्य की ओर जाने के

लिए खुद को प्रेरित करते है।

जनगीता, उपनिषदीय कविता

१

अपने स्वरुप से मनुष्य कितना महान है यह नही भुलना। आज तक कभी नही था और आगे भी कभी नही होगा ऐसा मै सबसे महान परम सुख हूँ । इसा मसीह, बुध्द और दुसरे महान व्यक्ती ये जीवन-अस्तित्व के किनारा न होनेवाले महासागर की लहरे है, जबकी मै महासागर हूँ।

स्वामी विवेकानंद,
'थाऊजंड आयलंड' पार्क मे बातचीत

वर्तमान अतीत से विकसित होता है
भविष्य का आधार वर्तमान है।
ज्ञान ज्ञान के साथ मिल जाता है,
और उच्च ज्ञान हो जाता है।
पाण्डित्य पाण्डित्य निर्माण करता है
और वह अंत मे सर्वोच्च पाण्डित्य होता है।
सत्य की चमक
और जादा स्पष्ट होती है।
शाश्वत ईश्वरीय सिम्फनी की तारे
लगातार बजती रहती है।
जीवन-अस्तित्व के प्रभावशाली स्तोत्र के
पहिले शब्द गुँजते रहते है।
आत्मा के किनारा न होनेवाले महासागर से
मन के विशेष स्वरो का उज्वल प्रवाह बहता है।
और मौन के महासागर से मिल जाता है

चिंतन से, समाधी से मिल जाता है।

बल का निर्माण बल से होता है

ज्ञानी का अवतार ज्ञानी से होता है,

प्रेम परम सुख मे डुब जाता है।

प्रकाश को प्रकाश बुझा देता है,

प्रकाश को प्रकाश निगलता है।

बल बल मे घुल जाता है,

ज्ञान ज्ञान मे चमकता है,

मन परम सुख मे लुप्त हो जाता है

मुक्ति मे, संपूर्ण मुक्ति मे लुप्त हो जाता है।

ब्राह्मण सब कुछ है

आत्मा सब कुछ है

तुम सब कुछ हो,

सिर्फ वास्तविकता

चेतना निर्माण करनेवाला आत्मा

सर्वव्यापी प्रेम,

जीवन–अस्तित्व का आधार,

जीवन–अस्तित्व का स्त्रोत

जीवन–अस्तित्व खुद ही है,

अपरिमित अनगिनत शाश्वतता,

विशाल प्राचीन ज्ञान

अनगिनत ईश्वरीय परमसुख।

मैं ब्राह्मण हूँ

मै आत्मा हूँ मै हूँ।

मनुष्य सर्वोच्च सत्य है,

सब कुछ मनुष्य मे मिला हुआ है,

मनुष्य सभी चिजो मे मिला हुआ है,

परमेश्वर मनुष्य है,

मनुष्य परमेश्वर है

खुद के साथ खेलनेवाला परमेश्वर है,

मनुष्य के अंदर होनेवाले परमेश्वर की पूजा करो,

मनुष्य के अंदर होनेवाले परमेश्वर की स्तुति करो।

मनुष्य के अंदर होनेवाले परमेश्वर पर प्रेम करो।

मनुष्य दुनिया निर्माण करता है

दुनिया मनुष्य की तरफ खिंची जाती है

दुनिया मनुष्य के अंदर वापस आ जाती है

भ्रम का ईश्वरीय खेल

पहचानने के लिए

अज्ञान के बहनेवाले प्रवाह को और

माया के मोहक जादू को समझने के लिए

कठोर कर्म की बेडीयों से

मुक्ति प्राप्त करने के लिए,

तडपानेवाले अटल क्लेश से और

परम सुख की अनिश्चित मृगमरीचिका से

मुक्ति प्राप्त करने के लिए,

एक दुसरे मे लगातार बदलनेवाले

अवतारो के निरंतर घुमनेवाले चक्र से

संपूर्ण मुक्ति प्राप्त करने के लिए

जो अस्तित्व मे होनेवाले जन्म और मृत्यु मे नही होती है।

२

जागो। विप्लव करो। सपने देखना छोडो।

और जादा साहसी बनो। सत्य के सामने आ जाओ।

उसके साथ एकबध्द हो जाओ।

सपने दूर चले जाएंगे।

स्वामी विवेकानंद 'भारत की जागृती'

मनुष्य परमेश्वर है,

अज्ञान के साथ खेलनेवाला परमेश्वर है

परमेश्वर अपने उपर श्रध्दा रखनेवाले

मनुष्यो को जानता है,

मनुष्य के प्रति श्रध्दा रखकर लोगो का

आदर प्राप्त करो।

परमेश्वर अपने उपर श्रध्दा रखनेवाले

मनुष्यो पर प्रेम करता है।

मनुष्य पर प्रेम करके लोगो का आदर

प्राप्त करो।

तुम परमेश्वर हो,

भ्रम के साथ खेलनेवाले परमेश्वर हो।

मनुष्य के रुप मे होनेवाले सर्वशक्तिमान

परमेश्वर की स्तुति करो।

मनुष्य के रुप मे होनेवाले सर्वज्ञानी

परमेश्वर को समझो।

मनुष्य के रुप मे होनेवाले सबसे

अच्छे परमेश्वर की पूजा करो।

तुम सब कुछ हो

सबका अस्तित्व तुम्हारे अंदर है

तुम्हारा अस्तित्व सभी चिजो मे है।

तुम उज्वल शक्ति को कार्यान्वित करते हो।

तुम्हारे अंदर शुध्द आत्मत्याग को प्रवेश दो।

तुम सर्वव्यापी प्रेम के साथ जिओ।

तुम जीवन हो,

तुम्हारे अंदर दुनिया मिल गयी है,

तुम दुनिया से मिल गये हो।

अहंकार की बेडिया तोड दो।

स्वार्थी प्रेरणाओं को फेक दो।

बनावटी व्यक्तित्व को त्याग दो।

तुम मनुष्य के रुप मे सो रहे परमेश्वर हो,

इस खेल का मजा लेनेवाले परमेश्वर हो।

ईश्वरीय सपनो से जागो।

अज्ञान के जाल को तोड दो।
माया के भ्रम से मुक्ति प्राप्त करो।

कर्म की बेडियो को तोड दो।
इच्छाओ की श्रृंखलाओ को फेक दो।
मृत्यु के शक्ति से दुर हो जाओ।

लज्जास्पद दुर्बलता को भुल जाओ।
तुम सर्वशक्तिमान हो यह नही भुलना।
अपने बल पर विश्वास रखो।

चिंतन के बल मे डुब जाओ।
चित्त के आवेग को दुर करके ज्ञान प्राप्त करो।
परम सुख मे डुब जाओ।
ज्ञान का दिपक सुलगाओ।
शाश्वत सत्य मे प्रवेश करो।
सर्वोच्च ज्ञान मे घुल जाओ।
परम सुख मे
मुक्ति मे,
संपूर्ण मुक्ति मे घुल जाओ।

२६-३१/१-१९७८

३.

सर्वज्ञानी योगी ज्ञान की आंख मे संपूर्ण दुनिया को अपने अंदर देखता है

और सब को एकही एकत्रित आत्मा के स्वरुप मे देखता है।

शाश्वत, शुध्द, मुक्त, एकत्रित, अटूट, आशिर्वाद प्राप्त करनेवाला, अद्वैत,

वास्तविक, ज्ञानी, अनन्त – मै ही सर्वोच्च ब्राह्मण हूँ

शंकर आचार्य, आत्मबोध

सब कुछ ब्राह्मण है,

न समझनेवाली, नि:शब्द शाश्वतता,

सर्वशक्तिमान एकत्रित परम सुख।

सर्वशक्तिमान सबकुछ निर्माण करनेवाली शक्ति

सात चेहरेवाला चमकीला ज्ञान

अनन्त सबकुछ भर देनेवाला प्रेम।

ईश्वरीय सर्वशक्तिमान ध्वनी,

शाश्वतता से पहले ईश्वर जैसा इथर

सर्वव्यापी सर्वसंभाव्य अन्तरिक्ष।

जीवन की शक्ति – हवा,

दुनिया के आरंभ से झिलमिलाती है,

वह सब दृढ प्रेम की सांस है।

जीवन का अमरत्व – आग

ज्ञान का पूर्वज – वाणी

वेदोंका आदि अवस्था का ज्ञान।

जीवन का बीज – पानी,

स्फटिक जैसा जीवन निर्माण करनेवाला पानी,

शक्तिमान प्राचीन महासागर।

फल देनेवाली महान माता – पृथ्वी

साारी शक्ति की प्रेरणा

सोनेवाली ईश्वरीय कुंडलीनी।

सर्वव्यापी प्रेम का प्रकाश

उज्वल सत्य का अरुणोदय

बढनेवाले ज्ञान की उषा,

दिन की शुध्द ईमानदारी,

शब्द की बिना किसी अवरोध से

कायम रहनेवाली शक्ति

सब कुछ जितनेवाली सत्य की शक्ति।

चांद का उज्वल आधा हिस्सा,

पारदर्शक स्फटिक जैसी ईमानदारी

किसी का कुछ भी हडप न करने से

मिलनेवाला अनगिनत खजाना।

चित्त के आवेग से मुक्त शितल परम सुख,

बरफ जैसी सफैद सादगी,

संयम की दिप्तिमान उर्जा।

अमरत्व देनेवाला वर्ष,

आत्मत्याग का शाश्वत सुख,

मृत्यु के सब कुछ छिनने के भय से मुक्ति।

जीवन का स्वामी – सूर्य,

अमरत्व का दिप्तिमान स्वामी,

आत्मसंज्ञान देनेवाली एकाग्रता की शुध्दता।

चांद का गुढ पाण्डित्य,

उसका सर्वव्यापी शितल प्रकाश,

समाधान का सर्वोच्च आनंद।

बिजली की दीप्त होनेवाली चिनगारी,

चिंतन का अव्यक्त परम सुख

आत्म – दमन की अटूट शक्ति।

परम सुख के चिंतन मे मग्न निर्माता,

चित्त के आवेग से मुक्त, संपूर्ण विवेकी प्रेम,

सबका भला करनेवाला और बुराईका

नाश करनेवाला – शिव।

जीवन को चिंतन मे डुबाके,

ज्ञान से मन को नष्ट करके,

परम सुख से प्रेम को परिपुर्ण करके मुक्ति,

संपूर्ण मुक्ति प्राप्त होती है। ८/२-११/२/१९७८

४.

एकत्रित एक साथ अभाज्य और अनन्त है,

उसका कोई आयाम और सीमा नही है,

उसका कोई आकार और नाम नही है,

क्लेमेंट ॲलेकझान्द्रीन

सब कुछ आत्मा है,

वह दुनिया का अटूट आधार है,

वह जीवन के बुराई पर विजय का प्रतिक है

वैराग्य की ज्योत जलाकर

जो ज्ञान की बलिदान संबंधी ज्योत है,

जो आत्मत्याग का लाभदायी बलि है।

सात स्तरो का ईश्वरीय आवाज,

आत्मा का ईश्वरीय वैभव

प्रकाश के अनन्त देश।

समय की न रुकनेवाली दौड,

आंखो की अनगिनत सम्पती

छरम सुख का शाश्वत पालन।

ज्ञान का उदगम होनेवाला सूर्य
सत्य का प्रज्वलित प्रकाश
पूर्व का व्यस्त अरुणोदय।

परम सुख की न बुझनेवाली प्यास,
धन की न मिटनेवाली प्यास,
जीवन–अस्तित्व की दु:खदायी प्यास।

चित्त के आवेग का जडवत करनेवाला दाह,
अत्यन्त अभिलाषा का जलानेवाला उष्मा,
दक्षिण से मौत का प्रेमालिंगन।

समय ने निगली हुई इच्छा
क्लेश का गाढा अंधेरा
दबे हुए दिल के साथ भय।

ज्ञान के सूर्य का अस्त
दु:ख का गहरा होनेवाला अंधेरा
पश्चिम की अज्ञान की रात।
वाणी की चमकीली ज्योत
मन का जलनेवाला सूर्य,

साफ करनेवाला सास का वायु।

चांद की शितल चमक

ज्ञान का चमकीला फल

उत्तर का स्वर्गीय परम सुख।

आनंद का ईश्वरीय गीति – काव्य

परम सुख का उल्हास से भरा हुआ स्त्रोत

जीवन अस्तित्व का बजनेवाला गीत।

ज्ञान के बीज से पैदा हुआ,

वाणी के हृदय मे पालन हुआ,

सभी जगह व्याप्त ईश्वरोका ईश्वर।

जिस का शरीर पानी है,

पृथ्वी और आकाश का मिश्रण,

परम सुख का आनंद।

जिसका प्रकाश चांद है,

आग, अग्नी और सूर्य का प्रकाश,

आत्मसंज्ञान मे मग्न ईश्वर की चमक।

१३/४–२५/४/१९७८

५.

हमारा विश्व किसी ईश्वरने और लोगोने निर्माण नही किया है, यह हमेशा शाश्वत ज्योत थी और रहेगी, यह हमेशा जलती रहेगी और बुझेगी, यह खेल एक सीमा तक चलता रहेगा, इस खेल मे इसा मसीह खुद के साथ खेलता है

एफेस्युस का हेराक्लीटस

सब कुछ तुम हो,
तुम दुनिया का अभी खोजा नही गया हिस्सा हो,
तुम बहुत अधिक शाश्वतता हो।
कर्म का अविनाशी स्वामी
बदले का अपरिहार्य नियम
निर्दय–निष्पक्ष मृत्यु।

नामो का कभी निश्शक्त न होनेवाला स्त्रोत,
अनुभवगम्यता का चमकीला स्वरुप,
जीवन का अटूट आधार।
मन का सच्चा दोस्त,
परम सुख का जोशीला गीत
यह दुनिया की पूर्वज वाणी है।

परम सुख का प्रज्वलित बीज,
वाणी का मन्द शब्द,

यह जीवन का शरीर पानी है।

हर्ष का एकीकृत झाग,
वाणी का मूर्त शरीर
यह जीवन की माता पृथ्वी है।

दुनिया का सर्वोच्च सार
वाणी का चमकीला प्रकाश
यह अज्ञान को जलानेवाला ज्ञान है।

अमर का मर्त्य निर्माता,
ईश्वरो का महान ईश्वर,
यह जीवन का पूर्वज अग्नी है।

ज्ञान अमरत्व का आधार है,
मन का अनन्त शरीर
यह जीवन का परमसुख आकाश है।

जीवन का जलनेवाला स्वामी
मन का प्रकाश, जो जीवन देता है,
यह जीवन का पिता सूर्य है।

शाश्वत दुनिया का शरीर
मृत्यु की पवित्र वेदी
यह मृत्यु का स्वरुप समय है।

अज्ञान की रात मे चमकनेवाले
सबको मार्ग दिखानेवाले चमकीले तारे
यह जीवन के नमक जैसे ज्ञानी मनुष्य है।
शीव का चमकनेवाला आंख,
अमर शाश्वत मन,
यह जीवन का प्रकाश चांद है।

वैराग्य का जगमगानेवाला दाह
अमरत्व का सर्वव्यापी उजागर
करनेवाला प्रकाश,
यह जीवन का चिंतन बिजली है।

दुनियाको बांधनेवाली शक्ति,
दुनियामे गानेवाली कीर्ति,
यह बुराई को दूर करनेवाला वायु है।

समय का ईश्वरीय सार,

ज्ञान का अमर गीत

यह दुनिया का आधार जीवन है।

२६/४-४/५/१९७८

६.

मनुष्य प्रकृति का कैसा चमत्कार है। उसकी बुध्दी कितनी तेजस्वी है, उसकी क्षमताएं कितनी अनन्त है। उसका आकार और गति कितनी ठीक और विस्मयकारी है। उसकी कृति फरिश्ते से कितनी करीब है। उसका बोध परमेश्वर के कितने करीब है। यह दुनिया की शोभा और प्राणीयोंका आदर्श है।

विल्यम शेक्सपियर, हॅम्लेट

मै ब्राह्मण हूँ,

सार का सर्वोच्च अर्थ हूँ,

सच्चाई का शाश्वत सत्य हूँ।

मै अमर शाश्वतता हूँ, जिसका कोई आरंभ नही है,

मै दुनिया की अदृष्य सीमा हूँ,

मै दुनियाका अमर निर्माता हूँ।

इच्छाओका कभी अन्त न होनेवाला अन्न

जीवन का उपजाऊ आधार,

यह प्राणीयो का सार पृथ्वी है।

अन्न का आदि अवस्थाका स्त्रोत,

जीवन का मरकत कवच
यह मृत्यु को खानेवाला पानी है।

सूरज की रोशनीसे गरम करनेवाला,
वायु के बल से रहनेवाला,
जिसका अन्न यह दुनिया है।

पृथ्वीका अटूट सार,
परम सुखका चमकीला सार
यह मृत्यु का चेहरा अग्नी है।

वायु का अक्षत सार,
देवत्व का अजेय शोषक
प्रकाश की दुनियाका बच्चा।

अमरत्व का निरंतर निर्माता
अन्तरिक्षका सर्वशक्तिमान स्वामी
यह विचार के शरीर का वायु है।

आकाश का अमर सार,
वास्तविकता का सबको गरम करनेवाला निर्माता,
जीवन के प्रकाश की चमक।

दुनिया का बहुमुल्य स्वामी
अस्तित्व का सर्वोच्च सत्य
यह अन्न का स्वामी सूर्य है।

पूर्व का चमकीला सत्य
शुध्द करनेवाला दक्षिण का क्लेश
पश्चिम की अज्ञान की स्वामिनी।

उत्तर का अमर कल्याण
अनन्तता का शाश्वत शरीर
यह प्रकाश के देश–मृत्यु का आधार है।

रात की बहुमुल्य चेहरे की स्वामिनी,
सब कुछ देखनेवाला ज्ञान
यह – मृत्यु की आंख चांद है।

वायु का विजयी गीत
अमरत्व का गरजनेवाला आवाज,
यह मेघ की गरज – मृत्यु का गीत है।

दुनिया का अपरिमित आधार

शाश्वतता का अनन्त शरीर

यह आधारो का आधार अंतरिक्ष है।

मौन का रहस्यपूर्ण महासागर

जीवन–अस्तित्व का सर्वोच्च सत्य

यह जीवन–अस्तित्व का जीवन–अस्तित्व मृत्यु है।

२१/५–१७/६/१९७८

७.

मनुष्य के अस्तित्व का मतलब क्या है? उसका उद्देश्य अस्तित्व मे होनेवाली सभी चीजों का सजाना यह है।

(डेव्हिड ॲनहट –दर्शन की परिसीमा)

मेरी उम्र जितनी जादा बढ जाती है उतनी अधिक गहराई से मैं समझता हूँ कि मनुष्य सर्वोच्च जीव है। मनुष्य का जीवन यह स्वतंत्रता और सौंदर्य का सबसे बडा पुष्टिकरण है।

स्वामी विवेकानंद

मैं आत्मा हूँ,

सर्वोच्च ज्ञान का ज्ञान,

शाश्वत जीवन–अस्तित्व का जीवन–अस्तित्व।

दुनिया का सर्वज्ञ निर्माता,
जीवों का सर्वशक्तिमान संरक्षक
अज्ञान का तटस्थ विनाशक।

कृतियो का गरजनेवाला स्त्रोत,
संक्रमक जीवन का घर
यह जीवन केंद्र शरीर है।

पृथक न होनेवाली परम सुख की छाया
जीवन का उबलनेवाला मूल
यह क्लेश का बीज परम सुख है।

विचारो की प्रिय बहन
ज्ञान का चमकीला शरीर,
ज्ञान का तारो ने बनाया हुआ आधार,

चारो तरफ से प्रवेश करनेवाला जीवन का दाह,
मन के आनंद का गीत,
यह–मृत्यु के कपडे याने वाणी है।

शाश्वतता का अमर सार,

वाणी का सर्वशक्तिमान स्वामी

सांस – मृत्यु का बच्चा

प्रतिमाओ का कभी निश्शक्त न होनेवाला स्त्रोत,

सूर्य की रंगीली दुनिया,

संज्ञान की चमकीली दुनिया।

शाश्वतता का विभिन्न आधार,

दृढ विचारो का प्रकाश

आंख – वास्तविकता का स्वरुप।

समय – शाश्वतता की छाया

कभी निश्शक्त होनेवाला ईश्वरीय धन,

कान – अनंतता का सार

दुनिया का आदि अवस्था का मूल,

परम सुख का विशाल स्वरुप,

जीवन का कभी निश्शक्त न होनेवाला प्रकाश।

अमरत्व का अनंत सार,

जीवन–अस्तित्व का सर्वोच्च सार,

मन– मृत्यु का सहारा,

ज्ञान का उडता हुआ सार,

योग की असीम शक्ति

रूप–जीवन की चमक।

विचार का बजनेवाला आधार

शब्दो का गानेवाला सहारा

आवाज– जीवन का गीत।

वाणी का उबलनेवाला आधार

जीवो का दृढ आधार

इच्छाओं की अपरिमित दुनिया,

ज्ञान का कभी न बुझनेवाला दिपक,

स्थिरता का एकत्रित स्वरुप

हृदय – मृत्यु का घर,

प्यारे चिजका असंक्रमीक स्वरुप

मृत्यु का निरंतर प्रतिध्वनी,

जीवन–मृत्यु का अन्न

२१–५–१९/६/१९७८

८.

आत्मा की परिभाषा है यह नही, यह नही।

वह समझके बाहर है क्योंकि हम उसे समझ नही

सकते, वह अविनाशी है क्योंकि उसे हम नष्ट

नही कर सकते, वह मुक्त है क्योंकि हम उसे जकड

नही सकते, बांध नही सकते , वह कभी हिचकिचाता

नही और बुराई को बर्दाश्त नही करता।

याज्ञवल्क्य बृहदाअरण्यक उपनिषद

१.९,२६,४,२४,४,४.२२,४,५.१५

मैं तुम हूँ,.

दुनिया का दृढ आधार

शरीर के बिना चलनेवाली सांस की प्रक्रिया।

भविष्य का अमर स्वामी

वर्तमान का निर्भय निर्माता,

अतीत का शाश्वत रक्षक।

पूर्व उसका चेहरा है,

वह सत्य का दिन का प्रकाश है,

वही सत्य का चमकीला पालक है,

पश्चिम उसकी पीठ है,

वही अज्ञान का अंधेरा है,

वही इच्छाओं की निरंतर कतार है,

दक्षिण उसका दाया छोर है

वही चित्त के आवेग की सब कुछ

जलानेवाली ज्योती है,

वह मृत्यु का कडा अलिंगन है।

उत्तर उसका बाया छोर है,

वही समर्पण का गुप्त संस्कार है,

वही अमरत्व का परम सुख है।

सांस उसका सहारा है,

मन उसका प्रकाश है,

वाणी उसकी चमक है।

वायु उसकी सांस है

उसका मन चमकता है,

उसकी वाणी एक ज्योती है ।

अरुणोदय उसका मस्तक है,

चांद उसकी चमक है,

उसकी रील तारों से बनती है।

ध्वनी उसकी गरदन है,

हवा उसका सीना है,

आग उसका मुख है।

पानी उसका बीज है,
भूमि उसका अन्न है,
सूर्य उसकी आंख है।

अन्न उसके विचार है,
उसकी आवाज मेघ की गरज है,
उसकी दृष्टी बिजली है।

उसकी दुनिया इच्छा है,
इच्छा–शक्ति उसका शब्द है
कृतिया उसकी विचार–प्रक्रिया है।

उसकी इच्छा नियम है,
उसका बल सत्य है,
उसकी कृतिया विवेकी है।

उसका अभिषेक क्लेश है,
उसका आराम पुर्नजन्म है,
उसका परम सुख संज्ञान है।

उसका आधार अन्तरिक्ष है,

उसका शरीर समय है,

उसका सार मृत्यु है।

शाश्वत, एकत्रित,अपरिमित,

निरंतर, अमर द्वैत से मुक्त,

मनुष्य जीवन का जीवन है।

२५-२७/५/१९७८

विजनपाद

(एकाग्रता का दर्शन)

उठो। जागो। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने से

पहले मत रुको।

दुर्बलता के सम्मोहन को जीतो।

स्वामी विवेकानंद

दर्शन की परिभाषा

दर्शन सत्य का शास्त्र है, अनेकता मे बदलनेवाली एकता के बारेमे शास्त्र है, एकता मे घुलनेवाली अनेकता के बारेमे शास्त्र है।

यह समय के नदी मे बहनेवाली शाश्वतता के बारेमे शास्त्र है, यह अस्तित्व मे आनेवाले कारण-परिणाम प्रवाह के बारेमे शास्त्र है, यह निर्दय कर्म के प्रवाह के बारेमे शास्त्र है, जीवन और मृत्यु के प्रवाह के बारेमे शास्त्र है, यह मनुष्य के अपने असली अमर स्वरुप के, अपने असली संपूर्ण सार के, अपनी अपरिमित महानता के प्रत्यक्ष चिंतन की प्रक्रिया मे विलय होनेवाले समय का शास्त्र है।

यह मनुष्य के बारेमे शास्त्र है, जो जीवन-अस्तित्व की सर्वोच्च वास्तविकता है, यह शास्त्र दावा करता है कि मनुष्य जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च सार है, मनुष्य जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च सत्य है, मनुष्य ही जीवन-अस्तित्व के महान एकता का केंद्र है।

पुस्तक १

अध्याय १

१. सत्य को व्यक्त करने के लिए जादा शब्दो की आवशयकता नही है। ज्ञानी मनुष्य हमेशा कम शब्द बोलता है।

२. बातूनी मनुष्य की बाते सुनना अपना चुल्हा जलाने के लिए भूसे का उपयोग करने जैसा है, इस प्रकार सिर्फ तडकाने की आवाज हो सकती है, लेकिन उसमे कुछ भी नही प्राप्त होगा।

५-१९७७

३. जिसको सुनने के लिए कान है वह सुनता है इस विचार को अनेक ज्ञानी मनुष्योने विभिन्न अर्थो मे व्यस्त किया है, लेकिन जिसको जीभ है वह बोल सकता है इस विचार को किसी ने भी आव्हान नही किया है।

५-१९७७

१११५

४. अपने सहयोगी के मन मे अपरिपक्व विचार मत भरो, कच्चे फल मुंह मे जलन पैदा करते है।

५-१९७७

५. मूर्ख व्यक्ति को सत्य सिखाना बहरे को पुकारने जैसा है, वह तुम्हे नही सुनेगा और कोई उत्तर नही देगा।

५-१९७७

६. बुध्दि सोने के डंडे जैसी है - उसका आकार छोटा है, लेकिन वह भारी है और उसका दाम बहुत जादा है। और उसके लिए जादा पैसे देने पडेंगे।

७. बुध्दि का मतलब है बहुत कुछ कम शब्दो मे समझाने की क्षमता। इसका मतलब है न्यूनतम शब्दो मे जादा से जादा सार।

५-१९७७

८. जो अस्तित्व मे नही है उसे समझाने से जो अस्तित्व मे है वह सब कुछ नही दिखाना अधिक अच्छा है।

५-१९७७

९. जिस प्रकार बिजली से पहले मेघ की गरज होती है, उसी प्रकार सत्य और बुध्दि के पहले वाणी और चेतावनी होनी चाहिए।

५-१९७७

१०. सत्य को समझनेकी महत्वाकांक्षा न होनेवाले को सत्य बताना सूर्य की किरणे सोनेवाले मनुष्य की ओर डालने जैसा है।

५-१९७७

११. ज्ञान से बुध्दि दृढ हो जाती है। दुसरों को सिखाने से पहले तुम्हे परिपूर्ण ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

६-१९७७

१२. कुछ कहने से पहले अपने सांस के अंदर उसका उच्चारण करो, शायद आपको उसे प्रकट रुपसे कहने की आवश्यकता महसूस नही होगी।

६-१९७७

१३. जिस प्रकार झरने मे अनिवार्य रीती से पानी की छीटे पैदा होती है, उसी प्रकार खाली विचारो से खाली शब्दो का निर्माण होता है।

जिस प्रकार चेहरा और उसका दर्पण मे होनेवाले प्रतिबिंब इनके बिच मे संबंध होता है उसी प्रकार खाली बकवास और अनियंत्रीत विचारो के बिच संबंध होता है।

६-१९७७

१४. ज्ञानी मनुष्य को सिखाने प्रयास करने का मतलब है नदी को खेत मे नही बल्कि दूसरे नदी मे छलकाना है।

६–१९७७

१५. किर्ती मे हम थक जाते है, धन से हमारा बोझ बढ जाता है, लेकिन बुध्दि हमारे व्याधि का इलाज करती है

६–१९७७

१६. कहते है नयी मदिरा पुराने बोतल मे कभी नही डाली जाती है, जब नयी मदिरा नयी बोतल मे डाली जाती है तो दोने सुरक्षित रहते है।हमारा शरीर मदिरा के बोतल जैसा है, मन के अधिराज्य मे होनेवाला हमारा हिस्सा मदिरा जैसा है। एकाग्रता को हासिल करने से पहले तुम्हे शारीरिक और सांस के व्यायाम से अपने शरीरे को नयी मदिरा के बोतल मे बदलना चाहिए, इस का मतलब है हमे आसन और प्राणायाम की मदद से अपना शरीर मन तंदुरुस्त रखना चाहिए, तभी हम एकाग्रता प्राप्त कर सकते है

६–१९७७

इजीप, मॅथ्यु की ओर से

१७. सिधी सिढी चढते समय एक साथ पांच डण्डे चढकर उपर नही जाना चाहिए । उसी प्रकार यम और नियम मे परिपूर्णता हासिल करने के बाद जब तक आपका शरीर और मन सही ढंग से काम नही करता तब तक एकाग्रता के प्रशिक्षण का आरंभ नही करना चाहिए।

७–१९७७

१८. जिस प्रकार तितली हमेशा प्रकाश को धडकती है, उसी प्रकार अनियंत्रीत विचार सत्य की प्रकाश की और जानेवाले मनुष्य को घेर लेते है।

७–१९७७

१९. मन विचार करता है, मन विश्लेषण करता है, आत्मा चिंतन करती है।

७-१९७७

२०. लोगो को अपने विचार बताने की जल्दबाजी मत करो। सबसे पहले आपने सत्य का पूर्णज्ञान प्राप्त किया है या नही इसके बारेमे नि:सन्देह हो जाओ और उसके बाद लोगो तक यह पहुँचाओ।

७-१९७७

२१. अगर अपने जीवन मे आप को ज्ञानी मनुष्य से मिलके आनंद मिलता है तो आप कृतज्ञता के भाव मे और उनके प्रति आदर व्यक्त करके गुरु के चरणों के पास बैठकर उनकी बात सुनो।
ज्ञानी मनुष्य के उपस्थिती मे दर्शन के बारेमे ज्ञान प्राप्त करना या दर्शन या दर्शन के बारेमे सोचना कुशल संगीतकार के उपस्थिती मे गीत गाना या संगीत का ज्ञान प्राप्त करने जैसा है

२१/१/१९७८

२२. अपने शरीर और मन का दमन करने के बाद वे आप के नियंत्रण मे होंगे, अपने विचारों को नियंत्रीत करो और आप क्रमिक रुप से अपने शरीर के स्वामी बन जाओगे।

८-१९७७

२३. जिस प्रकार रात का अंधेरा दिन के उजाले में लुप्त हो जाता है, उसी प्रकार ज्ञान और झूठ एक साथ नही रह सकते, ज्ञानी मनुष्य किसी की नफरत नही करता, झूठ नही बोलता, किसीसे नही डरता और अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी नही करता है।

७-१९७७

२४. जिस प्रकार सूर्य गरमी और प्रकाश का स्त्रोत है उसी प्रकार ज्ञानी मनुष्य प्रेम की गरमी और ज्ञान के प्रकाश को फैलाता है।

७-१९७७

२५. असमय जन्म के कारण बच्चे दुर्बल और बिमार होते है। यह बात जो मनुस्य जल्दबाजी मे और शिघ्रगती से आगे जानेवाले मनुष्य के लिए भी सही है, ऐसा मनुष्य कभी भी परिपूर्ण ज्ञानी नही बन सकता।

७-१९७७

२६. चित्त के आवेग से मुक्ति और बल,ज्ञान और परम सुख मे व्यक्त होते है; ज्ञान और किसी चिजको पुरी तरह से समझना बल और प्रेम पर निर्भर करते है। सर्वव्यापी प्रेम सामर्थ्य और अभिज्ञान निर्माण करता है।

७-१९७७

२७. बल नीव है, उसके उपर निस्वार्थतता और आत्मत्याग की मदद से ज्ञान और प्रेम का निर्माण हो सकता है। विचार-प्रक्रिया इस इमारत बांधने की सामग्री है और ‘स्व’ उसका निर्माता है।

७-१९७७

२८. खुद को किसी चिजकी जानकारी नही होते हुए भी जो मनुष्य उसके बारे मे जानता है ऐसा दिखाने का प्रयास करता है वह साबुन के झाग जैसा होता है, वह थोडे स्पर्श से टूट जाता है।

९-१९७७

२९. स्त्रीयो के साथ स्पर्धा करनेवाले पुरुष रास्ते मे मिले जहरीले फल के लिए झगडा करनेवाल लोगो जैसे होते है

३०-६-१९७७

३०. ज्ञान वाणी से व्यक्त होता है, मन से समझा जाता है, एकाग्रतापुर्ण विचार और परिपूर्ण अंतर्ज्ञान भी ज्ञान प्राप्त करने के साधन है।

९-१९७७

३१. प्रतिभा और अपूर्व बुध्दि यह निरंतर नि:स्वार्थ काम का फल है और वह एकाग्रता पूर्ण मन से प्राप्त हुआ ज्ञान और सभी जीवो के प्रति सर्वव्यापी प्रेम से उजागर होने से बढ जाते है।

२-५-१९८१

३२. सुहावना ज्ञानी मनुष्य जादा बोलता नही है, वह कम बोलता है, वह चतुर होता है, दुसरो की बात सुन सकता है और उसे समझ भी सकता है।

९-१९७७

३३. जिस मनुष्य ने अभी तक पाण्डिय और सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त नही किया है, उसने बोलना और सिखाना नहि चाहिए, बल्कि सुनना और विचार करना चाहिए।

९-१९७७

३४. अपूर्व बुध्दि का मतलब है अद्वैत की कल्पना का संपूर्ण बोध और अभिव्यक्ति; अद्वैत की कल्पना याने अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजों की एकता; वह संगीत, कविता, दर्शन और इस एकता को व्यक्त करनेवाला कोई भी मार्ग हो सकता है

९-१९७७

३५. आप आंख से सुन नही सकते, कान से सूंघ नही सकते, घनफल को किलो मे नाप नही सकते, यह बात ब्राह्मण आत्मा के लिए भी सही है, निरपेक्ष को शब्द मे और मन मे निर्माण होनेवाले विचारों मे व्यक्त नही किया जा सकता है, अनंत, परिमित मे नापा नही जा सकता, शाश्वत सिमित से नापा नही जा सकता, स्वच्छता को गंदगी से नापा नही जा सकता, प्रकाश को अंधेरे से नापा नही जा सकता।

२५-२६/९/१९७७

३६. मकडा और जाले की तरह या मूल और उसके प्रतिबिंब की तरह ब्राह्मण और निरपेक्ष स्वरुप की दुनिया के लिए परम आवश्यक है।

३७. अज्ञान, भ्रम और मायाकी तुलना हम हमारा शाश्वत स्वरुप हमसे छिपानेवाले पर्देसे कर सकते है जिस प्रकार बादल सूर्य की रोशनी ढक देते है उसी प्रकार यह पर्दे हमारी असली सास हमसे छुपाता है । (लेकिन ये बादल सूर्य की रोशनी को हमेशा रोक नही सकते) यह पर्दा पानी की तरह होता है, जिस के कारण पानी का तल देखना मुश्किल होता है।

यह पर्दा आशाओं के धागो से बुना जाता है, बंधन उसका आधार है, चित्त के आवेग से उसे रंगाया जाता है, क्रोध मे उसमे हवा भर दी जाती है और उसका आकार बढ जाता है, लोभ से वह गीला हो जाता है।

१०-१९७७

३८. सूर्य के अनंत प्रतिबिंब हो सकते है, लेकिन सूर्य का सबसे स्पष्ट प्रतिबिंब कुडकिले पानी मे नही बल्कि स्थिर पानी मे निर्माण होता है। यह बात ज्ञानी मनुष्य के वाणी के लिए भी सही है, ऐसे ज्ञानी मनुष्य एकाग्र मन को प्राप्त करते है, जो जीवन-अस्तित्व के सार के, मुख्य वास्तविकता के प्रतिबिंब के सबसे जादा नजदिक होते है।

१०-१९७७

३९. प्रेम के बिना शक्ति मृत है और ज्ञान के बिना असंभव है, ज्ञान के साथ प्रेम निर्माण होता है और शक्ति उसकी रक्षा करती है, प्रेम की नीव ज्ञान होती है, वह शक्ति को उज्वल बनाता है और उसे प्रेरणा देता है।

१९-१०-

१९७७

४०. अहंकार और आत्म-मान यह अज्ञान के वृक्ष के मूल है, जीवन के प्रति बंधन इस वृक्ष का तना है; आशाए, आवेग उसकी टहनीया है, क्रोध और घृणा उसकी पत्तीया है।

२०/१०-१९७७

४१. पाण्डित्य मन के अंडे का भ्रूण है, उसे शक्ति के मुर्गी की गरमी मिलती है

२०/१०-१९७७

४२. आप शरीर के विभिन्न हिस्सो को अलग नही कर सकते क्योंकिी वे मनुष्य के एकत्रित शरीर के घटक है। प्रकृति मे भी हम यह बात देख सकते है, प्रकृति की सारी चिजे एक दूसरे से जुडी होती है और एक दूसरे पर निर्भर होती है, सब कुछ एकता के धागे से बांधा होता है, तुम्हारा और मेरा ऐसा कुछ भी नही होता है। यहाँ रुक्ष पदार्थो का एकत्रित महासागर होता है, यह उर्जा का महासागर प्राण या मन का महासागर होता है।

२६/१०-१९७७

४३. आप लहरो को महासागर से अलग नही कर सकते। अहंकार और आत्म-सन्मान मनुष्य के खुद के शाश्वत स्वरुप के बारेमे अज्ञान का फल है, यह विश्वव्यापी भ्रम, अविद्या का, माया का फल है।

२६/१०-१९७७

४४. सुंदरता का अपने आपमे कुछ अलग अस्तित्व होता है क्या? बल मन और प्रेम यही सुंदरता को प्रकट करते है। हम मनुष्य के अंदर होनेवाले साहस, बुध्दिचातुर्य, कुलिनता, नि:स्वार्थतता,इमानदारी इन गुणोंका आदर करते है, ये सुंदरता के उपरोक्त पहलूओ के विभिन्न प्रकटीकरण है।

३/११-१९७७

४५. सादगी पाण्डित्य की छाया है। जिस प्रकार छाया प्रकाश के पिछे जाती है, उसी प्रकार सादगी पाण्डित्य के पीछे जाती है।

१५/११-१९७७

४६. जिस प्रकार पदक के दोने छोरो को हम अलग नही कर सकते, उसी प्रकार हम श्रध्दा और ज्ञान, प्रेम और बुध्दिचातुर्य, अंतर्ज्ञान और विचार-प्रक्रिया एक दुसरे से अलग नही कर सकते, वे एक ही संपूर्ण भाग है।

२८/११-१९७७

४७. इंद्रिय सुख मे हर्ष और आकांक्षाओ मे समाधान खोजने का मतलब है अपने खुद की छाया मे दोपहर की धुप से छिपने का प्रयास करना या छोटी और टुटी हुई टहनीयो से आग बुझाने का प्रयास करना।

२८/११-१९७७

४८. जिस प्रकार प्रकाश को देखना आंखो के लिए परम आवश्यक है, उसी प्रकार जो यम और नियम के के दस आदेशो से खुद को पृष्ट करता है वही सत्य का प्रकाश देख सकता है, ये दस आदेश योगी की आंखे होती है।

ये आदेश इस प्रकार है : किसी को हानि नही पहुंचाना, इमानदारी, दूसरो की चिजे हडप नही करना, संयम, उपहार नही स्विकार करना, आंतरीक और बाह्य शुध्दता, समाधान, आत्म-दमन, ज्ञान प्राप्त करना और सत्य के प्रति निष्ठा।

७/१२-१९७७

४९. मनुष्य ने अपने शरीर और मन को पुरी तरह वश मे करना चाहिए, जिस प्रकार घोडे पर अच्छी तरह सवारी करनेवाला उसे काबु मे रखता है उसी प्रकार यह काम करना चाहिए। लेकिन इसका मतलब यह नही है कि हमने आत्म–यातना और खुद को बेत की मार देना ऐसे तरिको का हमेशा इस्तेमाल करना चाहिए। जब आप घोडे पर सवार होते है तो हमेशा चाबुक का इस्तेमाल करना अच्छा नही है। हर काम मे संयम और संतुलन होना बहुत आवश्यक है।

११/१२–१९७७

५०. जब आप अंधेरे से प्रकाश से भरे कमरे मे प्रवेश करते हो तो आप को कुछ क्षण कुछ भी नही दिखाई देता और आप अपनी आंखे अपनी इच्छा के विपरीत बंद कर देते है।

उसी प्रकार सर्वोच्च ज्ञान को जल्दबादी मे प्राप्त करने के सभी प्रयास हमेशा विफल हो जाते है। हमने क्रमिक ढंग से निचले ज्ञान से उच्च ज्ञान तक जाना चाहिए।

१७/१२–१९७७

५१. अपनी भावनाओं को वशीभूत कर लो और आप खुद के शरीर को जीत सकोगे; अपने मन पर राज करना सिख लो और आप मृत्यु के भय से मुक्त हो जाओगे; चित्त के आवेग को दूर करो, इच्छाओ को छोड दो, नाम और आकार के बंधन से मुक्त हो जाओ और आप को संपूर्ण मुक्ति प्राप्त हो जाएगी।

९/१२–१९७७

५२. मुक्ति का मतलब अपने स्व को नष्ट करना नही है, आपको स्व के सीमा का अनंतता तक विस्तार करना चाहिए। दूसरे अधिक यथार्थ शब्दो मे कहा जाए तो व्यक्ति के अलगाव को निर्माण करनेवाली सभी चिजों का अस्तित्व मेरे अंदर है–यह मुक्ति का सार है

१९/१२–१९७७

५३. जिस प्रकार विचार और मन एक दूसरे से अलग नही हो सकते, जिस प्रकार सूर्य के किरणो का सूर्य मे विलय होता है, जिस प्रकार प्रकाश और उनका स्त्रोत बल और उसका स्त्रोत, मूल वस्तु और उसका प्रतिबिंब एक दूसरे मे घुल जाते है उसी प्रकार प्रकृति का उसके स्त्रोत मे, निरपेक्ष मे, बाह्मण–आत्मा मे विलय हो जाता है।

१९/१२–१९७७

५४. सभी ज्ञान हमारे अंदर है, हमारे 'स्व' के गहराई मे है, लेकिन जिस प्रकार चकमक पत्थर पर सिर्फ थोडासा मारने से चिनगारी निकल आती है उसी प्रकर उच्च ज्ञान से हम ज्ञान को प्रकट कर सकते है, यह उच्च ज्ञान हमे गुरु से प्राप्त होता है। इसलिए आपको अपने गुरु की बातों को सुनना सिखना चाहिए।

२४/१२–१९७७

५५. जो लोग अभी तक सत्य को प्राप्त नही कर सके है वही लोग उसके बारे मे झगडा करते है। उसके बारे मे झगडा करने का मतलब है अंधो की तरह आचरण करना, अंधा मनुष्य आकाश के बारे मे झगडा करता है अथवा बहरा मनुष्य संगीत की आलोचना करता है।

विवेकी मनुष्य कभी झगडा नही करता, क्योंकि वह जानता है कि शब्दो मे व्यक्त न होनेवाली बातों को शब्दो मे व्यक्त करने के प्रयास बिल्कुल विफल हो सकते है।

२४/१२–१९७७

५६. संवेदनाए, परमसुख की लालसा, इंद्रिय सुख मनुष्य को जानवर बनाते है, मन, विचार करने की क्षमता मनुष्य को दूसरे प्राणीयो मे अलग करते है। बुध्दि, संवेदना पर निर्भर न होते हुए विचार

करना, शुध्द विचारो की दुनिया मे रहना, अमूर्त विचार दार्शनिक को दूसरे लोगों से अलग करते है। चिंतन, योगी का अंतर्ज्ञान, समाधी मे सत्य के प्रत्यक्ष समझना मनुष्य को ज्ञानी बनाते है।

२७/१२-१९७७

५७. संवेदना परिमित को समझती है और बुध्दि को रसद पहुंचाती है, बुध्दि संवेदना पर प्रक्रिया करके उन्हे मन मे भेजती है, मन अनंतता के बारेमे सोचता है और बादमे योगी के अंतर्ज्ञान मे बदल जाता है, उसका उच्च चेतना मे, सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन मे समाधी मे परिवर्तन हो जाता है।

२७/१२-१९७७

५८. परिमित, संकुचित, बदलनेवाली चिजो को पहले संवेदनाए बिना किसी माध्यम से समझ सकती है और उसके बाद मन उन्हे समझता है। अनंत, शाश्वत, अचल चिजो को मन समझता है और उसके बाद उन्हे योगी के अंतर्ज्ञान मे और चिंतन के माध्यम से और उच्च चेतना की मदद से समझा जाता है।

संवेदनाए और बुध्दि प्रकृती को समझती है। मन निरपेक्ष को समझता है उच्च चेतना और अंतर्ज्ञान चिंतन के माध्यम से उसे समझती है। संवेदना से मन तक, मन से बुध्दि तक, बुध्दि से चिंतन तक, अंतर्ज्ञान तक, अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजो के स्त्रोत तक- हमने इस मार्ग पर चलना चाहिए।

२७/१२-१९७७

५९. जब मनुष्य संवेदना को वश मे करता है, उनको बाहर नही भितर रखता है, तब चेतना को शाश्वतता, अनंतता और अचल चिजो की आकांक्षा होती है।

जब मनुष्य अपने मनपर हावी होता है, अपनी सक्रियता कम करता है, मन से जीवन-अस्तित्व के सार को समझने के प्रयास विफल होते है इस सत्य का स्विकार करता है, अनंतता को परिमित से व्यक्त करता है, अचल को बदलनेवाली चिजो से व्यक्त करता है, मन का उच्च चेतना मे परिवर्तन हो जाता है और बादमे योगी के अंतर्ज्ञान मे, समाधी मे आत्मा के प्रत्यक्ष चिंतन मे परिवर्तन हो जाता है।

३१/१२-१९७७

६०. राजयोग का अध्ययन करना और उसकी साधना करना लेकिन जीवन मे शुध्दता का अभाव होना, ज्ञान और पाण्डित्य प्राप्त करने का प्रयास करना उसी समय लौकिक सुखो के सपने देखना, सर्वोच्च ज्ञान की आकांक्षा रखना, सत्य को समझने का प्रयास करना और उसके साथ ही अपनी इच्छाओ को अपने उपर हावी होने देना, इंद्रिय सुख प्राप्त करने की मन मे इच्छा रखना, इन सारी बातो का मतलब है प्रकाश और अंधेरे को मिटाने का प्रयास करना या दो विरुध्द दिशाओ से आनेवाली रेलगाडी मे एकसाथ प्रवास करने का प्रयास करना।

१/१-१९७८

६१. आगअग्नी एक साथ गरमी देता है और जलाता भी है, यह बात योग के प्रशिक्षण के लिए भी उचित है। योग मनुष्य के लिए वरदान है लेकिन जो मनुष्य बुरे उद्देश्य के लिए योग की शक्ति का उपयोग करने का प्रयास करता है उसके लिए शाप बन जाता है।

जो मनुष्य यम और नियमो के आदेशो से खुद को पहले दृढ नही बनाता है और प्राणायाम के प्रशिक्षण का आरंभ करता है, वह बढनेवाले क्लेश, उदासी,भय, उन्माद और अंत मे मृत्यु ऐसी विपत्तीयो मे फंसने की संभावना बढ जाती है।

१/१-१९७८

६२. हमारा वर्तमान अतीत के कृतियो के बीजसे उगनेवाले वृक्ष की तरह होता है और वह भविष्य के पौधो के नये बीजो का निर्माण करता है, भविष्य के जीवन की नीव डालता है।

वर्तमान अतीत से सूत्रित होता है और वह भविष्य को सूत्रित करता है।

२/१-१९७८

६३. अगर आप वर्तमान की बीजो से भविष्य के पौधे उगाना नही चाहते तो आप को उन्हे तटस्थता की आग से जलाकर आत्मत्याग की भूमि मे बोना चाहिए और चिंतन मे रहना चाहिए।

अगर आप अपनी कार्यो से भविष्य के कर्म का निर्माण नही चाहते तो हमे इन कार्यो को पूर्ण करते समय व्यक्तिगत लाभ, कार्य के फल की इच्छा, व्यक्तिगत स्वार्थ इन चिजो के बारेमे नही सोचना चाहिए और उन्हे प्राप्त करने का प्रयास नही करना चाहिए।

२/१-१९७८

६४. निरपेक्ष की वास्तविकता को स्विकार करने से इन्कार करना और परिमित की वास्तविकता को स्विकार करना मन के लिए आसान है, यह परिमित की वास्तविकता संवेदना की माध्यम से समझी जा सकती है । संवेदना हमेशा परिमित की तरफ निर्देशीत होती है।

मन हमेशा अस्तित्व मे होनेवाली वास्तविक प्रकृति को अस्वीकार करना पसंद करता है। मन निरपेक्ष को कभी भी अस्विकार नही करता क्योंकि वह हमेशा अनंतता के बारेमे सोचता है।

योगी का अंतर्ज्ञान परिमित और अनंतता को मिलाता है, शाश्वत और निरपेक्ष मे सीमित चिजो को मिलाने का प्रयास करता है, यह सब उसे चिंतन के माध्यम से प्राप्त होता है।

३/१-१९७८

६५. जिस प्रकार हवा-चक्की से बीजो का आटे मे परिवर्तन होता है, साधारण शाकाहारी अन्न खाकर गाय दूध देती है, जुलाहा साधारण धागो से कपडे बुनता है, उसी तरह दार्शनिक, विचारक, ज्ञानी योगी का मन आत्मत्याग के माध्यम से और चित्त के आवेग को दूर करके प्रकृति से प्राप्त हुई जानकारी का संवेदना और मन की मदद से ज्ञान मे, पाण्डित्य मे, प्रकटीकरण मे, वेदांत के सर्वोच्च ज्ञान मे परिवर्तन करते है।

४/१-१९७८

६६. बल और इच्छा-शक्ति से मनुष्य को क्लेश से मुक्ति मिलती है और उसे असीम सामर्थ्य, सर्वोच्च इच्छा-शक्ति और योग की क्षमताए प्राप्त होती है, लेकिन यह सब होने के लिए उसका मार्ग मन के प्रकाश से, सर्वोच्च ज्ञान से और सबकी एकता के ज्ञान से उजागर होना चाहिए। इसके लिए मनुष्य को ज्ञान और उसका परिणाम-आत्मत्याग पर आधारित सर्वव्यापी प्रेमे से प्रेरणा मिलनी चाहिए, इसके लिए मनुष्य ने दुनिया के कल्याण के लिए नि:स्वार्थ कार्य करना चाहिए, खुद को अहंकार से, स्वार्थो उद्देश्यो से, व्यक्तिगत लाभ की इच्छा से मुक्त करना चाहिए

४/१-१९७८

६७. प्रकृति का अपने स्त्रोत की तरफ वापस जाना, अपने स्वामी की तरफ वापस जाना यह मन का आदर्श लक्ष्य है। मै सब चिजो मे हूँ, मेरे अंदर सभी चिजे एकत्रित है। जैसे ही वेदांत का यह सर्वोच्च विचार हमारे अंदर प्रकट होता है, हमारा मन अपना कार्य पूर्ण करता है और हमे आगे का मार्ग दिखाता है, यह मार्ग हमे उच्च चेतना और योगी के अंतर्ज्ञान तक ले जाता है, इस मार्ग पर चलने से हम सत्य का प्रत्यक्ष चिंतन करते है और संपूर्ण मुक्ति प्राप्त करते है।

४/१-१९७८

६८. सर्वव्यापी प्रेम यह भक्ति-योग का उद्देश्य है । सर्वाच्च ज्ञान और पाण्डित्य यह ज्ञान-योग का उद्देश्य है। शक्ति और असिम सामर्थ्ये यह राज योगका उद्देश्य है । नि:स्वार्थ कार्य यह कर्म योग का उद्देश्य है । अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजोंकी एकता को समझे बिना और जीवस्न-अस्तित्व के इस सर्वोच्च सत्यपर आधारीत आत्मत्याग का इस्तेमाल किए बिना उपरोक्त उद्देशों को प्राप्त करना संभव नही है ।

४/१/१९७८

६९. बुध्दि का वृक्ष मन के बीज से शक्ति के धरती पर उगता है और ज्ञान के प्रकाश से उजाागर होता है, प्रेम की गरमी से गरम होता है और नि:स्वार्थतता के रस से उसका पोषण होता है।

तटस्थता इस वृक्ष के मूल है, आत्मत्याग उसका कना है, यम और नियम के तत्व उसकी टहनीया है: अहिंसा-लोगो को हानि नही पहुंचाना, सत्य-इमानदारी, असत्य- दुसरो की चिजे हडप नही करना, ब्रह्मचर्य-चित्त के आवेग को मिटा देना, संयम, अपरिग्रह-उपहार को स्विकार नही करना, पैसो को छीनना नही, शौच-आंतरिक और बाह्य शुध्दता, संतोष-समाधान, तापस-आत्म-दमन, स्वाध्याय-सिखना और यंत्रो का जप करना, ईश्वर प्राणीधान सत्य के प्रति एकनिष्ठता।

५/१-१९७८

७०. जो सत्य को समझने के मार्ग पर पैर रखता है वह इस मार्ग को कभी नही छोडता है। सिर्फ अस्थायी रुकावटे संभव है।

इस मार्ग पर राज-योग के व्यायाम से और एकाग्र विचारो से प्राप्त हुई शक्ति कभी नही खो जाएगी।

अगर इस शक्ति का इस्तेमाल बुरे उद्देश्य के लिए किया जाएगा तो वह बढनेवाले क्लेश का स्त्रोत बन जाएगा। अगर आप के उद्देशय अच्छे है तो इस शक्ति से आपको आनंद, समाधान और ईश्वरीय परम सुख प्राप्त होगा। अगर इस शक्ति को आप इस मार्गपर आगे बढने के लिए निर्देशीत करेंगे, बुध्दि को, सर्वोच्च ज्ञान को प्राप्त करने के लिए इस्तेमाल करेगे तो आप तटस्थता, आत्मत्याग मुक्ति और संपूर्ण मुक्ति को प्राप्त करेंगे।

५/१-१९७८

७१. अनंतता और शाश्वतता किसी तरह दो प्रकारो मे स्पष्ट होते है।

मनुष्य प्रकृति की नकारात्मक अनंतता को समझनेका विफल प्रयास करता है, लेकिन इससे कुछ भी हासिल नही होता है, हम खाली रह जाते है। यह समय और अंतरिक्ष मे बहना होता है और उसके उपर कर्म के नियम का नियंत्रण होता है। कारणो की शाश्वत नदी, निर्माण का शक्तिमान संक्रमक प्रवाह, कारण और परिणाम की अनंत और निरंतर कतार यह इस प्रक्रिया को नियंत्रीत करनेवाले अन्य घटक है।

जब मन निरंतर बदलनेवाली चिजोसे थक जाता है और भयंकर सत्यो के पिछे भागने के प्रयासो की विफलता को समझता है (ये सत्य एक दुसरे को गलत ठहराते है), जब मन खुद की दुर्बलता को समझता है और अपने प्रकृती के उपर होनेवाली निर्भरता को जानता है, मन अपनी सीमा को पार करके उच्च चेतना की तरफ बढने का, समय और अंतरिक्ष के बाहर होनेवाली सकारात्मक अनंतता की तरफ बढने का प्रयास करता है। मन को इसके बाद वेदांत के सर्वोच्च पाण्डित्य की, योगी के अंतर्ज्ञान की, समाधी मे सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन की, प्रकृति पर संपूर्ण हावी होने की, अज्ञान से मुक्ति प्राप्त करने की, कर्म की श्रृंखला से संपूर्ण मुक्ति प्राप्त करनेकी आकांक्षा होती है।

६/१-१९७८

७२. आत्मा की और प्रकृति की कोई अलग दुनिया नही होती है। सब कुछ एकत्रित है,सब कुछ निरपेक्ष है, और प्रकृति मे सब चिजे खुद को व्यक्त करती है। निरपेक्ष सब चिजो को गती देनेवाला शाश्वत, प्रधान साधन है और प्रकृति शाश्वत परिणाम और प्रतिबिंब है।

इस एकता का नाम है ओम। निरपेक्ष, आत्मा यह आरंभ और सभी चिजो के प्रकटीकरण की संभाव्य क्षमता है, प्रकृति उदगिता उसका खुद को व्यक्त करने का माध्यम है, उदाहरण के लिए हम कह सकते है : माया, लीला,ईश्वरीय खेल। बुध्दि और चिंतन से अज्ञान का और अविद्या का अंत होता है याने ईश्वरीय खेल का अंत होता है और निरपेक्ष, आत्मा खुद की तरफ वापस आ जाता है, प्रतिबिंब मूल चिज की तरफ वापस आ जाता है।

एकता का सार है सत-चित्त-आनंद, शाश्वत परम सुख, शक्ति-मन-परम सुख।

शक्ति जीवन है, यह प्राण है, यह प्रकृती मे डाली गई आवश्यक शक्ति है और वह प्रकृती को प्रेरणा देती है।

मन सब चीजो का आरंभ,आधार और एकता है। यह महान एकता, एकाग्र विचार-प्रक्रिया, बुध्दि का स्त्रोत, अनंत ज्ञान और चिंतन है।

आनंद परम सुख होता है और सब कुछ उस से आरंभ होता है और उसकी ओर वापस आ जाता है। सभी चिजो को मिलानेवाला प्रेम ही होता है। यह हर्ष, सुख, अमरत्व का स्वर्गीय परम सुख है।

८/१-१९७८

७३. शक्ति मन के साथ रहती है और उसे आत्मत्याग और सर्वव्यापी प्रेम से बुध्दि की तरफ, समाधी मे चिंतन करनेवाले आत्मा के परम सुख की तरफ, योग के अंतर्ज्ञान की तरफ, वेदांत के सर्वोच्च सत्य की तरफ ले जाती है। ८/१-१९७८

७४. सब कुछ निरपेक्ष मे एकत्रित होता है, सब कुछ सत-चित्त-आनंद है, सबकुछ शाश्वत विवेकी परम सुख है, सब कुछ शक्ति-मन प्रेम है।

दुर्बलता नही होती है, यह कुछ हद तक कम होनेवाली शक्ति होती है, जो बाद मे खुद की ओर वापस आ जाती है और बाद मे उसका असीम सामर्थ्य मे, परमेश्वर जैसे शक्ति मे परिवर्तन हो जाता है।

संपूर्ण अज्ञान नही होता है, संपूर्ण अंधेरा नही होता है, यह कम होनेवाला ज्ञान, सत्य का कम होनेवाला ज्ञान, सत्य का कम होनेवाला प्रकाश होता है, वह कुछ देर बाद फिरसे बढने लगता है, और यथावकाश उसका पाण्डित्य मे, अनंत ज्ञान मे, अंतर्ज्ञान मे परिवर्तन हो जाता है।

संपूर्ण बुराई नही होती है, यह कम होनेवाला प्रेम होता है, जो बादमे कुछ अवस्था मे फिरसे परम सुख की तरफ, ईश्वरीय सुख की तरफ बढ जाता है।

शक्ति-मन-प्रेम के कम होने की चरम सीमा रुक्ष द्रव्य, शरीर,धरती है, जो मूलाधार के सबसे निचले स्तर के कमल के अनुरुप होता है, यह कमल कुंडलीनी का निवासस्थान और ईश्वरीय शक्ति के सोने का स्थान होता है। यहां से ही उपर की तरफ बढनेवाला मार्ग आरंभ होता है, जो कुंडलिनी के स्त्रोत की ओर जाता है।

७५. अंधेरा जितना जादा गाढा और काला होता है उतने ही जादा प्रकाश के उज्वल स्त्रोत की हमे उसे दूर करने के लिए आवश्यकता होती है।

दुनिया के जिस प्रदेश मे बुराई हावी होती है वहां अवतार प्रकट होता है, जहां लोगो के उपर अज्ञान के बादल इकट्ठे होते है, जहां धन की लालसा और वासना आध्यात्मिकता को हटाती है वहां अवतार प्रकट होता है।

८/१-१९७८

७६. दर्शन यह एक शाश्वत विचार–प्रक्रिया है, अव्यक्त चिजो को व्यक्त करने की शाश्वत आकांक्षा है, प्रकृती की श्रेणीओ मे निरपेक्ष को व्यक्त करने के मन के आरंभ से ही विफल होनेवाले प्रयास है, इसलिए हर परिपूर्ण दार्शनिक प्रणाली का स्थान दुसरी अधिक संपूर्ण और परिपूर्ण दार्शनीक प्रणाली लेती है।

ओम के महान ध्वनी मे अनंत परिमित के सबसे नजदिक पहुंच जाता है, जो सबसे जादा संपूर्ण और परिपूर्ण दार्शनिक प्रणाली है क्योंकि दूसरे किसी दार्शनिक प्रणाली मे जीवन–अस्तित्व का सार इससे जादा यथार्थ शब्दो मे व्यक्त करना संभव नही है।

परिमित और अनंत का संपूर्ण विलय, और अधिक यथार्थ शब्दो मे कहा जाए तो जब शाश्वत परिमित को शोषित करता है, जब प्रकृति अपने स्त्रोत की ओर वापस आ जाती है– यह अब हमारे मन के बाहर होता है, यह सब उच्च चेतना मे, योग के अंतर्ज्ञान मे, तुरिया मे, समाधी मे होता है।

मन प्रकृति है, सभी चिजो का आरंभ और अंत है, शिव की आंख है. अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजे है, यह उच्च गुणों का निरपेक्ष है, यह अजना कमल है।

मन की मदद से मन के उपर उठने से मन का कार्य रुक जाता है, हमारा व्यक्तिगत स्व ईश्वरीय खेल को रोक देत है, उससे हमे जादा परम सुख मिलता है, हम अपने असली सार का चिंतन करते है, सत्य के साथ मिल जाते है, हमे मुक्ति, संपूर्ण मुक्ति प्राप्त होते है।

९/१–१९७८

७७. सभी कवी दार्शनिक होते है और सभी दार्शनिक कवी होते है। दोनो को शाश्वतता की आकांक्षा होती है। लेकिन कवी अनंतता को महसूस करता है, उसके स्तोत्र गाता है, अचल और शाश्वतता के गीत गाता है, दार्शनिक इन्ही चिजो के बारेमे मन और बादमे चिंतन करता है।

अपूर्व बुध्दि का कवी और अपूर्व बुध्दि का दार्शनिक दोनो ही पाण्डित्य, ज्ञान, सत्य का प्रकाश प्राप्त करते है, दोनो ही ज्ञानी है, योगी है, लेकिन उनमे से एक भक्ति-योग के मार्ग के अंतमे अपना लक्ष्य प्राप्त करता है, तो दूसरा ज्ञान-योग के माध्यम से सत्य को प्राप्त करता है।

१०/११-१९७८

७८. अन्न की तलाश मे कुत्ता सूंघने की क्षमता का इस्तेमाल करता है, दार्शनिक के बारे मे भी यह बात सही है, जो सत्य की तलाश मे आत्मत्याग पर निर्भर रहता है, क्लेश मे हुई संवेदना उसे मार्ग दिखाती है, वह बंधनो को नि:स्वार्थतता से पार करता है, अहंकार छोड देता है, वैयक्तिक लाभ की तरफ ध्यान नही देता है, इच्छाओ को क्रमिक रुप से छोड देता है; ये इच्छाए मनुष्य को अपने निचले स्वरुप का गुलाम बनाती है, अपने प्रतिबंब मे विलय करने के लिए विवश करती है, बार-बार उसे जन्म और मृत्यु के अनंत कतारो मे अवतार लेने के लिए विवश करती है। जिस प्रकार पानी के सतह पर होनेवाली लहरे हमे पानी का तल नही दिखाती उसी प्रकार ये इच्छाए सत्य के प्रकाश को ढक देती है। यह इच्छाए हमे संसार के मार्ग पर आगे ले जाती है, यह मार्ग अनंत अवतारो का, यातना और क्लेश का वास्तविकता मे होनेवाला अवास्तव मार्ग है, इसलिए हमे इन इच्छाओ का त्याग करना चाहिए।

१३/१-१९७८

७९. जिस प्रकार रात का अंधेरा अरुणोदय के लिए बलि होता है, उसी प्रकार सत्य के ज्ञान के चमकिले प्रकाश के बाद बंधनो के त्याग की प्रक्रिया शुरु हो जाती है, हम बनावटी परम सुख और आनंद को छोड देते है, इच्छाओ का, किर्ती, धन और शक्ति का त्याग करते है, उसके बाद हम अपना अमर सार खोजते है।

जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश और अंधेरा एक साथ नही रह सकते उसी प्रकार अज्ञान, अविद्या और माया ब्राह्मण-आत्मा मे अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजो की एकता के ज्ञान से, पाण्डित्य से, वेदांत के शाश्वत सत्य से नष्ट हो जाते है।

९/१-१९७८

आत्म-सिध्दि

८०. हम सत्य के उसके सबसे भितरी गहराई तक समझ नही सकते, लेकिन इसका मतलब यह नही है कि हमे सत्य को समझने की प्रक्रिया छोड देनी चाहिए।

हमारा मन अचल, अनंत, शाश्वत का रहस्य पुरी तरह नही समझ सकता, लेकिन इसका मतलब यह नही है कि हमे सत्य के बारे मे विचार करना छोड देना चाहिए। हम विचार प्रक्रिया के माध्यम से अपना संपूर्ण शाश्वत स्वरुप समझ नही सकते, अपने निरपेक्ष 'स्व' को, निरपेक्ष इच्छा-शक्ति को, असली महानता को, सर्वशक्तिमानता को, अनंत शक्ति को विचार-प्रक्रिया मे समझ नही सकते, लेकिन हमे अपने अंदर सत्य को खोजने का प्रयास निरंतर जारी रखना चाहिए।

सत्य के बारे मे निरंतर विचार आवश्यक है, उसी प्रकार बिना रुके सत्य को समझना चाहिए, हमेशा सत्य की आकांक्षा रखनी चाहिए और विचार-प्रक्रिया के चरम सीमा तक यह सब प्रयास जारी रखना चाहिए, जब तक मन की क्षमता समाप्त नही होती तब तक हमे यह काम छोडना नही चाहिए, केवल इसी प्रकार मन का योग के अंतर्ज्ञान मे, सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन मे, गहरे एकाग्रता मे, समाधी मे परिवर्तन हो जाता है।

केवल मन की क्षमताओं का पुरी तरह उपयोग करके और आत्म-प्रकटीकरण से ही मन का एक बिलकुल अलग प्रकार की उच्च अवस्था मे संक्रमण होता है, हम अभी तक खोज नही कर सके, चिजों को खोज सकते, जिन चिजों को हम जान नही सकते, जिनके बारेमे विचार नही कर सकते, जिनको व्यक्त नही कर सकते उन्हे हम प्राप्त कर सकते है, शाश्वतता के गुप्त गहराई तक खुद को डुबो सकते है, गहरी एकाग्रता के ज्ञान के चमकीले उंचाई तक खुद को उपर उठा

सकते है, द्वंद्व और अलगाव से उपर उठ सकते है, शाश्वत कर्म की निष्ठुरता पर विजय प्राप्त कर सकते है।

एकाग्रता के कठोर प्रयास शरीर और आत्मा को दृढ बनाना, मन और विचारों का शुध्दीकरण, ज्ञान को निरंतर प्राप्त करना और उसका संचय करना, एकाग्रता से विचार करना, महान एकता और सर्वव्यापी प्रेम के सत्य को समझना, नि:स्वार्थ कार्य और बनावटी व्यक्तित्व का त्याग करना – यह मुक्ति का मार्ग है और उसी मार्ग पर हम क्लेश के माध्यम से क्लेश से मुक्ति प्राप्त कर सकते है, अलगाव के महान भ्रम से संपूर्ण मुक्ति प्राप्त कर सकते है।

२७/९-२-१०-१९८९

८१. जब फल पक जाता है तो वह अपना पोषण करनेवाले वृक्ष से अलग हो जाता है, नये वृक्ष को जीवन देने के लिए पहले वृक्ष से अलग हो जाता है, दूसरे फलो के पकनेका स्त्रोत बन जाता है।

उसी तरह महान प्रकृति माता की मदद से मनुष्य एक जन्म से दूसरे जन्म तक ज्ञान इकठ्ठा करता है, पाण्डित्य का संचय करता है, अपने असली सार को याद करता है, यह फर्क मनुष्य ने निर्माण किए महान भ्रम का ही फल है, तटस्थता और आत्मत्याग हासिल करता है और अंत मे मनुष्य सर्वोच्च सत्य सर्वोच्च पाण्डित्य, मनुष्य के अंदर, ब्राह्मण-आत्मा के अंदर होनेवाली सब चिजो के एकता के बारेमे वेदांत का सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त करता है, शाश्वतता का प्रत्यक्ष चिंतन करता है, अनंत ज्ञान को, योगी के अंतर्ज्ञान को, समाधी को मुक्ति को संपूर्ण मुक्ति को प्राप्त करता है।

२३/७-१९७८

८२. बुध्दि वाणी का दूध है, दूध ज्ञानी मनुष्य का अन्न है।

२४-१-१९७८

८३. गाय दूध देने से इन्कार नही कर सकती, इसके अलावा वह हर्ष से दूध देती है, यही बात विचारक, दार्शनिक के लिए भी उचित है, जो विचारो के सीमा के बाहर होनेवाली चिजो के बारेमे, असली वास्तविकता के बारेमे विचारो को रोक नही सकता। ज्ञानी मनुष्य अव्यक्त चिजो को, वास्तविकता के वास्तविक चिजो को सिखाना बंद नही करता। योगी अचल, अनंत,शाश्वत, तीन स्तरवाला समन्वय, प्रधान वास्तविकता, सबका निर्माण करनेवाला आत्मा, आत्मा-ब्राह्मण निरपेक्ष 'स्व' इन चिजो के बारे मे चिंतन करना छोड नही सकता।

२४-१-१९७८

८४. अपने असली अमर स्वरुप को समझकर अपरिमित आत्म-विश्वास, अपने अंदर सब चिजों की एकता और सब चिजो के अंदर तुम्हारी एकता को साकार करना, अपनी क्षमताओ पर पूरा विशवास रखना, अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजो के बारे मे सर्वव्यापी प्रेम, सब चिजो को अपने अंदर और खुद को सब चिजो मे एकत्रित करना, अपनी अपरिमित क्षमताओ पर विश्वास रखना, अहंकारीक लक्ष्यो का त्याग करना, बनावटी व्यक्तित्व का त्याग करना, दुनिया के कल्याण के लिए नि:स्वार्थ कार्य करना, और उसके प्रति श्रध्दा कायम रखना इन चिजो के और इसी श्रध्दा के कारण मनुष्य सर्वशक्तिमान, चमकीला विजयी परमेश्वर बन जाता है, यह आनंदी लोगो का सबसे बडा आनंद है, दु:खी लोगो के क्लेश के प्रति करूणा, क्रोधी लोगो के दु:ख के प्रति हमदर्दी-इन्ही चिजो के कारण मनुष्य सर्वशक्तिमान, ज्ञानी हो जाता है जो समय के बंधन को तोड देता है, समय के पर्दे के पिछे छुपी हुई चिजो को देखता है, यही श्रध्दा मनुष्य को सर्वशक्तिमान तटस्थ योगी बनाती है, जो अचल, अपरिमित, शाश्वत चिजों का प्रत्यक्ष चिंतन करना है, यही श्रध्दा मनुष्य को आत्मत्याग का अनंत परम सुख देती है और उसे मुक्ति, संपूर्ण मुक्ति की ओर ले जाती है।

२४/१-१९७८

८५. तुम सब कुछ हो, सब कुछ ब्राह्मण है, सब कुछ आत्मा है।

प्रकृति, जीवन और संपूर्ण दुनिया निरपेक्ष, ब्राहमण-आत्मा की तरह असली है, क्योंकि वे ही ब्राह्मण- आत्मा है और उसी से इनका निर्माण होता है, जिस प्रकार मकडा जाल बनाता है या आग से चिनगारीया निकलती है उसी प्रकार यह प्रक्रिया होती है। जाला उसे बनानेवाले मकडे इतनाही वास्तविक है। आग से निकलनेवाला धुआं आग से अलग नही हो सकता। प्रकृति वास्तविक है, वह शक्ति का, ईश्वरी शक्ति का मानवीकरण है, जो निरपेक्ष, ब्राह्मण-आत्मा, ''असली वास्तविकता[१]'' पर आधारित है।

सब कुछ ब्राह्मण है सब कुछ आत्मा है, सब कुछ तुम हो, ईश्वरीय परम सुख के अतिरेक से अपने आप से खेल रहे हो। मै प्रकृती की दुनिया मे आत्म-विकास कर रहा हूँ। जिस प्रकार ''मकडा धागे की मदद से प्रकट होता है[२]'' मै प्रकृती को मेरे बाहर निकालता हूँ। मेरा परम सुख के परिपूर्णता से निर्माण होता है, मै अपने निर्माण से कुछ देर तक खुद का मनोरंजन करता हूँ , बादमे उसे अपने अंदर घुलाता हूँ और बार-बार यह मेरा ईश्वरीय खेल खेलता हूँ।

मै सत-चित-आनंद, शाश्वत विवेकी परम सुख के माध्यम से, जीवन के रुप मे, मन के रुप मे और अंत मे प्रेम के रुप मे खुद को व्यक्त करता हूँ।

मेरा ईश्वरीय बल का खेल उर्जा, आवश्यक उर्जा, प्राण बन जाता है, जो दुनिया को जीवन देता है, दुनिया के चिजो को छेदता है और उन्हे एकत्रित करता है, जिस प्रकार पट्टा चिजो को बांधता है उसी प्रकार यह प्रक्रिया होती है।

मेरा ईश्वरीय मन महान एकता मे, आदि अवस्था के मन मे बदल जाता है, बाद मे उसका प्रकृती की दुनिया मे, महान भ्रम मे, माया मे परिवर्तन हो जाता है।

मेरा ईश्वरीय परम सुख, हर्ष, समाधान, आनंद, सर्वव्यापी प्रेम, जो अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजो को मिलाता है, इन्ही चिजो मे व्यक्त होता है।

प्रकृती मे आत्म–प्रकटीकरण के बाद मै क्रमिक रुप से सभी परिणामो को प्रधान कारण मे घुलाता हूँ, अज्ञान, अविद्या को नष्ट करता हूं, जिस प्रकार मकडा अपने बनाये हुए जाल मे चला जाता है, उसी प्रकार यह सब कुछ होता है।

आवश्यक उर्जा प्राण, इच्छा–शक्ति और बल, प्राण के महासागर मे मिल जाते है और अपरिमित सामर्थ्य मे, ईश्वरीय बल मे घुल जाते है।

१. बृहदअरण्यक उपनिषद ११.१.२०

२. बृहदअरण्यक उपनिषद ११.१.२०

व्यक्तिगत मन मन के महासागर मे मिल जाता है और बाद मे उसका सर्वव्यापी ज्ञान मे, योग के अंतर्ज्ञान मे, समाधी मे सत्य के चिंतन मे परिवर्तन हो जाता है, वह पाण्डित्य मे, ईश्वरीय मन मे बदल जाता है।

परम सुख प्रेम को निगलता है और उसका परम सुख से, ईश्वरीय परम सुख मे परिवर्तन हो जाता है।

सब कुछ एकत्रित है, सब कुछ एकत्रित हुए चिजों के अंदर चलता है, यह प्रक्रिया कभी न रुकनेवाले लय की तरह निरंतर बजनेवाले '' मै हूँ '' इस गीत की तरह होती है, और ज्ञान के अपरिमित महासागर से उसका निर्माण होता है।

सब कुछ एकत्रित है सब कुछ समन्वय है, तुम्हारा और मेरा ऐसा कुछ भी नही होता है। तुम सब कुछ हो, तुम दुनिया को उत्पन्न करते हो, दुनिया अपनी प्रधान कारण की ओर निरंतर आगे बढने के मुक्ति की ओर संपूर्ण मुक्ति की ओर आगे बढने के प्रयासो मे तुम्हारे अंदर वापस आ जाती है।

२४–२५/१/१९७८

८६. जो काम बिल्कुल चित्तरंजक नही होता है वही सबसे अधिक सुहावना होता है।

११/१०/१९८२

८७. सभी जीव महान पृथ्वी माता से उत्पन्न होते है और उसमे वापस आ जाते है। सभी नदीया महासागर से पानी लेती है और अंतमे महासागर को मिलती है। जीवन के सांस का शक्तिमान प्रवाह आवश्यक उर्जा के महासागर से, प्राण से उत्पन्न होता है और बादमे इसी महासागर मे वापस आ जाता है। जिस प्रकार आदि अवस्था का ध्वनी अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजो को धारण करता है और मौन के अपरिमित महासागर मे नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार सब कुछ ब्राह्मण-आत्मा मे एकत्रित होता है, निरपेक्ष मे, सत-चित-आनंद मे, सर्वशक्तिमान, सब कुछ जाननेवाले, सबका शोषण करनेवाले प्रेम मे, शाश्वतता मे, ज्ञान से परिपूर्ण प्रतिष्ठीत परम सुख मे एकत्रित हो जाता है

२/२/१९७८

८८. जब आप किसी सुगंधी फूल को देखते है, आप इच्छा हो या न हो उसके सुगंध का आनंद लिए बिना नही रह सकते।

जब तुम परिपूर्ण ज्ञानी, योगी अवतार के साथ होते हो, उसके उपदेश और चेतावनी को सुनते हो, तुम क्रमिक रुप से सत्य के प्रकाश से खुद को जोडते हो, तुम्हारे मन मे खुद का असली अमर स्वरुप जानने की आकांक्षा उत्पन्न होती है, आप और अधिक शुध्द, अच्छे और दयालु,ज्ञानी, बलवान हो जाते हो, अपनी बनावटी दुर्बलता फेक देते हो, अपना काल्पनीक व्यक्तित्व हटाने की प्रक्रिया का आरंभ करते हो, इस काल्पनीक व्यक्तित्व के कारण ही अकेलापन, अलगाव, क्लेश उत्पन्न होते है। जब आप संपूर्ण जीवन के साथ एकता महसूस करते हो, तब आप खुद को सभी लोगो मे देखने का और सभी लोगो को खुद के अंदर देखना आरंभ करते हो, सर्वोच्च सत्य के ज्ञान को प्राप्त करने की तुम्हारे अंदर जागृती निर्माण होती है,

मनुष्य राजा है, स्वामी है, प्रभु है, प्रकृती का निर्माता है, लेकिन उसका गुलाम नही है यह आप समझने लगते है, उसके बाद तुम बल-मन-प्रेम-नि:स्वार्थतता के मार्ग पर प्रवेश करते हो, यह मार्ग तुम्हे मुक्ति, संपूर्ण मुक्ति की ओर ले जाता है।

८९. लोग उनका पर्दाफाश करनेवाले मनुष्य की नफरत करते है क्यों कि वह उनसे प्रेम करता है।

लोग उन्हे अहंकार को अस्विकार करना सिखानेवाले, बुरी शक्ति, कीर्ती, धन और परम सुख का त्याग करना सिखानेवाले, उनके अंदर ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न करनेवाले, उन्हे पाण्डित्य सिखानेवाले, सत्य दिखानेवाले मनुष्य का आदर करते है और उसे सन्मान देते है।

जो मनुष्य सभी लोगो पर प्यार करता है, उन्हे सर्वव्यापी प्रेम सिखाता है, उन्हे शुध्द प्रेम देता है, उन्हे नि:स्वार्थतता, अहंकार के बंधन से मुक्त होने के परम सुख, मुक्ति, संपूर्ण मुक्ति की ओर ले जाता है उसपर लोग प्रेम करते है।

६/२/१९७८

९०. सबके लिए सत्य का मार्ग एकही है - यह शक्ति-ज्ञान-प्रेम-नि:स्वार्थतता का मार्ग है, यह तटस्थता, आत्मत्याग और अलगाव का मार्ग है, लेकिन हर मनुष्य ने इस मार्गपर अपनी गती से, अपना कर्तव्य निभा के, अपने कर्म के अनुरुप, अपने धर्म का पालन करके आगे जाना चाहिए।

६/२/१९७८

९१. शरीर एक जहाज है, उसपे सवार होकर मनुष्य महासागर को पार करता है।

हमारे 'स्व' का अवतार यह जहाज का मालिक और यात्री है, मन इस जहाज का कप्तान है, संवेदना उसके मल्लाहो का जत्था है, कप्तान मन की मदद से अपने मल्लाहो के जत्थो के साथ संपर्क करता है, सत्य का ज्ञान, सबकी एकता को समझना यह इस जहाज का रडार है, इच्छा-

शक्ति, निर्धारण, अपनी क्षमताओ पर अपरिमित विश्वास, यह इस जहाज की गती बढानेवाली हवा है, सर्वव्यापी प्रेम उसका इंधन है, नि:स्वार्थ कार्य उसका इंजन है, आत्मत्याग उसका ढांचा है, तटस्थता उसका आधार है, आत्म-चेतना उसके बोल्ट और उसे घटको को एकत्रित रखनेवाले साधन है।

७/२/१९७८

९२. नि:स्वार्थ प्रेम की टीम, खरापन, ईमानदारी से दृढ हो जाती है, एकता से चलती है, दुसरो की चिजो को हडप नही करना इस तत्व का पालन करती है,तटस्थता और संयम के साथ आगे चलती है, किसी का पैसा लुटाती नही है, किसी से उपहार नही स्विकार करती है। यह टीम आपको मृत्यु के राज्य से बाहर आने का मार्ग दिखाएगी।

हमारे 'स्व' का अवतार इस टीम का यात्री है, मन उसका ड्रायव्हर है, मन उसका लगाम भी है, संवेदना उसके घोडे है, संवेदना की वस्तुए उसका मार्ग है, ज्ञान चंद्र का शितल प्रकाश है, जो अज्ञान की अंधेरी रात मे तुम्हारा मार्ग उजागर करता है, और तुम्हे समाधी मे, सत्य के चिंतन का, मुक्ति, संपूर्ण मुक्ति की और ले जानेवाला मार्ग दिखाता है।

७/२/१९७८

९३. यम-मृत्यु का स्वामी- कर्म के सिंहासन पर बैठता है और यह कठोर न्याय का नियम है। इस राज्य की ओर पाच मार्ग जाते है: पहला मार्ग क्रोध, और नफरत का है, दुसरा मार्ग झूठ, पाखंड

और बनावटी पुण्य का है, तिसरा मार्ग बेईमानी, चोरी और कायरता का है, चौथा मार्ग कामवासना, तराश, चित्त के आवेग का है, पांचवा मार्ग लोभ, पीडा देने का, पैसे लुटाने का है।

तुम चार-स्तरीय मार्ग पर चलके इस राज्य से बाहर आ सकते हो, मृत्यु की शक्ति से दूर जा सकते हो। असीम, सामर्थ्य और बल की मदद से, जो तुम्हे नियंत्रीत मन से प्राप्त हो सकता है, याने की राज योग के मदद से और उसके साथ ही वेदांत के शाश्वत और सर्वोच्च ज्ञान की मदद से, मेरे अंदर सब कुछ एकत्रित है और मै सबके अंदर हूँ यह जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च सत्य समझकर, याने ज्ञान योग की मदद से सर्वव्यापी प्रेम, याने भक्ति-योग की मदद से, दुनिया के कल्याण के लिए नि:स्वार्थ कार्य की याने कर्म-योग की मदद से तुम इस राज्य के बाहर आ सकते हो।

९४. जिस प्रकार छाया के बाद दिन का प्रकाश आता है उसी प्रकार मृत्यु के बाद जीवन आता है।जो अभी तक इच्छाओ से मुक्त नही है, चित्त का आवेग, क्रोध, तराश, अहंकार, लोभ, महत्वाकांक्षा इन चिजो से परेशान है, उसके लिए भी यह बात सच है। ऐसा मनुष्य बार बार मृत्यु के जाल मे फंसता है, बार-बार वह यम के, याने मृत्यु के राज्य के स्वामी के कठोर कर्म के निष्पक्ष स्वामी के चंगुल मे फंसता है।

१२/२/१९७८

९५. आप शक्ति, ज्ञान, प्रेम और नि:स्वार्थतता इन चार तंतुओसे बनी रस्सी की मदद से अज्ञान के अंधेरे के ठंडे रसातल से बाहर आ सकते हो और सत्य की चमकीली उंचाई तक पहुंच सकते हो।

११/२/१९७८

९६. मक्खी शहद का भरा हुआ ग्लास देखकर आनंदी हो जाती है और चींटी शक्कर को देखकर खुष हो जाती है। कीर्ती, धन, बल, को खोजनेवाले बुरे उद्देश्य और इन्द्रिय सुख की ओर ले जानेवाले परम सुख का पिछा करनेवाले लोगो के साथ ऐसा ही कुछ होता है। इन चिजो के कारण क्लेश उत्पन्न होता है इसको वह जानते नही है, यह चिजे बार-बार उन्हे मृत्यु के जाल मे फंसाती है, उन्हे अज्ञान की दया पर निर्भर रहना पडता है। वह लोग अपना असली अमर स्वरुप भुलने लगते है, वह अपने खुद की दुर्बलता के गुलाम बन जाते है, वह अपनी ही इच्छा से खुद बनाये हुए जाल मे फंस जाते है और वही उनका घात होता है।

१३/२/१९७८

९७. जब बहुत दूरे पर होनेवाले तारो का अस्तित्व खत्म हो जाता है तभी उसका प्रकाश हम देख सकते है। उसी प्रकार हमारे हाल ही की कृतिया हमारी चेतना मे भविष्य के कृतियो के लक्ष्यो के रुपमे याद रखी जाती है, जो उचित रुप मे और उचित परिस्थिती मे प्रकट होती है, इसके अलावा यह इस समय के घटक का कोई महत्व नही होता है।

१३/२/१९७८

९८. ध्वनी, शब्द और वाणि ये असीम क्षमताओ का सबसे महान उपहार है।

आप एकही निर्माण सामग्री से बिल्कुल छोटा घर बना सकते हो या भव्य आयफेल टॉवर बना सकते हो। शब्दो के लिए भी यह बात सच है,किसी के ओठो से निकलनेवाले शब्द बहुत कठीन होते है, उन्हे आप समझ नही सकते, उनका उच्चारण भी गलत होता है, लेकिन कुछ लोगो के ओठो से निकलनेवाले शब्द शुध्द और समझने के लिए आसान होते है उनका उच्चारण भी सही होता है, ज्ञानी मनुष्य को सुनते आप यह सब महसूस करेंगे। यह ज्ञानी मनुष्य सत्य का सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त करता है, उसके शब्द मनुष्य के अंदर होनेवाली सब चिजो की एकता का सर्वोच्च वेदांत सत्य प्रकट करते है, इस सत्य के ज्ञान प्राप्त करने का मार्ग है शक्ति-मन-प्रेम-नि:स्वार्थतता, तटस्थता, आत्मत्याग, सब के लिए सर्वव्यापी प्रेम के आधार पर दुनिया के कल्याण के लिए नि:स्वार्थ कार्य, मनुष्य को अपना असीम सामर्थ्य जानने के लिए मदद करने का कार्य, उसे अपने अमर स्वरुप की याद दिलाने का, उसका असली संपूर्ण सार समझाने का कार्य-यह इस इमारत का प्रवेशद्वार है।

१९/२/१९७८

९९. जिस प्रकार आग इंधन को जला के सब को उपयुक्त गरमी देती है और अपने प्रकाश से अंधेरा दूर करती है, उसी प्रकार ज्ञानी मनुष्य अपनी वाणी की आग से अज्ञान का अंधेरा जलाता है,

सबको प्रेम की गरमी देता है और ज्ञान के प्रकाश से, बुध्दी के चमकीले प्रकाश से, शाश्वत सत्य के चमकीले प्रकाश से उनका मार्ग उजागर करता है।

१९/२/१९७८

१००. आपको पता है की बिजली का प्रवाह सबसे कम अवरोध के मार्ग पर बहता है, यही बात हमारे मन के लिए भी सही है। हमारा मन हमेशा नयी, हर नयी और प्रचलित न होनेवाली चिजो को स्विकार नही करता, वह हमेशा भावनाओ के सामान्य मार्गपर चलना पसंद करता है, वह हमेशा भावनाओ के पिछे जाता है और ये भावनाए हमेशा परिमित, अशाश्वत, बदलनेवाली चिजों पर निर्देशीत होती है,याने वह हमेशा बाहर की तरफ निर्देशीत होती है।

तुम्हे अपनी भावनाओ पर विजय प्राप्त करने के लिए उन्हे अंदर की तरफ मोडने के लिए , मन को शाश्वत, अनंत, अचल, चिजो की तरफ निर्देशीत करने के लिए उसे सत्य के बारे मे सोचने के लिए, ब्राह्मण-आत्मा मे, मनुष्य से सबकी एकता के बारे मे सोचने के लिए विवश करने के लिए बहुत प्रयास करने पडेंगे, अपने इच्छा-शक्ति का इस्तेमाल करना पडेगा। आपको अपने मन मे आत्म-चेतना के मार्ग पर, शक्ति-मन-प्रेम-नि:स्वार्थतता के मार्ग पर, बुध्दी, शाश्वत सत्य, मुक्ति और संपूर्ण मुक्ति के मार्ग पर चलने की आकांक्षा उत्पन्न करने के लिए प्रयास करने पडेंगे।

२०/२/१९७८

१०१. सत्य यह ऐसी इमारत है जिसकी नीव बल और तटस्थता है, उसका छत ज्ञान है, सब चिजो की ब्राह्मण–आत्मा मे, मनुष्य मे एकता यह इस ज्ञान का सार है, आत्मत्याग, व्यक्तिगत लाभ के बारमे सोचे बिना नि:स्वार्थ कार्य यह उसकी दिवारे है। मन के प्रकाश से यह इमारत उजागर होती है, सब के लिए प्रेम से उसे गरमी मिलती है, अहंकारी इच्छाओ का त्याग करना, सब चिजो की मनुष्य मे एकता के वेदांत के सत्य को समझना यह इस प्रेम का आधार है।

२०/२/१९७८

अध्याय २

१०२. समय का आधार ज्ञानेंद्रिय है : श्रवण गंध की संवेदना स्पर्श की संवेदना, स्वाद, दृष्टी। ज्ञानेंद्रियो का आधार ये मूलतत्व है: धरती, पानी, आग, वायु, ध्वनी। मन उनका प्रकाश है अंतरिक्ष उनका आधार है।

समय बीत जाता है और वह ज्ञानेंद्रियो ने समझी हुई चिजे और, जिनका अस्तित्व अंतरिक्ष मे होता है ऐसी सभी चिजे दूर हटाता है। उन्हे नष्ट करता है। परम सुख और क्लेश, आनंद और दु:ख, कीर्ती, धन, शक्ति, सामर्थ्य, चित्त का आवेग यह सब कुछ संक्रमक है, समय के साथ नष्ट हो जाता है , कुछ भी अचल नही है, कुछ भी कायम नही रहता, सब कुछ बदल जाता है, निरंतर बदलता रहता है, कारण परिणामों को उत्पन्न करते है, परिणाम कारण बन जाता है, इंद्रिय और तत्व परस्पर प्रभाव डालते है, प्रकाश का बहनेवाला प्रवाह, समय और अंतरिक्ष को पार करनेवाला निर्माण का शक्तिमान प्रवाह, अनिश्चित

मृगमरीचिका,जो वास्तविकता मे अवास्तव होती है, व्यवहार मे उसका कोई प्रभाव नही होता है, एकही समय उसका अस्तित्व होता है और नही भी होता है।

यह हमारे लिए जादा ईश्वरीय परम सुख होता है, हमारा ईश्वरीय मनोरंजन होता है, यह ईश्वरीय अज्ञान का खेल है, ईश्वरीय भ्रम है। हमारा असली ''स्व'' इस बदलनेवाली चिजो के पिछे छिपा होता है,और इस बदलती चिजो के पिछे ही शाश्वतता, अनंतता होती है। सिर्फ सब चिजों की ब्राहमण-आत्मा मे, मनुष्य मे एकता का सर्वोच्च वेदांत सत्य अचल और दृढ है। सिर्फ सर्वोच्च बुध्दि का अटूट इच्छा-शक्ति का, सब रुकावटो को हटाने का, सब के लिए प्रेम का मार्ग जो दुनिया के कल्याण के लिए नि:स्वार्थ कार्य पर निर्भर होता है, हमे क्लेश से मुक्ति, संपूर्ण मुक्ति की ओर ले जाता है।

२२/२/१९७८

१०३. ज्ञान का वृक्ष वाणी के बीज से मन के धरती पर बढता है और सत्य के प्रकाश से उजागर होता है, बुध्दि के रस से उसका पोषण होता है।

भावनाए उसका मूल है, एकाग्र विचार इस वृक्ष का तना है, विचार उसकी टहनीया है, शब्द उसकी पत्तीया है, अमरत्व का परम सुख, जो मृत्यु की शक्ति को दूर करता है, उसकी चोटी है।

१०४. ध्वनी इस अंतरिक्ष का सार है, अनंतता इस ध्वनी का सार है, अनंतता का स्वरुप समय, मृत्यु जीवन और अमरत्व है।

धरती और सूर्य समय का आधार है, आंख और आकार भी समय का आधार है, जिन्हे हमारी आंखे देख सकती है और सूर्य उन्हे उजागर करता है।

हमारी इच्छाए मृत्यु का आधार है, जो एक दुसरे से उत्पन्न होती है और वह अपरिमित है।

जीवन सांस और हवा है, यह आवश्यक उर्जा है, जो सारी दुनिया मे बहती है, प्राण है।

अमरत्व सत्य को सर्वोच्च ज्ञानपर, गुरू से प्राप्त ज्ञानपर, आध्यात्मिक अनुभवी सलाहकार से प्राप्त हुए ज्ञान पर आधारीत है।

२८/२/१९७८

१०५. इस दुनियामे पांच श्रेणी के लोग होते है :

पहले श्रेणी के लोगो को शक्ति, किर्ती, धन, परम सुख की लालसा होती है। यह लोग काफी समाधानी होते है और सत्य की खोज नही करते है। यह लोग आंख बंद करके अज्ञान के गहरे अंधेरे मे चलकर बार-बार गिरनेवाले मनुष्य की तरह होते है।

दुसरे श्रेणी के लोग इसी प्रकार के चित्त के आवेग और इच्छाओ से परेशान होते है, लेकिन ये लोग समाधान महसुस नही करते। ये लोग भी अज्ञान के अंधेरे मे चलते है, लेकिन

उनकी आंखे खुली होती है और वह क्षितीज को देखने का प्रयास करते है, दूर, कुहरे के उस

पार होनेवाले सत्य के प्रकाश को देखने का प्रयास करते है।

तिसरे श्रेणी के लोग ज्ञान के प्रती जागृत होते है, वह सत्य की चमकीली उंचाईया देख सकते है और निरंतर विफल प्रयास, हार और चोट के बावजुद इन लोगो को ज्ञान के प्रकाश की आकांक्षा होती है।

चौथी श्रेणी मे सत्य के प्रती संपूर्ण जागृती उत्पन्न हुए लोग होते है। यह लोग शक्ति-

मन- प्रेम-नि:स्वार्थतता के मार्गपर चलते है, वह अपनी यात्रा सब चिजो की ब्राह्मण-आत्मा, मनुष्य

मे एकता के सत्य की चमकीली उंचाई तक जरी रखते है, इन लोगो के मन मे मनुष्य के अमर

स्वरुप के ज्ञान की, अपने असली सार के ज्ञान की आकांक्षा होती है।

पांचवे श्रेणी के लोगो को जीवनमुक्त कहते है। यह लोग अपने जीवन मे मुक्ति प्राप्त करते है, यह योगी है, जो तटस्थता, आत्मत्याग, संपूर्ण ज्ञान प्राप्त करते है। यह लोग अपना जीवन

और कार्य इस दुनिया मे जारी रखना चाहते है, लेकिन उनका कार्य व्यक्तिगत लाभ के लिए नही होता

है और उसमे चित्त का आवेग नही होता है, यह लोग वापस नही आते, लेकिन ब्रह्मा के महासागर मे, परम सुख के महासागर मे घुल जाते है, यह लोग सर्वोच्च ज्ञान, मुक्ति, संपूर्ण मुक्ति प्राप्त करते है।

१/३/१९७८

१०६. शक्तिमान चुम्बक लोहे को आकर्षित करता है, उसके बाद लोहे मे भी चुम्बकत्व आ जाता है।

यह बात परिपूर्ण ज्ञानी के लिए भी सही है, जो सत्य की खोज करनेवाले लोगो के दिल, सत्य के प्रकाश के प्रती जागृती उत्पन्न हुए लोगो के दिल आकर्षित करता है। शिक्षक, गुरु अनुभवी अध्यात्मिक सलाहकार अपने विद्यार्थीओ को ज्ञान देता है, उनकी बुध्दी तेज करता है, उन्हे सर्वोच्च ज्ञान तक ले जाता है, उन्हे तटस्थता, बनावटी व्यक्तित्व का त्याग करना, सभी चिजो के प्रति प्रेम, दुनिया के कल्याण के लिए नि:स्वार्थ कार्य सिखाता है, असीम सामर्थ्य, परम सुख, मुक्तता, संपूर्ण मुक्तता की ओर जाने का मार्ग दिखाता है।

१/३/१९७८

१०७. जिस प्रकार चुम्बक के विरुध्द छोर एक दुसरे की ओर आकर्षित होते है, उसी प्रकार मृत्यु जीवन ओर आकर्षित होता है, जीवन को अमरत्व की आकांक्षा होते है, शक्ति बुध्दि को आकर्षित करती है, सभी चिजो के प्रती सर्वव्यापी प्रेम बुध्दि को आकर्षित करता है।

चुम्बक के तटस्थ बिन्दु मे आकर्षण और अपकर्षण नही होता है। इद और पिंगुला के प्रवाहो का सुषमन मे विलय हो जाता है, जब शक्ति-मन-प्रेम का चिंतन-बुध्दि-परम सुख मे विलय हो जाता है तब ऐसा ही कुछ होता है, शक्ति सत्य का चिंतन बन जाती है, मन को बुध्दि, तटस्थता, संपूर्ण ज्ञान सब चिजो की ब्राह्मण-आत्मा, मनुष्य मे एकता के वेदांत के सर्वोच्च ज्ञान

से जोडने की प्रक्रिया होती है। अहंकारी इच्छाओ का त्याग करके और परमसुख के महासागर मे, समाधी मे, मुक्ति संपूर्ण मुक्ति मे घुल जाने से प्रेम परिपूर्ण हो जाता है।

१/३/१९७८

१०८. हम अन्न की प्रतिमा से, अगर वह चित्र कितना भी वास्तविक क्यो न हो, समाधान नही प्राप्त कर सकते है। मनुष्य निंद मे या सपने मे कुछ भी पी सकता है, लेकिन इससे उसकी प्यास नही बुझेगी। आप अपनी इच्छाओ को समाप्त नही कर सकते, परम सुख की आकांक्षा को किर्ती, शक्ति, सामर्थ्य, धन, सन्मान, पूजा और जीवन-अस्तित्व की प्यास को बुझा नही सकते है।

३/३/१९७८

१०९. सूर्य और उसका प्रतिबिंब हमारे परम इन्द्रिय-सुख की तरह ही होते है, जो सिर्फ असली परम सुख का आभास होता है, यह अज्ञान के खेल का आनंद उठाना होता है, माया के अपरिमित आका रो से, महान भ्रम से मनोरंजन करना होता है। कामवासना और चित्त का आवेग अपने मूल की तरफ वापस जाने के प्रकृती के प्रयास को, स्वामी प्रभु, निर्माता, निरपेक्ष से मिल जाने के प्रयास को व्यक्त करते है।

३/३/१९७८

११०. अमरत्व शरीर का परमेश्वर है, ब्राह्मण-आत्मा का एक प्रकटीकरण है, जो समय के साथ बदल जाता है, अंतरिक्ष मे उसक अस्तित्व होता है और वह मृत्यु के नियंत्रण मे होता है, ज्ञानेंद्रिय उसके आश्रय देनेवाले है : श्रवण, गंध की संवेदना, स्वाद, दृष्टी, उसके साथ ये मूलतत्व भी उसको आश्रय देते है : धरती, पानी, अग्नी, वायु, ध्वनी। वाणी उसकी दुनिया है, जिसकी मदद से सत्य हमे दिया जाता है। मन उसका प्रकाश है, यह परम सुख का इन्द्रिय है, मन सब चिजो का आधार है और वह ज्ञान के प्रकाश से सबको उजागर करता है।

जो मनुष्य अज्ञान के पकड मे होता है, अहंकारी इच्छाओ के प्रभाव मे होता है, जो अपनी भावनाओ को वश मे नही कर सकता है उसे क्लेश भोगने पडते है, वह मृत्यु से डरता है, उसकी सभी आकांक्षाए और सपने अमरत्व को प्राप्त करने की, क्लेश से मुक्ति प्राप्त करने की दिशा मे निर्देशीत होते है।

गुरु ने शिक्षक ने, स्वामी ने और ज्ञानी ने दिए हुए सर्वोच्च ज्ञान के प्रति निष्ठा से ही अमरत्व प्राप्त होता है। यह ब्राह्मण-आत्मा के प्रकटीकरण का ज्ञान है, ब्राह्मण-आत्मा मे, मनुष्य मे सभी चिजो की एकता का ज्ञान है, मनुष्य के असली सार का ज्ञान है, इस ज्ञान के बाद तटस्थता, आत्मत्याग, प्राप्त होता है,नाम और आकारो के बंधन टुटे जाते है, यह ज्ञान मनुष्य को क्लेश से मुक्ति देता है, जो मनुष्य के इस ज्ञान के प्रती निष्ठा रखता है उसका भय दूर हो जाता है, वह मृत्यु के भय से मुक्त हो जाता है, मृत्यु के प्रभाव से वह दूर हो जाता है।

९/२/१९७८

१११. मनुष्य जिस दुनिया मे रहता है, उसे ज्ञानेंद्रियो के माध्यम से समझा जाता है, वह मन के प्रकाश से उजागर होता है, ज्ञान के अग्नी से उसे गरमी मिलती है, वाणी के माध्यम से वह प्राप्त होता है।

जब मनुष्य भावनाओ को वश में रखता है, अपने मन का स्वामी होता है, माध्यम अपने गुरु के शब्दो पर एकाग्र विचार कर के सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त करता है, जब वह अज्ञान को तोड देता है, तब वह मुनी, ज्ञानी बन जाता है, अपना असली सार समझता है, अनंत ज्ञान और अनंत शक्ति प्राप्त करता है, संपूर्ण नि:स्वार्थतता और इस ज्ञान के आधार पर सभी चिजो के प्रती सर्वव्यापी प्रेम प्राप्त करता है। वह समाधी मे सत्य के चिंतन का सर्वोच्च परम सुख प्राप्त करता है, मृत्यु के प्रभाव से मुक्त हो जाता है, अवतारो के निरंतर घुमनेवाले चक्र से, जिसे वह जकडा होता है,निष्ठुर कर्म की श्रृंखला से, अपनी कृतियो के निष्पक्ष सजा से, जो बंधनो के कारण, स्वार्थी लक्ष्यो के कारण और व्यक्तिगत लाभ के कारण उत्पन्न होती है, संपूर्ण मुक्ति प्राप्त करता है।

९/३/१९७८

११२. सांप अपने चमडे का रंग बदलता है, दुसरे किसी प्राणीयो मे भी यह क्षमता होती है और मनुष्य के साथ भी ऐसा ही कुछ होता है। जब तक मनुष्य कर्म की श्रृंखलाओ से मुक्त नही होता है, जब तक वह माया के भ्रम को त्याग नही देता है, अपने शाश्वत स्वरुप के बारे मे, अज्ञान के

बारे मे अज्ञान के जाल से मुक्त नही होता है, जब तक वह खुद को सर्वशक्तिमान परमेश्वर नही समझता है, उसी के साथ ऐसा ही कुछ होता है, वह एक दुसरे से उत्पन्न होनेवाले अवतारो के अपरिमित कतारो मे घुमता रहता है, एक शरीर से दुसरे शरीर मे संक्रमण करता रहता है और अपने वर्तमान के कार्य पर भविष्य का मार्ग निर्धारीत करता है।

१४/३/१९७८

११३. जिस प्रकार पौधे के मूल जमीन के निचे होते है और जमीन से रस लेते है उसी प्रकार मनुष्य के मनका भावनाओ से पोषण होता है, आंख से मन देखता है, आकार सूर्य से उजागर होते है, आशाओ से मन बंधन मे जकडा जाता है, मन परिमित, अशाश्वत, समय और अंतरिक्ष मे जिनका अस्तित्व है ऐसी चिजो की ओर आकर्षित होता है।

जिस प्रकार पत्तिया सूर्य का प्रकाश और गरमी प्राप्त करने का प्रयास करते है उसी प्रकार मन को अनंत, शाश्वत, अचल चिजो का आकर्षण होता है, मनुष्य के असली शाश्वत स्वरुप के सर्वोच्च ज्ञान के प्रकाश की मन को आकांक्षा होती है, सर्वोच्च पाण्डित्य के लाभदायक आग से गरमी प्राप्त करने के बाद, जो अज्ञान को जला देती है और अमरत्व बहाल करती है, मन को परिपूर्ण ज्ञानी, योगी और गुरुने बहाल की गई संज्ञान की आकांक्षा होती है।

जिस प्रकार वृक्ष का तना अपने अंदर जमीन का रस इकठ्ठा करता है और बढ जाता है, उसी प्रकार सूर्य का प्रकाश और उसकी गरमी, वायु की शक्ति, चिंतन करनेवाला आत्मा, उंची चेतना मे आपके असली ‘स्व’ का चिंतन, योगी के अंतर्ज्ञान मे चिंतन आपके अंदर शक्ति और

बुध्दि को मिला देते है और यह प्रक्रिया परम सुख से, क्लेश से, मुक्ति से, अवतारो की अपरिमित कतारो से संपूर्ण मुक्ति से, अज्ञान की रात मे जन्म और मृत्यु के अज्ञान के निरंतर घूमनेवाले चक्र से संपूर्ण मुक्ति से परिपूर्ण हो जाती है।

२०/३/१९७८

११४. समय मृत्यु का स्वरुप है, अंतरिक्ष उसका आधार है। समय बीत जाता है और सब चिजो को निगल जाता है, समय का अस्तित्व अंतरिक्ष मे होता है और उसे हम ज्ञानेंद्रियो की मदद से समझ सकते है, जो प्रतिमा-मूलतत्वो पर, हमारे मन के विचारो पर आधारीत है, जिन्हे हम आशाओ के वस्तुओ के रुप मे अनुभव करते है और अज्ञान, अविद्या माया, विश्वव्यापी भ्रम उनका आधार है। निष्ठुर कर्म के नियम का, कृतियो के लिए निष्पक्ष सजा का नियम भी इस पर आधारीत है इन्ही आशाओ की वस्तुओ से हम फल के बंधन मे, चित्त की स्वार्थी चिंताओ मे फंस जाते है। हमारे बनावटी व्यक्तित्व के कारण इच्छाओ की वस्तुओ का निर्माण होता है, हमारे 'स्व' का आभास भी उनके उत्पन्न होने का और एक कारण है।

समय धिरे-धिरे इस दुनिया की सभी चिजे नष्ट करता है। मृत्यु अनिवार्य रुप से समय और अंतरिक्ष मे निवास करनेवाले सभी जीवो को पकड लेता है। सब कुछ मर्त्य होता है, शरीर से जुडा होता है, अज्ञान के नियंत्रण मे होता है, आशाओ की श्रृंखला मे, कर्म के बंधनो मे फंसा होता है।

२६/३/१९७८

११५. पौधे बीजो से उगते है और बाद मे बीजो को उत्पन्न करते है। यही बात मन, दुनिया, जीवन और सभी जीवो के लिए भी सही है- परम सुख उनका मूल है, उन्हे जादा ईश्वरीय परम सुख प्राप्त होता है, वे परम सुख के असीम और कल्पना के बाहर होनेवाले महासागर से उत्पन्न होते है और फिरसे इस शांत,अपरिमित शाश्वत महासागर मे घुल जाते है ।

सभी नदीयाँ महासागर से उत्पन्न होती है, उनके प्रवाह का महासागर मे आरंभ होता है और वे फिर से महासागर मे लुप्त हो जाती है। जीवन को हम परम सुख मे जानते है और बादमे वह उसकी ओर ही वापस आता है। ईश्वरीय परम सुख बीज है, उससे दुनिया बढती है और सुख, आनंद और परम सुख के रुप मे दुनिया व्यक्त होती है।

जिस मनुष्य को पूर्व-कथित जीवन-बीज के बारे मे जानकारी होती है वह क्लेश से मुक्त हो जाता है, उसकी इच्छाए पूरी हो जाती है, सुख और आनंद उसका भाग्य बन जाते है।

३०-३१/३/१९७८

११६. मन प्रकृती का आरंभ और प्रकाश होता है, वह परम सुख से उत्पन्न होता है और परम सुख की ओर वह जाता है। ध्वनी सभी चिजो को धारण करता है और वह सभी चिजो की संभाव्य

क्षमता है। उसकी किर्ती और बल सर्वव्यापी जीवन है, जो इस दुनिया को पार करता है। सबकुछ जीतनेवाले आवश्यक उर्जा, अनंत अंतरिक्ष, सभी सजीवो के अंदर जानेवाला सांस बुराई और मृत्यु को हटाते है, अज्ञान को जलानेवाले बुध्दि की आग उसका सार और चमक है, आत्म-दमन से प्रज्वलीत हुआ सर्वोच्च ज्ञान, तटस्थता, आत्मत्याग यह भी उसका सार और चमक है। पानी उसका बीज है, जिसका स्वरुप परम सुख, सुख, आनंद है। साल,समय उसका शरीर है, वह मन और वाणी के एकत्रिकरण से, सूर्य और अग्नी के एकत्रिकरण से उत्पन्न होता है। समय मृत्यु का स्वरुप है और आशाओ की दुनिया मे होनेवाला सब कुछ निगलता है।

३०-३१/३/१९७८

११७. जिस प्रकार बडी लहरे ग्रॅनाईट की चट्टानो से टकराकर टुट जाती है, उसी प्रकार जीवन-अस्तित्व की शक्तिमान बदलनेवाली लहर निरंतर अनंतता की ओर बहती है और आत्म-दमन तटस्थता की अटूट शक्ति से टकराकर उध्वस्त हो जाती है। यह योगी ब्राह्मण-आत्मा मे सभी चिजो के एकता का सर्वोच्च वेदांत शाश्वत ज्ञान प्राप्त करता है, योगी सत्य का प्रत्यक्ष चिंतन करता है, वह सर्वशक्तिमान, विश्वव्यापी चिजो देख सकता है, वह सत्य के निरंतर चमकनेवाले प्रकाश से अज्ञान के अंधेरे को हटाता है, अपने सभी बंधन पिछे छोड देता है, अपनी इच्छाओ के उपर उठाता है, अंतिम संपूर्न आत्मत्याग करता है, बनावटी व्यक्तित्व का त्याग करता है, अहंकारी लक्ष्योंको छोड देता है, क्लेश से मुक्ति प्राप्त करता है, अज्ञान के जाल से संपुर्ण मुक्ति

प्राप्त करता है, निष्ठुर कर्म की श्रृंखलाओं से, अनंतता की ओर बहनेवाली निर्माण की अनिश्चित प्रवाह से, मन के प्रकाश से उजागर हुए कारणोंके शाश्वत प्रवाह से, अवतारों के एक दुसरे की ओर बहनेवाले प्रवाह से, जन्म और मृत्यु के वास्तविकता मे होनेवाले असली प्रवाह से संपुर्ण मुक्ति प्राप्त करता है ।

२-४-१९७८

११८. जिस प्रकार पर्वत के चोटीपर उगनेवाला वृक्ष पर्वत के निचे जमीन पर उगनेवाले दुसरे सभी वृक्षों की तरफा देखता है और उसके मूल जादा गहरे नही होते है, उसी प्रकार अज्ञान के अंधेरे मे होनेवाले मनुष्योंकी तुलना मे ज्ञानी व्यक्ति बहुत जादा परिपुर्णता हासिल करता है । अपने जीवन की अवधी मे मुक्त होनेवाले, जीवनमुक्त के इस दुनियामे जादा गहरे मूल नही होते है, वह बंधनोंको तोड सकता है, बुराई से मुक्ति प्राप्त करता है, क्लेश मे मुक्त हो जाता है, वह अपने शरीर की किसी भी क्षण छोड सकता है, अज्ञान के जाल से संपूर्ण मुक्ति प्राप्त करता है, माया के जादू के प्रभाव से, महान विश्वव्यापी भ्रम से मुक्त हो जाता है, ब्रह्मा के समझ के बाहर होनेवाले शांत महासागर मे खुद को घुला देता है, परमसुख के अव्यक्त असीम महासागर मे घुला देता है ।

२-४-१९७८

११९. दियासलाई आग को प्रज्वलित करती है, मन के साथ ऐसा ही कुछ होता है, वह चमकीले बुध्दि के आग से प्रज्वलित होता है, वह आत्म-दमन, वैराग्य, तटस्थता, आत्मत्याग के बाद जीवन अस्तित्व के महासागर की चमक और सार बन जाता है ।

६-४-१९७८

१२०. जिस प्रकार आग इंधन को नष्ट करती है, उसी प्रकार विवेकी वााणी की आग, सर्वोच्च्य ज्ञान की आग, सर्वोच्च पांडित्य की आग अज्ञान को जला देती है, अज्ञान का अंधार दूर करती है, माया का पर्दा हटाती है, यह पर्दा वेदांत के शाश्वत सत्य की चमकीली उंचाईयाँ हमसे छिपाता है, यह शाश्वत सत्य है : ब्राह्मण-आत्मा मे, मनुष्य मे सभी चिजों की एकता। माया कुछ समय तक अपने अपरिमित आकाश से हमारा असली स्वरूप भुलने के लिए विवश करती है, माया दु:खदायी क्लेश उत्पन्न करती है । सभी चिजों का त्याग करना यह इस क्लेश का स्वरूप है, आत्मत्याग और अकेलापन, असली व्यक्तित्व, अहंकार, आत्म-सन्मान, अहंकारी इच्छाएँ, क्रोध, झुठ्, कायरता, लालसा, लोभ, परमसुख की प्यास, शक्ति कीर्ती, सामर्थ्य, जीवन-अस्तित्व की प्यास यह क्लेश का स्वरूप है ।

६-४-१९७८

१२१. मन संज्ञान के प्रकाश से, सभी चिजों को उजागर करता है, वाणी उसका स्वरूप है, जिस प्रकार चन्द्रमा अंधेरे को हटाता है, उसी प्रकार यह काम होता है ।

तारे रात के अंधेरे मे यात्रीयोंको दिशा दिखाते है, ज्ञानीयोंके बारे मे भी यह बात सही है, वे अज्ञान की रात मे लोगों को सही मार्ग दिखाते है, लज्जास्पद दुर्बलता को फेकने मे उनकी मदद करते है, अपने सामर्थ्य के बारे मे उनके मनमे विश्वास निर्माण करते है, सर्वोच्च ज्ञान को मनुष्य से सभी चिजों की एकता के सर्वोच्च सत्य को समझने मे, जीवन-अस्तित्व के महासागर से उसे एकता को महसुस करने मे, उनको सभी चिजों मे और सभी चोजों को उनके अंदर देखनेमे उनकी मदद करते है । कर्म की बेडियाँ तोडने में उनकी मदद करते है । ज्ञानी उन्हे अपने असली 'स्व' की चिंतन करने मे मदद करते है । यह असली स्वरूप है. परमसुख का महासागर है । ज्ञानी उन्हे इस महासागर मे बहने के लिए, खुद असीम महासागर बनने के लिए मदद करते है । ज्ञानी उन्हे मृत्यु के प्रभाव से मुक्त होने के लिए, जीवन और मृत्यु के अस्तित्व मे होनेवाले असली चक्र से संपुर्ण मुक्ति प्राप्त करने के लिए मदद करते है ।

६-४-१९७८

१२२. धरती, आकार, प्रतिमाए, दृष्टी का आधार है, मृत्यु धरती का आधार है, सर्व-विनाशक समय मृत्यु का स्वरूप है।

इस स्वादका आधार पानी है, बीज पानी का आधार है, परमसुख, सुख, आनंद बीज का आधार है ।

आग स्पर्श की संवेदना का आधार है, चमक, गरमी, अज्ञान को जलानेवाली आग का आधार है, वाणी ज्ञान का आधार है ।

हवा गंध की संवेदना का आधार है, अमरत्व हवा का आधार है, ज्ञान अमरत्व का आधार है ।

ध्वनी श्रवण का आधार है, अनंतत ध्वनी का आधार है, समय, मृत्यु, जीवन, अमरत्व अनंतता का स्वरूप है।

मन इस विचार प्रक्रिया का आधार है, परमसुख मन का आधार है और परमसुख जीवन का स्वरूप है ।

६/७-४-१९७८

१२३. इच्छा निर्णय का आधार है, इच्छा-शक्ति कृतियोंकी माता है, कृतिया भविष्य का बीज है ।

वर्तमान के मूल अतीत मे होते है, वर्तमान को भविष्य के बीज बोये जाते है, भविष्य शाश्वतता का चेहरा है ।

मन, बुध्दि का पिता है, वाणी ज्ञान का स्वरूप है, समय मृत्यु का स्वरूप है और वह जीवन-अस्तित्व के गीत जैसा है। वह ब्राह्मण है, आत्मा है और अस्तित्वहीन अवस्था का अस्तित्व है ।

१९-२-१९७८

१२४. समय अन्न है, आवश्यक सांस का आधार है, वाणी उसकी माता है, उसका सहायक है, मन, आत्मा उसका पिता है ।

पानी इस आवश्यक सांस का शरीर है, मन की बीज से सुख और आनंद उत्पन्न होते है, और वाणी मे उगते है, आकाश और धरती के विलय से ईश्वरीय परम सुख और पार्थिव आनंद, अमरत्व का परम सुख और मृत लोगो के आनंद से उनका निर्माण होता है ।

चन्द्रमा आवश्यक सांस का प्रकाश है, मन आत्मसंज्ञाान के बीज से, एकाग्र विचार से उत्पन्न होता है । आत्मसंज्ञान की एकाग्रता बुध्दि की मदद से बढती है, सूर्य का प्रकाश, और पृथ्वी की आग की एकता से उसका निर्माण होता है ।

१०-४-१९७८

१२५. समय ज्ञान का पालनकर्ता है, अमरत्व का परम सुख क्लेश से मुक्तता उसका सार है, धरती और अन्न उसका आधार है, सूर्य और एकाग्र आत्मसंज्ञान उसका प्रकाश है, चन्द्रमा और आत्मत्याग का विवेक उसकी प्रभा है, आंख और आकार उसका धन है, वाणी और नाम उसका स्वरूप है, आग, गरमी और आत्म-दमन की शक्ति उसकी चमक है, आवश्यक सांस, आवश्यक उर्जा और प्राण उसकी किर्ती और प्रभाव है, बिजली, समाधी मे सत्य का चिंतन, अज्ञान से संपुर्ण मुक्ति उसकी शाश्वतता है ।

११-४-१९७८

१२६. मन दुनिया का आरंभ है, अमरत्व का सार है, इस दुनिया का गूढ परम सुख का स्वरूप है, आवश्यक सांस का पिता है, दुनिया का सार है।

वाणी परम सुख का जोशीला गीत है, जीवन अस्तित्व का महान स्तोत्र है, मन के आनंद का तेजस्वी गीत है, ज्ञान का स्वरूप है। दुनिया की प्रथम माता ज्ञान का शरीर है, आवश्यक सांस की माता और आधार है, दुनिया का आधार है ।

पानी जीवन का आनंद, सुख, परम सुख, प्रसन्नता है। दुनिया का शुध्द आनंद जीवन का बीज है, आवश्यक सांस का शरीर है, दुनिया का आधार प्रथम माता है ।

आग संयम की उर्जा है, आत्म-दमन की सृजनशील शक्ती है, आत्मत्याग का विवेक है। जीवन की गरमी दुनिया की चमक और सार है, अज्ञान को जलानेवाली वाणी का पांडित्य है, वाणी का प्रकाश है, दुनिया की प्रथम माता है ।

धरती आशाओंकी प्रतिमा है, आंख का आधार है। जीवन की महान माता परम सुख का मानवीकरण है, परम सुख का शरीर है, वाणी का शरीर है, दुनिया का आनंद है ।

आकाश ज्ञान का सार है, अमरत्व का परम सुख है । परम सुख की शाश्वतता अंतरिक्ष का शरीर है, मन का शरीर है, दुनिया का पूर्वज है ।

सूर्य अमरत्व का जलनेवाला स्वामी है, जीवन की गरमी है। आत्मसंज्ञान की शक्ति जीवन का पिता है, आत्मसंज्ञान की एकाग्रता का सार है, मन का प्रकाश है, दुनिया का परम सुख है ।

समय ज्ञान का पालनकर्ता है, आशाओंका सर्वशक्तिमान विनाशक है । आवश्यक सांस जीवन का आधार है, दुनिया का शरीर है, मृत्यु का स्वरूप है, अस्तित्वहीन अवस्था का सार है । आवश्यक सांस वैराग्य की गरमी है, आत्म-दमन की सृजनशील आग है, आत्म त्याग की बली की पवित्र वेदी है, सर्वविनाशक समय का सार है, क्लेश का स्वरूप है । बुराई से मुक्तता यह मन और वाणी का फल है, वाणी का स्वामी है, दुनिया की कीर्ति और प्रभाव है, जीवन का आधार है।

१२-१५/४-१९७८

१२७. मृत्यु आशाओंका सार है और अस्तित्वहीन अवस्था मृत्यु का सार है।

समय मृत्यु का स्वरुप है, आग उसका चेहरा है, प्रकाश के देश उसका आधार है, वाणी उसका ढक्कन है, हृदय उसका आश्रय है और वायु उसका शरीर है, निर्दय कर्म का नियम उसका नियम है।

१४-१५/४-१९७८

१२८. इंधन पृथ्वी के आग का स्वरुप है, दुनिया पाण्डित्य की आग का इंधन है, जो अज्ञान को जला देती है। यह आग एकाग्र विचार से सुरक्षित रहती है, आवश्यक सांस के वायु से प्रज्वलित होती है, प्रेम के गरमी से गरम होती है, उसे सभी चिजोंकी ब्राह्मण-आत्मा, मनुष्य मे एकता के सर्वोच्च वेदांत ज्ञान के प्रकाश से भी गरमी प्राप्त होती है

१४-१५/१-

१९७८

१२९. आप किसी चिज के बारे मे कुछ बाते बता नही सकते तो आप कुछ भी नही बताए। मौन भूल से अच्छा है।

१९/३/१९८३

१३०. आनंद लेना यह पतित परम सुख है, सुख क्लेश का बीज है। क्लेश आशाओंका प्रकटीकरण है, अज्ञान की छाया है। अज्ञान अलगाव का सार है, अज्ञान आशाओ का भी सार है। आशा क्लेश का स्वरुप है, मृत्यु का द्वार है।

७-८/२-१९८३

१३१. पूर्व ज्ञान के सूर्योदय का प्रज्वलित प्रकाश है, सत्य के ज्ञान का दिन का प्रकाश है।

दक्षिण चित्त के आवेग की जलनेवाली गरमी है, परम सुख, आनंद की न बुझनेवाली प्यास है, धन, शक्ति, सामर्थ्य की मुरझानेवाली प्यास है, जीवन-अस्तित्व की दु:खदायी प्यास है, मृत्यु का दृढ अलिंगन है।

पश्चिम ज्ञान के सूर्यास्त का कम होनेवाला प्रकाश है, रात के अंधेरे का गाढा होनेवाला अंधेरा है, आशाओंका दृढ होनेवाला अंधेरा है, जिसे समय निगलता है, मृत्यु का ठिठुरन पैदा करनेवाला भय है।

उत्तर बरफ जैसी ज्ञान के समर्पण की दिशा है, यह संयम की सफेद ठंड है, चित्त का आवेग न होनेवाली ज्ञान की शुध्दता है, अमरत्व का परम सुख है।

१६-१८/४/१९७८

१३२. सूर्य मनका प्रकाश है, दुनिया की आंख है, तीव्र उत्साह है। आग वाणी का प्रकाश है,पाण्डित्य का लाभदायी उत्साह है।

चांद आवश्यक सांस का प्रकाश है, सूर्य और आग का संयोग है, मन का प्रकाश है और वाणी का पाण्डित्य है, मन के प्रकाश की चमक है और आत्मत्याग के विवेक के यज्ञ की आग है।

बिजली सूर्य, आग और चांद का संयोग है मन का प्रकाश और बैराग्य के गरमी की एकता है, समाधी मे सत्य के चिंतन की चिनगारी का चमकीला पाण्डित्य है।

१८-१९/४/१९७८

१३३. एकाग्र विचार-दुनिया की शक्ती-वाणी का स्त्रोत है। वाणी और नाम-दुनिया की कीर्ती-मन का गीत है, दुनिया का अधार है। पृथ्वी, प्रतिमाए, आकार-वाणी का शरीर-आँख का सहारा है, जीवन का सहारा है। जीवन और आवश्यक सांस दुनिया का सहारा है। विचार और वाणी का संयोग है, शक्ति और दुनिया की कीर्ती का संयोग यह समय का सार है। आंख और दृष्टी-विचारो का प्रकाश-समय का आधार है। समय- दुनिया का शरीर-ज्ञान का पालनकर्ता है। ज्ञान -विचारो का शरीर-बुध्दि के आग का सहारा है। बुध्दि की आग-वाणी का प्रकाश-सर्वोच्च ब्राह्मण का सृजन है, अमर परमेश्वर का मर्त्य निर्माता है, अमर परमेश्वर का मर्त्य परमेश्वर है।

वाणी का शरीर प्रकाश प्रकाश और विचारो का सहारा है, विचारो का शरीर वाणी के प्रकाश का सहारा है। धरती आंखो का सहारा है, आंखे समय का सहारा है, समय ज्ञान का

पालनकर्ता है, ज्ञान, बुध्दि के आग का सहारा है, जो दुनिया को जोडता है और उसका पोषण करता है।

२७-२८/४/१९

१३४. मन और वाणी के संयोग से दुनिया उत्पन्न होती है, जिसका शरीर समय है। आग और पानी के संयोग से जीवन के बीज का निर्माण होता है, जिसका सार परम सुख है। सूर्य और पृथ्वी के संयोग से जीवन निर्माण होता है, जो दुनिया का सहारा है, समय का सार है।

१/५/१९७८

१३५. आप किसी को कष्ट मत देना, आपको भी कोई कष्ट नही देगा। जो दुसरो की दुर्गती कभी नही करते, उनको कभी भी दुर्गती नही होती है। जो दुसरो को क्लेश नही देता है उसे कभी भी क्लेश का सामना नही करना पडता है।

कभी भी ईर्ष्या नही करना, आपको हमेशा शांती प्राप्त होगी। समाधान यह सर्वोच्च आनंद है।

कभी भी दुसरो की निंदा नही करना, आप को अटूट शांती और संपूर्ण ज्ञान प्राप्त होंगे। सिखनेका आनंद प्राप्त करने के लिए सहनशीलता की आवश्यकता है।

बनावटी व्यक्तित्व का, अहंकारी श्रृंखलाओ का, आत्म-मान का त्याग करने से आपको सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त होगा। सर्वोच्च पाण्डित्य अहंकारी इच्छाओ के त्याग मे, महान एकता के शाश्वत सत्य को समझने मे, कर्म की श्रृंखलाओसे मुक्ति मे अज्ञान के जाल से संपूर्ण मुक्ति मे

छिपा हुआ है।

३१/५/१९८३

तीन मूल्य

१३६. स्वतंत्रता, ज्ञान और क्लेश यह इस दुनिया के सर्वोच्च मुल्य है।

स्वतंत्रता जीवन-अस्तित्व का सार है, जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च प्रकटीकरण है। जीवन का अर्थ है अज्ञान के जाल से मुक्ति, अपना अमर स्वरुप, हमारा असली निरपेक्ष सार खोजना, अलगाव के महान भ्रम से संपूर्ण मुक्ति प्राप्त करना। ज्ञान मुक्ति की ओर,बुध्दि की ओर ले जानेवाला मार्ग है और उसका सार है: महान एकता के मनुष्य के अंदर होनेवाले शाश्वत सत्य को समझनेका विवेक।

क्लेश शुध्द्ता का महान साधन है, वह बुराई को जलाता है और ज्ञान की ओर ले जानेवाला मार्ग खुला करता है, यही मार्ग हमे सत्य, पाण्डित्य और सर्वव्यापी प्रेम की ओर ले जाता है।

१४-१८/९/१९८८

१३७. नम्रता और शुध्दता, इमानदारी और सच्चाई, उदारता और दया, आत्म-दमन और समाधान, इच्छा-शक्ति, नि:स्वार्थ काम, ज्ञान प्राप्त करना, अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजो के प्रति सर्वव्यापी प्रेम - यह सभी गुण भविष्य की किर्ती उत्पन्न करते है।

१७/११/१९८३

१३८. दुनिया सत-चित-आनंद है

सत जीवन-अस्तित्व का सहारा है, चित जीवन-अस्तित्व का स्त्रोत है और आनंद जीवन-अस्तित्व है।

सत बल है, चित बुध्दि है, आनंद परम सुख है।

सत वाणी है, चित मन है, आनंद सांस, जीवन है।

सत आग है, चित सूर्य है, आनंद हवा है।

सत पानी है, चित चांद है, आनंद बिजली है।

सत धरती है, चित अंतरिक्ष है, आनंद आकाश है।

११-१२/५/१९७८

१३९. उंची आवाज मे गाने से किसी गीत का मूल्य नही बढ जाता है, उस गीत के अंदर छिपे हुए गहरे अर्थ से उसका मूल्यांकन किया जाता है।

असली श्रेष्ठता को कीर्ती की आवश्यकता नही होती है।

११-१२/२/१९८३

शुध्दता का महान साधन

१४०. शक्ति ज्ञान की मदद से प्राप्त की जाती है और उसके बाद अनिवार्य रुप मे शुध्दता की नैतिक परिपुर्णता की आवश्यकता है। अगर ऐसा नही हुआ तो आध्यात्मिक शक्ति, सत्य समझनेकी शक्ति के बाद क्लेश का निरंतर बढनेवाला बोझ ही आपको प्राप्त होगा।

ज्ञान शक्ति का कभी कम न होनेवाला स्त्रोत है और वह आपको सत्य को समझने की दिशा की ओर ले जाएगा। महान एकता को समझनेकी प्रक्रिया मे अनिवार्य रिती से तटस्थता, आत्मत्याग, नि:स्वार्थतता, मित्रता उत्पन्न होंगे।

अगर ज्ञान की शक्ति समझनेकी शक्ति के बाद ये गुण प्रकट नही होते है, जो अपने आप मे आध्यात्मिकता के वाहक है, जीवन-अस्तित्व की महान एकता के सत्य के स्तर की अभिव्यक्ति है, तो आध्यात्मिक मेल का अभाव, आंतरिक अशांती उत्पन्न होंगे और शुध्द करनेवाले क्लेश अज्ञान को जला देते है और शक्ति का स्तर और शुध्दता की कमी इनके बिच होनेवाला दु:खदायी असंतुलन दूर करता है,

अपने अंदर सत्य के प्रकटीकरण का स्तर और नैतिक परिपूर्णता का स्तर, नैतिक तैयारी का स्तर, इनके बिच फिर से मेल निर्माण करता है। इन चार गुणोंका अपर्याप्त पुष्टीकरण, उनमेसे पहले दो है तटस्थता और आत्मत्याग- जो बुध्दि के परम आवश्यक पहलू है, और नि:स्वार्थतता और मित्रता -जो पहले दो गुणो के परम आवश्यक पहलू है, इन सब प्रक्रिया के बाद हो सकता है, और ये उसी प्रक्रियामे से उत्पन्न होते है, यही उसके निर्माण का कारण है।

बुराई आत्म-विनाशक है। निर्दय कर्म की शक्ति से बुराई अनिवार्य रीती से खुद की ओर वापस आ जाती है और क्लेश के शुध्द करनेवाली आग मे जल जाती है, यह आग बुराई के वापस आने से उत्पन्न होती है।

इसलिए हम क्लेश को शुध्दता का महान साधन कह सकते है, यह शुध्द करनेवाली ज्योती है, आध्यात्मिकता का सावधान पहरेदार है, यह एक खुद के ओर वापस आनेवाली बुराई की आत्म-जलन की शाश्वत प्रक्रिया है।

१-३/१८/१९८८

१४१. जब मनुष्य मृत्यु की शक्ति से मुक्त हो जाता है, बुराई से मुक्त हो जाता है, उसकी आंख मनका प्रकाश हो जाती है, ऐसा मनुष्य अनंत ज्ञान प्राप्त करता है, उसकी श्रवण-शक्ति अनंतता को गले लगाती है, वह प्रकटीकरण प्राप्त करता है, वह तेजस्वी बन जाता है, अंदर की आवाज सुनता है,असली ''स्व'' की आवाज सुनता है, उसका मन जीवन प्रकाश बन जाता है,वह मुनी बन जाता है, वह जीवन का मार्ग उजागर करता है, उसकी वाणी वाणी का प्रकाश बन जाती है, ऐसा मनुष्य विवेकी हो जाता है, उसके बुध्दि की आग अज्ञान को जला देती है, वह अपने होठो से सत्य की घोषणा करता है।

१४/५/१९७८

१४२. दुनिया मनुष्य है, मनुष्य जीवन है, यज्ञ की आग है, बलिदान है, जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च सार है, जीवन-अस्तित्व का शाश्वत सत्य है।

जीवन का मतलब है सांस के माध्यम से फेफडो मे हवा भरना, सांस छोडते समय हवा पूरे शरीर मे फैल जाती है, सांस लेने का मतलब है शरीरे मे हवा का प्रवेश, इसे हम साधारण सांस प्रक्रिया भी कह सकते है।

आंख फेफडो मे सांस के माध्यम से हवा भरने के समान है, मन छोडी जानेवाली सांस की तरह है, वाणी सांस छोडने के बाद जिस प्रकार हवा शरीर मे फैल जाती है उसी अवस्था की तरह है, कान सांस लेने की अवस्था की तरह है, आवश्यक सांस साधारण सांस प्रक्रिया है।

सूर्य फेफडो मे सांस के माध्यम से हवा भरने के समान है, चांद सांस छोडने की अवस्था की तरह है, आग सांस छोडने के बाद हवा शरीर मे फैल जाती है उसी अवस्था की तरह है, हवा का मतलब है सांस लेना, ध्वनी साधारण सांस प्रक्रिया है।

१६-१७/५/१९७८

१४३. दुनिया का मतलब है सांस खीचना और सांस छोडना, दुनिया सांस खीचने की और सांस छोडने की प्रक्रिया को जोडती है।

आवश्यक सांस का मतलब है सांस खीचना, मन का मतलब है सांस छोडना, वाणी सांस खीचने की और सांस छोडने की प्रक्रियाओं को जोडती है।

फेफडो मे हवा भरने का मतलब है सांस खीचना, उसके बाद सांस छोडने की प्रक्रिया होती है, शरीर मे फैली हवा सांस खीचने की और सांस छोडने की प्रक्रिया को जोडती है।

वायु का मतलब है सांस खीचना, आग सांस खीचने की और सांस छोडने की प्रक्रिया को जोडते है।

बिजली का मतलब है सांस खीचना, चांद का मतलब है सांस छोडना, पानी सांस

खीचने के और सांस छोडने के प्रक्रिया को जोडता है।

१६-१७/५/१९७८

१४४. दुनिया का मतलब है यज्ञ की आग और बलिदान। धरती यज्ञ की आग है, शरीर बलिदान है।

आग यज्ञ की आग है, वाणी बलिदान है।

हवा यज्ञ की आग है, गंध की संवेदना बलिदान है। सूर्य यज्ञ की आग है, आंख बलिदान है।

दुनिया के देश यज्ञ की आग है और समय बलिदान है,

चांद यज्ञ की आग है, मन बलिदान है।

मेघ की गरज यज्ञ की आग है, आवाज और आवाज के उतार-चढाव बलिदान है। अंतरिक्ष यज्ञ की आग है, ह्दय बलिदान है। किसी को हानी नही पहुंचाना यज्ञ की आग है और अरुणोदय बलिदान है।

इमानदारी यज्ञ की आग है, दिन बलिदान है। दूसरोकी चिजे हडप नही करना यज्ञ की आग है, महिने के पहले पंद्रह दिन का चांद बलिदान है।

संयम और तटस्थता यज्ञ की आग है, जब सूर्य उत्तर की ओर जाता है वे छह महिने बलिदान है।

पैसे हडप नही करना, आत्मत्याग, उपहार स्विकार नही करना यह यज्ञ की आग है, साल बलिदान है।

१८-१९/५/१९७८

१४५. दुनिया मन है, आग उसकी चमक और सार है, आग, वायु और सूर्य उसके तिन घटक है।

आग वाणी है, जो दुनिया के बुध्दि को निगलती है, वह ज्ञान का शाश्वत स्वरुप है, उसका अस्तित्व सर्वव्यापी है, वह सर्वोच्च ब्राह्मण का सृजन है, जो अमर परमेश्वरो का मर्त्य निर्माता है।

वायु दुनिया की आत्मा है, उसका मानवीकरण नही हुआ है, वह अचल,अमर और ब्राह्मण का असली चेहरा है। वायु आवश्यक सांस है, फेफडो मे सांस के माध्यम से हवा भरना, सांस छोडना और शरीर मे सांस फैलाना यह उसके तिन घटक है।

सूर्य मूर्त, संक्रमक, मर्त्य, अस्तित्व मे होनेवाले ब्राह्मण का चेहरा है। नाम और आकार, मूलतत्व: ध्वनी, वायु, आग, पानी, धरती और संवेदनाए: श्रवण, गंध की संवेदना, स्पर्श की संवेदना, स्वाद और दृष्टी यह मानवीकरण हुए ब्राह्मण का चेहरा है।

१४६. जीवन-अस्तित्व जीवन है। मन जीवन-अस्तित्व का स्त्रोत है। मन चांद है, जीवन का और जीवन-अस्तित्व का प्रकाश है। सूर्य चांद का और मन का प्रकाश है, प्रकाश का प्रकाश है। वह आत्मा है, ब्राहमण है और जीवन-अस्तित्व के प्रकाश का प्रकाश है।

२६/५/१९७८

१४७. समय वास्तविकता मे प्रकट होनेवाली शाश्वतता है। शाश्वतता हमारा असली ''स्व'' है, आत्मा है। जीवन सच है, आवश्यक सांस यह वायु और अंतरिक्ष है।

अंतरिक्ष अनंतता है, जो अस्तित्व मे होनेवाली चिजो से ढक जाती है। अनंतता हमारे ''स्व'' का पुरुष का अवतार है, वह आत्मा का आत्मसंज्ञान है। उसका अस्तित्व संवेदनामे है, जो इस प्रकार है : श्रवण, गंध की संवेदना, स्पर्श की संवेदना, स्वाद, दृष्टी और मूलतत्वोमे भी है, जो इस प्रकार है: ध्व्नी, वायु, आग, पानी, धरती।

२८-२९/५/१९७८

१४८. दुनिया का मतलब है ि्हच और उसके सहारे समन का अस्तित्व है।

वाणी ि्हच है और सांस समन है।

ध्वनी ि्हच है और आशा समन है।

हवा ि्हच है और वायु समन है।

आग ि्हच है और इच्छा-शक्ति समन है।

पानी ि्हच है और बिजली समन है।

धरती ि्हच है और कृति समन है।

आकाश ि्हच है और सूर्य समन है।

यह दुनिया ि्हच है और वह दुनिया समन है।

अंतरिक्ष ि्हच है और समय समन है।

अनंतता ि्हच है और शाश्वतता समन है।

ज्ञान ि्हच है और अमरत्व समन है।

२८-३०/५/१९७८

१४९. दुनिया महान ध्वनी ओम है।

‘अ’ का मतलब है मन, ‘ऊ’ का मतलब है ध्वनी,

‘म’ का मतलब है सांस, जीवन।

‘अ’ का मतलब है सूर्य, ‘ऊ’ का मतलब है आग,

‘म’ का मतलब है मन।

‘अ’ का मतलब है चांद, ‘ऊ’ का मतलब है पानी,

‘म’ का मतलब है बिजली।

‘अ’ का मतलब है प्रकाश, ‘ऊ’ का मतलब है चमक,

‘म’ का मतलब है चिनगारी।

अ’ का मतलब है विचार, ‘ऊ’ का मतलब है शब्द,

‘म’ का मतलब है कृति।

‘अ’ का मतलब है इच्छा, ‘ऊ’ का मतलब है इच्छा-शक्ति

‘म’ का मतलब है कृति।

'अ' का मतलब है विश्राम, 'ऊ' का मतलब है परम सुख

'म' का मतलब है क्लेश।

'अ' का मतलब है मृत्यु, 'ऊ' का मतलब है यज्ञ की आग,

'म' का मतलब है 'बलिदान'।

२१-३०/५/१९७८

१५०. दुनिया शुध्दिकरण, परम सुख और विश्राम है। आवश्यक सांस शुध्दिकरण है, वाणी परम सुख है, और मन विश्राम है। क्लेश शुध्दिकरण है, ज्ञान परम सुख है और पुर्ननिर्माण विश्राम है। धरती शुध्दिकरण है, आकाश परम सुख है और अंतरिक्ष विश्राम है।

मनुष्य शुध्दिकरण है, अमरत्व परम सुख है और मृत्यु विश्राम है।

३०/५/१९७८

१५१. आप जो बात कहते नही उसीमे आप जो बात कहते है उसका मूल्य छिपा होता है। आपके कृति का अर्थ नि:स्वार्थतता, तटस्थता और आत्मत्याग मे छिपा होता है। मन का उद्देश्य मन के उपर उठना है, एकाग्रता, अंतर्ज्ञान, ध्यान, सत्य का प्रत्यक्ष चिंतन यह भी मन के उद्देश्य है।

४/१/१९८४

१५२. दुनिया अन्न है और अन्न की उपभोक्ता भी है। परम सुख अन्न है और विवेक अन्न का उपभोक्ता है। ज्ञान की वस्तुए अन्न है और संवेदनाए अन्न का उपभोक्ता है।

संवेदनाओंका प्रकटीकरण अन्न है और मन अन्न का उपभोक्ता है।

मन अन्न है और वाणी अन्न का उपभोक्ता है।

ध्वनी अन्न है और हवा अन्न का उपभोक्ता है।

हवा अन्न है और आग अन्न का उपभोक्ता है।

आग अन्न है और पानी अन्न का उपभोक्ता है।

धरती अन्न है और आकाश अन्न का उपभोक्ता है।

आकाश अन्न है और सूर्य अन्न का उपभोक्ता है।

सूर्य अन्न है और चांद अन्न का उपभोक्ता है।

चांद अन्न है और बिजली अन्न का उपभोक्ता है।

जीवन अन्न है और मृत्यु अन्न का उपभोक्ता है।

१/६/१९७८

१५३. दुनिया अंतरिक्ष है और उसे भर देती है।

मृत्यु अंतरिक्ष हौ और जीवन यह अंतरिक्ष भर देता है।

शाश्वतता अंतरिक्ष है और समय यह अंतरिक्ष भर देता है।

अनंतता अंतरिक्ष है और दुनियाके देश उसे भर देते है।

हवा अंतरिक्ष है और वायु उसे भर देता है।

आग अंतरिक्ष है और पानी उसे भर देता है।

ज्ञान अंतरिक्ष है और अमरत्व उसे भर देता है।

परम सुख अंतरिक्ष है और क्लेश उसे भर देता है।

२/६/१९७८

१५४. जिस प्रकार बिजली की टेढी-मेढी आग तुफानी बादल कुचल देती है, उसी प्रकार अपने आध्यात्मिकता की श्रेष्ठता की और असीम आत्म-त्याग की उंचाई तेजस्वी चमक से, सर्वव्यापी प्रेम के गरम प्रकाश से अवतार, योगी, ज्ञानी अज्ञान के बादलों को कुचल देता है और सभी जगहो को उजागर कर देता है।

४/६/१९७८

१५५. शाश्वतता मृत्यु का स्वरुप है। सांस शाश्वतता का सार है। अस्तित्व से होनेवाली वास्तविकता शाश्वतता का आधार है। संवेदनाए अस्तित्व मे होनेवाली वास्तविकता का आधार है : ये संवेदनाए है- श्रवण, गंध की संवेदना, स्पर्श की संवेदना, स्वाद और दृष्टी। मूलतत्व संवेदनाओं का आधार है : ध्वनी, हवा, आग, पानी, धरती। सूर्य अस्तित्व मे होनेवाली वास्तविकता का सार है।

अनंतता जीवन-अस्तित्व का आधार है। दुनिया के देश अनंतता का स्वरुप है : पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर। बडे ग्रंथ, इच्छा, ज्ञान, अज्ञान दुनिया के देशो का सार है।

५-६/६/१९७८

१५६. दुनिया इच्छा, इच्छा-शक्ति और कृती है। मन आशा है, वाणी इच्छा-शक्ति है और आवश्यक सांस कृति है।

सूर्य इच्छा है, आग इच्छा-शक्ति है और वायु कृति है। चांद इच्छा है, परम सुख इच्छा-शक्ति है और क्लेश कृति है। परम सुख इच्छा है, आनंद इच्छा-शक्ति है और क्लेश कृती है। पुर्नजन्म इच्छा है, ज्ञान इच्छा-शक्ति है और शुध्दीकरण कृती है। मृत्यु इच्छा है, अमरत्व इच्छा-शक्ति है और जीवन कृती है।

११-१२/६/१९७८

१५७. दुनिया मर्त्य है, और मर्त्य और अमर को जोडती है। मन मर्त्य है, आवश्यक सांस अमर है और वाणी मर्त्य और अमर को जोडती है।

आंख मर्त्य है, सूर्य अमर है और धरती अमर और मर्त्य को जोडती है।

चांद मर्त्य है, बिजली अमर है और पानी अमर और मर्त्य को जोडता है।

यह दुनिया मर्त्य है, वह दुनिया अमर है और आग अमर और मर्त्य को जोडती है।

गंध की संवेदना मर्त्य है, वायु अमर है और हवा अमर और मर्त्य को जोडती है।

कान मर्त्य है, दुनियाके देश अमर है और ध्वनी अमर और मर्त्य को जोडता है।

समय मर्त्य है, अंतरिक्ष अमर है और अनंतता अमर और मर्त्य को जोडती है।

धरती मर्त्य है, आकाश अमर है और वायुमंडल अमर और मर्त्य को जोडता है।

इच्छा मर्त्य है, परम सुख अमर है और विश्राम अमर और मर्त्य को जोडता है।

क्लेश मर्त्य है, परम सुख अमर है और विश्राम अमर और मर्त्य को जोडता है।

शरीर मर्त्य है, जीवन अमर है और मृत्यु अमर और शाश्वत को जोडता है।

१६/६/१९७८

१५८. दुनिया पूर्वकालीन है, उत्तरकालीन है और इन दोनो को जोडती है।

अतीत पूर्वकालीन है, भविष्य उत्तरकालीन है और वर्तमान दोनो को जोडता है।

मन पूर्वकालीन है, आवश्यक सांस उत्तरकालीन है और वाणी दोनो को जोडती है।

सूर्य पूर्वकालीन है, वायु उत्तरकालीन है और आग दोनो को जोडती है।

चांद पूर्वकालीन है, बिजली उत्तरकालीन है और पानी दोनो को जोडता है।

धरती पूर्वकालीन है, आकाश उत्तरकालीन है और वायुमंडल दोनो को जोडता है।

यह दुनिया पूर्वकालीन है, वह दुनिया उत्तरकालीन है और ज्ञान दोनो को जोडता है।

क्लेश पूर्वकालीन है, परमसुख उत्तरकालीन है और विश्राम दोनो को जोडता है।

विचार पूर्वकालीन है, कृति उत्तरकालीन है और शब्द दोनो को जोडता है।

इच्छा पूर्वकालीन है, कृति उत्तरकालीन है और इच्छा-शक्ति दोनो को जोडती है।

अंतरिक्ष पूर्वकालीन है, समय उत्तरकालीन है और दुनिया के देश दोनो को जोडते है।

मृत्यु पूर्वकालीन है, जीवन उत्तरकालीन है और कृती दोनो को जोडती है।

२१-२२/६/१९७८

१५९. दुनिया अनश्वर मे संक्रमक है।

समय संक्रमक है और अंतरिक्ष अनश्वर है।

श्रवण संक्रमक है और ध्वनी अनश्वर है।

गंध की संवेदना संक्रमक है और हवा अनश्वर है।

स्पर्श की संवेदना संक्रमक है और आग अनश्वर है।

स्वाद संक्रमक है और पानी अनश्वर है।

दृष्टी संक्रमक है और सूर्य अनश्वर है।

शरीर संक्रमक है और धरती अनश्वर है।

धरती संक्रमक है और आकाश अनश्वर है।

पानी संक्रमक है और चांद अनश्वर है।

आग संक्रमक है और वायु अनश्वर है।

हवा संक्रमक है और सांस अनश्वर है।

ध्वनी संक्रमक है और ज्ञान अनश्वर है।

ज्ञान संक्रमक है और वाणी अनश्वर है।

वाणी संक्रमक है मन अनश्वर है।

मन संक्रमक है और परम सुख अनश्वर है।

क्लेश संक्रमक है और जीवन अनश्वर है।

जीवन संक्रमक है और मृत्यु अनश्वर है।

२२-२६/६/१९७८

१६०. दुनिया शरीर है और वह शरीर को भर देती है।

आकार शरीर है और नाम उसे भर देते है।

अंतरिक्ष शरीर है और शाश्वतता उसे भर देती है।

दुनिया के देश शरीर है और अनंतता उसे भर देती है।

वह दुनिया शरीर है और सूर्य उसे भर देता है।

सूर्य शरीर है और चांद उसे भर देता है।

चांद शरीर है और बिजली उसे भर देती है।

धरती शरीर है और पानी उसे भर देता है।

आग शरीर है और हवा उसे भर देती है।

हवा शरीर है और ध्वनी उसे भर देता है।

ध्वनी शरीर है और वाणी उसे भर देती है।

वाणी शरीर है और ज्ञान उसे भर देता है।

ज्ञान शरीर है और अमरत्व उसे भर देता है।

अमरत्व शरीर है और मन उसे भर देता है।

मन शरीर है और परम सुख उसे भर देता है।

परम सुख शरीर है और क्लेश उसे भर देता है।

क्लेश शरीर है और जीवन उसे भर देता है।

जीवन शरीर है और मृत्यु उसे भर देता है।

१६१. दुनिया अनंतता मे शाश्वतता है।

समय शाश्वत है और अंतरिक्ष अनंत है।

आकार शाश्वत है और नाम अनंत है।

धरती शाश्वत है और पानी अनंत है।

पानी शाश्वत है और आग अनंत है।

आग शाश्वत है और हवा अनंत है।

हवा शाश्वत है और ध्वनी अनंत है।

ध्वनी शाश्वत है और दुनिया के देश अनंत है।

दुनिया के देश शाश्वत है और ज्ञान अनंत है।

ज्ञान शाश्वत है और वाणी अनंत है।

वाणी शाश्वत है और अमरत्व अनंत है।

मन शाश्वत है और अमरत्व अनंत है।

अमरत्व शाश्वत है और परम सुख अनंत है।

परम सुख शाश्वत है और क्लेश अनंत है।

क्लेश शाश्वत है और जीवन अनंत है।

जीवन शाश्वत है और मृत्यु अनंत है।

२६-२८/६/१९७८

१६२. शक्ति के बाद हमेशा ज्ञान आता है। शक्ति विश्व की नीव है।

बुध्दि शक्ति की मित्र है और प्रेम की माता है।

प्रेम जीवन-अस्तित्व का अमृत है और एकता के सत्य की छाया है।

१२/१२/१९८४

१६३. दुनिया का अस्तित्व असली चिजो मै है।

समय अस्तित्व मे है और अंतरिक्ष असली है।

सूर्य अस्तित्व मे है और वायु असली है।

धरती अस्तित्व मे है और आकाश असली है।

पानी अस्तित्व मे है और आग असली है।

चांद अस्तित्व मे है और बिजली असली है।

आकार अस्तित्व मे है और नाम असली है।

ज्ञान अस्तित्व मे है और वाणी असली है।

वाणी अस्तित्व मे है और मन असली है।

मन अस्तित्व मे है और परम सुख असली है।

क्लेश अस्तित्व मे है और जीवन असली है।

जीवन अस्तित्व मे है और मृत्यु असली है।

२३-६-/४/७/१९७८

१६४. दुनिया ब्राह्मण-आत्मा है, ब्राह्मण अनेकता की एकता है, आत्मा एकता की अनेकता है।

अंतरिक्ष एकता है और समय अनेकता है।

वायु एकता है और सूर्य अनेकता है।

वायुमंडल एकता है और आग अनेकता है।

अनंतता एकता है और दुनिया के देश अनेकता है।

मृत्यु एकता है और जीवन अनेकता है।

१२/७/१९७८

१६५. बहुत जादा बोलने से हम कुछ नही कहते है।

कुछ तो बहुत जादा करने से हम कुछ भी नही करते है।

किसी चीज की बहुत जादा इच्छा रखने से अंत मे हम जब उस चिज को प्राप्त करते है हम निराश हो जाते है। संयम, संतुलन का एहसास आपको यश की ओर ले जाएगा।

११/१०/१९८४

१६६. दुनिया ‘‘स्व’’ का, पुरुष का मानवीकरण है।

पुरुष आत्मसंज्ञान प्राप्त करनेवाला आत्मा, वाणी, मन और आवश्यक सांस है।

वाणी जीवन-अस्तित्व का आधार है, मन जीवन-अस्तित्व का सहारा है।

वाणी अस्तित्व मे होती है, मन असली है, आवश्यक सांस असली सत्य है।

आग वाणी है, सूर्य मन है, वायु आवश्यक सांस है। पानी वाणी है, चांद मन है, बिजली आवश्यक सांस है। अंतरिक्ष वाणी है, वायुमंडल मन है, विचार आवश्यक सांस है।

वाणी का मतलब सांस के माध्यम से फेफडो मे हवा भर देना, मन का मतलब है सांस छोडना, शरीर मे फैलनेवाली सांस यह आवश्यक सांस है। वाणी का मतलब है शरीर मे फैलनेवाली सांस,

मन का मतलब है सांस खिंचना, साधारण सांस आवश्यक सांस है।

वाणी का मतलब है पुर्नजन्म, मन का मतलब है विश्राम, आवश्यक सांस का मतलब है शुध्दिकरण। ज्ञान वाणी है, परम सुख मन है, क्लेश आवश्यक सांस है। अमरत्व वाणी है, मृत्यु मन है, जीवन आवश्यक सांस है।

२७/७/१९७८

१६७. सूर्य अस्तित्व मे होनेवाली चिजो का सार है, दिन मन का सार है, प्रकाश दिन का सार है। वह ब्राह्मण है, आत्मा है, वह सारो का सार है।

आंख मर्त्य का सार है, असली चिजो का स्वरुप है। असली चिजो का सार संवेदनाओ मे छिपा होता है, आवश्यक उर्जा मे छिपा होता है। संवेदनाओ का सार नाम और आकारो मे छिपा होता है। जीवन नाम और आकारो का सार है। शक्ति जीवन का सार है। पुरुष शक्ति का सार है, वह मानवीकरण हुआ ''स्व'' है। वह ब्राह्मण है, आत्मसंज्ञान मे व्यस्त आत्मा है, असली चिजो का सत्य है।

२४-२५/७/१९७८

१६८. मन अज्ञान की रात के लिए वाणी की आग मे खुद का बलिदान देता है और दुनिया का निर्माण होता है।

दुनिया ज्ञान के दिन के लिए आत्मत्याग के विवेक की आग मे खुद का बलिदान देती है और परम सुख प्राप्त होता है, क्लेश से मुक्ति प्राप्त होती है, अज्ञान की जालसे संपूर्ण मुक्ति प्राप्त होती है।

२५-

२६/६/१९७८

१६९. दुनिया तीन दुनियाओ का संयोग है यह दुनिया, पूर्वजो की दुनिया और वह दुनिया।

पृथ्वी यह दुनिया है, वायुमंडल पूर्वजो की दुनिया है और आकाश वह दुनिया है।

सांस की माध्यम से फेफडो मे हवा भरना यह दुनिया है, सांस छोडना पूर्वजो की दुनिया है और शरीर मे फैली सांस वह दुनिया है।

इच्छा यह दुनिया है, ध्यान पूर्वजो की दुनिया है और ज्ञान वह दुनिया है।

क्लेश यह दुनिया है, विश्राम पूर्वजो की दुनिया है और परम सुख वह दुनिया है।

मृत्यु यह दुनिया है, कृतिया पूर्वजो की दुनिया है और अमरत्व वह दुनिया है।

२७/७/१९७८

१७०. दुनिया गति और स्थिर अवस्था का संयोग है।

वायु गति का प्रतीक है, अंतरिक्ष स्थिर अवस्था का प्रतीक है।

समय गति का प्रतीक है, दुनिया के देश स्थिर अवस्था को सुचीत करते है।

ध्वनी गति प्रतीक है, हवा स्थिर अवस्था का प्रतीक है।

हवा गति का प्रतीक है, आग स्थिर अवस्था का प्रतीक है।

आग गति का प्रतीक है, पानी स्थिर अवस्था का प्रतीक है।

पानी गति का प्रतीक है, धरती स्थिर अवस्था का प्रतीक है।

धरती गति का प्रतीक है, आकाश स्थिर अवस्था का प्रतीक है।

आकाश गति का प्रतीक है,ज्ञान स्थिर अवस्था का प्रतीक है।

ज्ञान गति का प्रतीक है,वाणी स्थिर अवस्था का प्रतीक है।

वाणी गति का प्रतीक है, मन स्थिर अवस्था का प्रतीक है।

मन गति का प्रतीक है, अमरत्व स्थिर अवस्था का प्रतीक है।

अमरत्व गति का प्रतीक है, परम सुख स्थिर अवस्था का प्रतीक है।

परम सुख गति का प्रतीक है, क्लेश स्थिर अवस्था का प्रतीक है।

क्लेश गति का प्रतीक है, जीवन स्थिर अवस्था का प्रतीक है।

जीवन गति का प्रतीक है, मृत्यु स्थिर अवस्था का प्रतीक है।

२-४/८/१९७८

१७१. परम सुख इस इच्छा का सार है, वाणी इस परम सुख का सार है, ज्ञान इस वाणी का सार है, अमरत्व इस ज्ञान का सर है, मन इस अमरव का सार है, दिन इस मन का सार है, प्रकाश इस दिन का सार है, यह ब्राह्मण है, आत्मा है, वह सारो का सार है।

५-६/८/१९७८

१७२. यह अन्न वाणी का शरीर है। यह वाणी ज्ञान का शरीर है। यह ज्ञान अमरत्व का शरीर है। यह अमरत्व मन का शरीर है। यह मन परम सुख का शरीर है। यह दिन प्रकाश का शरीर है। प्रकाश सत्य का शरीर है। यह ब्राह्मण है, आत्मा है और सारो का सार है।

५-७/८/१९७८

१७३. क्लेश अंधेरे का सार है। आग इस क्लेश का प्रकाश है। अमरत्व इस आग का प्रकाश है। चांद इस अमरत्व का प्रकाश है। ज्ञान इस चांद का प्रकाश है। परम सुख इस ज्ञान का प्रकाश है। दिन इस परम सुख का प्रकाश है। शाश्वतता इस दिन का प्रकाश है। बिजली इस शाश्वतता का प्रकाश है। चिंतन इस बिजली का प्रकाश है।

यह प्रकाश का सार है, यह क्लेश से मुक्ति देता है, यह संपूर्ण मुक्ति है।

६/८/१९७८

१७४. अंतरिक्ष इस शाश्वतता का शरीर है,जो प्रकाश के स्वरुप मे बिजली है। अंतरिक्ष का विस्तार शाश्वतता के विस्तार से कम नही है, यह बात बिजली के लिए भी सही है।

रात इस क्लेश का शरीर है, जो प्रकाश के स्वरुप मे आग है। रात और क्लेश का विस्तार एक जैसा होता है, यह बात आग के लिए भी सही है। अन्न इस आग का शरीर है, जो प्रकाश के स्वरुप मे अमरत्व है। अन्न और आग का विस्तार एक जैसा होता है, यह बात अमरत्व के लिए भी सही है। ज्ञान इस अमरत्व का शरीर है, जो प्रकाश के स्वरुप मे चांद है। ज्ञान और अमरत्व का विस्तार एक जैसा होता है, चांद के लिए भी यह बात सही है। वाणी इस ज्ञान का शरीर है, जो प्रकाश के स्वरुप मे परम सुख है। वाणी और ज्ञान का विस्तार एक जैसा होता है, परम सुख के लिए भी यह बात सही है।

मन इस परम सुख का शरीर है, जो प्रकाश के स्वरुप मे दिन है। मन और परम सुख का विस्तार एक जैसा होता है, जो दिन के लिए भी सही है। दिन प्रकाश का शरीर है। यह असली चिजो का सार है, गति का, स्थिरता का, अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजो का सार है।

६-७/८/१९७८

१७५. दुनिया शरीर है, प्रकाश और छाया है।

धरती शरीर है आग प्रकाश है और क्लेश छाया है।

आकाश शरीर है, सूर्य प्रकाश है और इच्छा छाया है।

पानी शरीर है चांद प्रकाश है और कृति छाया है।

मन शरीर है, दिन प्रकाश है और परम सुख छाया है।

वाणी शरीर है, परम सुख प्रकाश है और रात छाया है।

अंतरिक्ष शरीर है, बिजली प्रकाश है और समय छाया है।

८-९/८/१९७८

१७६. विश्राम मन को वैराग्य के आग मे दिया हुआ बलिदान है और उससे मन का बीज उत्पन्न होता है।

मन का बीज वाणी के ह्रदय मे उगता है। और उसमे जीवन प्रकट होता है। जीवन चिंतन के बिजली के आग मे जलता है और मुक्ति के परम सुख के महासागर मे घुलता है।

९-१४/८/१९७८

१७७. दुनिया उदगिथा है, उदगिथा मे तीन शब्दांश है:

उद,गि, और था।

जीवन उद है, गीत गि है, और था जीवन का अन्न है।

शक्ति उद है, आग गि है, धरती था है।

बिजली उद है, वायु गि है, वायुमंडल था है।

अमरत्व उद है, सूर्य गि है, आकाश था है।

परम सुख उद है, ज्ञान गि है, रात था है।

क्लेश उद है, चांद गि है, रात था है।

१०/८/१९७८

१७८. अन्न इस पृथ्वी का सार है, जीवन का आधार है।

वाणी इस पानी का सार है, जीवन का आधार है।

शक्ति इस आग का सार है, वह जीवन ही है।

मन इस हवा का सार है, जीवन का प्रकाश है।

अंतरिक्ष इस ध्वनी का सार है।

यह आत्मा है, ब्राह्मण है, आधारोंका आधार है।

१८/८/१९७८

१७९. श्रध्दा प्रेम की आग मे ज्ञान के लिए बलिदान है और इस प्रकार अमरत्व का परम सुख उत्पन्न होता है।

अमरत्व का परम सुख आनंद की आग मे कृति के लिए बलिदान है और इस प्रकार क्लेश उत्पन्न होते है।

क्लेश वैराग्य की आग मे जलते है और आत्मत्याग प्राप्त होता है, इस के अलावा चिंतन का परम सुख, मुक्ति और संपूर्ण मुक्ति भी प्राप्त होते है।

१४-१५/८/१९७८

१८०. वाणी मन का आधार है, जीवन वाणी का आधार है, अन्न जीवन का आधार है, यह दुनिया अन्न का आधार है, वायुमंडल इस दुनिया का आधार है, अमरत्व वायुमंडल का आधार है, ज्ञान अमरत्व का आधार है और मृत्यु परम सुख का आधार है।

यह ब्राह्मण है, आत्मा है, यह अनश्वर है, अव्यक्त है और यह बोधगम्य नही है।

१४-१५/८/१९७८

१८१. मन तरी के माध्यम से सांस के साथ जुड जाता है। परम सुख आनंद के माध्यम से क्लेश के साथ जुड जाता है। मृत्यु इच्छा के माध्यम से क्लेश के साथ जुड जाता है। जीवन कृतियो के माध्यम से मृत्यु के साथ जुड जाता है। इच्छा इच्छा-शक्ति के माध्यम से कृतियो के साथ जुड जाती है।

१७/८/१९७८

१८२. परम सुख मन का बीज है। अमरत्व परम सुख का बीज है। प्रकाश अमरत्व का बीज है। आनंद क्लेश का बीज है। इच्छा आनंद का बीज है और अंधेरा इच्छा का बीज है।

१७/८/१९७८

१८३. ज्ञान अमरत्व का स्वरुप है, वाणी ज्ञान का स्वरुप है और यह दुनिया वाणी का स्वरुप है। समय मृत्यु का स्वरुप है, अलगाव उसका सार है,जीवन और आवश्यक सांस उसके सहारा है, नाम और आकार उसका आधार है, वायुमंडल उसका स्वरुप है।

परम सुख जीवन का स्वरुप है, मन परम सुख का स्वरुप है और अमरत्व मन का स्वरुप है।

२१-२२/८/१९७८

१८४. मृत्यु इस जीवन-अस्तित्व का सार है। जीवन और आवश्यक सांस उसके सहारा है। परम सुख आवश्यक सांस का स्वरुप है, शरीर उसका आश्रय है, पानी उसका बीज है, वाणी उसका आधार है, मन उसके आगमन का स्थान है, अन्न उसका आधार है, मूर्त ''स्व'' पुरुष, आत्मसंज्ञान की प्रक्रिया मे व्यस्त आत्मा उसका सार है।

२६-२८/८/१९७८

१८५. आग धरती और पानी का बच्चा है, वायु दुनिया के देश और वायुमंडल का बच्चा है, सांस वाणी और मन का बच्चा है, कृति इच्छा और इच्छा-शक्ति का बच्चा है, परम सुख बुध्दि और शक्ति का बच्चा है।

२९-३०/८/१९७८

१८६. आरंभ मे वह ‘‘अप्रकट’’ अवस्था मे था, अथवा हम सिर्फ कह सकते है सिर्फ मृत्यु का राज था। ‘‘अप्रकट’’ अवस्था के महासागर मे मन प्रकट हुआ, उसने आत्मसंज्ञान प्राप्त किया और नाम ‘‘स्व’’ निर्माण हुआ, आत्मसंज्ञान प्रकट हुआ, जिसका सार प्रकाश है।

इसके बाद उसका दो अंशो मे विभाजन हुआ और द्वैत उत्पन्न हुआ, अंधेरा उसका सार है।

ये दोन अंश एकत्रित हुए और आवश्यक उर्जा प्रकट हुई, जीवन प्रकट हुआ, जो समय का सार है, दुनिया का आधार है, व्यक्त मे अव्यक्त है।

जिस प्रकार पंछी हवा मे उडता है, उसी प्रकार आवश्यक उर्जा, आवश्यक सांस और जीवन मन के शाश्वत, विशाल और अमर्याद, क्षितीज की ओर उडते है। जो इस बात को समझता है वह अपनी वाणी और मन एकत्रित करता है, वह बुध्दि प्राप्त कर सकता है, उसकी वाणी सर्वज्ञ पंडित की वाणी बन जाती है और वह अज्ञान के अंधेरे को अपनी वाणी की आग मे घुलाता है।

२९-३०/८/१९७८

१८७ वीज इस दुनिया का सार है, उससे बाकी सारी दुनियाए, सभी ईश्वर, सभी जीव और अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजे निकलती है। वायु वायुमंडल का सार है, वह हार की तरह इस दुनिया को, बाकी सारी दुनियाओ,को सभी इश्वरोको, सभी जीवो को, अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजो को एकत्रीत करता है:

सूर्य आकाश का सार है, जो सभी दुनियाओ को, सभी ईश्वरो को, सभी जीवो को और अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजो को उजागर करता है और उन्हे गरमी देता है।

चांद और तारे दुनिया के देशो का सार है, जो अज्ञान के रात के घने अंधेरे मे चमकते है और सही मार्ग दिखाते है।

अंधेरा और प्रकाश, दिन और रात, द्वैत और अद्वैत, शाश्वतता और समय, शाश्वतता की छाया अंतरिक्ष का सार है।

जीवन आवश्यक सांस, आवश्यक उर्जा, जो अंदर से दुनिया को सहारा देती है और दुनिया पर राज करती है, समय का सार है।

नाम ''स्व',आत्मसंज्ञान मे व्यस्त पुरुष, आत्मसंज्ञान मे व्यस्त आत्मा, जिसका सार प्रकाश है, आवश्यक उर्जा का सार है।

'' अप्रकट अवस्था', मृत्यु, मुक्ति का, संपूर्ण मुक्ति का परम सुख शाश्वतता का सार है।

३१/८/१९७८

१८८. यह आग बुध्दि है। मन बुध्दि का बीज है। यह पानी परम सुख है। परम सुख मन का बीज है। यह जीवन अमरत्व है। अमरत्व परम सुख का बीज है।

इच्छा इच्छा-शक्ति को निर्धारीत करती है, इच्छा-शक्ति को कृति निर्धारित करती है, और मनुष्य का अपने कृतियो से पुर्नजन्म होता है।

आग पानी से बुझती है, बुध्दि का मन मे परिवर्तन हो जाता है और परम सुख आनंद मे लुप्त हो जाता है। पानी पृथ्वी पर गिरता है, शरीर बीज से निकलता है और क्लेश आनंद मे

बोधगम्य हो जाता है। पृथ्वी अन्न उत्पन्न करती है, अन्न जीवन का आधार है, जीवन दुनिया का आधार है।

पृथ्वी आग का पोषण करती है, क्लेश वैराग्य मे जल जाते है, मन बुध्दि से परिपुर्ण हो जाता है।

पानी का आग मे, बाष्प मे परिवर्तन हो जाता है, जीवन चिंतन मे घुल जाता हौ और परम सुख, मुक्ति, संपूर्ण मुक्ति आनंद को निगलती है।

४-५/९/१९७८

१८९. मनुष्य विचार की मर्यादा को बाहर होनेवाली चिजो के बारे मे विचार नही कर सकता, वह सिर्फ आत्मा के साथ बह सकता है।

मनुष्य संज्ञान की मर्याद के बाहर होनेवाली चिजो को समझ नही सकता, वह सिर्फ आत्मा बन सकता है।

मनुष्य संवेदनाओ के मर्यादा के बाहर होनेवाली चिजो को महसुस नही कर सकता, वह सिर्फ परम सुख के महासागर मे घुल सकता है।

मनुष्य ने नियमो का पालन नही करना चाहिए, उसे खुद नियम बन जाना चाहिए।

मनुष्य ने दुनिया के बारे मे विवाद नही करना चाहिए उसे दुनिया मे घुल जाना चाहिए।

मनुष्य ने विश्व को जीतना नही चाहिए, उसने विश्व का निर्माण करना चाहिए।

मनुष्य जादा शक्ति की इच्छा नही कर सकता है, उसे खुद शक्ति बनना चाहिए।

मनुष्य जादा बुध्दि की इच्छा नही कर सकता है, उसे खुद बुध्दि बन जाना चाहिए।

मनुष्य जादा प्रेम की इच्छा नही कर सकता है, उसे खुद प्रेम बन जाना चाहिए।

६/९/१९७८

१९०. यह धरती शरीर है, यह पानी बीज है, यह आग वाणी है, यह हवा मन है और यह ध्वनी दुनिया के देश है।

अन्न इस शरीर का आधार है, इच्छा इस बीज का आधार है, इच्छा-शक्ति इस मन का आधार है और समय दुनिया के इन देशो का आधार है।

अन्न विचार का स्वरुप है, इच्छा क्लेश का स्वरुप है और हृदय स्थिरता का स्वरुप है, इच्छा-शक्ति कृति का स्वरुप है, समय मृत्यु का स्वरुप है।

१०-११/९/१९७८

१९१. दिन इस मन का सार है। अरुणोदय उसका मस्तक है, प्रेम का प्रज्वलित प्रकाश है। पूर्व उसका चेहरा है, सत्य की असीम शक्ति है। पश्चिम उसकी पीठ है, इच्छाओ का प्रवाह है जो सबकुछ भर देता है।

रात इस इच्छा का सार है, सूर्यास्त उसका मस्तक है, अज्ञान का गाढा अंधेरा है। पश्चिम उसका चेहरा है, नाम और आकारो के बंधन है, अहंकार की श्रृंखलाए है। पूर्व उसकी

पीठ है, बनावटी व्यक्तित्व का त्याग है, तटस्थता है।

१४-१५/९/१९७८

१९२. जीवन दुनिया का सहारा है, वाणी जीवन का सहारा है, मन वाणी का सहारा है, इच्छा मन का सहारा है और मृत्यु इच्छा का सहारा है। वह ब्राह्मण है, आत्मा है और वह जीवन-अस्तीत्व का जीवन-अस्तीत्व है।

१४/९/१९७८

१९३. हमारा जीवन निद्रा और सजगता का निरंतर बारी-बारी से एक दुसरे मे बदलना है। मनुष्य निद्रा के बाद फिर सो जाता है और फिरसे जागता है। जागृत अवस्था निंद मे बदल जाती है और यह प्रक्रिया मृत्यु के बाद जीवन शुरु होने तक चलती रहती है।

इस प्रकार मनुष्य मृत्यु की मदद से अपने शरीर को छोडता है और दुसरे नये शरीर मे जन्म लेता है। यह नया जन्म मनुष्य के अतीत के कर्मो पर निर्भर करता है। मृत्यु के माध्यम से नये अवतार मे प्रकट होता है, फिरसे मर जाता है, फिरसे जन्म लेता है, अवतार बदलता है, शरीर बदलता है और जब तक मनुष्य अपना असली स्वरुप नही समझता, अहंकारी इच्छाओसे मुक्त नही हो जाता है, अहंकार की श्रृंखला नही तोड देता, क्लेश से मुक्ति नही प्राप्त करता है,

अज्ञान के जाल से संपूर्ण मुक्ति नही प्राप्त करता है, तब तक अवतारो का यह चक्र निरंतर घुमता रहता है।

१६-१७/९/१९७८

१९४. इच्छा का जाल सबसे जादा शक्तिमान और ठोस होता है। कर्म की श्रृंखला सब से जादा टिकाऊ होती है। चित्त के आवेग के बंधन सबसे जादा दृढ होते है। अज्ञान का अंधेरा सबसे जादा गहरा और काला होता है। ज्ञान का शहद सबसे जादा मीठा होता है।

द्वेष सब से जादा भयंकर जहर होता है। झूठ सबसे जादा भारी बोज होता है। बेईमानी सबसे बुरा दुर्गुण है। आत्म-संयम का अभाव सबसे बडा पाप होता है। लोभ सबसे जादा कडवा दुर्भाग्य है। तटस्थता मे विश्राम करना सबसे बडा परम सुख है।

सत्य की शक्ति सबसे जादा होती है। बुध्दि का प्रकाश सबसे जादा तेजस्वी होता है। वैराग्य की आग सबसे जादा गरम आग होती है। आत्मत्याग यह सबसे जादा सुरक्षित आधार है। क्लेश शुध्द करनेवाला सबसे अच्छा साधन है। नि:स्वार्थतता इस दुनिया मे सबसे जादा शुध्द चिज है।

एकता का सत्य सर्वोच्च सत्य है। सर्वव्यापी प्रेम सर्वोच्च एकता है। कर्म का नियम सर्वोच्च नियम है। क्लेश से मुक्ति, इच्छाओसे मुक्ति, कर्म की श्रृंख्लाओ से मुक्ति, अज्ञान के

जाल से संपूर्ण मुक्त सर्वोच्च लक्ष्य है।

१९-२०/९/१९८३

१९५. निद्रा और सजगता के बिच जैसा संबंध होता है, वैसा ही संबंध इस दुनिया और उस दुनिया के बिच होता है। सपने मनुष्य के कृतियो का प्रतिबिंब होते है और उनके कोई परिणाम नही होते है। मनुष्य का उस दुनिया मे अस्तित्व इस दुनिया के कृतियोपर निर्भर होता है। और वह कोई नया कर्म नही उत्पन्न करता है। मनुष्य अपने कृतियो के निश्शक्त फल फिरसे इस दुनिया मे, मनुष्य के शरीर मे अपने नये कार्य के लिए पुनर्जीवीत करता है।

सपनोसे भरी निंद और गहरी निंद के बिच का संबंध इच्छा और इच्छाओ से स्वतंत्रता के बिच होनेवाली संबंधो जैसा होता है, यह संबंध क्लेश और परम सुख, भ्रम और सत्य, माया और बोध, झुठ और सत्य, मृत्यु और अमरत्व इनके बिच होनेवाले संबंधो जैसा भी होता है।

अहंकार संपूर्ण आत्मत्याग से, स्वार्थी लक्ष्य दुनिया के कल्याण के लिए नि:स्वार्थ कार्य से, चित्त का आवेग, आवेगरहीत अवस्था से, विचार-प्रक्रिया चिंतन से, परम सुख आनंद और क्लेश से, मृगमरीचिका वास्तविकता से, कैसे अलग होते है, यह उसी प्रकार से होता है जिस प्रकार सजगता सपनो के बिना निंद की अवस्था से अलग होती है। इस प्रकार जीवन-अस्तित्व अस्तीत्वहीन अवस्था से जुडा होता है, अंधेरा प्रकाश से, गलती क्लेश से मुक्ति से, संपूर्ण मुक्ति से जुडे होते है।

१९/१०/१९७८

१९६. मृत्यु दुनिया का बीज है, चिंतन ज्ञान का बीज है। आग बिजली का बीज है, बुध्दि चिंतन का बीज है। पानी जीवन का बीज है, जीवन मृत्यु का अन्न है, ब्राह्मण है, आत्मा है, यह अव्यक्त से व्यक्त होता है, अवतार मे प्रकट नही होता है, मर्त्य मे अमर है, स्थिर अवस्था मे गति है, परिमित मे शाश्वत है, अनश्वर मे संक्रमक है।

१९-२०/१०/१९७८

१९७. इच्छा यह क्लेश का स्त्रोत है, अज्ञान इस इच्छा का अन्न है। इस अमरत्व का अन्न क्या है। वस्तुत: यह दुनिया है, दुनिया इस अज्ञान का अन्न है, लेकिन बंधन के बिना कोई मुक्ति नही है। वस्तुतः संवेदनाए इस अज्ञान का अन्न है, लेकिन संवेदनाओं के प्रकटीकरण के बिना कोई विचार-प्रक्रिया नही है।

वस्तुत: यह विचार-प्रक्रिया है, विचार-प्रक्रिया इस अज्ञान का अन्न है, लेकिन ज्ञान के बिना कोई चिंतन नही होता है।

चिंतन का मतलब है सत्य का प्रत्यक्ष बोध है, आत्मा का प्रत्यक्ष बोध है परम सुख के महासागर मे घुलना है।

चिंतन की अवस्था जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च उद्देश्य है, जीवन-अवस्था का सर्वोच्च विवेक है, जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च सत्य है, योग का सर्वोच्च स्तर है, क्लेश से मुक्ति की सर्वोच्च अवस्था है, पुर्नजन्म के चक्र से संपूर्ण मुक्ति है।

२०/९/१९७८

१९८. मनुष्य अपने रोजमर्रा जिंदगी के कार्यकला मे सपनो के बिना गहरी निंद के परम सुख मे खुद को डुबोता है, कुछ देर तक इस अवस्था मे विश्राम करता है और बाद मे अपने असली स्वरुप की ओर वापस आता है, उसके बाद फिरसे सपने देखना शुरु करता है और जागता है, सजगता प्राप्त करता है।

उसी प्रकार मनुष्य जादा देर तक समाधी की अवस्था मे नही रह सकता है, अपने असली स्वरुप के चिंतन के परमानंद देनेवाले स्थिती मे, आत्मा के चिंतन मे जब मनुष्य अव्यक्त परम सुख मे व्यस्त हो जाता है और अपने अंदर और बाहर कुछ भी नही समझता है, जादा देर नही रह सकता है।

मनुष्य फिर से इस दुनिया के जीवन मे, माया की ओर वापस आ जाता है, अपने अज्ञान के साथ खेलता है और क्रमिक रुप मे ईश्वरीय निंद से इस दुनिया के क्लेश के माध्यम से सजगता की स्थिती मे आता है, माया के भ्रम से, अज्ञान के जादु से मुक्त हो जाता है, क्लेश से मुक्ति प्राप्त करता है, कर्म की श्रुंखलाओ से अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजों की ब्राह्मण मे, आत्मा मे मनुष्य मे एकता को समझ के, उसके आधार पर सब के लिए सर्वव्यापी प्रेम के माध्यम से, दुनिया के कल्याण के लिए नि:स्वार्थ कार्य करके, अपनी असीम शक्ति को समझ के मुक्ति प्राप्त करता है।

२१-१३/९/१९७८

१९९. गहरी निंद का मतलब है अस्तीत्वहीन अवस्था, सपनो के साथ निंद यह जीवन–अस्तित्व है और सजगता अस्तित्वहीन अवस्था मे जीवन–अस्तित्व है।

चौथी अवस्था, तुरीया, समाधी हमारे मूर्त ''स्व'' को, पुरुष को परम सुख के महासागर मे घुल देना है, इस अवस्था मे पुरुष अपने असली स्वरुप की ओर वापस आ जाता है, इस अवस्था मे एकही संपूर्ण से हमारे काल्पनीक अलगाव की सारी सीमाए, जो वास्तविकता मे अवास्तव होती है, नष्ट हो जाती है, इसी अवस्था मे हमारी अहंकारी इच्छाए बुराई, अज्ञान, क्लेश नष्ट हो जाते है, इस अवस्था मे हम माया के अनिश्चित मोह से, स्वार्थी लक्ष्यो से, क्लेश से, मुक्त हो जाते है, ईश्वरीय निंद से संपूर्ण मुक्ति प्राप्त करते है।

२३–२५/९/१९७८

२००. गहरी निंद हमारे असली ''स्व'' का संक्षिप्त विश्राम होता है, यह पुरुष का, आत्मसंज्ञान मे व्यस्त आत्मा का अपने ईश्वरीय अज्ञान के खेल से विश्राम होता है, यह आत्मा अपने असली सार को भुल जाता है, इस अवस्था मे पुरुष कुछ समय तक अपने असली स्वरुप की ओर वापस आ जाता है।

सपनो के साथ निंद और जागृत अवस्था का मतलब है अपने अज्ञान के साथ खेलनेवाला पुरुष (उसे अपने असली बल के बारे मे ज्ञान नही होता है), यह पुरुष ईश्वरीय भ्रम के साथ, माया के आकारो के साथ ईश्वर जैसा खेलता है।

तुरीया पुरुष अपने असली स्वरुप का चिंतन करता है, समाधी मे आत्मा का प्रत्यक्ष चिंतन करता है, इस अवस्था मे पुरुष ईश्वरीय भ्रम से जागता है, इसका मतलब है ईश्वर मनुष्य अपने आत्म-चिंतन मे अपने ईश्वरीय सार को समझता है।

२३/९/१९७८

२०१. निंद का मतलब ह एकही अवतार की मर्यादा मे एक जागृत अवस्था से दुसरी जागृत अवस्था मे संक्रमण करना।

मृत्यु का मतलब है एक अवतार से दुसरे अवतार मे, शाश्वतता मे एक जीवन से दुसरे जीवन मे संक्रमण करना।

२३/९/१९७८

२०२. दुनिया, जीवन-अस्तित्व, निर्माण का निरंतर बहनेवाला प्रवाह है, यह प्रवाह अप्रकट अवस्था के महासागर से, अनश्वर अवस्था के महासागर से, अगम्य अवस्था के महासागर से, अज्ञान की मर्यादा के बाहर की अवस्था के महासागर से, अस्तीत्वहीन अवस्था के महासागर से, सर्वोच्च जीवन अस्तित्व के महासागर से निरंतर बहता है।

यह निर्माण का निरंतर बहनेवाला प्रवाह ही मन है।

इस प्रवाह का पानी वाणी है, आवश्यक सांस, जीवन उसका स्त्रोत है। सजगता उसका दाया किनारा है और निंद उसका बाया किनारा है।

इच्छा इस नदी का तल है, परम सुख और क्लेश उसके निचले स्तर है ; नाम ''स्व'' उसके स्त्रोत है, अलगाव, द्वैत भी उसके स्त्रोत है। ज्ञान उसका मुंह है, यह एकता के सत्य को समझने का विवेक है। मनुष्य अपने असली अमर स्वरुप को समझता है, अपनी असीम महानता समझता है, अपना अनंत ज्ञान और विश्वव्यापकता समझता है। यह इस ज्ञान के पहलु है।

इस निर्माण के निरंतर बहनेवाले प्रवाह मे मन समाधी मे सत्य के चिंतन के शांती के महासागर मे घुल जाता है, माया के जाल के मुक्ति के परम सुख के अमर्याद शाश्वत महासागर मे घुल जाता है, क्लेश के मुक्ति के महासागर मे, अज्ञान के अनिश्चित मृगमरीचिका से संपूर्ण मुक्ति के महासागर मे घुल जाता है।

२५–२६/९/१९७८

<u>अध्याय ३</u>

२०३. सजगता और सपनो के बिच जो संबंध है वैसा ही संबंध समाधी मे सत्य का चिंतन और सजगता के बिच है। निंद मे मनुष्य वीर और निडर होने का भय महसूस करता है, वह क्लेश का आनंद महसूस कर सकता है, उसे गुस्सा आ सकता है या वह आनंद मना सकता है, वह अतीत भी जान सकता है और भविष्य भी देख सकता है, संक्षेप मे कहा जाए तो वह सजगता की अवस्था मे जो महसूस करता है वही सबकुछ इस अवस्था मे भी महसूस कर सकता है। लेकिन जब मनुष्य जागता है तब यह सारी संवेदनाए और विचार लुप्त हो जाता है और उनका कुछ भी नामोनिशान नही रहता है।

मनुष्य जब सोता नही है तब भी वह प्रेम या द्वेष कर सकता है, वह सच्चा या झूठा हो सकता है, लंपट या मार्जित हो सकता है, बेईमान या ईमानदार हो सकता है, नि:स्वार्थी या लोभी हो सकता है, दयालु या क्रोधी हो सकता है, खर्चीला या कम खर्चा करनेवाला हो सकता है, संवेदनशील या उदासीन हो सकता है।

जब मनुष्य अपने असली अमर स्वरुप को जानता है, वह खुदको सब मे देखने का और सबको अपने अंदर देखना शुरु करता है, जब मनुष्य ब्राह्मण-आत्मा मे, मनुष्य मे अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजो की एकता को समझने के लिए जागता है, वह ज्ञान की मदद से अहंकारी इच्छाओंसे मुक्त हो जाता है, उसका आत्मत्याग मे दृढ विश्वास हो जाता है वह स्वार्थी लक्ष्यो का, अहंकार का क्लेश और गलतीयो का संपूर्ण त्याग करता है, तभी वह चिंतन की अवस्था मे जा सकता है, तभी इस दुनिया और उसके बनावटी सुख, क्लेश, अनुराग, दु:ख, सपनो की तरह उसके अंदर कोई नामोनिशान नही छोडते है।

अगर मनुष्य कुछ करता है तो वह दुनिया के कल्याण के लिए काम के फल के प्रति मन मे कोई भी अभिलाषा नही रख के नि:स्वार्थ कार्य करता है। ऐसा मनुष्य मृत्यु के बाद कोई अवतार मे प्रकट नही होता है। उसके लिए मृत्यु का मतलब है क्लेश से मुक्ति से, अज्ञान से मुक्ति के, कर्म की श्रुंखलाओ से मुक्ति के, पुर्वजन्म के चक्र से संपूर्ण मुक्ति के परम सुख मे खुद को घुला देना।

३०/९/१९७८

२०४. गहरी निंद का मतलब है मनुष्य के असली स्वरुप के अज्ञान से खेल मे थोडा विश्राम। लेकिन निंद की अवस्था मे मनुष्य क्लेश से मुक्ति नही प्राप्त कर सकता है, वह समाधी मे सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन की ओर, अपने अमर स्वरुप के प्रत्यक्ष चिंतन की ओर, अपने असली सार के चिंतन की ओर संक्रमण करता है।

सपनो का अंत अनिवार्य रीति से जागने मे होता है। जागृत अवस्था शिघ्र या कुछ देर बाद चिंतन मे बदल जाती है। अज्ञान, अविद्या, माया अनिवार्य रीती से शिघ्र या कुछ देर बाद ज्ञान की मदद से नष्ट हो जाते है, विद्या के संपूर्ण बोध से नष्ट हो जाते है।

जब मनुष्य सोता नही है वह किसी तरह संवेदनाओ से, रुक्ष शरीर से बंधा जाता है। जब सोनेवाला मनुष्य किसी तरह अपने रुक्ष शरीर से जुडे सभी चिजो के बारे मे ज्ञान प्राप्त करता है, वह अपने संवेदनाओ को जीतता है, लेकिन यह प्रक्रिया थोडे समय के लिए ही चलती है। जब सोनोवाला मनुष्य अपनी इच्छा के अनुसार कोई भी शरीर को व्याप्त करता है, वह अलग-अलग परिस्थितीयो मे डुब जाता है, इस दुनिया का क्लेश या उस दुनिया का परम सुख महसूस करता है, लेकिन वह अज्ञान से मुक्त नही होता है।

जो मनुष्य ज्ञान की मदद से अमरत्व का परम सुख प्राप्त करने के प्रयास करता है, लेकिन फिर भी संपूर्ण आत्मत्याग प्राप्त नही कर सकता है, वह अपने रुक्ष शरीर से और उसे जुडे

हुए क्लेश से मुक्त हो जाता है। स्वर्गीय जीव, देव, तेजस्वी जीव अपनी इच्छा के अनुसार किसी भी शरीर को व्याप्त कर सकते है और आसानी से इस शरीर को छोड भी सकते है। लेकिन ईश्वरो की दुनिया को, उस दुनिया को प्राप्त करने का मतलब यह नही है की अज्ञान से मुक्ति प्राप्त होती है।

अज्ञान से मुक्त होने के लिए, पुर्नजन्म के चक्र से संपूर्ण मुक्ति प्राप्त करने के लिए मनुष्य को अनिवार्य रीती से उस दुनिया के याने की ईश्वरो की दुनिया के अमरत्व के परम सुख से इस दुनिया से शुध्द करनेवाले क्लेश की तरफ वापस आना आवश्यक है, उसे फिरसे इस मर्त्य दुनिया मे जन्म लेना पडता है, उसे फिर से मनुष्य के शरीर को धारण करना पडता है।

मनुष्य अपनी इच्छा–शक्ति का उपयोग करके अपनी संवेदनाए और मन को नियंत्रण मे रखता है, उसके बाद इच्छा–शक्ति उंचे स्तर की इच्छा–शक्ति मे बदल जाती है। मनुष्य ने एकाग्र विचारो के माध्यम से अपने असली स्वरुप को, अपने ईश्वरीय सार को समझना आवश्यक है, ब्राह्मण–आत्मा मे, मनुष्य मे सभी चिजो की एकता के सत्य को समझना चाहिए, उसके बाद ही मन का उंचे स्तर के मन मे परिवर्तन हो जाता है, मनुष्य अनंत ज्ञान, अनश्वर मानसिक संतुलन, चित्त के आवेग से मुक्ति प्राप्त करता है।

मनुष्य ने दुनिया के कल्याण के लिए नि:स्वार्थ कार्य करना आवश्यक है, उसका मन सभी चिजो के प्रति प्यार से भर जाना चाहिए, उसके बाद वह परम सुख के महासागर मे घुल

जाता है, निर्दय कर्म के बेडीयो से, क्लेश से, मुक्ति प्राप्त करता है, अज्ञान के जाल से संपूर्ण मुक्ति प्राप्त करता है।

३०-९-१/१०/१९७८

२०५. मनुष्य के अपने असली ''स्व'' के, अपने असली अनश्वर स्वरुप के समाधी मे चिंतन का परम सुख यह इस दुनिया का, जीवन-अस्तित्व का आधार है।

एकाग्र विचार चिंतन का आधार है, संवेदनाए, आवश्यक उर्जा, वास्तविकता विचार का आधार है। आवश्यक उर्जा, संवेदनाए सबकुछ वास्तविक इन सबका आधार आवश्यक सांस है। आवश्यक सांस, जीवन दुनिया का आधार है। यह आत्मा है, ब्राह्मण है वास्तविकता मे अमर है।

१-३/१०/१९७८

२०६. अंतरिक्ष ब्राह्मण है, वायुमंडल मन है। तिन भागो मे बटनेवाला आवश्यक सांस असली है, आत्मा, पुरुष हमारा मूर्त ''स्व'', मन मे प्रकट होनेवाला आत्मसंज्ञान मे व्यस्त आत्मा उसका सार है।

अंतरिक्ष, वायुमंडल मे बदल जाता है, वायु वायुमंडल मे उत्पन्न होता है। सबसे पहला मन अप्रकट अवस्था मे प्रकट होता है, जीवन मनसे उत्पन्न होता है और आवश्यक सांस भी मन से उत्पन्न होती है।

मन अप्रकट अवस्था मे प्रकट होता है। आवश्यक सांस, जीवन अप्रकट अवस्था मे प्रकट होते है, वे मूर्त अवस्था मे अमूर्त है,संक्रमक अवस्था मे अनश्वर है, मर्त्य अवस्था मे अमर है, परिमित मे शाश्वत है, असली वास्तविकता है।

४-७/१७/१९७८

२०७. मछली का सर से क्षय शुरु होता है, घर का घिसे हुए छत से और मनुष्य का अशुध्द विचारो से क्षय शुरु होता है।

७/१०/१९८५

२०८. वह सच है, यह सच है, वह अस्तित्व मे है, यह अस्तित्व मे है।

अप्रकट सच हो जाता है और सत्य सच मे प्रकट होता है।

अप्रकट मन बन जाता है और जीवन मन मे प्रकट होता है।

अंतरिक्ष वायुमंडल मे बदल जाता है और जीवन वायुमंडल मे प्रकट होता है।

अस्तित्व मे होनेवाली चिजो का असलीयत मे अस्तित्व होता है, सत्य अस्तित्व मे होनेवाली चिजो मे छिपा होता है।

अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजो का वायुमंडल मे अस्तित्व होता है, जीवन अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजो मे छिपा होता है।

वायुमंडल मन है, मन असली है, प्रकाश उसका सार है।

आवश्यक सांस, जीवन प्रकट अवस्था का अप्रकट रुप है, वह मूर्त मे अमूर्त है, संक्रमक मे अनश्वर है। वह असलीयत है। हमारा मूर्त ''स्व'' उसका सार है, ''स्व'' नाम है, आत्मा है, आत्मसंज्ञान ने व्यस्त आत्मा है।

८-९/१०/१९७८

२०९. धरती का अस्तित्व पानी मे होता है, पानी का अस्तित्व आग मे होता है, आग का अस्तित्व वायुमंडल मे होता है, वायुमंडल का अस्तित्व अंतरिक्ष मे होता है, इथर मे होता है, अंतरिक्ष और इथर का अस्तित्व आदि अवस्था के मन मे होता है, आदि अवस्था के मन का अस्तित्व अप्रकट अवस्था मे होता है, आदि अवस्था के अंतरिक्ष मे होता है। आदि अवस्था का मन अप्रकट अवस्था मे प्रकट होता है। ध्वनी, इथर और वाणी आदि अवस्था के मन मे प्रकट होते है। अंतरिक्ष और इथर वायुमंडल मे बदल जाते है। आग वायुमंडल मे प्रकट होती है। बीज और गीलापन आग मे प्रकट होते है। शरीर और पृथ्वी इस बीज से विकसित होते है।

अप्रकट ब्राह्मण है, ब्राह्मण आदि अवस्था का अंतरिक्ष है। आदि अवस्था के अंतरिक्ष का मतलब है मनुष्य का अपने असली''स्व'' का चिंतन, आत्मसंज्ञान। अंतरिक्ष,इथर ध्वनी है, वाणी और नाम है। वायुमंडल मन है, एकाग्र विचार और आत्मसंज्ञान है। आग बल है, बुध्दि है, ज्ञान है। बुद्धि, आग और ज्ञान अमरत्व का परम सुख उत्पन्न करते है, वह बीज है, गीलापन है। अमरत्व के परम सुख का आनंद मे पतन होता है और क्लेश उत्पन्न होते है, यह शरीर, धरती

और आकार है।

९-१०/९/१९७८

२१०. अन्न इस शरीर का आधार है, और वह संवेदनाओ का पोषण करता है।

संवेदनाए बाहरी चिजो को पकडती है और हमारे मन का पोषण करती है।

बुध्दि नि संवेदनाओ पर प्रक्रिया करती है और उससे जीवन-अस्तित्व प्रकट होता है जो हमारे मन का पोषण करता है।

मन का बुध्दि पर नियंत्रण होता है और उसका एकाग्र विचारो के माध्यम से ज्ञान मे परिवर्तन हो जाता है, बादमे वह चित्त के आवेगरहीत अवस्था मे, आत्मत्याग मे, बुध्दि मे और अंत मे चिंतन मे बदल जाता है। अज्ञान अज्ञान का आधार है और वह ज्ञानसे ही नष्ट हो जाता है।

बुध्दि, आत्मत्याग और चित्त के आवेगहीन अवस्था स्थायी व्ययाम और इच्छा-शक्ति की मदद से प्राप्त होते है। उसके लिए ब्राह्मण-आत्मा मे मनुष्य मे सभी चिजो की एकता के सत्य को समझने, दुनिया के कल्याण के लिए नि:स्वार्थ कार्य की, सभी चिजो के लिए प्रति सर्वव्यापी प्रेम की भी आवश्यकता है। यह प्रक्रिया समाधी मे सत्य के चिंतन के परम सुख मे, क्लेश के मुक्ति से, अज्ञान के जाल से संपूर्ण मुक्ति के परम सुख से परिपुर्ण हो जाती है।

११-१३/१०/१९७८

तीन प्रकार की आग

२११. यह पृथ्वी की आग इंधन को निगलती है और गरमी देती है।

यह पेट की आग अन्न का पचन करती है और आवश्यक उर्जा का, आवश्यक गरमी का, जीवन के गरमी का आधार बन जाती है।

यह बुध्दि की आग इस दुनिया को अन्न समझ के निगलती है, अज्ञान को, बुराई को जलाती है और उसका चिंतन के बिजली के चमकीली दुनिया मे परिवर्तन हो जाता है, वह समाधी मे आत्मसंज्ञान मे व्यस्त आत्मा के परम सुख की, कर्म की श्रुंखलाओ से मुक्ति के परम सुख की पुर्नजन्म के चक्र से संपूर्ण मुक्ति की लाभदायी गरमी उत्पन्न करती है।

११-१३/१०/१९७८

२१२. बुध्दि चिंतन का बीज है, चिंतन जीवन-अस्तित्व का आधार है।

वाणी इस ज्ञान का स्वरुप है, ज्ञान अमरत्व का आधार है।

आग इस दुनिया का सार है, मृत्यु आग का सार है। वह ब्राह्मण है, आत्मा है, जीवन-अस्तित्व का जीवन-अस्तित्व है।

१४-१५/१०/१९७८

२१३. पानी इस पृथ्वी का स्वरुप है, आग इस पानी का स्वरुप है, हवा इस आग का स्वरुप है और ध्वनी,इथर अंतरिक्ष इस हवा का स्वरुप है।

पृथ्वी शरीर के समान है, पानी बीज के समान है, आग वाणी के समान है, हवा मन के समान है।

ध्वनी, इथर और अंतरिक्ष इस दुनिया के देश है।

यह शरीर अज्ञान का स्वरुप है, यह बीज इच्छा का स्वरुप है, यह वाणी ज्ञान का स्वरुप है, यह मन परम सुख का स्वरुप है, और दुनिया के देश अनंतता का स्वरुप है।

१६-१७/१०/१९७८

तीन प्रकारो का समय

२१४. अतीत वर्तमान और भविष्य का संयोग है, वह वर्तमान का भविष्य है।

वर्तमान भविष्य और अतीत के बिचका सेतु है - वह अतीत है, जो भविष्य बनता है।

भविष्य अतीत और वर्तमान का समन्वय है - वह वर्तमान है, जो अतीत बनता है।

अतीत कारण है, वह परिणाम धारण करता है, वह कारण के अंदर होनेवाला परिणाम है।

वर्तमान परिनाम है, जो कारण बनता है, वह परिणाम के अंदर होनेवाला कारण है

भविष्य कारण है, जो परिणाम बनता है, वह कारण है, जो खुद की और वापस आ जाता है, वह परिणाम के अंदर परिणाम है, वह कारण के अंदर कारण है।

१९/१०/१९७८

२१५. चिंतन विचार के लिए समर्पण है और वह दुनिया, जीवन-अस्तित्व और इच्छा उत्पन्न करता है।

परम-सुख सुख के लिए समर्पण है और वह क्लेश उत्पन्न करता है।

इच्छा और इच्छा-शक्ति के संयोग से कृतिया उत्पन्न होती है। मन और वाणी के, विचार और शब्दो के संयोग से जीवन उत्पन्न होता है। वह ब्राह्मण है, आत्मा है। वह दुनियाका सहारा है, वह मृत्यु का अन्न है।

२६-२८/१०/१९७८

२१६. मृत्यु का भय सर्वोच्च भय है।

अहंकार, अलगाव, आत्म-सन्मान और द्वैत सर्वोच्च अज्ञान है।

अहंकारी, इच्छाओ का त्याग, बनावटी व्यक्तित्व का त्याग, नि:स्वार्थतता सर्वोच्च आत्मत्याग है।

आत्मसंज्ञान सर्वोच्च ज्ञान है। मनुष्य अपने असली अमर स्वरुप को समझता है, अपनी असीम श्रेष्ठता को और अनंत शक्ति को, अपने अमरत्व को समझता है।

१७/९/१९८५

२१७. जिस प्रकार बादल सूर्य के प्रकाश को ढक देते है, इच्छाए, नाम और आकारो के प्रति अनुराग, अहंकार, स्वार्थी लक्ष्य, चित्त का आवेग, लोभ, जीवन-अस्तित्व की प्यास, शक्ति, बल, परम सुख का पीछा- इन सबको हम अज्ञान, अविद्या, माया कहते है, जो क्लेश का स्त्रोत होता है, जो निर्दय कर्म के नियम से नियंत्रीत होता है, मनुष्य को पुर्नजन्म केचक्र के अंदर रखते है, बार-बार उसे मृत्यु के अलिंगन मे फेकते है। बादलो की तरह ये सब चिजे हमारे असली ''स्व'' के

चमकीले प्रकाश को, सर्वोच्च ज्ञान को, सभी चिजो की ब्राह्मण–आत्मा मे मनुष्य मे एकता के वेदांत के सर्वोच्च ज्ञान को हमसे छिपाते है।

३०–३१/१०/१९७८

२१८. श्रध्दा का आत्मसंज्ञान के लिए अमरत्व की आग मे बलिदान दिया जाता है और अमरत्व का परम सुख प्रकट होता है।

अमरत्व का परम सुख मन की आग मे इच्छा के लिए बलिदान दिया जाता है और जीवन का बीज प्रकट होता है।

जीवन का बीज इच्छा की धरती मे उगता है और जीवन प्रकट होता है।

वह ब्राह्मण है, वह आत्मा है और सत्य मे असलीयत है।

४–५/११/१९७

२१९. मनुष्य सुख किर्ती, शक्ति बल और धन की उंचाईया हासिल कर सकता है, लेकिन उसे हमेशा ऐसा मनुष्य मिलेगा जिसने और जादा प्राप्त किया है, इसलिए इस दुनिया मे द्वैष, क्रोध, चित्त का आवेग, लोभ और अहंकारी इच्छाओ के लिए हमेशा अनुकुल परीस्थिती मिलेगी।

मनुष्य का निचले स्तर तक पतन हो सकता है, लेकिन कुछ मनुष्य इससे निचे भी गिर सकते है, इसलिए इस दुनिया मे हमेशा अहंकार, उदंडता, आत्म–दंभ, पाखंड और बनावटी पुण्य के लिए हमेशा जगह होती है।

मनुष्य का प्रेम कितना भी शक्तिमान क्यो न हो, उसके चित्त का आवेग कितना भी प्रभावी क्यो न हो, समय उसके नाम और आकारो के प्रति अनुराग को नष्ट कर देता है, मृत्यु अनिवार्य रीती से सभी चिजो का पीछा करके उन्हे पकड लेता है, सभी चिजो को, जो मर्त्य जीवो मे पैदा हाती है, उन्हे पकड लेता है और वह निर्दय कर्म के नियम के परिणामो के अधीन होता है।

सिर्फ स्वार्थी लक्ष्यो से संपूर्ण और अंतिम मुक्ति,सिर्फ दृढ मानसिक संतुलन, चित्त के आवेग का त्याग, अपनी क्षमताओ पर असीम श्रध्दा, सिर्फ दुनिया के कल्याण के लिए नि:स्वार्थ कार्य, सिर्फ सभी चिजो के लिए सर्वव्यापी प्रेम, जो सर्वोच्च ज्ञान पर, सभी चिजो की ब्राह्मण-आत्मा मे, मनुष्य मे एकता के शाश्वत वेदांत सत्य के सर्वोच्च ज्ञान पर आधारीत है - सिर्फ ये चिजे मनुष्य को इच्छाओ की श्रृंखलाओ से मुक्ति का, क्लेश से मुक्ति का, पुर्नजन्म के चक्र से संपूर्ण मुक्ति का, अज्ञान के जाल से, माया की जादुसे संपूर्ण मुक्ति का मार्ग दिखा सकती है।

५-७/११/१९७८

२२० वायु इस अंतरिक्ष का गीत है, बिजली इस वायु का गीत है, मन इस बिजली का गीत है, वाणी इस मन का गीत है, ज्ञान इस वाणी का गीत है, बुध्दि, अमरत्व इस ज्ञानका गीत है, सूर्य इस अमरत्व का गीत है, दिन इस सूर्य का गीत है। वह ब्राह्मण है, आत्मा है, वह असलीयत का सार है।

१५/११/१९७८

२२१. अगर आप परमेश्वर को देखना चाहते हो, तो सिर्फ दर्पण की तरफ देखो और आप उसे सिर्फ देख सकोगे।

अगर आप परमेश्वर से बोलना चाहते हो, तो सिर्फ अपने पिता और माता से, भाई और बहनो से बोलो, अपने पुत्र से, कन्या से बोलो, मित्र से, दुश्मन से बोलो, रास्ते मे अपने पास से गुजरनेवाले मनुष्य से बोलो – और आप परमेश्वर से बोलोगे।

अगर आप परमेश्वर से परिचय करना चाहते हो, तो खुदको समझो, अपने असली ''स्व'' को, अपने असली सार को, अपने अनश्वर स्वरुप को एकाग्र विचारो की मदद से, याने की ब्राह्मण–आत्मा मे, मनुष्य मे सभी चिजो की एकता के शाश्वत वेदांत सत्य के बारे मे एकाग्र विचार की मदद से समझो, इसे आप अपनी क्षमता और बल के प्रति अटल श्रध्दा के माध्यम से, वैयक्तिक लाभ की अपेक्षा न करके दुनिया के कल्याण के लिए नि:स्वार्थ कार्य कर के, बिना किसी प्रतिबंध के सभी चिजो के प्रति सर्वव्यापी प्रेम से भी समझ सकते है। खुद को समझो, अपने असली ''स्व'' को, असली सार को, अपने अनश्वर स्वरुप को समझो और आप परमेश्वर को समझोगे।

अगर आप खुद का परमेश्वर के साथ विलय करना चाहते हो, उसके साथ मिलना चाहते हो, तो आपको अहंकार फेक देना चाहिए, बनावटी व्यक्तित्व का त्याग करना चाहिए, स्वार्थी लक्ष्यो का त्याग करना चाहिए, आपको समझना चाहिए की आप सभी चिजो से मिले हुए हो, अपने अंदर क्रोध का नामोनिशान मिटा दो, अपने अंदर के झूठ, कामवासना, ईर्ष्या,

अहंकार, लोभ इन सभी चिजो का त्याग करो, अपने पास जो है उससे समाधान प्राप्त करना सिखो, अपने बलपर श्रध्दा रखने का प्रयास करो, चित्त के आवेगरहित अवस्था प्राप्त करो, मन की अटूट शांती प्राप्ती करो, अहंकारी इच्छाओ का संपूर्ण त्याग करो और आम, सर्वशक्तिमान, त्रिकालदर्शी अच्छे परमेश्वर बन जाओगे, आप परम सुख के महासागर मे घुल जाओगे, आप उसके साथ बह जाओगे, आप ईश्वरीय सपनोसे जाओगे, निर्दय कर्म की श्रृंखलाओ को नष्ट करोगे, क्लेश से मुक्ति प्राप्त करोगे, माया के भ्रम से, अज्ञान से मुक्ति प्राप्त करोगे, एक दुसरे मे बदलनेवाले पुर्नजन्म की अनंत कतार से, जिसका जन्म और मृत्यु मे अस्तित्व है, संपूर्ण मुक्ति प्राप्त करोगे।

१८/११/१९७८

२२२. दुनिया पिता, माता और भविष्य की पीढी है।

मन पिता है, वाणी माता है, सांस, जीवन भविष्य की पीढी है।

वायुमंडल पिता है, दुनिया के देश माता है और वायु भविष्य की पीढी है।

एकाग्र विचार पिता है, ज्ञान माता है, अमरत्व भविष्य की पीढी है।

आत्मचिंतन पिता है, बुध्दि माता है, परम सुख भविष्य की पीढी है।

आग पिता है, पानी माता है, बिजली भविष्य की पीढी है।

सूर्य पिता है, पृथ्वी माता है, अन्न भविष्य की पीढी है।

इच्छा पिता है, इच्छा-शक्ति माता है, कृति भविष्य की पीढी है।

४-५/१२/१९७८

२२३. दुनिया ब्राह्मण है।

उसका सिर तीन दुनियाओ से बना हुआ है : पृथ्वी, वायुमंडल और आकाश।

उसके हाथ तीन परमेश्वरो से बने हुए है : आग, वायु और सूर्य।

उसके पैर तीन मंजीलो की इमारत की तरह है: रिची, याजुस, और समन।

आग इस दुनिया का सार है, वायु इस वायुमंडल का सार है और सूर्य इस आकाश का सार है। बुध्दि इस आग का सार है, विचार इस वायु का सार है, हमारा मूर्त ''स्व'' , ''स्व'' नाम, पुरुष, आत्मसंज्ञान मे व्यस्त आत्मा भी इस वायु का सार है।

इच्छा इस रिची का सार है, इच्छा-शक्ति इस याजुस का सार है और कृति इस समन का सार है।

३१/१२/१९७८

२/१/१९७९

२२४. दुनिया बोध कराती है, उसका बोध होता है और वह जीवन को आगे बढाती है।

आंख बोध कराता है, पृथ्वी का बोध होता है और सूर्य दुनिया को आगे बढाता है। जीभ बोध कराती है, पानी का बोध होता है और इच्छा दुनिया को आगे बढाती है। चमडा बोध कराता है, आग का बोध होता है और वाणी दुनिया को आगे बढाती है। नाक बोध कराती है, हवा का बोध होता है और वायु आगे बढाता है।

कान बोध कराता है, ध्वनी का बोध होता है और दुनिया के देश आगे बढाते है।

मन बोध कराता है, ज्ञान का बोध होता है और परम सुख आगे बढाता है।

९/१/१९७९

२२५. बिजली बादलो मे छिपी होती है, चिंतन एकाग्र विचार मे छिपा होता है।

आग धरती मे छिपी होती है, ज्ञान बल मे छिपा होता है।

वायु वायुमंडल मे छिपा होता है, विचार मन मे छिपा होता है।

परम सुख ज्ञान मे छिपा होता है, ज्ञान वाणी मे छिपा होता है।

इच्छा परम सुख मे छिपी होती है, इच्छा-शक्ति मे इच्छा छिपी होती है, कृति इच्छा-शक्ति मे छिपी होती है। प्रकाश अंधेरे मे छिपा होता है, जीवन-अस्तित्व अस्तित्वहीन अवस्था मे छिपा होता है, जीवन मृत्यु मे छिपा होता है।

१०-१२/१/१९७९

२२६. गाइड भटकनेवालो को उनकी मंजील तक ले जाता है और यह कार्य समाप्त हो जानेपर उसे छोड के चला जाता है, यह बात मन के लिए भी सही है। मन जीवन-अस्तित्व के महासागर की लहरो पर भटकनेवाले मनुष्य को मंजिल तक ले जाता है, उसे अपने असली ''स्व'' का ज्ञान देता है, उसे अपने अमर स्वरुप को जानने की अवस्था तक ले जाता है, मन की मदद से हम ब्राह्मण-आत्मा मे, मनुष्य मे सभी चिजो की एकता को समझते है, सत्य का प्रत्यक्ष चिंतन करते है। यह कार्य समाप्त हो जाने के बाद मन क्लेश से मुक्ति के परम सुख के महासागर मे (जो

बोधगम्य नही है) घुल जाता है। उसी प्रकार मन इच्छाओ से मुक्ति के, गलतीयो से मुक्ति के, अज्ञान के जाल से संपूर्ण मुक्ति के, पुर्नजनम के चक्र से, माया के जादु से संपूर्ण मुक्ति के परम सुख के महासागर मे भी घुल जाता है।

१४-१५/२/१९७९

२२७. इच्छा इस अज्ञान और क्लेश का स्वरुप है, द्वेष, झुठ, कायरता, चित्त का आवेग और पैसे लुटना क्लेश के द्वार है, नाम और आकारो के प्रति अनुराग यह क्लेश का आधार है, अहंकार, स्वार्थी लक्ष्य और लोभ क्लेश का सहारा है।

ज्ञान इस अमरत्व का और क्लेश से मुक्ति का आधार है। किसी को हानी नही पहुंचाना, ईमानदारी, दुसरो की चिजे हडप नही करना, आत्मत्याग, उपहार स्विकार नही करना यह अमरत्व के द्वार है।

आंतरिक और बाह्य शुध्दता, समाधान, आत्म-दमन, ज्ञानीयो के भाषणो को दोहराना, आलोकन मे स्थिरता, अमरत्व के आधार है। आत्मत्याग, ब्राह्मण-आत्मा मे, मनुष्य मे सभी चिजो के एकता के वेदांत के शाश्वत सत्य के बारे मे एकाग्र विचार अमरत्व का सहार है।

१४-१५/२/१९७९

२२८. दुनिया बाह्य है, आंतरिक है और एकत्रित है। चांद बाह्य है, मन आंतरिक है और परम सुख एकत्रित है।

आग बाह्य है, वाणी आंतरिक है और ज्ञान एकत्रित है।

वायु बाह्य है, सांस आंतरिक है और जीवन एकत्रित है।

सूर्य बाह्य है, आंख आंतरिक है, और अस्तित्व मे होनेवाली चिजे एकत्रित है।

दुनिया के देश बाह्य है, कान आंतरिक है और अनंतता एकत्रित है।

अंतरिक्ष बाह्य है, हृदय आंतरिक है और मृत्यु एकत्रित है।

१५/२/१९७९

२२९. मन वायुमंडल है, वाणी आग है, सांस आवश्यक उर्जा है, विचार वायु है।

मन आग को उत्पन्न करता है, वायु आग को फैलाती है और आवश्यक उर्जा को गति देती है।

आवश्यक उर्जा असली है। ब्राह्मण-आत्मा, हमारा असली "स्व" एकत्रित है, शाश्वत है, अद्वैत

है, अमर है, असीम है, उनका कोई मूल नही है, वह वास्तविकता की असलियत है।

१८/२/१९७९

२३०. मन सत्य के प्रकाश से चमकता है, वाणी ज्ञान के प्रकाश से चमकती है।

चांद मन के प्रकाश से चमकता है, सूर्य आत्मसंज्ञान के प्रकाश से जलता है, आग ज्ञान के प्रकाश से चमकती है, बिजली ज्ञान के प्रकाश से चमकती है।

सूर्य को आत्म-चिंतन की गरमी प्राप्त होती है, आग बुध्दि के गरमी से जलती है, बिजली चिंतन के गरमी से चमकती है।

वायु को विचारो के शक्ति से गति प्राप्त होती है। आवश्यक सांस, जीवन शक्ति की ज्योती से जलते है। मनुष्य जीवन की गरेमी से जिंदा रहता है। वह ब्राह्मण है, आत्मा है, दुनिया की प्रतिष्ठा और शक्ति है।

२०-२१/२/१९७९

२३१. यह जीवन-अस्तित्व मन है। वाणी इस जीवन-अस्तित्व का आधार है। आवश्यक सांस, जीवन इस जीवन-अस्तित्व का सहारा है।

आत्मसंज्ञान इस मन का प्रकाश है। समझने का विवेक इस वाणी का प्रकाश है। एकाग्र विचार इस जीवन का प्रकाश है।निःस्वार्थतता इस आत्मसंज्ञान का आधार है। चित्त के आवेग का त्याग इस बुध्दि का आधार है और आत्मत्याग इस एकाग्रता का आधार है।

२०-२१/२/१९७९

२३२. इच्छा इस क्लेश का स्त्रोत है। अज्ञान इस इच्छा का सार है। द्वैत, अहंकार, आत्म-सन्मान, हमारे ‘‘स्व’’ का दिखनेवाला जीवन-अस्तित्व के महासागर से अलगाव यह इस अज्ञान का सार है।

जब तक मनुष्य बनावटी व्यक्तित्व से बाहर नही आता, जब तक वह सभी चिजो की एकता को महसूस नही करता, जब तक वह खुद को सभी चिजो मे नही देखता और सभी चिजो

को खुद के अंदर नही देखता तब तक द्वैत का अस्तित्व कायम रहता है। जब तक द्वैत नही मिटता तब तक मन परिमित की ओर निर्देशीत होता है और संकुचित, बदलनेवाली चिजो की ओर भी निर्देशीत होता है, जब तक संवेदना और मन काबु मे नही आते तब यह प्रक्रिया जारी रहती है।

जब आप मन की मदद से सभी चिजो को ब्राह्मण-आत्मा मे, मनुष्य मे एकता के सर्वोच्च वेदांत के सत्य के बारेमे एकाग्र विचार की मदद से, चित्त के आवेगविरहित अवस्था की मदद से, अहंकारी इच्छाओ के त्याग की मदद से मन से उंचा स्तर प्राप्त करते है तभी आप सर्वोच्च एकता हासिल करोगे, ''मैं तुम हूँ।'' इस वचन का अर्थ समझ सकोगे, परम सुख के शाश्वत, नि:शब्द महासागर मे (जो बोधगम्य नही है।) घुल जाओगे, क्लेश से मुक्ति प्राप्त कर सकोगे, अपने असली ''स्व'' का चिंतन कर सकोगे, इच्छाओ के उपद्रव से मुक्ति प्राप्त करोगे, बंधन से, अहंकार की श्रृंखलाओ से, मुक्ति प्राप्त कर सकोगे, माया के भ्रम से, नाम और आकारो के भ्रम से संपूर्ण मुक्ति प्राप्त कर सकोगे।

२३-२३/२/१९७९

२३३. दुनिया और जीवन-अस्तित्व अमरत्व के शाश्वत चक्र मे निरंतर घुमते है ऐसा हम समझ सकते है।'

मन इस चक्र को बनानेवाला आवश्यक घटक है, वाणी इस चक्र का वृत्तीय किनारा है, आवश्यक सांस इस चक्र की तीलीया है और मूर्त ''स्व'', पुरुष, आत्मसंज्ञान मे व्यस्त आत्मा इस चक्र का केंद्र है।

२५-२६/२/१९७९

२३४. अंतरिक्ष ब्राह्मण है, वह अप्रकट है, वायुमंडल हमारा मन है, वह अप्रकट अवस्था मे प्रकट होता है।

वायुमंडल अंतरिक्ष मे बदल जाता है, प्रकट अप्रकट मे लुप्त हो जाता है।

मन बुध्दि से परिपूर्ण हो जाता है और बुध्दि परम सुख मे घुल जाती है ।

एकाग्र विचार आत्मसंज्ञान की एकाग्रता से परिपूर्ण हो जाता है, आत्मसंज्ञान आध्यात्मिक प्रकाश से परिपूर्ण हो जाता है, जो आत्मचिंतन मे बदल जाता है, अनंत विश्राम मे परम सुख मे, समाधी मे आत्मा के चिंतन के परम सुख मे, सत्य के चिंतन मे, शाश्वतता के चिंतन मे बदल जाता है, क्लेश से मुक्ति के परम सुख मे, इच्छाओं की श्रृंखलाओं से मुक्ति मे, द्वैत से मुक्ति मे, अवतारों के चक्र से संपूर्ण मुक्ति मे, कर्म की बेडी से, अज्ञान के जाल से संपूर्ण मुक्ति मे बदल जाता है।

११-१२/३/१९७९

२३५. संवेदनाए बुध्दि और शरीर के नियंत्रण से अधीन हो जाती है, और चित्त के आवेग का त्याग, शक्ति, अपनी क्षमताओं पर दृढ विश्वास हासिल हो जाते है ।

बुध्दि मन के अधीन हो जाती है और तटस्थता, संक्षिप्तता, ज्ञान, सुख, आनंद, अमरत्व का परम सुख प्राप्त होते है।

मन इस चक्र को बनानेवाला आवश्यक घटक है, वाणी इस चक्र का वृत्तीय किनारा है, आवश्यक सांस इस चक्र की तीलीया है और मूर्त ''स्व'', पुरूष, आत्मसंज्ञान मे व्यस्त आत्मा इस चक्र का केंद्र है ।

२५-२६/२/१९७९

२३६. बुध्दि, वैराग्य, ब्राह्मण-आत्मा मे, मनुष्य मे सभी चिजो की एकता के सर्वोच्च वेदांत ज्ञान आग का चमकीला स्वरुप है, जो इस दुनिया को अन्न के रुप मे निगल जाता है, यह आत्मत्याग का सबसे अंदर का विवेक है, गंदगी को जलानेवाली चित्त के आवेगरहीत अवस्था की चमकीली गरमी है।

हमारा मूर्त ''स्व'' पुरुष, आत्मसंज्ञान मे व्यस्त आत्मा सूर्य का चमकीला स्वरुप है, यह आत्मसंज्ञान के एकाग्रता की तीव्र लाभदायी गरमी है, यह आत्मसंज्ञान की जलानेवाली दीप्तिमान गरमी है, आत्मचिंतन का तेजस्वी दीप्तिमान प्रकाश है।

विचारो की दृढ सृजनशील शक्ति, एकाग्र विचार, जो दुनियाओ को जोडनेवाला धागा है, वायु का अमर स्वरुप है, सभी जगह प्रवेश करनेवाली, सर्वव्यापी आवश्यक उर्जा है, जीवन का

सर्वव्यापी प्रवाह है, प्रकट अवस्था मे अप्रकट है, मूर्त मे अमूर्त है, मर्त्य मे अमर है, असलियत मे सत्य है, यथार्थ मे वास्तविकता है, अस्तित्व मे शाश्वत है, परिमित मे अनंत है।

२१-२२/३/१९७९

२३७. आग पृथ्वी के अंदर है, ज्ञान वाणी के अंदर है, आवश्यक गरमी, जीवन की गरमी हमारे शरीर के अंदर है।

वायु वायुमंडल के अंदर है, विचार मन के अंदर है, आवश्यक उर्जा, जीवन दुनियाओ से चलते है, और हार की तरह उन्हे एकत्रित रखते है।

सूर्य आकाश के अंदर होता है, हमारा मूर्त ''स्व'' पुरुष, आत्मसंज्ञान मे व्यस्त आत्मा, अप्रकट अवस्था मे है, परम सुख के महासागर मे है, अनश्वरता के, अव्यक्त के महसागर मे है, चिंतन के महासागर मे बोधगम्य नही है, अस्तित्वहीन अवस्था के महासागर मे है, सर्वोच्च जीवन- अस्तित्व के महासागर मे है।

२१-२२/३/१९७९

२३८. एकाग्रता इस जीवन-अस्तित्व का हृदय है, अप्रकट अवस्था इस एकाग्रता का हृदय है।

यह दुनिया इन दुनियाओ का हृदय है वाणी इस दुनिया का हृदय है और मन इस वाणी का हृदय है।

प्रकाश इस अंधेरे का हृदय है, जीवन इस प्रकाश का हृदय है, आवश्यक सांस, आवश्यक उर्जा भी इस प्रकाश का हृदय है, अस्तित्वहीन अवस्था इस जीवन का हृदय है, मृत्यु

इस अस्तित्वहीन अवस्था का हृदय है। वह ब्राह्मण है, आत्मा है, सर्वोच्च एकता है, वह मौन का बोधगम्य न होनेवाला महासागर है, यह जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च सत्य है, जीवन-अस्तित्व है, सर्वोच्च जीवन-अस्तित्व है।

२६-२७/३/१९७९

२३९. यह दुनिया बाकी सारी दुनियाओ का अन्न है, क्लेश इस दुनिया का अन्न है और इच्छा इस क्लेश का अन्न है।

अज्ञान इस इच्छा का अन्न है, परम सुख इस अज्ञान का अन्न है और अमरत्व इस परम सुख का अन्न है।

ज्ञान इस अमरत्व का अन्न है, वाणी इस ज्ञान का अन्न है और अमरत्व इस वाणी का अन्न है।

जीवन-अस्तित्व इस मन का अन्न है, अस्तित्वहीन अवस्था इस जीवन-अस्तित्व का अन्न है, मृत्यु इस अस्तित्वहीन अवस्था का अन्न है और जीवन इस मृत्यु का अन्न है। वह ब्राह्मण है, आत्मा है, वह बल का कभी न कम होनेवाला स्त्रोत है, वह शाश्वतता का सर्वोच्च सार है, अपने प्यारो का सर्वशक्तिमान स्वरुप है, दुनिया का अटूट आधार है, जीवन-अस्तित्व का महान स्त्रोत है, अमरत्व का बजनेवाला गीत है।

१/४/१९७९

२४०. सूर्य इस आग का इंधन है, ज्ञान इस बुध्दि का इंधन है और यह दुनिया इस ज्ञान का इंधन है।

अन्न इस जीवन और आवश्यक सांस का इंधन है, पानी इस अन्न का इंधन है और अमरत्व का परम सुख इस पानी का इंधन है।

मन इस परम सुख का इंधन है, मूर्त ''स्व', पुरुष, आत्म-चेतना, आत्मसंज्ञान मे व्यस्त आत्मा इस मन का इंधन है। अप्रकट, अनश्वर, अव्यक्त, बोधगम्य न होनेवाली अवस्था इस आत्म-चेतना का, पुरुष का इंधन है।

१०-११/४/१९७९

२४१. ''स्व'' नाम, आत्म-चेतना, पुरुष, आत्मसंज्ञान मे व्यस्त आत्मा इस अप्रकट बोधगम्य न होनेवाली अवस्था का, अद्वैत का, शब्दो मे व्यक्त होनेवाली अवस्था का चेहरा है। मन इस परम सुख का चेहरा है, वाणी इस मन का चेहरा है, ज्ञान इस वाणी का चेहरा है, अमरत्व इस ज्ञान का चेहरा है, परम सुख इस अमरत्व का चेहरा है, विचार इस परम सुख क चेहरा है, वायु इस विचार का चेहरा है, आवश्यक सांस, जीवन इस वायु का चेहरा है। वह ब्राह्मण है, आत्मा है, वह प्रकट अवस्था मे अप्रकट है, मूर्त मे अमूर्त है, मर्त्य मे अमर है, परिमित मे शाश्वत है, संक्रमण मे अनश्वर है।

१२-१३/५/१९७९

२४२. अंधेरा इस प्रकाश का पालनकर्ता है, इच्छा इस विचार का पालनकर्ता है और क्लेश इस परम सुख का पालनकर्ता है।

यह दुनिया इस ज्ञान का पालनकर्ता है, वायुमंडल इस वायु का पालनकर्ता है और कृति इस अमरत्व का पालनकर्ता है।

इच्छा-शक्ति इस कृति का पालनकर्ता है, जीवन इस इच्छा-शक्ति का पालनकर्ता है और मृत्यु इस जीवन का पालनकर्ता है। वह ब्राह्मण है, आत्मा है, जीवन-अस्तित्व का शाश्वत सत्य है, सर्वोच्च जीवन-अस्तित्व है, अमरत्व का बोधगम्य न होनेवाला स्वरुप है, मौन का समझ के बाहर होनेवाला महासागर है।

१४-१५/५/१९७९

२४३. आग धरती के अंदर होती है, वायु वायुमंडल के अंदर होता है और सूर्य आकाश के अंदर होता है।

ज्ञान इस दुनियामे उत्पन्न होता है, विचार मन मे उत्पन्न होता है,नाम ''स्व'' परम सुख मे उत्पन्न होता है, विचार मन मे उत्पन्न होता है, ''नाम'' ''स्व'' परम सुख मे उत्पन्न होता है। बुध्दि ज्ञान मे छिपी होती है, कृती इच्छा मे छिपी होती है, परम सुख अमरत्व मे छिपा होता है, अमरत्व जीवन मे छिपा होता है और जीवन अप्रकट अवस्था मे छिपा होता है, वह ब्राह्मण है, वह स्थिर है, अनंत शाश्वतता है, मन का कभी न प्राप्त होनेवाला उद्देश्य है, अस्तित्वहीन अवस्था का बोधगम्य न होनेवाला महासागर है।

२२/५/१९७९

२४४. जिस प्रकार मक्खन दूध मे छिपा होता है, अमरत्व ज्ञान मे छिपा होता है। जिस प्रकार प्रकाश आग मे छिपा होता है, ज्ञान वाणी मे छिपा होता है।

जिस प्रकार पानी बादलो मे छिपा होता है और बादल वायुमंडल मे छिपा होता है, वाणी मन मे छिपी होती है।

जिस प्रकार सूर्य आकाश मे छिपा होता है, मन नाम ‘‘स्व’’ मे, आत्म-चेतना मे, पुरुष मे, आत्मसंज्ञान मे व्यस्त आत्मा मे छिपा होता है।

जिस प्रकार सबकुछ अंतरिक्ष मे छिपा होता है, प्रकाश अंधेरे मे छिपा होता है, मूर्त ‘‘स्व’’ पुरुष अप्रकट अवस्था मे, शब्दो मे व्यक्त न होनेवाली अवस्था मे, समझ के बाहर होनेवाली अवस्था मे, अव्यक्त परम सुख के महासागर मे, शाश्वत मौन के महासागर मे छिपा होता है।

२३/५/१९७९

२४५. आग की गरमी बुध्दि की अज्ञान को जलानेवाली तेज गरमी है, सूर्य की गरमी आत्मसंज्ञान की लपट उठनेवाली गरमी है, बिजली की गरमी आत्म-चिंतन का चमकनेवाला प्रकाश है।

आग का प्रकाश ज्ञान का अमर प्रकाश है, सूर्य का प्रकाश मन का पूजनेवाला प्रकाश है, चांद का प्रकाश जीवन का चमकनेवाला प्रकाश है, बिजली का प्रकाश मनुष्य के अपने असली स्वरुप के चिंतन का तेजस्वी प्रकाश है, उसका असली ‘‘स्व’’ है, उसका असीम बल है, सभी चिजो की ब्राह्मण-आत्मा मे, मनुष्य मे, एकता के वेदांत के शाश्वत सत्य के चिंतन का सबकुछ उजागर करनेवाला प्रकाश है, एक क्षण मे प्रकट होनेवाली शाश्वतता है, अपने असली

स्वरुप की और वापस आनेवाले सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ अमर परमेश्वर–मनुष्य के शाश्वत उचित परम सुख का प्रकाश है।

३–४/६/१९७९

२४६. मन चांद के प्रकाश से चमकता है, चांद ज्ञान के प्रकाश से चमकता है।

वाणी आग के प्रकाश से चमकती है, आग बुध्दि के प्रकाश से चमकती है।

आंख सूर्य के प्रकाश से चमकता है, सूर्य पुरुष के रुप मे आत्मा के प्रकाश से चमकता है, मूर्त ‘‘स्व’’ के प्रकाश से चमकता है, दृष्टी बिजली के प्रकाश से चमकती है, बिजली मनुष्य के अपने असीम बल के चिंतन के, अपने शाश्वत उचित परम सुख, अपने अनश्वर असली स्वरुप के प्रकाश से चमकीली है।

११–१३/६/१९७९

२४७. जिस प्रकार घोडा छकडे से बंधा होता है, उसी प्रकार सांस हमारे शरीर से बंधी होती है।

जिस प्रकार हवा वायु से बंधी होती है, उसी प्रकार वाणी मन के साथ बंधी होती है।

जिस प्रकार वायु मृत्यु से बंधा होता है, उसी प्रकार कृतिया इच्छाओ के साथ बंधी होती है।

जिस प्रकार समय शाश्वतता के साथ बंधा होता है, उसी प्रकार सभी चिजे अंतरिक्ष से बंधी होती है।

वह ब्राह्मण है, आत्मा है, और वह जीवन–अस्तित्व का दृढ आधार है।

१४/६/१९७९

२४८. दुनिया परिमित मे शाश्वत है, वह अनेक चिजो से जुडि हुई है, वह ब्राह्मण-आत्मा है।

वैराग्य और आत्मत्याग ब्राह्मण के द्वार है, चित्त के आवेग का त्याग और सादगी उसके आधार है, ज्ञान और विद्या उसका अमरत्व है, प्रकाश उसकी प्रतिमा है।

मन और एकाग्र विचार ब्राह्मण की श्रेष्ठता है, वाणी उसकी कीर्ती है, आवश्यक सांस, आवश्यक उर्जा और जीवन उसकी शक्ति है।

साल और समय ब्राह्मण का शरीर है, धरती उसका सहारा है, पानी उसका परम सुख है, आग उसकी चमक है, वायु उसकी गति है और अंतरिक्ष उसका सार है।

वह ब्राह्मण है आत्मा है और वह शाश्वतता का अनंत शरीर है।

२०/६/१९७९

२४९. जिस प्रकार वायुमंडल वायु से भरा होता है, उसी प्रकार मन विचारो से भरा होता है।

जिस प्रकार महासागर पानी से भरा होता है, विचार वाणी से भरा होता है।

जिस प्रकार आकार पदार्थ से भरा होता है, जिस प्रकार पात्र चिकनी मिट्टी से भरा होता है, जिस प्रकार सोने की सभी चिजे सोने से भरी होती है, शब्द ध्वनी से भरा होता है।

वह ब्राह्मण है, वह आत्मा है, वह शाश्वतता का निरंतर आवाज है, अमरत्व का बजनेवाला गीत है, जीवन-अस्तित्व का तेजस्वी स्त्रोत है।

२३-२४/६/१९७९

२५०. इच्छा इस पृथ्वी का स्वरुप है, परम सुख इस पानी का स्वरुप है, बुध्दि इस आग का स्वरुप है, विचार इस वायु का स्वरुप है और अंतरिक्ष इस ध्वनी का स्वरुप है।

वह ब्राह्मण है, वह आत्मा है और दुनिया का शाश्वत आधार है।

२६/६/१९७९

२५१. सबकुछ ब्राह्मण है, सबकुछ आत्मा है, सबकुछ तुम हो। सबकुछ मनुष्य मे एकत्रित है, सबकुछ ब्राह्मण मे एकत्रित है और सबकुछ आत्मा मे -वैश्वनार मे एकत्रित है।

आकाश वैश्वनार के आत्मा का मस्तक है, यह वायुमंडल उसका शरीर है, यह धरती सके पैर है।

यह पार्थिव आग वैश्वनार के आत्मा की वाणी है, यह वायु उसकी सांस है, यह सूर्य उसकी आंख है, दुनिया के देश उसका श्रवण है, यह चांद उसका मन है, बिजली उसकी दृष्टी है, यह मेघ की गरज उसकी आवाज है। समय इस वैश्वनार के आत्मा का स्वरुप है, यह अंतरिक्ष उसकी अनंतता है और यह मृत्यु उसकी शाश्वतता है।

वह ब्राह्मण है, वह जीवन का सर्वोच्च सार है, जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च सत्य है

और

जीवन-अस्तित्व का जीवन-अस्तित्व है।

२५२. मन सांस और शरीर को जोडता है, वाणी इच्छा और विचार को जोडती है, सांस मन और वाणी को जोडती है।

इच्छा मृत्यु और जीवन को जोडती है, इच्छा-शक्ति इच्छा और कृतियो को जोडती है, कृतिया जीवन और मृत्यु को जोडती है और भविष्य के जीवन को निर्धारीत करती है।

११-१२/९/१९७९

तीन प्रकारो का पुरुष

२५३. मन का प्रकाश इस सूर्य का प्रकाश है, वह सूर्य के अंदर का पुरुष का प्रकाश है। उसका मस्तक सूर्य है, पृथ्वी उसका शरीर है, पृथ्वी की आग उसकी चमक है, यह अन्न उसकी गरमी है और यह समय उसका सार है।

जीवन का प्रकाश इस चांद का प्रकाश है, चांद के अंदर पुरुष का प्रकाश है। चांद उसका मस्तक है, वायुमंडल उसका शरीर है, यह तारे उसकी चमक है, पानी उसकी गरमी है, दुनिया के ये देश उसकी अनंतता है, यह इच्छा उसका सार है।

शाश्वतता का प्रकाश इस बिजली का प्रकाश है, बिजली के अंदर पुरुष का प्रकाश है। बिजली उसकी गरमी है, यह आकाश उसका शरीर है, यह चिंतन उसकी चमक है, यह सांस उसकी गरमी है और यह अंतरिक्ष उसका सार है।

वह ब्राह्मण है, वह आत्मा है और वह शाश्वतता का अचल शरीर है, जीवन-अस्तित्व का अपरिमित आधार है, आधारो का अनंत आधार है।

१५/९/१९७९

२५४. जिस प्रकार हम रात को दिन से अलग नही कर सकते है, जिस प्रकार चांद पृथ्वी से अलग नही हो सकता है, उसी प्रकार मन वाणी से अलग नही हो सकता है।

जिस प्रकार किर्ती शक्ति से अलग नही हो सकती है, उसी प्रकार वाणी आवश्यक सांस से, जीवन से अलग नही हो सकती है।

जिस प्रकार वायु हवा से अलग नही हो सकता है, उसी प्रकार जीवन मन से अलग नही हो सकता है।

यह तीन स्तर की वास्तविकता एकत्रित है। सभी चिजो का अस्तित्व उसके अंदर है। वह ब्राह्मण है, वह आत्मा है, वह जीवन-अस्तित्व का आधार है , वह जीवन-अस्तित्व का स्त्रोत है और वह खुद जीवन-अस्तित्व है।

वह धरती है, वायुमंडल और आकाश है। वाणी धरती है, मन वायुमंडल है, आवश्यक सांस और जीवन आकाश है।

वह आग है, वायु और सूर्य है। वाणी आग है, वायु आवश्यक सांस, जीवन है, मन सूर्य है। वह पानी है चांद और बिजली है। वाणी मन है, मन चांद है, आवश्यक सांस है, जीवन बिजली है। वह पिता है, माता है और भावी पीढी है। मन पिता है, वाणी माता है, आवश्यक सांस है, जीवन भावी पीढी है।

१९-२/९/१९७९

२५५. इस दुनिया का वृक्ष अप्रकट, बोधगम्य न होनेवाले, अव्यक्त अवस्था के, परम सुख के, अस्तित्वहीन अवस्था के, सर्वोच्च जीवन-अस्तित्व के महासागर मे उगता है।

अपने ''स्व'' की संवेदना, आत्म-चेतना, द्वैत, अलगाव, नाम ''स्व'', आत्म-सन्मान, समझनेकी क्षमता इस दुनिया के वृक्ष का बीज है।

मन इस दुनिया के वृक्ष की लकडी है, वाणी उसका रस है, आवश्यक सांस और श्रवण की संवेदना, गंध की संवेदना और स्पर्श की संवेदना, स्वाद और दृष्टी उसके छिलके है।

आकाश इस वृक्ष का मुकुट है, वायुममंडल उसका तना है और धरती उसका मूल है। पाच महान मूलतत्व : ध्वनी, हवा, आग, पानी और धरती इस दुनिया के वृक्ष की टहनीया है, कृतिया इस वृक्ष की पत्तीया है, आवश्यक सांस और जीवन उसकी उंचाई है।

वह ब्राह्मण है, वह आत्मा है, वह प्रकट मे अप्रकट है, मूर्त मे अमूर्त है, मर्त्य मे अमर है, वह जीवन-अस्तित्व का आदि अवस्था का आधार है, वह मृत्यु का कभी न मिटनेवाला प्रतिध्वनी है और शाश्वतता का अमर सार है।

२४-२५/९/१९७९

२५६. आग इस गरमी का स्वामी है, सूर्य इस प्रकाश का स्वामी है, चांद इन स्वर्गीय शरीरो का स्वामी है और वायु इस अंतरिक्ष का स्वामी है।

वाणी इन नामो का स्वामी है, आंख इन आकारो का स्वामी है, मन इन इच्छाओ का स्वामी है और आवश्यक सांस, जीवन इस जीवन-अस्तित्व के स्वामी है।

वह ब्राह्मण है, वह आत्मा है, वह मशालो की चमकीली ज्योती है और वह साये का सर्वोच्च सार है।

२६/९/१९७९

२५७. यह आत्म-चेतना, आत्म-सन्मान, नाम ''स्व'' इच्छाओ का द्वार है, यह इच्छा विचारो का द्वार है, यह मन वाणी का द्वार है, यह वाणी ज्ञान का द्वार है, यह ज्ञान अमरत्व का द्वार है, यह अमरत्व शक्ति का द्वार है, यह शक्ति बुध्दि का द्वार है, यह बुध्दि परम सुख का द्वार है।

वह ब्राह्मण है, वह आत्मा है, और वह क्लेश से मुक्ति है, अज्ञान के जाल से संपूर्ण मुक्ति है।

१-३/१२/१९७९

२५८. परम सुख पुरा भर जाता है, क्लेश स्वच्छ करता है, ज्ञान इलाज करता है, बुध्दि मुक्त करती है।

२२/१२/१९८६

२५९. सूर्य के अंदर का पुरुष असलियत का सार है, अमर और अमूर्त है। प्रकाश इस पुरुष की प्रतिमा है, प्रतिबिंब उसके किरण है और ''दिन'' उसका गुप्त नाम है।

दाये आंख के अंदर का इस मनुष्य का पुरुष असलियत का सार है, अमर है, अमूर्त है। चमक इस पुरुष की प्रतिमा है, प्रतिमाए और आकार उसके प्रतिबिंब है और नाम ''स्व'' उसका गुप्त नाम है।

वह ब्राह्मण है, वह आत्मा है और वह बल का कभी निश्शक्त न होनेवाला स्त्रोत है।

११/१२/१९७९

२६०. आग इस पृथ्वी का गीत है, वायु इस वायुमंडल का गीत है और सूर्य इस आकाश का गीत है। ज्ञान इस वाणी का गीत है, परम सुख इस मन का गीत है और जीवन इस मृत्यु का गीत है। वह ब्राह्मण है, वह आत्मा है और वह अस्तित्वहीन अवस्था का प्रथम जीवन-अस्तित्व है।

१२/१२/१९७९

२६१. बुराई क्लेश से जल जाती है, भय ज्ञान से दूर हो जाता है, रात दिन मे बदल जाती है।

चित्त का आवेग वैराग्य से जल जाता है, संयम, भावनाओ की उद्रेक की जगह लेता है। चित्त के आवेग का त्याग बिना रुकावट की अवस्था की जगह लेता है, दुर्बलता शक्ति मे बदल जाती है।

इच्छा आत्मत्याग से जल जाती है, मन का व्याकुलतारहीत संतुलन और संपूर्ण ज्ञान अज्ञान को बाहर फेक देते है प्रकाश अंधेरे की जगह लेता है, ज्ञान का विवेक मे परीवर्तन होता है। द्वेष प्रेम से जल जाता है, विनय अहंकार की जगह लेता है, विश्राम वृथा अभिमान की जगह लेता है, प्रेम का क्लेश से मुक्ति के परम सुख मे परीवर्तन हो जाता है, माया के भ्रम से संपूर्ण मुक्ति मे परिवर्तन हो जाता है।

१४-१५/१२/१९७९

२६२. यह मन ''स्व'' नाम के माध्यम से, आत्म-चेतना के माध्यम से, आत्म-सन्मान के माध्यम से मनुष्य के शरीर मे प्रवेश करता है। यह सांस मन के माध्यम से मनुष्य के शरीर मे प्रवेश करती है, यह वाणी परम सुख के माध्यम से मनुष्य के शरीर मे प्रवेश करती है।

यह ज्ञान वाणी के माध्यम से आता है, यह अमरत्व ज्ञान के माध्यम से आता है और यह परम सुख अमरत्व के माध्यम से आता है। वह ब्राह्मण है, वह आत्मा है और वह दुनिया का शाश्वतता से पहले का आरंभ है।

७-८/१०/१९८०

२६३. अहंकार का अभाव आत्म-सन्मान का त्याग, बनावटी ''स्व'' के अलगाव का त्याग इस परम सुख के द्वार है। तटस्थता इस परम सुख का आधार है, इस के लिए मन को मिटा देनेवाली इच्छाओ से मुक्त करना भी आवश्यक है। चित्त के आवेग का त्याग, सादगी दृढ मानसिक संतुलन, दयालुता इस परम सुख का सहारा है। ज्ञान इस परम सुख का मार्ग है, सभी चिजो की ब्राह्मण-आत्मा मे मनुष्य मे एकता के वेदांत के सर्वोच्च सत्य को समझना भी इस परम सुख की ओर ले जानेवाला मार्ग है। मन को प्रकाश के महासागर मे, चिंतन मे घुलाना, क्लेश से मुक्ति प्राप्त करना, कर्म की श्रुंखलाओ से संपूर्ण मुक्ति प्राप्त करना यह परम सुख का सार है।

३१/१/१९८०

२६४. गरमी इस वाणी के वृक्ष का मूल है, धरती इस वृक्षका तना है और यह इच्छाए उसकी पत्तीया है।

अन्न इस मन के वृक्ष का मूल है, वायुमंडल उसका तना है और यह निर्णय उसकी पत्तीया है।

पानी इस आवश्यक सांस के वृक्ष का, जीवन के वृक्ष का मूल है, आकाश उसका तना है और ये कृतिया उसकी पत्तीया है।

आत्म-चेतना, आत्म-सन्मान, नाम ''स्व'' इस जीवन-अस्तित्व के वृक्ष के मूल है, उसका तना पाच महान मूलतत्वो से बनता है : धरती, पानी, आग, हवा, ध्वनी। आवश्यक उर्जा और संवेदनाए : दृष्टी, स्वाद, स्पर्श की संवेदना, गंध की संवेदना, श्रवण उसकी पत्तीया है, अंतरिक्ष उसका स्थान और आधार है।

वह ब्राह्मण है, वह आत्मा है और दुनिया का अपरिमित आधार है।

१३/२/१९८०

२६५. अज्ञान इस मृत्यु के वृक्ष का मूल है, इच्छा इस वृक्ष का तना है, द्वेष, झुठ, भय, चित्त का आवेग, लोभ इस वृक्ष की टहनिया है, क्लेश उसका रस है।

ज्ञान इस अमरत्व के वृक्ष का मूल है, तटस्थता इस वृक्ष का तना है और पाच महान प्रतिज्ञाए : किसी को हानि नही पहुचाना, ईमानदारी, दुसरो की चिजे हडप नही करना, चित्त के आवेग का त्याग, उपहार स्विकार नही करना, इस वृक्षकी टहनिया है, परम सुख उसका रस है।

वह ब्राह्मण है, वह आत्मा है और वह जीवन-अस्तित्व का शाश्वतता से पहले अवस्था का कारण है।

१८/३/१९८०

२६६. ''जब शिष्य तैयार होता है, गुरु आ जाता है''

यह सिर्फ शिष्य के लिए सही नही है, लेकिन गुरु के लिए भी सही है। इसलिए हम ऐसा भी कह सकते है ''जब गुरु तैयार होता है, उचित शिष्य उसके पास आ जाते है। मधुमक्खीया बौर न आए कलियो के चारो ओर नही बल्कि खुले, सुगंधि फुल के चारो ओर इकठ्ठा हो जाती है।

९/१२/१९८७

२६७. अस्तित्वहीन अवस्था इस जीवन-अस्तित्व का स्त्रोत है, सर्वोच्च जीवन-अस्तित्व, अप्रकट, अव्यक्त, बोधगम्य न होनेवाली अवस्थाए भी उसका स्त्रोत है। गीलापन इस जीवन का स्त्रोत है, गरमी इस गीलापन का स्त्रोत है।

पुरुष इस जीवन-अस्तित्व का स्वामी है, आत्मसंज्ञान मे व्यस्त आत्मा, हमारा मूर्त ''स्व'' भी उसके स्वामी है। मन इस वाणी का स्वामी है। सबको मिटानेवाला शिव इस आग का स्वामी है।

वह ब्राह्मण है, वह आत्मा है, वह बुध्दि का स्वामी है (आदि अवस्था मे वह स्वामी नही है)। वह योग का स्वामी है, वह वैराग्य का संपूर्ण नम्र स्वामी है और अज्ञान को चित्त के आवेग का त्याग करके नष्ट करनेवाला स्वामी है।

१७-२०/५/१९८०

२६८. सांस छोडने की प्रक्रिया को सांस खिंचने की प्रक्रिया निगल जाती है, मौन ध्वनी को निगलता है और मृत्यु जीवन को निगलता है।

इच्छा-शक्ति इच्छा को निगलती है, कृति इच्छा-शक्ति को निगलती है और विश्राम कृति को निगलता है।

वाणी विचार को निगलती है, मन वाणी को निगलता है और इच्छाओ से मुक्ति का, अहंकार के श्रृंखलाओ से संपूर्ण मुक्ति का परम सुख मन को निगलता है।

२६/५/१९८०

२६९. परम सुख इस जीवन-अस्तित्व का द्वार है, आनंद इस क्लेश का द्वार है और अज्ञान इस इच्छा का द्वार है।

इच्छा इस मृत्यु का द्वार है,कृति इस जीवन का द्वार है और विचार इस कृति का द्वार है।

ज्ञान इस अमरत्व का द्वार है, वाणी इस ज्ञान का द्वार है और मन इस वाणी का द्वार है।

वह ब्राह्मण है, वह आत्मा है, वह जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च सार है, वह शक्ति है जो अज्ञान को नष्ट करती है और वह अमरत्व का असीम सार है।

२९-३०/५/१९८०

२७०. इस परम सुख के महासागर मे, जिसका सार अंतरिक्ष है, जिसकी प्रतिमा प्रकाश है, आत्मसंज्ञान मे व्यस्त आत्मा छिपा होता है, पुरुष , जिसका सार मूर्त ‘‘स्व’’ है, नाम‘‘स्व’’ है, आत्म-सन्मान है, जिसकी प्रतिमा सूर्य है, छिपा होता है। मन इस पुरुष मे छिपा होता है, जिसका सार

वायुमंडल है, जिसकी प्रतिमा चांद है। वाणी इस मन मे छिपी होती है, जिसका सार विचार है, जिसकी प्रतिमा आग है। ज्ञान इस वाणी मे छिपा होता है, बुध्दि उसका सार है, जीवन उसकी प्रतिमा है। अप्रकट, बोधगम्य न होनेवाला, अव्यक्त इस ज्ञान मे छिपा होता है, अस्तित्वहीन अवस्था, सर्वोच्च जीवन-अस्तित्व उसका सार है, मृत्यु उसकी प्रतिमा है।

वह ब्राह्मण है, वह आत्मा है, वह मौन का अपरिमित महासागर है, जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च सत्य है, जीवन-अस्तित्व का शाश्वत जीवन-अस्तित्व है।

६/६/१९८०

अध्याय ४

२७१. बुध्दि इस परम सुख की आंखे है, मन इस प्रेम की आंखे है।

शक्ति इस बुध्दि का आधार है और वाणी इस मन का आधार है।

ज्ञान इस शक्ति का आधार है और ध्वनी इस वाणी का आधार है।

वह ब्राह्मण है, वह आत्मा है, वह सर्वव्यापी असीम अंतरिक्ष है, वह परम सुख का निरंतर चलनेवाला गीत है और वह शाश्वतता का पूजनीय स्त्रोत है।

२०/६/१९८०

शुध्दता

२७२. अपने अंदर की बुराई कैसे दूर की जा सकती है?

- क्लेश अथवा वैराग्य से।

– शक्ति कैसे प्राप्त की जा सकती है?

– चित्त के आवेग का त्याग कर के और आत्म–दमन से।

– बुद्धि कैसे प्राप्त की जा सकती है?

– एकाग्र विचार से और नियमीत व्यायाम से।

– परम सुख कैसे प्राप्त किया जा सकता है?

– ज्ञान प्राप्त करके, सभी चिजो की ब्राह्मण–आत्मा मे, मनुष्य के एकता के वेदांत के सत्य को समझ के।

– सत्य कैसे समझ सकते है?

– आत्मसंज्ञान से, आत्म–चिंतन से, अहंकारी इच्छाओ को नष्ट करके, बनावटी व्यक्तित्व का त्याग करके, आत्म–सन्मान को छोड के, स्वार्थी लक्ष्यो का त्याग, अहंकार के श्रुंखलाओ को तोडके, इच्छाओ की श्रुंखलाओ को तोडके, माया के भ्रम से मुक्ति प्राप्त करके, मृत्यु की शक्ति से मुक्ति प्राप्त करके, अज्ञान के जाल से संपूर्ण मुक्ति प्राप्त करके।

२२–२४/६/१९८०

<u>**तीन प्रकारो का ब्राह्मण**</u>

२७३. यह दुनिया अन्न है। अन्न ब्राह्मण है। उसकी प्रतिभा पृथ्वी है, जीवन-अस्तित्व उसका सार है और समय उसका स्रोत है।

समय ब्राह्मण है। साल उसकी प्रतिमा है, आवश्यक सांस, जीवन उसका सार है, सूर्य उसका स्रोत है।

सूर्य ब्राह्मण है, प्रकाश उसकी प्रतिमा है, आत्मसंज्ञान मे व्यस्त आत्मा, मूर्त ''स्व'' नाम ''स्व'' उसका सार है, परम सुख उसका स्रोत है।

वह ब्राह्मण है, वह आत्मा है और वह मौन का अपरिमित सागर है।

२९/६/१९८०

निर्माण

२७४. क्या इस दुनिया की उत्पत्ति हुई है?

- नही, उत्पत्ति नही हुई है, दुनिया और जीवन-अस्तित्व शाश्वत निर्माण है, यह निर्माण की निरंतर चलनेवाली प्रक्रिया है।

निरपेक्ष सापेक्ष से उत्पन्न होता है, कारण परिणाम मे उत्पन्न होता है।

वर्तमान अतीत से उत्पन्न होता है, भविष्य वर्तमान मे निर्माण होता है।

बुध्दि मन मे उत्पन्न होती है और ज्ञान अज्ञान मे उत्पन्न होता है।

परम सुख प्रेम मे उत्पन्न होता है और शक्ति चित्त के आवेग की त्याग की अवस्था मे उत्पन्न होती है।

मृत्यु जीवन मे उत्पन्न होता है और जीवन मृत्यु मे उत्पन्न होता है।

वह ब्राह्मण है, वह आत्मा है और वह अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजो को गति देनेवाली शक्ति है।

१३-१४/७/१९८०

क्लेश

२७५. क्लेश का सार क्या है?

– वह मनुष्य का अपने असली अमर, स्वरुप के बारे मे अपनी असीम श्रेष्ठता के बारे मे, अपनी कभी निश्शक्त न होनेवाली शक्ति के बारेमे, अपनी अपरिमित शक्ति के बारे मे अज्ञान है, सभी चिजो की एकता के बारे मे अज्ञान है, एक संपूर्ण से अलगाव है, जीवन-अस्तित्व के महासागर से अलगाव है, द्वैत है।

– क्लेश का बीज क्या है?

– आनंद लेना।

– क्लेश का स्वरुप क्या है?

वह अहंकारी इच्छाओ मे, व्यक्तिगत लाभ की इच्छामे, अहंकार मे, आत्म-सन्मान मे स्वार्थी लक्ष्यो मे, किर्ती का पीछा करने मे, बल, शक्ति, धन का पीछा करने मे जीवन-अस्तित्व की प्यास मे छिपा होता है।

– क्लेश का आधार क्या है?

– द्वेष, झूठ, बेईमानी, चित्त का आवेग, अति लोभ।

– क्लेश का सहारा क्या है?

– गंदगी और क्रोध, असमाधान और ईर्ष्या, संयम का अभाव और आत्म-नियंत्रण का अभाव, अज्ञान और कायरता, उदण्डता और वृथा अभिमान।

– क्लेश से मुक्ति कैसे प्राप्त की जा सकती है।

किसी को हानी नही पहुचाना, सत्यवादी रहना, दुसरो की चिजे हडप नही करना, चित्त के आवेग का त्याग करना, उपहार स्विकार नही करना, अंदर से और बाहर से शुध्द रहना, समाधानी रहना, आत्म-दमन का इस्तेमाल करना, ज्ञान प्राप्त करना, सत्य के प्रति निष्ठा, अहंकारी इच्छाओ का त्याग करना, बनावटी व्यक्तित्व का त्याग करना, आत्म-सन्मान का त्याग करना, ज्ञान प्राप्त करना, सभी चिजो की ब्राह्मण-आत्मा मे मनुष्य मे एकता के वेदांत सत्य के बारे मे सोचना, दृढ एकाग्रता के सामान्य व्यायाम की मदद से शक्ति प्राप्त करना, मन को काबू मे रखकर शक्ति प्राप्त करना, दुनिया के कल्याण के लिए नि:स्वार्थ कार्य करके क्लेश से मुक्ति प्राप्त करना, सभी चिजो के प्रति सर्वव्यापी प्रेम व्यक्त करना, इच्छाओ से मुक्ति प्राप्त करना, जन्म और मृत्यु के निरंतर घुमनेवाले अवतारो के चक्र से, जो एक दुसरे मे बदल जाते है, और आखिर मे उनका असल मे अस्तित्व नही होता है, संपूर्ण मुक्ति प्राप्त करना।

२४/३/१९८०

२७६. प्रेम बुध्दि के माध्यम से परम सुख मे बदल जाता है। मन ज्ञान के माध्यम से बुध्दि मे बदल जाता है।

एकाग्र विचारो मे ज्ञान प्राप्त होता है, संवेदना और मन पर नियंत्रण से एकाग्रता आगे बढती है। उचित सांस से संवेदना प्राप्त होती है, शरीर पर नियंत्रण से सांस प्राप्त होती है।

निरंतर व्यायाम से शरीर पर शरीर पर नियंत्रण प्राप्त होता है अगर आपके विचार और मन शुध्द है तभी आप सामान्य व्यायाम की मदद से लक्ष्य प्राप्त कर सकते हो,जब आप अंतिम लक्ष्य को ठिक तरह से समझते हो तभी आप उसे प्राप्त कर सकोगे।

वैराग्य की मदद से आप मन और विचारो को शुध्द कर सकते हो, इसके लिए इन चिजो की भी आवश्यकता है: किसी को हानि न पहुंचाने का दृढतापुर्वक संकल्प करना, इमानदारी, सच्चाई, चित्त के आवेग का त्याग करना,उपहार स्विकार नही करना, आंतरिक और बाह्य शुध्दता की अटूट आकांक्षा, समाधान, आत्म-दमन, ज्ञान प्राप्त करना और ज्ञानी लोगो के वचनो को निरंतर दोहराना, सत्य के प्रति निष्ठा, अहंकारी इच्छाओ का क्रमिक त्याग, अपने असली स्वरुप के अज्ञान से मुक्ति की तीव्र आकांक्षा, जन्म और मृत्यु के अनंतता मे निरंतर घुमानेवाले चक्र से संपूर्ण मुक्ति की आकांक्षा।

२९-३०/२/१९८०

सर्वोच्च

२७७. इस दुनिया मे सर्वोच्च अनेक सत्य है, लेकिन उनमे एक सर्वोच्च सत्य है जो दुसरे सारे सत्यो पर नियंत्रण रखता है। सभी चिजो की ब्राह्मण-आत्मा मे मनुस्य मे एकता यह सर्वोच्च सत्य है।

इस दुनिया मे अनेक नियम है, लेकिन उनमे एक सर्वोच्च नियम है, जो दुसरे सारे नियमो पर नियंत्रण रखता है। यह कर्म का नियम जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च नियम है, यह महान गति का नियम है, यह निर्दय कर्म के अनिवार्य बदले का नियम है।

इस दुनिया मे अनेक आनंद है लेकिन उनमे एक सर्वोच्च है, जो दुसरे सारे आनंदो पर नियंत्रण रखता है। आत्मसंज्ञान और आत्म-चिंतन, मनुष्य ने अपना असली अमर स्वरुप समझना यह जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च आनंद है, जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च ज्ञान है।

इस दुनिया मे अनेक लक्ष्य है, लेकिन उनमे एक सर्वोच्च है, जो दुसरे सारे लक्ष्यो पर नियंत्रण रखता है। मुक्ति यह जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च लक्ष्य है, जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है, जीवन का अर्थ है।

२२/९/१९८४

<u>अज्ञान</u>

२७८. द्वेष से आरोग्य का नाश हो जाता है, झुठ से आत्म-निर्भरता का नाश हो जाता है, बेईमानी से समाधान का नाश हो जाता है, संयम के अभाव से आनंद का नाश हो जाता है और लोभ से मित्रता का नाश हो जाता है।

कीर्ती से विश्राम नष्ट हो जाता है, धन से आनंद नष्ट हो जाता है, शक्ति से ईमानदारी नष्ट हो जाती है, क्रोध से एक लय मे चलनेवली सांस नष्ट हो जाती है, और उदण्डता से विचारो की स्थिरता नष्ट हो जाती है।

चित्त के आवेग से सामर्थ्य नष्ट हो जाता है, निरर्थक बकवास से बुध्दि नष्ट हो जाती है, परम सुख आनंद मे लुप्त हो जाता है, इच्छा से ज्ञान नष्ट हो जाता है, अमरत्व मृत्यु मे घुल जाता है। मृत्यु अंतिम अभिषेक है।

२३/८/१९८०

२७९. पंछी की ताकद उसके पंखो मे होती है, मनुष्य की ताकत उसके विचारो मे छिपी होती है, हवा पंछी का सहारा है, मन मनुष्य का सहारा है।

पंछी की उडान उसका आनंद है, मनुष्य आनंद ज्ञान मे छिपा होता है।

२७/८/१९८०

आनंद और विपत्ती

२८०. समाधान से आनंद प्राप्त होता है, विश्राम से उसकी रक्षा होती है, नि:स्वार्थतता से उसे सहारा मिलता है, संयम के अभाव से और अहंकार से वह नष्ट हो जाता है।

द्वेष, गुस्सा, क्रोध से विपती आ जाती है। झुठ और बेईमानी से उसकी रक्षा होती है, चित्त का आवेग और लोभसे उसे सहारा प्राप्त होता है, दृढता से उसे नष्ट किया जा सकता है, दुसरो को हानी नही पहुंचाने से, ईमानदरी से, दुसरो की चिज हडप न करके, संयम से और

उदारता से, आंतरीक और बाह्य शुध्दता से, समाधान से, आत्म–दमन से, ज्ञान प्राप्त करके और सत्य के प्रति निष्ठा रख के विपत्ती को दूर किया जा सकता है।

२८/८/१९८०

प्रकाश के तीन स्त्रोत

२८१. सूर्य आत्म संज्ञान मे व्यस्त आत्मा है, पुरुष है, मूर्त ''स्व'' है, बिजली चिंतन की दीप्ति है, चांद मन है।

हमारा मूर्त ''स्व'', पुरुष चित्त के आवेग का त्याग करनेवाला दर्शक है, जो प्रकृति को माया को खुद के लिए अपरिमित आकारो को उत्पन्न करने के लिए प्रेरित करता है। लेकिन वह प्रकृति के इस खेल मे शामिल नही होता है, इसलिए सूर्य का प्रकाश सब के लिए समान होता है।

बिजली की दीप्ति अपने चारो ओर अपने चमकीले प्रकाश से उजागर कर देती है। मनुष्य के लिए भी यह बात सही है, चिंतन की दीप्ति मनुष्य को समाधी मे उसके असली अमर स्वरुप समझाती है।

मन निरंतर बदलता है। सत्य के बारे मे ज्ञान का स्तर जितना उंचा होता है, उतनी जादा मन को चमक होती है।

चांद के परिवर्तन की स्थिती मनुष्य के अवतारो के निरंतर चक्र से मार्ग का, जो जन्म और मृत्यु के अनंत कतारो मे प्रकट होता है, प्रतिबिंब है। ज्ञान की मदद से हम देवो की, तेजस्वी जीवो की दुनिया, स्वर्गीय अमरत्व का परम सुख प्राप्त कर सकते है।

चांद की अवस्था जिसे ''पुनम का चांद'' कहते है, यह योगीकी स्थिती प्राप्त करनेवाला मनुष्य है, ऐसे मनुष्य ने काफी हद तक परिपुर्णता हासिल की होती है, लेकिन वह संपूर्ण परिपुर्ण नही होता है, उसने सत्य के ज्ञान का स्तर प्राप्त किया होता है, उसके कारण वह कुछ देर तक स्वर्गीय दुनियामे, देवो की दुनियामे परम सुख का स्वाद ले सकता है, अपने रुक्ष शरीर के साथ जुडे हुए क्लेश से मुक्ति प्राप्त कर सकता है

जब अच्छे कर्मो के फल निश्शक्त हो जाते है, मनुष्य इस मर्त्य दुनिया मे वापस आ जाता है, वह फिरसे इस मर्त्य दुनिया मे जनम लेता है, उसका ज्ञान कम हो जाने की प्रक्रिया का आरंभ होता है, अज्ञान का अंधेरा गाढा होने की प्रक्रिया का आरंभ होता है। यह चांद की अमावस मास के आरंभ की ओर की पहली अवस्था के समान है जिसमे चांद का आकार कम होता है। क्रमिक रीती से मनुष्य का निचली दुनियाओ मे पतन होता है अपने कर्मो पर निर्भर होते हुए वह मनुष्य या पंछी की अवस्था से सदृश होनेवाली अवस्था मे प्रवेश करता है, ऐसी अवस्था वनस्पती सदृश भी हो सकती है। गहरा अंधेरा इन दुनियाओ पर राज करता है और प्रकाश की एक भी किरण वहां प्रवेश नही कर सकती है। यह चांद के ''अमावस'' की स्थिती के समान है।

जब मनुष्य के बुरे कर्म के फल निश्शक्त हो जाते है, वह फिर से मनुष्यो की दुनिया मे वापस आ जाता है, उसका मन फिरसे वही अवस्था पार करता है, लेकिन इस बार वह ज्ञान की सिढी से निचे नही आता बल्कि उपर आता है, उसका ज्ञान फिर से बढता है। यह अवस्था चांद के ''पुनम मास के आरंभ की पहली अवस्था'' के समान है, जब चांद का आकार बढने लगता है।

जन्म और मृत्यु के इस शाश्वतता के चक्र से बाहर निकलना बहुत मुश्किल है। अगर आप अपने मन के स्वामी है, अगर अपने इच्छाके अनुरुप मन पर राज करते हो, अगर आप उसकी गतिविधिया रोक सकते हो, आप इस चक्रसे पुरी तरह बाहर आ सकते हो, तभी आप मन की मदद से मन के उपर उठते हो, तभी आप मन की क्षमताओ को निश्शक्त कर सकते हो और उसे हृदय मे घुला सकते हो, तब आप अपने असली ''स्व'' के चिंतन की, अपने असली अमर स्वरुप के चिंतन की अवस्था प्राप्त कर सकते हो, समाधी मे अपनी असीम श्रेष्ठता को समझ सकते हो। इस प्रकार अवतारो के चक्र से मुक्ति प्राप्त कर सकते हो, परम सुख के महासागर मे, अस्तित्वहीन अवस्था के महासागर मे, सर्वोच्च जीवन-अस्तित्व के महासागर से घुल सकते हो।

७-९/९/१९८०

२८२. सत्य की ओर जानेवाला मार्ग क्लेश से गुजरता है, अमरत्व की ओर जानेवाला मार्ग ज्ञान से गुजरता है।

परम सुख की ओर जानेवाला मार्ग बुध्दि से गुजरता है, विश्राम की ओर जानेवाला मार्ग चित्त के आवेग त्याग से गुजरता है।

मृत्यु की ओर जानेवाला मार्ग इच्छा से गुजरता है, मृत्यु की शक्ति से माया की जादू से मुक्ति का मार्ग आत्मत्याग से गुजरता है।

७-१०/९/१९८०

बुध्दि की आंख

२८३. दुनिया मेरे अंदर छिपी हुई है, मै इस दुनिया के अंदर छिपा हू और मै पुरी दुनिया हूँ।

मन पुरुष की आंख है, आत्मसंज्ञान मे व्यस्त आत्मा की आंख है, मूर्त ''स्व'', ज्ञान उसकी दृष्टी है।

मन का उपयोग करके और ज्ञान की मदद से मनुष्य आत्मा का भिन्न दुनिया मे अवतार देखता है, एकता मे अनेकता देखता है।

जब मन की क्षमताए निश्शक्त हो जाती है, जब मनकी गतिविधिया कम हो जाती है, जब मनुष्य मन की मदद से मन के उपर उठता है और अपने ह्रदय मे घुल जाता है, चिंतन के माध्यम से मनुष्य अपने अंदर सत्य को प्रत्यक्ष समझ लेता है, अपना असली सार समझ लेता है, आत्मा मे सभी चिजो की एकता को विलक्षण रुप से महसूस करता है, जीवन-अस्तित्व का आधार और स्त्रोत समझ लेता है, एकता मे अनेकता का चिंतन करता है।

१६-१८/९/१९८०

कर्म

२८४. जिस प्रकार उपर फेकने के बाद पत्थर हमेशा पत्थर फेकनेवाले मनुष्य के सिरपे गिरता है उसी प्रकार द्वेष और गुस्से की प्रवृती,बेईमानी कृति अनिवार्य रीति से जल्दी या कुछ देर बाद मनुष्य की ओर विपत्ती के रुप मे, दुःख, क्लेश, और बिमारी के रुप मे वापस आ जाती है।

जिस प्रकार वृक्ष की देखभाल करनेवाले मनुष्य को बाद मे स्वादिष्ट और रस से भरे हुए फल प्राप्त होते है, उसी प्रकार दयालुता, ईमानदारी और निःस्वार्थतता मनुष्यो को समाधान, विश्राम, आनंद, सुख परम सुख देते है।

१२/९/१९८०

आत्म-बलिदान

२८५. दुनिया और जीवन-अस्तित्व शाश्वत बलिदान है, शाश्वत भेट है।

परम सुख प्रेम की आग मे खुदको आनंद के लिए बलिदान करता है और क्लेश उत्पन्न होते है।

बुद्धि वाणी की आग मे खुदको मन के लिए बलिदान करती है और इच्छा उत्पन्न होती है।

ज्ञान इच्छा की आग मे खुद का अज्ञान के लिए बलिदान करता है और कर्म की श्रुंखलाए उत्पन्न होती है, मृत्यु के शक्ति की अनिवार्य निष्पक्ष श्रुंख्लाए प्रकट होती है।

दुनिया का आत्मसंज्ञान की आग मे आत्मत्याग के विवेक के लिए बलिदान दिया जाता है और मृत्यु के शक्ति से मुक्ति, अज्ञान के जालसे संपूर्ण मुक्ति प्राप्त होती है।

३०/९/१९८०

सर्वोच्च के बारे मे

२८६. सर्वोच्च सुख समाधान मे छिपा होता है, सर्वोच्च आत्मत्याग नि:स्वार्थतता मे छिपा होता है, सर्वोच्च उर्जा चित्त के आवेग के त्याग मे, तटस्थता मे छिपी होती है।

सर्वोच्च शक्ति मनके नियंत्रण मे होती है, सर्वोच्च विवेक आत्मत्याग मे छिपा होता है, अहंकारी इच्छाओ के नष्ट करने मे होता है। सर्वोच्च शुध्दता सभी चिजो के लिए सर्वव्यापी प्रेम मे छिपी होती है।

सर्वोच्च विजय खुद के उपर का विजय है, आत्मसंज्ञान सर्वोच्च ज्ञान है, अपने असली अमर स्वरुप का ज्ञान, अपनी असीम श्रेष्ठता का सर्वोच्च ज्ञान है। वेदांत का सभी चिजो की ब्राह्मण-आत्मा मे, मनुष्य मे एकता का सत्य सर्वोच्च सत्य है।

१०/१०/१९८०

जीवन और मृत्य

२८७. मृत्यु क्या है?

वह अस्तित्वहीन अवस्था है, सर्वोच्च जीवन-अस्तित्व है, महान संक्रमण है, अंतिम शुध्दता है।

जीवन क्या है?

वह मृत्यु का कभी न मिटनेवाला प्रतिध्वनी है, मृत्यु का कभी निश्शक्त न होनेवाला अन्न है, प्यारे लोगो का अविनाशी स्वरुप है, समय का आदि अवस्था का आधार है, जीवन-अस्तित्व का अटूट आधार है।

– मृत्यु का सार क्या है?

– शाश्वतता।

– जीवन का सार क्या है?

– वह हमारा मूर्त ‘‘स्व’’, नाम‘‘स्व’’, पुरुष, आत्मसंज्ञान मे व्यस्त आत्मा है।

– मृत्यु का स्वरुप क्या है?

– समय।

– जीवन का स्वरुप क्या है?

– परम सुख।

– मृत्यु के शक्ति का आधार क्या है?

– उसका आधार है मनुष्य का अपने असली अमर स्वरुप के बारे मे, अपरिमित श्रेष्ठता के बारे मे अज्ञान। जीवन–अस्तित्व के महासागर से अलगाव, द्वैत, अहंकारी इच्छाए, ज्ञानेद्रियो के सुख का पिछा करना, शक्ति की प्यास, धन, जीवन–अस्तित्व की प्यास, द्वेष, झुठ, बेईमानी, चित्त का आवेग और खुद का स्वार्थ ये भी मृत्यु के शक्ति के आधार है।

– जीवन का अर्थ क्या है और जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य क्या है?

– मृत्यु के शक्ति से मुक्ति, अज्ञान से मुक्ति, अहंकार की श्रृंखलाओ से मुक्ति, जन्म और मृत्यु के एक दुसरे मे बदलनेवाली अवस्था के निरंतर घुमनेवाले चक्र से संपूर्ण मुक्ति।

१५–१६/१०/१९८०

मृत्यु और अमरत्व

२८८. मृत्यु की वेदी क्या है?

– वह इच्छाए, धन का, किर्ती का, शक्ति का, सुख का पीछा करना और जीवन-अस्तित्व की प्यास इन घटको से बनी होती है।

– अमरत्व की वेदी क्या है?

– वह नि:स्वार्थतता, सभी चिजो के प्रति सर्वव्यापी प्रेम और खुद के मन और शरीर को जितना, सभी चिजो की ब्राह्मण-आत्मा मे, मनुष्य मे एकता के वेदांत के सर्वोच्च ज्ञान को प्राप्त करना इन के आधार पे अहंकारी इच्छाओ का त्याग है।

– अमरत्व के वेदी के मुख्य घटक क्या है?

– वे है: मित्रता, किसी जो हानि नही पहुंचाना, खरापन, ईमानदारी, सत्य, दुसरो की चिजो को हडप नही करना, चित्त के आवेग का त्याग, सादगी, उदारता, आत्मनिर्भरता और उपहारो का स्विकार नही करना।

– अमरत्व के वेदी का आधार क्या है?

– आत्मसंज्ञान और आत्म-चिंतन, मनुष्य ने अपने असली ''स्व'' को समझना, अपना असली अमर स्वरुप समझना, अपनी असीम श्रेष्ठता को और बल को समझन,ा अपनी अनंत स्वतंत्रता को आत्मनिर्भरता को और अपने स्वतंत्र अस्तित्व को समझना ये अमरत्व के बेडी के आधार है।

२२-१९/१०/१९८०

विश्व

२८९. जीवन–अस्तित्व और विश्व क्या है?

– मन।

– विश्व का आधार क्या है?

– वाणी।

– विश्व का सहारा क्या है?

– जीवित और आवश्यक सांस

– विश्व को चलानेवाली शक्ति क्या है?

– विचार।

– विश्व का स्वरुप क्या है?

– क्लेश।

– विश्व का मुख्य नियम क्या है?

– निर्दय निष्पक्ष कर्म का नियम, अनिवार्य बदले का नियम, कारण और परिणामो की निरंतर कतार मे, जो एक दुसरे मे बदल जाते है, व्यक्त होता है और यह जीवन और मृत्यु की एक दुसरे मे बदलनेवाली कतार का वास्तव मे अस्तित्व नही होता है।

– विश्व का सार क्या है?

– नाम ‘‘स्व’’, हमारा मूर्त ‘‘स्व’’, पुरुष, आत्मसंज्ञान मे व्यस्त आत्मा विश्व का सार है।

– विश्व का स्त्रोत क्या है?

– ब्राह्मण–आत्मा, अस्तित्वहीन अवस्था, सर्वोच्च जीवन–अस्तित्व, अनंत अचल शाश्वतता, अमूर्त, बोधगम्य न होनेवाला, अव्यक्त, जिसे हम मृत्यु कहते है, मौन का गुप्त महासागर, परम सुख का किनारा न होनेवाला महासागर।

२७–१८/१०/१९८०

२९०. जीवन और आवश्यक सांस वायुमंडल मे चलते है, विचार मन मे चलते है।

परम सुख का अस्तित्व ज्ञान मे होता है, क्लेश अज्ञान के अंदर छिपा होता है।

बुध्दि आत्मत्याग मे, संयम मे व्यक्त होती है, इच्छाए अज्ञान का आधार है।

ज्ञान बुध्दि मे व्यक्त होता है और अमरत्व परम सुख के अंदर छिपा होता है।

वह ब्राह्मण है, आत्मा है, वह अस्तित्वहीन अवस्था का सर्वोच्च जीवन–अस्तित्व है, सर्वोच्च मौन है, वह सभी चिजो का आरंभ और अंत है, वह प्रकट दुनिया का घुलना है।

२–४/११/१९८०

२९१. कौनसा बीज मर्त्य का पुर्नजन्म करता है?

– कृति का बीज।

– कृति का बीज किस धरती मे उगता है?

– इच्छाओ के धरती मे।

– इच्छाओ का अन्न क्या है?

– अज्ञान, गलतिया और अंधापन।

– अज्ञान की धरती क्या है?

–नाम ''स्व'', आत्म–सन्मान, अहंकार, द्वैत, जीवन–अस्तित्व के महासागर से अलगाव।

– हम अज्ञान और अंधापन से कैसे मुक्ति प्राप्त कर सकते है?

– अहंकारी इच्छाओ के त्याग पर आधारीत दुनिया के कल्याण के लिए नि:स्वार्थ कार्य करना, मन और शरीर वशमे करके, जिसके लिए यथाक्रम और निर्धारीत व्यायम की आवश्यकता होती है, ज्ञान प्राप्त करना, आत्मसंज्ञान, दृढ एकाग्र विचार, सभी चिजो के प्रति सर्वव्यापी प्रेम, जो सभी चिजो की ब्राह्मण- आत्मा मे एकता के वेदांत के सर्वोच्च सत्यपर आधारीत होता है, इन चिजो की अज्ञान और अंधापन से मुक्ति प्राप्त करने के लिए आवश्यकता होती है।

१३/११/१९८०

२९२. भुने या सुखे हुए बीज से कभी कली नही निकलती है, यही बात कृतियो के बीजो के लिए भी सही है, जो बीज चित्त के आवेग के त्याग की आगपर भुने जाते है और जो बीज अहंकारी इच्छाओ से नही बनते है, जिन बीजो मे कृतियो के परिणामो से खुद के लाभ की इच्छा नही होती है, ऐसे बीजो से दुसरे उसी प्रकार की कृतियो के स्वरुप मे कलीया नही निकलती है, ऐसे बीज नये कर्म का निर्माण नही करते है और कभी भी एक दुसरे मे बदलनेवाले जन्म और मृत्यु के

चक्र मे मनुष्य को नही फंसाते है।

१३/११/१९८०

मनुष्य

२९३. मनुष्य खुद के साथ खेलनेवाला उस खेल का आनंद उठानेवाला परमेश्वर है, इस विश्व का स्वामी है, जो अज्ञान से अपना मनोरंजन करता है, इन दुनियाओ का निर्माता है, जो भ्रम का आनंद उठाता है।

- मनुष्य की श्रेष्ठता क्या हौ?

- वह मन मे छिपी होती है, यह एकाग्रता की क्षमता है, अमूर्त विचार करने की क्षमता है, अपनी - संवेदना के अनुरुप विचार करने की क्षमता है।

- मनुष्य दुसरे जीवो की तुलना मे उच्च कैसे बन जाता है?

- इच्छा-शक्ति और इच्छा-शक्ति की स्वतंत्रता ये पहलु मनुष्य को दुसरे जीवो की तुलना मे उच्च बनाते है।

- मनुष्य की शक्ति क्या है?

- वह वैराग्य और आत्म-चिंतन मे, नि:स्वार्थतता मे, आत्मत्याग की क्षमता मे, अपने असली - - अमर स्वरुप को जानने की क्षमता मे छुपी होती है।

- मनुष्य का सर्वोच्च आनंद क्या है?

- समाधान।

– मनुष्य का सर्वोच्च परम सुख क्या है?

– सभी चिजो के लिए सर्वव्यापी प्रेम, ज्ञान प्राप्त करना, सभी चिजो की ब्राह्मण–आत्मा मे, मनुष्य मे एकता के सर्वोच्च वेदांत सत्य को समझना।

– मनुष्य के लिए सर्वोच्च स्वतंत्रता क्या है?

– बुध्दि, अहंकारी इच्छाओ का त्याग, कर्म की श्रृंखलाए नष्ट करना, काल्पनिक व्यक्तित्व से अलगाव को नष्ट करना, अहंकार की बेडिया तोडना, मृत्यु की शक्ति से मुक्त होना।

– मनुष्य का सर्वोच्च उद्देश्य क्या है, जीवन–अस्तित्व का सर्वोच्च अर्थ क्या है?

अपने असली ''स्व'' को समझना, अपने अमर स्वरुप को, अपनी अपरिमित श्रेष्ठता और शक्ति को, अपनी सर्वशक्तिमानता को, अनंत ज्ञान को समझना, क्लेश से मुक्ति, द्वैत से मुक्ति, एक दुसरे मे बदलनेवाले और वास्तविकता मे जिनको अस्तित्व नही है ऐसे जन्म और मृत्यु के निरंतर घुमनेवाले चक्र से संपूर्ण मुक्ति।

२६/११/१९८०

२९४. भविष्य का आधार वर्तमान होता है, भविष्य का जीवन वर्तमान के कर्मो से निर्धारीत होता है।

कृतियो की शुध्दता उद्देश्यो की शुध्दता पर निर्भर करती है, उद्देश्यो की शुध्द्ता विचारो की शुध्दता से निर्धारीत होती है।

विचार अहंकारी इच्छाओ का त्याग करके बनावटी व्यक्तित्व का त्याग करके, आत्म–सन्मान और अहंकार की बेडियो से मुक्ति प्राप्त करके शुध्द हो जाते है।

अहंकार की श्रृंखलाओ से मुक्ति, इच्छाओ के जाल से मुक्ति, द्वैत से, भ्रम से, माया के जादु से मुक्ति और अज्ञान का नाश, मनुष्य ने अपने असली स्वरुप को समझाना- ये सब ज्ञान के मार्ग से प्राप्त होते है; उसके लिए दृढ संकल्प से अध्ययन करना चाहिए, वैराग्य की मदद से अपनी इच्छा-शक्ति मजबूत और कार्यक्षम करनी चाहिए, इसके लिए आत्म-दमन और संयम की भी आवश्यकता होती है, यह प्राप्त करने के लिए यथाक्रम ज्ञान का संग्रह करना चाहिए, सामान्य एकाग्रता का व्यायाम करना चाहिए, सर्वव्यापी प्रेम, नि:स्वार्थतता जो सभी चिजो की ब्राह्मण-आत्मा मे, मनुष्य मे एकता के सर्वोच्च सत्य को समझाने पर आधारीत है, इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए मदद कर सकते है।

२९-३०/११/१९८०

प्रकाश और अंधेरा

२९५. प्रकाश क्या है?

- वह ब्राह्म की प्रतिमा है, अप्रकट की, अव्यक्त की, समझनेके बाहर होनेवाले चिजो की प्रतिमा है, वह आग मे चमकनेवाला, सूर्य मे, चांद मे, बिजली मे चमकनेवाला पुरुष है, मन का सार है।

- अंधेरा क्या है?

- वह मृत्यु की प्रतिमा है, अस्तित्वहीन अवस्था की प्रतिमा है, इच्छा की प्रतिमा है।

- प्रकाश का सार क्या है?

– हमारा मूर्त ‘‘स्व’’, पुरुष, आत्मसंज्ञान मे व्यस्त आत्मा।

– अंधेरे का सार क्या है?

– इच्छा, द्वैत, अहंकार और आत्म–सन्मान।

– प्रकाश का स्वरुप क्या है?

– ज्ञान और सत्य को समझना।

– अंधेरे का स्वरुप क्या है?

– मनुष्य का अपने असली अमर स्वरुप के बारेमे अज्ञान, अज्ञान और अंधापन।

<u>गरमी और ठंड</u>

२९६. गरमी और उष्मा क्या है?

– यह अज्ञान को जलानेवाला आत्मत्याग का विवेक है।

– ठंड क्या है?

चित्त के आवेग का त्याग, तटस्थता, व्याकुलता का त्याग, जो संपूर्ण स्थिरता और संपूर्ण ज्ञान पर आधारीत होते है।

– गरमी का सार क्या है?

– वैराग्य और आत्म–दमन।

– ठंड का सार क्या है?

– संयम और सादगी।

– गरमी का स्वरुप क्या है?

– वाणी, इच्छा–शक्ति और शक्ति।

– ठंड का स्वरुप क्या है?

– अस्तित्वहीन अवस्था

– गरमी और उष्मा के स्त्रोत क्या है?

– अन्न।

– ठंड का स्त्रोत क्या है?

– मृत्यु।

– गरमी और ठंड के मुख्य प्रकटीकरण क्या है?

– आग, सूर्य, बिजली और सांस।

१५–१६/१२/१९८०

२९७. इंधन आग मे जलता है, अज्ञान बुध्दि से जलता है।

उदासिनता आत्म–दमन मे जलती है, संवेदनाओ को सौम्य करके चित्त का आवेग जलता है।

क्लेश वैराग्य मे जलता है, मन को काबु मे रखके दुर्बलता जल जाती है।

१५–१६/१२/१९८०

२९८. शहद मिठाई का राजा है और ज्ञान जीवन–अस्तित्व का शहद है।

दूध पेयो का राजा है, और आत्मत्याग स्थिरता का स्वामी है।

चावल वनस्पतीयो का राजा है और चित्त के आवेग का त्याग सुख का स्वामी है।

सोन धातुओ का राजा है और ईमानदारी धन का स्वामी है।

तीन आग

२९९. आध्यात्मिकता क्या है?

– यह बल, बुद्धि और प्रेम के समन्वयपूर्ण संयोग है। बल की आग मे दुर्बलता. आत्म–निर्भरता का अभाव और कायरता जल जाते है।

– बल की आग का इंधन क्या है?

– आत्म–दमन और वैराग्य।

– इस आग का सार क्या है?

– मन को काबु मे रखना, उसकी गतिविधिया शांत करना।

– इस आग का स्वरुप क्या है?

– अपनी क्षमताओ का दमन करना, बाहरी वस्तुओ से संवेदनाओ को दूर हटाना, अपने अंदर देखनेका प्रयास करना, बाहर नही, मन का दमन करना, यह इस आग का स्वरुप है।

– बल का स्त्रोत क्या है?

– ज्ञान और श्रध्दा।

– बल की आग को कैसे प्रज्वलित करते है?

– एकाग्रता के यथाक्रम और दृढ व्यायाम से, पाच महान प्रतिज्ञाओ का निरंतर और दृढ पालन करके, जो इस प्रकार है: किसी को हानि नही पहुंचाना, ईमानदारी, दुसरो जी चिजे हडप नही करना, आत्मत्याग और उपहारो का स्विकार नही करना।

अज्ञान, गलतीया और अंधापन बुद्धि की आग मे जल जाते है।

– बुध्दि की आग का इंधन क्या है?

– एकाग्रता, एकाग्र विचार।

– इस आग का सार क्या है?

– अहंकारी इच्छाओ का त्याग करना, ज्ञानेंद्रियो के सुख का और परम सुख का पीछा छोड देना, शक्ति की प्यास नष्ट करना,सामर्थ्य, कीर्ती, धन, जीवन–अस्तित्व की प्यास नष्ट करना।

– इस आग का स्वरुप क्या है?

चित्त के आवेग का त्याग, तटस्थता और सादगी।

– बुद्धि का स्त्रोत क्या है?

– मनुष्य क समाधी मे अपने असली ''स्व'' का चिंतन, उसके असली अमर स्वरुप का चिंतन, उसकी श्रेष्ठता और सर्वशक्तिमानता, उसका अनंत ज्ञान, और अनंत शक्ति, मनुष्य का मन की मदद से मन के उपर उठना।

– बुद्धि के आग को कैसे प्रज्वलित करते है?

– अध्ययन और विचार से, जो मार्ग की खोज कर रहे है उनसे संपर्क करके, ज्ञानी व्यक्तियो से बातचीत करके, क्रोध, गुस्सा, द्वेष और अहंकार सभी चिजो के प्रति सर्वव्यापी प्रेम की आग मे जल जाते है।

– प्रेम की आग का इंधन क्या है?

– शुध्दता।

– इस आग का सार क्या है?

– नाम और आकारो के बंधन को दूर करना।

–इस आग का स्वरुप क्या है?

– अहंकार की श्रुंखलाओ को नष्ट करना, द्वेष को हटाना, आत्मसन्मान को हटाना, जीवन–अस्तित्व

के महासागर से अलगाव को दूर करना।

– प्रेम का स्त्रोत क्या है?

समाधी मे सत्य के चिंतन का परम सुख और मन को तुम्हारे ह्रदय मे घुलाना।

– प्रेम की आग को कैसे प्रज्वलित करते है?

सभी चिजो की ब्राह्मण–आत्मा मे, मनुष्य को एकता के सर्वोच्च वेदांत सत्य को समझ के।

१४–२०/१२/१९८०

३००. अन्न विचार का आधार है, वायुमंडल वायु का आधार है।

पानी जीवन का आधार है, इच्छा क्लेश का सहारा है।

गरमी वाणी का आधार है, आवश्यक सांस और जीवन–अस्तित्व सहारा है।

२९/१२/१९८०

२/१/१९८१

सुख

३०१. सुख क्या है?

– यह निरंतर विश्राम है, अपनी क्षमताओ मे दृढ विश्वास है, चित्त के आवेग का त्याग है, जो मनुष्य के अपने असली ''स्व'' को समझने मे, अपने असली अमर स्वरुप,असीम क्षमताओ को समझने मे आधारीत है।

– सुख का सार क्या है?

शाश्वतता के महासागर मे निरंतर घुलना, अहंकार की श्रुंखलाओ को नष्ट करना, बनावटी व्यक्तित्व का त्याग करना, द्वैत छोड देना, जीवन–अस्तित्व के महासागर से अलगाव को मिटा देना।

– सुख का स्वरुप क्या है?

– समाधान, अहंकारी इच्छाओ का त्याग करना, जीवन–अस्तित्व के प्यास को मिटा देना।

– सुख को कैसे प्राप्त करते है?

– सभी चिजो की ब्राह्मण–आत्मा मे, मनुष्य मे एकता को समझ के, जिसे चार महन मार्ग के संयोग से, चार तेजस्वी योग के समन्वय से हासिल किया जाता है: निरंतर ज्ञान प्राप्त करना, अध्ययन और विचार– ज्ञान–योग, संवेदनाओ का दमन, क्रमिक रुप से मन को काबुमे रखना, मन को दृढ एकाग्रताके निरंतर व्यायाम से आपके इच्छा–शक्ति के सामने झुकाना– राज–योग; नि:स्वार्थतता, दुनिया के कल्याण के लिए नि:स्वार्थ कार्य– कर्म–योग, सभी चिजो के प्रति संपूर्ण, सर्वव्यापी प्रेम भक्ति योग।

४/५/१९८१

अन्न

३०२. जीवन इस जीवन–अस्तित्व का सहारा है, विचार जीवन का आधार, आवश्यक सांस है, अन्न विचार का आधार है।

– अन्न का सार क्या है?

– शक्ति, आवश्यक उर्जा और संवेदनाए।

– अन्न का आधार क्या है?

– पृथ्वी और यह दुनिया।

– अन्न का सहारा क्या है?

– पानी, परम सुख और वाणी।

– अन्न की धरती क्या है।

– समय और वर्ष।

– अन्न का स्त्रोत क्या है?

– सूर्य हमारा मूर्त ''स्व'', नाम ''स्व'' पुरुष और आत्मसंज्ञान मे व्यस्त आत्मा।

१२-१३/१/१९८१

३०३. आप कम इच्छा करके बहुत कुछ हासिल कर सकते है, अहंकारी इच्छाओ का त्याग करके, वैयक्तिक लाभ की इच्छा छोड के धन की, कीर्ती की, शक्ति की और परम सुख की प्यास को मिटा के आप शाश्वत विश्राम और चित्त के आवेग का त्याग प्राप्त कर सकते हो। चित्त के आवेग का त्याग करके आप बनावटी व्यक्तित्व को छोड सकते हो, द्वैत को मिटा सकते हो, संपूर्ण एकता से अलगाव मिटा सकते हो, जीवन-अस्तित्व से अलगाव को मिटा सकते हो। शक्ति बंधन को तोड के, विचारो की स्थिरता से और मन की शुध्दता से प्राप्त होती है। सत्य का ज्ञान शुध्द विचारो की मदद से प्राप्त होता है,ज्ञान की मदद से बुध्दि की शुध्द करनेवाली ज्योती प्रज्वलित होती है और उसे सहारा मिलता है। मृत्यु की शक्ति की हार होती है, क्लेश से मुक्ति प्राप्त होती है, अज्ञान से, अहंकार की श्रृंखलाओ से मुक्ति प्राप्त होती है, माया की जादु से संपूर्ण मुक्ति प्राप्त होती है।

१४/१/१९८१

३०४. पिता और माता उनके भावी पीढी मे एकत्रित होते है, मन और वाणी आवश्यक सांस मे, जीवन मे एकत्रित होते है। संवेदनाए और वस्तु मन मे एकत्रित होती है। इच्छा और इच्छा-शक्ति कृति

मे एकत्रित होते है। बल और बुध्दि परम सुख मे एकत्रित होते है, सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन मे, उसकी अध्यात्मिक श्रेष्ठता मे, उसके असली ''स्व'' मे एकत्रित होते है।

वह ब्राह्मण है, आत्मा है, वह प्रकट दुनिया का घुलना है, जीवन के निरंतर प्रवाह को नष्ट करना है, अज्ञान से, मुक्ति है, क्लेश से मुक्ति है, इच्छा की श्रृंखलाओ से मुक्ति है, मृत्यु की शक्ति से संपूर्ण मुक्ति है।

१७-१९/१/१९८१

३०५. सबसे बडा वृक्ष छोटे बीज से उगता है, सबसे लंबा सफर एक पग से शुरु होता है, घर बांधते समय आप छत से नही नीव से आरंभ करते हो। यह बात बुध्दि के महान इमारत के लिए भी सही है- अपने योग के सर्वोच्च स्तर के व्यायाम से आरंभ नही करना चाहिए, बल्की अपने हृदय मे योग के दस महान प्रतिज्ञाओ के पुष्टीकरण से आरंभ करना चाहिए : किसीको हानी नही पहुंचाना, ईमानदारी, दुसरो की चिजे हडप नही करना, संयम, उपहार को स्विकार नही करना, आंतरिक और बाह्य शुध्दता, समाधान, आत्म-दमन, अध्ययन, ज्ञानीयो के वचनो को दोहराना और सत्य के प्रति निष्ठा।

२२/१/१९८१

३०६. दु:ख सुख मे छिपा होता है, विपत्ती आनंद मे छिपी होती है, क्लेश आनंद मे छिपा होता है। बनावटी व्यक्तित्व का त्याग चित्त के आवेग के त्याग मे छिपा होता है, इच्छाओ का त्याग बंधन

से मुक्ति मे छिपा होता है। निर्दय कर्म के श्रृंखाओ से संपूर्ण मुक्ति आत्मत्याग मे छिपी होती है, जन्म और मृत्यु के चक्र से संपूर्ण मुक्ति मे छिपी होती है।

२१-२२/१/१९८१

३०७. एक छोटा शुध्द पानी का झरना अनेक लोगो की प्यास बुझा सकता है, लेकिन वह लोगो के पुरी भीड का समाधान नही कर सकता और उसे हम पानी पिनेकी जगह नही समझ सकते है। अगर ऐसा हुआ तो यह पानी गंदा और अशुध्द हो जाएगा।

यही बात जो मनुष्य जो मनुष्य ज्ञान के मार्ग पर उंचाईया हासिल करता है उसके लिए भी सही है और उसके लिए इस मार्ग की खोज करनेवाले लोगो का इसके बारेमे जानकारी देना आवश्यक है। ऐसे मनुष्य ने सामान्य जीवन जिना चाहिए, हर व्यक्ति से इसके बारे मे बात नही करनी चाहिए और अपने जीवन से अव्यवस्था को हटाना चाहिए। उसने सुनने का प्रयास करना चाहिए और हमेशा विचार करना चाहिए, लेकिन उसने बडबडाना नही चाहिए और जो भी मनुष्य पहले मिले उसे सिखाना नही चाहिए। उसने खुद को हठी बनने से रोकना चाहिए और किर्ती और सस्ती लोकप्रियता की महत्वाकांक्षा नही करनी चाहिए। उसने अपनी संवेदनाओ का दमन करना चाहिए और अपने मन को वश मे रखना चाहिए। उसने ज्ञानेद्रियो के सुख की खोज नही करनी चाहिए और शक्ति, कीर्ती, बल, धन की प्यास का, जीवन-अस्तित्व की प्यास का पोषण नही करना चाहिए।

२७-२९/१/१९८१

३०८. दुनिया और जीवन-अस्तित्व शाश्वतता के रेलगाडी के मुख्य डिब्बे है। यह रेलगाडी समय के पटरी पर विचार की शक्ति से चलती है और कभी नही रुकती। जीवन आवश्यक सांस, आवश्यक उर्जा उसके चालक है। वाणी, शब्द, ध्वनी उसका इंधन है। हमारा मूर्त ''स्व'', पुरुष, आत्मसंज्ञान मे व्यस्त आत्मा उसके यात्री और मालिक है। उसका अंतिम गंतव्य स्थान अहंकारी इच्छाओसे मुक्ति, अंधापन से मुक्ति, जीवन-अस्तित्व के प्यास से मुक्ति, मृत्यु की शक्ति से संपूर्ण मुक्ति है।

६/२/१९८१

३०९. गरमी और गिलापन अन्न मे एकत्रित होते है बुध्दि और परम सुख शक्ति मे एकत्रित होते है। इच्छा और इच्छा-शक्ति कृति मे एकत्रित होते है, मन और वाणी आवश्यक सांस मे, जीवन मे एकत्रित होते है।

आकाश और पृथ्वी वायुमंडल मे एकत्रित होते है, दुनियाए वायु से एकत्रित होती है और सभी चिजे विचारो से एकत्रित होती है।

वह ब्राह्मण है, आत्मा है, वह दुनियाओ को छेदनेवाली शक्ति है।

१७-१८/२/१९८१

बुध्दि

३१०. बुध्दि क्या है?

– यह अज्ञान को जलानेवाली शक्ति है, उसका मतलब है सभी चिजो की ब्राह्मण–आत्मा मे, मनुष्य मे एकता के जीवन–अस्तित्व के सर्वोच्च सत्य को समझना।

– बुध्दि का लक्षण क्या है?

कम से कम शब्दो मे जादा से जादा ज्ञान।

– बुद्धि कैसे प्राप्त करते है?

– अहंकारी इच्छाओ का त्याग करके, चित्त के आवेग का त्याग करके, संवेदनाओ का दमन करके, मन को वशमे रखके, हररोज दृढ एकाग्रता के व्यायम करके, सभी चिजो के प्रति सर्वव्यापी प्रेम व्यक्त करके, निरंतर ज्ञान प्राप्त करके और विचार करके हम उसे प्राप्त कर सकते है।

२०/२/१९८१

३११. ज्ञान इस जीवन–अस्तित्व का शहद है।

वाणी उसका छत्ता है, विचार उसकी मधुमक्खीया है, मन उसका मधुकोष है, संवेदनाए उसका मोम है, बाह्य वस्तुए उसके फुल है, सभी चिजो की ब्राह्मण–आत्मा मे, मनुष्य मे एकता का सत्य उसका अमृत है।

नि:स्वार्थतता इस कार्य का शहद है। ज्ञान का विवेक उसका छत्ता है, कृतिया और कर्म उसकी मधुमक्खीया है, अहंकारी इच्छाओ का त्याग, अहंकार की श्रृंखलाओ को तोडना,

बनावटी व्यक्तित्व का त्याग करना उसका मधुकोष है, संवेदनाओ का दमन करना, मन को वशमे रखना और चित्त के आवेग के त्याग उसका मोम है। फुल गतिविधियो की वस्तुए है, सभी चिजो के प्रति सर्वव्यापी प्रेम उसका अमृत है।

२४/२/१९८१

जानेवाले मनुष्य के लिए

३१२. विचार करने के बिना आरंभ नही करना, एक बार आरंभ किया तो रुकना नही। आवश्यकता नही हो तो बोलना नही, जो आपने बोल दिया उसके बारे मे पछतावा नही करना।

अज्ञानी मनुष्य की बाते नही सुनना, ज्ञानी लोगो को कभी नही सिखाना।

वर्तमान की चिंता नही करना, भविष्य से डरना नही। चापलूसी को बढावा नही देना, व्यक्तिगत लाभ के सपने नही देखना।

धन की महत्वाकांक्षा नही रखना, कीर्ती की खोज नही करना। किसी अन्यायी मनुष्य का न्याय नही करना, समाधानी लोगो की ईर्ष्या नही करना।

खुद के उपर दया नही करना, अपने पडोसीयो के बारेमे सोचना।

दु:खी लोगो के प्रति कृपालु होना, सुखी लोगो के लिए आनंदी होना।

हिचकिचानेवाले लोगो को सहारा देना और दुर्बल लोगोकी रक्षा करना।

अपने विचार शुध्द करना और प्रेम की खोज करना। अपनी संवेदनाओ का दमन करना और आत्मसंज्ञान प्राप्त करना। २७/३/१९८१

३१३. आत्मत्याग का विवेक है: कभी भी किसी चिजपर अधिकार नही रखना और किसी चिज की इच्छा नही रखना । समाधान का आनंद है : किसी चिजको धारण करना लेकिन उसकी इच्छा नही करना।

ईर्ष्या और लोभ है: किसी चिज को कभी धारण नही करना लेकिन इच्छा करना

लालच और स्वार्थ है : किसी चिजको धारण करना और उसकी इच्छा करना।

४/४/१९८२

ज्ञान

३१४. ज्ञान का हम लगभग अंतर्ज्ञान और तर्कयुक्त ज्ञान मे वर्गीकरण कर सकते है। अंतर्ज्ञान प्रकटीकरण है और सत्य के समझ की शुध्दता उसका आधार है। वह आपके मन को व्याप्त करने के लिए ध्यान मे रखने योग्य है, लेकिन उसी वक्त वह अस्पष्ट है और मूर्त स्वरुप देने के लिए पर्याप्त नही है। मन इसके विपरीत है, जो स्थान और समय से काफी हद तक जुडा होता है, नाम और आकारो से जुडा होता है। इसलिए ज्ञान सबसे जादा मूल्यवान और उपजाऊ है, लेकिन अंतर्ज्ञान, अंतर्ज्ञान की प्रतिमा मन के प्रकाश से उजागर होते है, अंतर्ज्ञान, चिंतन मन और एकाग्र विचार का सहारा है।

२२/४/१९८१

३१५. वाणी मनुष्य का सार है, आग पृथ्वी का सार है।

विचार मन का सार है और वायु वायुमंडल का सार है।

हमारा मूर्त ''स्व'', पुरुष ज्ञान का सार है, सूर्य आकाश का सार है।

वह ब्राह्मण है, आत्मा है और समय का जलनेवाला स्त्रोत है।

२७/४/१९८१

३१६. अनंत, अचल और शाश्वत महान एकता मे छिपे होते है। संक्रमक, मर्त्य और बदलनेवाला द्वैत मे छिपा होता है। विश्राम, विद्रोह का त्याग और मित्रता अहंकारी इच्छाओ के त्याग मे छिपे होते है। क्लेश, चिंता और व्याकुलता इच्छाओ मे छिपे होते है।

उर्जा, अपनी क्षमताओ पर विश्वास और निर्भयता चित्त के आवेग के त्याग मे छिपे होते है, दुर्बलता, बुराई और अंधापन चित्त के आवेग मे छिपे होते है।

अमर, असली और अविनाशी ज्ञान मे छिपे होते है। परिमित, अनिश्चित और बदलनेवाला अज्ञान मे छिपे होते है।

बल, बुध्दि और अनंत ज्ञान एकाग्र विचार मे छिपे होते है। दु:ख, विचारो की उलझन और संदेह खोयी हुई एकता मे छिपे होते है।

सुख आनंद, आत्म-त्याग और उदारता नि:स्वार्थतता मे छिपे होते है। अज्ञान गलतिया और अलगाव स्वार्थ मे छिपे होते है।

शुध्दता, श्रध्दा और एकता प्रेम मे छिपे होते है, क्रोध, अविश्वास, संबंधो का अभाव और भय द्वेष मे छिपे होते है।

१८-२०/५/१९८१

महान संक्रमण

३१७. मृत्यु महान संक्रमण है, मर्त्य शरीर का क्षय है, शरीर के रुप मे आवरण का क्षय है, एक शरीर का दुसरे शरीर मे बदल है, अस्थायी अथवा शाश्वत संक्रमक आवरण से मुक्ति है।

देवो की दुनिया, तेजस्वी जीवो की दुनिया हमारे शरीर का शक्ति से, मृत्यु की शक्ति से अस्थायी मुक्ति है, जिसे हम अच्छे कर्मा से प्राप्त कर सकते है, उसको हासिल करने के अन्य मार्ग है : किसी को हानी नही पहुचाना, ईमानदारी, शुध्दता, सच्चाई और उदारता। जब मनुष्य के अच्छे कर्मो के फल निशक्त हो जाते है, वह फिर से मर्त्य दुनिया मे नये जीवन मे फिरसे वापस आ जाता है, उसका इस दुनिया मे आगमन उसके मनुष्य के रुप मे कर्मोपर निर्भर करता है, वह फिर से इस दुनिया के शुध्द करनेवाले क्लेश की तरफ लौट आता है, बुढापा और मृत्यु की तरफ वापस आता है।

महान एकता मे, परम सुख के महासागर मे, अस्तित्वहीन अवस्था के महासागर मे, सर्वोच्च जीवन–अस्तित्व के महासागर मे घुलना संपूर्ण मुक्ति है, जिसे हम चार योगो के संयोग के सर्वोच्च विवेक से प्राप्त कर सकते है : ज्ञान–योग–निरंतर ज्ञान प्राप्त करना, एकाग्रता के दृढ निश्चय से व्यायाम करना, मन को नियंत्रण मे रखना, राजयोग– निरंतर एकाग्रता के व्यायाम करना, मन को वश मे रखना, भक्तियोग– सभी चिजो की ब्राह्मण–आत्मा मे, मनुष्य मे एकता के शाश्वत वेदांत सत्य को समझनेके आधार पर नि:स्वार्थ कार्य, बनावट व्यक्तित्व का त्याग, अहंकार की श्रृंखलाओ को तोड देना।

योगी क्लेश से अस्थायी मुक्ति प्राप्त कर सकते है, ईश्वरीय अमरत्व प्राप्त कर सकते है, ऐसे योगी पहले ही काफी हद तक, लेकिन संपूर्ण नही, परिपूर्णता प्राप्त कर चुके होते है, उन्होने अभी तक संपूर्ण आत्मत्याग हासिल नही किया है।

जो योगी चित्त के आवेग के त्याग के तेजस्वी मार्गपर, दृढ स्थिरता और संपूर्ण ज्ञान प्राप्त कर चुके होते है, वो जन्म और मृत्यु के निरंतर घुमनेवाले चक्र से संपूर्ण मुक्ति प्राप्त कर सकते है। जो योगी इससे पहले ही अज्ञान पर विजय प्राप्त कर चुके होते है, माया के भ्रम को, नाम और आकारो के प्रति बंधन को तोड चुके होते है, जो योगी महान एकता की कल्पना को, खुद को सभी चिजो मे घुलाकर और सभी चिजो को खुद के अंदर घुलाकर साकार कर चुके होते है वह भी इस प्रकार की संपूर्ण मुक्ति प्राप्त करते है।

४-६/६/१९८१

३१८. सर्वोच्च समाधान विचारो की शुध्दता मे, शब्दो और कृतीयो की शुध्दता मे, शरीर के दमन मे, गतिविधियो को शांत करने मे, संयम मे, आत्म-दमन मे, संवेदनाओ को काबु मे रखने मे, चित्त के आवेग और कामवासना का त्याग करने मे छिपा होता है।

सर्वोच्च शुध्द्ता क्लेश मे, वैराग्य मे और आत्म-त्याग मे छिपी होती है।

सर्वोच्च परम सुख मनुष्य ने खुदका अमर स्वरुप समझने मे, सभी चिजो की ब्राह्मण-आत्मा मे, मनुष्य मे एकता के जीवन-अस्तित्व के सर्वोच्च सत्य को समझने मे छिपा होता है। वह, अहंकार की श्रृंखलाओ से मुक्ति मे, स्वार्थी लक्ष्यो को छोडने मे, बनावटी व्यक्तित्व का

त्याग क रने मे, क्लेश से मुक्ति मे, कठोर कर्म की श्रुंखलाओ से मुक्ति मे, एक दुसरे मे बदलनेवाले जन्म और मृत्यु के निरंतर घुमनेवाले चक्र से संपूर्ण मुक्ति मे छिपा होता है।

११-१२/६/१९८१

भलाई और बुराई

३१९. सभी चिजों की एकता का सत्य जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च सत्य है। इसलिए सबकुछ जो चिजो के बीच संबंध तोड देता है और उन्हे अलग करता है, द्वैत और अलगाव की ओर ले जाता है वह बुराई है। सबकुछ जो एकता की ओर ले जाता है वह असली परम सुख है।

- बुराई का स्वरुप क्या है?

- अहंकारी इच्छाओ का त्याग, नि:स्वार्थतता, बनावटी व्यक्तित्व का त्याग ये भलाई का स्वरुप है।

- बुराई का आधार क्या है?

- मनुष्य का अपने असली अमर स्वरुप का अज्ञान, अपने अपरिमित बल का अज्ञान, अपनी असीम श्रेष्ठता का अज्ञान यह बुराई का आधार है। जीवन-अस्तित्व के एक ही महासागर से काल्पनिक अलगाव यह बुराई का आधार है।

- भलाई का आधार क्या है?

उसका आधार है: मनुष्य ने अपने असली ''स्व'' को समझना, जीवन-अस्तित्व के महासागर मे एकता को महसूस करना, खुद को दुसरो मे और दुसरो को खुद मे घुला देना।

– अपने अंदर की बुराई किस तरह हटानी चाहिए?

– आत्म–दमन से, वैराग्य से, सबकुछ धिमी गति से करके, संयम से।

– अपने अंदर सदाचार और गुण कैसे पुष्ट कर सकते है?

– पाच महान प्रतिज्ञाओ मे निरंतर परिपूर्णता हासिल करके : दुसरो को हानी नही पहुचाना, ईमानदारी, दुसरो की चिजे हडप नही करना, चित्त के आवेग का त्याग करना, एकाग्र विचार, नि:स्वार्थ कार्य, सर्वव्यापी प्रेम।

३०–६/१/७/१९८१

निरपेक्ष और सापेक्ष

३२०. निरपेक्ष को हम सापेक्ष के माध्यम से समझ सकते है। शाश्वतता को हम परिमित के माध्यम से समझ सकते है, आंतरिक चिजो को बाह्य चिजो के माध्यम से समझ सकते है, अदृष्य को हम दृष्टिगोचर के माध्यम से समझ सकते है।

हम बोधगम्य न होनेवाली चिजो के बारे मे, अविनाशी चिजो के बारे मे, अव्यक्त के बारेमे, समझ के बाहर होनेवाली चिजो के बारे मे, विचार नही कर सकते। ऐसी चिजे हमारे पास कैसे आती है इसके बारेमे हम विचार नही कर सकते। शाश्वत, तर्कयुक्त परम सुख को शब्दो मे व्यक्त करना संभव नही है। हम सिर्फ उसके अपरिमित प्रकटीकरण के बारेमे बात कर सकते है।

माया के आकार अनंत प्रकार के होते है, लेकिन क्या उसके स्त्रोत के बारे मे हमबात कर सकते है? शक्ति निरंतर दुर्बलता के साथ खेलती है, बुध्दि निरंतर अज्ञान के साथ खेलती है,

निर्माण नही हुई चिजे निर्माण हुई चिजो के साथ निरंतर खेलती है? लेकिन क्या हम इस खेल की मुख्य कल्पना को समझा सकते है? इस खेल का अर्थ यह खेल ही है, यह खेल जादा परम सुख का परिणाम है। एकता अलगाव के साथ खेलती है, काल्पनिक व्यक्तित्व से, क्लेश से और सुख से खेलती है, जीवन और मृत्यु के साथ खेलती है, कभी क्षतिपुरण न होनेवाले हानि से, हानी के वेदना से, बंधन से और मुक्ति से खेलती है।

शाश्वत और परिमित के बिच सीमा कहा है, सच और झुठ के बिच, भ्रम और वास्तविकता के बिच, जीवन-अस्तित्व और अस्तित्वहीन अवस्था के बिच सीमा कहां है? वास्तव मे इस सीमा का अस्तित्व है क्या?

परिमित के अनिश्चित मृगमरीचिका का अंत कहा होता है और अनंतता का आरंभ कहा होता है? सबकुछ नष्ट करनेवाले समय की शक्ति का अंत कहां होता है और अनंत अपरिमित शाश्वतता का आरंभ कहा होता है? निर्दय-निष्पक्ष मृत्यु की शक्ति का अंत कहा होता है और अमरत्व का आरंभ कहा होता है?

समय शाश्वतता की सिर्फ छाया है। क्या हम छाया और मूल वस्तु को उसे बनानेवाले घटक से अलग कर सकते है? शाश्वतता परिमित मे व्यक्त होती है, परिमित शाश्वतता मे घुल जाता है। मृत्यु जीवन मे छिपा होता है और जीवन मृत्यु पे हक जमाता है। कारण का परिणाम मे परिवर्तन हो जाता है, परिणाम कारण बन जाता है। इच्छा इच्छा-शक्ति मे व्यक्त होती है, इच्छा शक्ति कृति बन जाती है। वर्तमान अतीत से निकलता है, वर्तमान भविष्य का आधार है। इस

प्रकार अस्तित्व मे न होनेवाला जन्म और मृत्यु का चक्र निरंतर घुमता रहता है। इस प्रकार विकास का तीव्र प्रवाह निरंतर शाश्वतता मे बहता है, कारण और परिणाम का निरंतर बहनेवाला प्रवाह, जिसका स्त्रोत शाश्वतता का किनारा न होनेवाला महासागर है, क्लेश से मुक्ति के परम सुख के शांत महासागर मे बहता है, मृत्यु की शक्ति से संपूर्ण मुक्ति के महासागर मे बहता है।

१५-

१७/९/१९८१

सर्वोच्च ज्ञान

३२१. अंतर्ज्ञान को हम बुद्धि और सर्वोच्च ज्ञान कह सकते है अंतर्ज्ञान से प्राप्त हुआ ज्ञान, प्रकटीकरण मन के प्रकाश से उजागर होता है। वह एकाग्र विचार है, एकाग्रता को अंतर्ज्ञान से सहारा प्राप्त होता है, यह मन की मदद से मन के उपर उठने समान है।

दुसरे शब्दो मे कहा जाए तो बुध्दि चिंतन है, जो विचार-प्रक्रिया से उजागर होती है। वह चिंतन से उजागर होनेवाला विचार है। वह चिंतन के माध्यम से अध्ययन मे बहनेवाली एकाग्रता है, विचारो की वस्तु विलय होने मे बहनेवाली एकाग्रता है, कर्ता का वस्तु मे विलय मे बहनेवाली एकाग्रता है, कर्ता का वस्तु के विलय मे बहनेवाली एकाग्रता हौ। यह संज्ञान की मदद से वस्तु को समझना है, उसमे डुब जाने के माध्यम से वस्तु को समझना है, उसके अंदर पुरी तरह घुल जाने से वस्तु को समझना है।

१५-१६/१२/१९८१

समय

३२२. समय मृत्यु का स्वरुप है, शाश्वतता की छाया है, शाश्वत सृजनशील नाश है।

– समय का सार क्या है?

– द्वैत, जीवन–अस्तित्व के महासागर से अलगाव और आत्म–सन्मान समय का सार है।

– अलगाव का सार क्या है?

– हमारा मूर्त ''स्व'', नाम ''स्व'', पुरुष, आत्मसंज्ञान मे व्यस्त आत्मा।

– समय का स्त्रोत क्या है?

– समझ के बाहर होनेवाला, अविनाशी, अव्यक्त, बोधगम्य न होनेवाला, प्रकाश का महासागर, जीवन–अस्तित्व का महासागर, सर्वोच्च जीवन–अस्तित्व का महासागर, जिसका नाम''ओम'' है, जिसका सार है सत–चित–आनंद, शाश्वत, विवेकी परम सुख, जिसकी प्रतिमा प्रकाश है।

समय का आधार क्या है?

– जीवन, आवश्यक उर्जा और आवश्यक सांस।

– समय की प्रतिमा क्या है?

– साल।

– समय के तीन मुख्य भाग क्या है?

– अतीत,वर्तमान और भविष्य।

– समय के संबंध क्या है?

वर्तमान अतीत से निकलता है और वर्तमान भविष्य का आधार है।

– समय के संबंधो का आधार क्या है?

कठोर–निष्पक्ष कर्म का नियम उसका आधार है, अनिवार्य बदले का दृढ नियम, महान संक्रमण का शाश्वत नियम जिसका आधार हमारी इच्छा है, उसका आधार है।

– समय पर क्या निर्भर करता है?

– अहंकारी इच्छाओ की सभी वस्तुए, सबकुछ जो द्वैत का सहारा है, शाश्वतता के एक ही महासागर से अलगाव का सहारा है, सबकुछ जो हमारा बनावटी व्यक्तित्व बनाता है, सबकुछ जिसे हम अज्ञान का, अंधापन का, गलतीयो का और आत्म–सन्मान का अन्न कहते है।

– समय पर क्या निर्भर नही करता है?

– ज्ञान सभी चिजो की ब्राह्मण–आत्मा मे, मनुष्य मे एकता के जीवन–अस्तित्व के सर्वोच्च सत्य को समझनेका विवेक, मनुष्य ने अपने अमर असली अमर स्वरुप को समझनेका विवेक, उसकी असीम श्रेष्ठता, उसकी अपरिमित शक्ति उसका अनंत ज्ञान और अनंत शक्ति।

१९–२१/१२/१९८१

जीवन-अस्तित्व

३२३. जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च सत्य क्या है?

- सभी चिजो की ब्राह्मण-आत्मा मे, मनुष्य मे एकता का वेदांत का शाश्वत सत्य। मेरा अस्तित्व सभी चिजो मे है और सभी चिजो का अस्तित्व मेरे अंदर है- यह जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च सत्य है।

- जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च नियम क्या है?

- निर्दय-निष्पक्ष कर्म का नियम, अनिवार्य बदले का नियम, महान संक्रमण का नियम।

जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च अर्थ क्या है?

- आत्मसंज्ञान और आत्म-चिंतन, समाधी मे मनुष्य ने अपने असली ''स्व'' को समझना, अपने असली अमर स्वरुप को समझना, अपनी अनंत ज्ञान को, असीम शक्ति को, अपनी अपरिमित श्रेष्ठता को समझना।

- जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य क्या है? जीवन का अर्थ क्या है?

- वह क्लेश से मुक्ति है, अहंकार की श्रुंखलाओ से मुक्ति, अहंकारी इच्छाओसे मुक्ति, बनावटी व्यक्तित्व का त्याग, अज्ञान के जाल से संपूर्ण मुक्ति, कर्म की बेडियो से संपूर्ण मुक्ति, मन की मदद से मन के उपर उठना, मृत्यु की शक्ति से मुक्ति प्राप्त करना, परम सुख के महासागर मे घुलना प्रकाश के महासगर मे, अस्तित्वहीन अवस्था के महासागर मे, सर्वोच्च जीवन-अस्तित्व के महासागर मे घुलना। २६-१८/२/१९८२

चार स्तर का मार्ग

३२४. चार स्तर का योग का मार्ग क्या है?

– चार स्तर का योग का मार्ग है शक्ति–ज्ञान–प्रेम–नि:स्वार्थतता, वह चार तेजस्वी योग का अनुरुप संयोग है : राज योग, ज्ञान–योग, भक्ति–योग और कर्म–योग

राज योग यह आठ स्तर का पतंजली योग है :

१. यम– मनुष्य का सामाजिक आचरण, पाच महान प्रतिज्ञाए : किसी को हानि नही पहुंचाना, ईमानदारी, दुसरो की चिजे हडप नही करना, संयम, उपहार स्विकार नही करना।

२. नियम– योगी का व्यक्तिगत आचरण, पांच व्यक्तिगत प्रतिज्ञाए : बाह्य और आंतरिक शुध्दता, समाधान, आत्म–दमन, अध्ययन और सत्य के प्रति निष्ठा ।

३. आसन– शारीरीक अवस्थाए और व्यायाम, अपने खुद के शरीर के उपर नियंत्रण।

४. प्राणायाम– सांस के व्यायाम, सांस के उपर नियंत्रण।

५. प्रत्यहार– आपके संवेदनाओ को बाह्य वस्तुओ से हटाना, संवेदनाओ का दमन करना, मन को वश मे रखना।

६. धारणा– मन की एकाग्रता।

७. ध्यान– एकाग्र विचार।

८. समाधी- चिंतन विचारो से उत्पन्न वस्तु मे विलय। ध्यान-योग ज्ञान का प्रकाश है, सर्वोच्च ज्ञान है, योग का मतलब है सभी चिजो की ब्राह्मण-आत्मा मे, मनुष्य मे एकता के जीवन-अस्तित्व के सर्वोच्च सत्य को समझना।

भक्ति-योग सर्वव्यापी प्रेम है जो सभी चिजो की एकता के सर्वोच्च वेदांत सत्य को समझने से उत्पन्न होता है।

कर्म-योग सर्वव्यापी प्रेम है जो सभी चिजो की एकता के सर्वोच्च वेदांत सत्य को समझने से उत्पन्न होता है।

कर्म-योग अहंकारी इच्छओका त्याग करके, व्यक्तिगत लाभको खोजे बिना, वैयक्तिक परिणामो की प्रतिक्षा किए बिना किया हुआ नि:स्वार्थ कार्य है। यह बनावटी व्यक्तित्व का त्याग है, जिसका आधार सर्वोच्च ज्ञान है।

चार स्तर का योग का मार्ग है शक्ति, जो ज्ञान से उजागर होती है, प्रेम से उसे प्रेरणा मिलती है, नि:स्वार्थतता से वह शुध्द होती है।

वह ज्ञान है जो शक्ति से दृढ हो जाता है, प्रेम से उसे प्रेरणा मिलती है और नि:स्वार्थतता मे वह शुध्द हो जाता है।

वह प्रेम है, जो शक्ति से दृढ हो जाता है, ज्ञान से उजागर हो जाता है और नि:स्वार्थतता से शुध्द हो जाता है।

वह नि:स्वार्थतता है, जो शक्ति से दृढ हो जाती है, ज्ञान से उजागर हो जाती है और प्रेम से उसे प्रेरणा मिलती है।

११-१२/२/१९८३

सत्य

३२५. सत्य क्या है और सर्वोच्च ज्ञान क्या है?

- सत्य आरंभ और अंत है, वह स्त्रोत और मार्ग है, वह मार्ग और लक्ष्य है, वह सर्वोच्च पाण्डित्य का शाश्वत मौन है और वह जीवन-अस्तित्व की महान एकता है।

- सत्य और सर्वोच्च ज्ञान को हम समझा नही सकते, लेकिन हर ध्वनि मे व्याप्त होते है, वे बोधगम्य नही है, लेकिन हर विचार को प्रेरणा देते है, वे समझ के बाहर है लेकिन अदृष्य स्वरुप मे उनका हर चिजमे अस्तित्व है, वह मन का कभी न प्राप्त होनेवाला उद्देश्य है और यह उद्देश्य है: मन की मदद से मन के उपर उठना।

-सत्य प्रबुध्दता की सर्वोच्च एकता है, जीवन-अस्तित्व का आधार है, जीवन-अस्तित्व का स्त्रोत है, खुद जीवन-अस्तित्व है, वह शाश्वत विवेकी परम सुख है।

- सत्य अनंत स्थिर शाश्वतता है, वह मौन का किनारा न होनेवाला महासागर है, अस्तित्वहीन अवस्था का महासागर है, सर्वोच्च जीवन-अस्तित्व का महासागर है।

१७/३/१९८३

ध्यान

३२६. ध्यान क्या है और चिंतन क्या है?

– चिंतन और ध्यान को हम बंद किताब की शांती कह सकते है, वे पर्वत से निचे गिरनेवाले बरफ के प्रवाह की स्थिरता की तरह है, महासागर की धूसर शांति की तरह है, जीवन का स्त्रोत है, वह प्रबुध्द्ता की असीमता है।

– चिंतन और ध्यान महान शब्दो के निर्माण की तरह है, एकाग्रता की असीम शक्ति की तरह है, यह सबकुछ उजागर करनेवाली दीप्ति है, महान एकता के सर्वोच्च सत्य को समझने का अव्यक्त परम सुख है, वह सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन की तरह है।

चिंतन और ध्यान चमकिली दीप्ति की तरह है, जो बिजली का प्रकटीकरण है, उनका मतलब है मन की मदद से मन के उपर उठना, मन का ह्रदय मे लुप्त होना, उनका मतलब है जीवन–अस्तित्व के महासागर मे विलय, जीवन–अस्तित्व को शाश्वतता के महासागर मे घुलाना, अस्तितिवहीन अवस्था के महासागर मे घुलाना, सर्वोच्च जीवन–अस्तित्व के महासागर मे घुलाना।

१९–२१/३/१९८३

दर्शन का मौलिक प्रश्न

३२७. निरपेक्ष कैसे, किसके लिए और क्यो सापेक्ष बन जाता है, अनंत और शाश्वत, संक्रमक, परिमिर और स्थायी अस्थायी बन जाता है? यह दर्शन का मौलिक प्रश्न है।

१-२/१२-१९८३

विकास और आत्म-विश्वास

३२८. जीवन अस्तित्व एक तरफ से विकास की और दुसरी तरफ आत्मविश्वास की एक साथ चलनेवाली शाश्वत प्रक्रिया है, जिसका आधार आत्म सन्मान, अलगाव, द्वैत और इच्छा है ।

विकास प्रकृती की दुनिया का, अज्ञान का, मायाका विस्तार है, हमारे मूर्त ''स्व'' का मन और बुध्दि की मदद से विकास है, वह पाच महान मूलतत्वोंको महसूस करना है : ध्वनि - हवा - आग - पानी - धरती । धरती और शरीर अज्ञान के चरम स्तर है। कुंडलीनी प्रणाली मे धरती सबसे निचले स्तर के मूलाधार कमल के समान है जो कुंडलिनी का निवास है, सोनेवाले ईश्वरीय शक्ति का निवास है ।

आत्म-विकास का मतलब है प्रकृति के दुनिया को, महान भ्रम को, अविद्या को कम करना, उसके बाद कुंडलिनी जागृत होती है और उसका उपर सुषमा की तरफ याने अपने स्त्रोत की ओर, निरपेक्ष की ओर जानेवाला मर्ग खुला हो जाता है।

अगर दुसरे शब्दो मे कहा जाए तो एक तरफ जीवन अस्तित्व का मतलब है विकास की प्रक्रिया मे बारिक चिजोंका खुरदुरा बनना और दुसरी तरफ खरुदरी चिज पतली बनना, यह सब आत्म-विकास की प्रक्रिया में होता है खुरदुरी चिजे बारीक चिजों के अधीन होती है, लेकिन इसके विपरीत अवस्था वही हो सकती है।

७-८/१२-१९८३

शाश्वतता

३२९. शाश्वतता और अमरत्व क्या है? -

शाश्वतता और अमरत्व को सापेक्ष के अंदर निरपेक्ष, अनश्वर के अंदर संक्रमण बदलनेवाली चिजो के अंदर अचल, अस्तित्व के अंदर असलीयत ऐसा समझ सकते है । वह परिमित की अनंतता है, एकता की अनेकता है, अवास्तव चिजो की वास्तविकता है, अस्तित्वहीन अवस्था का जीवन-अस्तित्व है ।

शाश्वतता और अमरत्व का मतलब है बोधगम्य न होनेवाली चिजों को समझना, अज्ञात चिजोंके बारे में विचार करना, अव्यक्त को निर्धारीत करना, समझ के बाहर होनेवाली चिजों को प्राप्त करना, यह मन का कमी प्राप्त न होनेवाला उद्देश्य है और यह मनकी मदद से मन के उपर उठना होता है ।

शाश्वतता और अमरत्व को हम सृजनका तेजस्वी स्तोत कह सकते है, बुध्दि का बजनेवाला गीत, सुर्यसे चमकनेवाली प्रतिमा, संज्ञान मे व्यक्त मनुष्य का महान सृजन समझ सकते है, यह महान एकता की शांती भी है।

१६-१७/९/१९८४

अस्तित्व मे होनेवाली चिजों का सत्य

३३०. सत्य का सर्वोच्च प्रकटीकरण क्या है, इस दुनिया मे शाश्वत विवेकी परम-सुख का सर्वोच्च प्रकटीकरण क्या है ?

- शक्ति, बुध्दि और प्रेम का मार्ग है, यह नीती के सर्वोच्च भलाई का मार्ग है, यह चित्त के आवेग के त्याग का और आत्मत्याग का, मुक्ति का मार्ग है। ज्ञान शक्ति का स्त्रोत है।

बुध्दि ज्ञान का एकत्रिकरण है, विचार और अंतर्ज्ञान का संयोग है, प्रकटीकरण और एकाग्रता का समन्वय है, अप्रकट अवस्था का प्रकटीकरण मे संक्रमण है, अनश्वर का संक्रमण अवस्था मे परिवर्तन है, शाश्वतता का परिमित मे, निरपेक्ष का सापेक्ष मे संक्रमण है। महान एकता के ज्ञान का परम सुख, प्रेम का स्त्रोत है ।

बुध्दि का फूल

३३१. बुध्दि फूल है, जो सत्य का अमृत-धारण करता है।

- बुध्दि का फूल किस धरती मे उगता है ?
- मन की धरती मे ।
- इस फूल का आधार देनेवाला भाग क्या है ?
- वह वाणी है।
- बुध्दि के फूल क मूल क्या है ?

- नि:स्वार्थतता, अहंकारी इच्छाओंको त्याग करना, बनावटी व्यक्तित्व का त्याग करना ।
- बुध्दि के फूल का रस क्या है?
- वह ज्ञान है ।
- इस फूल को गरमी कहासे प्राप्त होती है?
- यह सर्वव्यापी प्रेम की गरमी होती है ।
- बुध्दि के फूल का प्रकाश क्या है ?
- आत्मसंज्ञान और आत्मचिंतन, मनुष्य ने अपने असली अमर स्वरूप को समझना अपने अपरिमित श्रेष्ठता को समझना, अनंत ज्ञान और अनंत शक्ति को समझना।
- बुध्दि के फूल का सुगंध क्या है?
- अनंत विश्राम का परमसुख, दृढ स्थिरता और संपूर्ण ज्ञान ये इस बुध्दि के फूल का सुगंध है ।
- बुध्दि के फूल का फल क्या है ?
- यह क्लेश के माध्यम मे क्लेश से मुक्ति है, कर्म की शृंखलाओं से मुक्ति है, अहंकार की बेडिया से मुक्ति है, अज्ञान के जाल से संपुर्ण मुक्ति है ।

२-३/१-१९२५

दर्शन की परिभाषा

३३२. दर्शन सत्य का शास्त्र है, अनेकता मे बदलनेवाली एकता के बारेमे शास्त्र है, एकता मे घुलनेवाली अनेकता के बारेमे शास्त्र है ।

यह समय के नदी मे बहनेवाली शाश्वतता के बारे मे शास्त्र है, यह अस्तित्व मे आनेवाले कारण-परिणाम प्रवाह के बारे मे शास्त्र है, यह निर्दय कर्म के प्रवाह के बारे मे शास्त्र है, जीवन और मृत्यु के प्रवाह के बारेमे शास्त्र है, यह मनुष्य के अपने असली अमर स्वरूप के, अपने असली संपूर्ण सार के, अपनी अपरिमित महानता के प्रत्यक्ष चिंतन की प्रक्रिया मे विलय होनेवाले समय का शास्त्र है।

यह मनुष्य के बारे मे शास्त्र है, जो जीवन-अस्तित्व की सर्वोच्च वास्तविकता है, यह शास्त्र दावा करता है कि मनुष्य जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च सार है, मनुष्य जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च सत्य है, मनुष्य ही जीवन-अस्तित्व के महान एकता का केंद्र है ।

२८/१२-३१/१२/१९८५

पुस्तक – २

अध्याय – १

मुक्ति

सभी चिजों की एकता यह जीवन–अस्तित्व का सर्वोच्च सत्य है ।

मुक्ति, एकता के सत्य को तुम्हारे अंदर, कार्यान्वित करना यह जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य, जीवन का अर्थ है ।

मुक्ति और एकता के सत्य को समझनेके बिच क्या संबंध है, मुक्ति और मनुष्य ने अपने असली अमर स्वरूप को समझना, अपनी श्रेष्ठता को समझना इनके बिच क्या संबंध है?

आत्मसंज्ञान, खुद को खोजना यह जीवन–अस्तित्व का सर्वोच्च ज्ञान है क्यो कि आत्मसंज्ञान के प्रक्रिया के दौरान कर्ता और संज्ञान के वस्तु के बिच सीमा लुप्त हो जाती है। संज्ञान का कर्ता और संज्ञान होनेवाली वस्तु इनके बिच सीमा लुप्त हो जाती है, द्वैत, अल्गाव लुप्त हो जाते है, जो अज्ञान का, क्लेश का सार होते है ।

अहंकार आत्म–सन्मान, द्वैत और अहंकारी इच्छाए, जिनका आधार आपके खुद के ''स्व'' की प्रशंसा होती है, ये सब तुम्हारे एकता के सत्य को समझनेके मार्ग मे प्रतिबंध होते है, तुम्हारे मुक्ति के मार्ग मे प्रतिबंध होते है ।

जब मनुष्य महान एकता के सत्य को संज्ञान की प्रक्रिया के दौरान समझता है, हमारे ''स्व'' की सीमा का अनंतता तक विस्तार जो जाता है और अंत मे वह लुप्त हो जाता है – यह मुक्ति है ।

दुसरे शब्दो मे कहा जाए तो मुक्ति का मतलब है सज्ञान का कर्ता और संज्ञान होनेवाली वस्तु का संपुर्ण विलय, जो आत्मसंज्ञान बन जाता है, सत्य को प्रत्यक्ष समझने की प्रक्रिया बन जाता है, मनुष्य का अपने असली अविनाशी स्वरूप का चिंतन बन जाता है ।

आज के जमाने मे ''खुद को समझो'' इस थीसिस को हम थोडे दुसरे ढंग से समझते है। जब आप क्रमिक रीति से एकता के सत्य को समझते है, किसी वस्तु के बारे मे कोई भी ज्ञान आत्मसंज्ञान बन जाता है क्यो कि इस सत्य के अनुसार मेरा अस्तित्च सभी चिजो मे है और सभी चिजों का अस्तित्व मेरे अंदर है।

जो मनुष्य योग के चार स्तर के मार्ग पर चलता है और जिसका उद्देश्य एकता के सत्य को समझना यह है, ऐसे मनुष्य के लिए संज्ञान के प्रक्रिया के दौरान ज्ञान का कर्ता और ज्ञान की वस्तू इनका क्रमिक रीति से विलय हो जाता है, आत्मवाद यह धारणा ही क्रमिक रीति से लुप्त हो जाती है । संज्ञान क्रमिक रीती से प्रत्यक्ष चिंतन की कृति बन जाता है, आप विचार की वस्तु मे घुल जाते हो, इस वस्तु के साथ आपका विलय हो जाता हो जाता है, यह गहरी एकाग्रता, समाधी बन जाते है ।

इस प्रकार मनुष्य महान एकता के सर्वोच्च सत्य को अपने अंदर जितना जादा कार्यान्वित करता है उतनी ही जादा वह खुद से सभी चिजों के साथ एकता को महसुस करता है, जीवन-अस्तित्व के महासागर से काल्पनीक अलगाव के सापेक्ष स्वरूप को वह उतना ही जादा समझता और खुद को सभी चिजों के अंदर और सभी चिजों को खुद के अंदर महसुस करता है। मनुष्य की एकाग्रता की क्षमता जितनी जादा बढ जाती है, उसका मन और जादा निर्मल हो जाता है और वह विद्वान हो जाता है ।

जब ज्ञान का आत्मसंज्ञान की कृति मे परिवर्तन हो जाता है, प्रत्यक्ष चिंतन मे परिवर्तन हो जाता है, आपका ''स्व'' अलगाव, आत्म-सन्मान और द्वैत लुप्त हो जाते है और सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन मे, प्रकाश के महासागर मे, परम सुख के महासागर मे, अस्तित्वहीन अवस्था के महासागर मे, सर्वोच्च जीवन-अस्तित्व के महासागर मे घुल जाते है। उसके बाद क्लेश से मुक्ति, महान भ्रम से मुक्ति, माया के जाल से मुक्ति, अहंकार के शृंखलाओ से मुक्ति, अहंकारी इच्छाओ से मुक्ति, कर्म की बेडियो से मुक्ति, मृत्यु की शक्ति से मुक्ति, अज्ञान के जाल से संपुर्ण मुक्ति प्राप्त होती है ।

४/१२-१९८५

अध्याय – २

सर्वोच्च वास्तविकता

– हमारी दुनिया वास्तविक है या नही?

– वह वास्तविक है क्यों कि उसका अवास्तविक होना संभव नही है। अगर वह अवास्तविक होती तो हम और हमारा ''स्व'' भी अवास्तविक होते। हमारे ''स्व'' का अर्थ है कुछ तो हमारा ''स्व'' न होनेवाला भी अस्तित्व मे है, वह जिसको हम ''दुनिया'' जीवन–अस्तित्व और ''विश्व''क हते है, उनका अस्तित्व मानता है ।

अगर हम दुनिया के अवास्तविकता के बारे में बात शुरू करेंगे तो हमे अपने आपको अवास्तविक मानना पडेगा । दुनिया के अवास्तविकता का प्रश्न लुप्त हो जाता है क्यों कि आज कल इस प्रश्न को हम दुसरे ढंग से पेश कर सकते है : क्या मै वास्तविक हूं? लेकिन इस प्रश्न को पुछा नही जाता और उसका हम विचार नही कर सकते। दुसरे शब्दो मे कहा जाए तो जितने हम वास्तविक है, जितना हमारा ''स्व'' वास्तविक है उतनी ही यह दुनिया वास्तविक है । यहां एक दुसरा प्रश्न महत्वपुर्ण है : हमारा जीवन–अस्तित्व के महासागर मे अलगाव, हमारे बाहर होनेवाली चिजों से अलगाव कितना उचित है?

सभी चिजों की एकता के सत्य को हम मौलिक सत्य, अपरिवर्तनीय तथ्य, वस्तुनिष्ठ वास्तविकता, जीवन–अस्तित्व का सर्वोच्च स्त्य मानते है। इस वस्तुनिष्ठ वास्तविकता को हम क्या नाम देते है यह बात महत्वपुर्ण नही है, इस जीवन–अस्तित्व की महान एकता को हम ''ब्राह्मण'', ''द्रव्य'', ''मदार्थ'' अथवा ''हमारा असली स्वं'',''निरपेक्ष स्वं ''कह सकते है। ऐसी परिस्थिती मे हमारे बाहर होनेवाली चिजों से हमारा अलगाव यह हमारा खुद से अलगाव होता है क्यों कि अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजे एकत्रित होती है और मेरा अस्तित्व सभी चिजों मे होता है और सभी चिजों का अस्तित्व मेरे अंदर है, इसलिए मै अस्तित्व मे होनेवाली

सभी चिजे हूं, वह सब चिजे मेरे साथ जुड गई है, घुल गई है और मेरे से अलग नही हो सकती है ।

इस प्रकार आपका खुद से अलगांव बनावटी अलगाव है, वह अपने असली निरपेक्ष स्वरूप के अज्ञान का खेल है, निरपेक्ष का सापेक्ष स्वरूप के साथ खेल है, मुझे एकता का अनेकता के साथ खेल अच्छा लगता है, यह अनश्वर का संक्रमक के साथ खेल है, शाश्वतता का परिमित के साथ खेल है, अनंतता का परिमित के साथ खे ल है, अनंत शक्ति का दुर्बलता के साथ खेल है, निरपेक्ष बुध्दि का अज्ञान के साथ खेल है, निरपेक्ष परम सुख का क्लेश के साथ खेल है, अस्तित्वहीन अवस्था का जीवन अस्तित्व के साथ खेल है, यह अस्तित्वहीन अवस्था का जीवन-अस्तित्व है, वह अलग नही हो सकता है, वह महान भ्रम है, जिसका समय के साथ अनेक आकारो मे परिवर्तन हो जाता है, वह शाश्वत की ओर निर्देशीत रचना के अनंत प्रवाह मे बह जाता है, उसका कारण उससे उत्पन्न परिणामोके, जो बाद मे कारण बन जाते है, विचित्र साचो मे परिवर्तन हो जाता है।

इस कारण और परिणामों के अस्त-व्यस्त दिखनेवाले खेल पर शाश्वत कर्म के नियम का नियंत्रण होता है, इस नियम का तर्कशास्त्र कठोर है, यह जीवन अस्तित्व का महान नियम है, यह सर्वोच्च न्याय का नियम है, जिसका आधार हमारी अहंकारी इच्छाए और अहंकार है, अलगाव, खुद के ‘‘स्व’’ को महसुस करना, हमारा बनावटी व्यक्तित्व और उसके साथ हमारी संपुर्ण स्वतंत्रता, हमारा असली निरपेक्ष सार भी उसका आधार है ।

कर्म और कर्म के नियम को हमने स्वतंत्रता से उत्पन्न हुई विवशता ऐसा मानना चाहिए। मनुष्य के इच्छा-शक्ति की संपुर्ण स्वतंत्रता के कारण उत्पन्न हुई अहंकारी इच्छाओ के फल भुगतना यह मनुष्य की विवशता है। मनुष्य जीवन -आस्तित्व की महान एकता का केंद्र है, वह जीवन-अस्तित्व की महान एकता के सत्य का वाहक है।

मनुष्य कोई भी इच्छा प्रकट करने के लिए स्वतंत्र है, लेकिन उसे इस इच्छा का फल भुगतना पडेगा – यह कर्म के नियम का सार है।

महान एकता का निरपेक्ष कल्पना का वाहक होनेवाले मनुष्य के पास इच्छा–शक्ति की संपूर्ण स्वत्रंत्र होती है, यह उसकी विशेषता है। वह ''मै हूँ '' ऐसी घोषणा करके खुदको खुद से अलग करना नही चाहता । इस प्रकार द्वैत, अलगाव, आत्म–सन्मान, अहंकार, नाम ''स्व'' और 'मै नही हूं – यह अवस्था' उसके बाहर प्रकट होते है । इसी प्रकार प्रकृति की दुनिया का निर्माण होता है, जिसके उपर कठोर और निप्पक्ष कर्म के नियम का नियंत्रण होता है, जिसके कार्य का आधार मनुष्य की इच्छा–शक्ति की संपुर्ण स्वतंत्रता है ।

मनुष्य की निरपेक्ष इच्छ–शक्ति, मनुष्य की दुसरे चिजों की तुलना मे एकता, उसकी श्रेष्ठता, उसकी अनंत शक्ति और अनंत ज्ञान का आधार है : आत्मसंज्ञान की उसकी अमूल्य क्षमता, खुद के अंदर सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन की क्षमता, खुद के अंदर जीवन–अस्तित्व के सर्वोच्च सत्य का चिंतन। यह आत्म चिंतन की क्षमता है, सर्वोच्च अंतर्ज्ञान है, गहरी एकाग्रता और समाधी है, जिसकी हम किसी चिज के साथ तुलना नही कर सकते और वह हमे जीवन अस्तित्व की महान एकता का, जीवन–अस्तित्व की सर्वोच्च वास्तविकता का केंद्रबिंदू बनाती है, हमे सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, अच्छा–मनुष्य–परमेश्वर बनाती है, जो खुद के साथ खेलता है याने अपने असली निरपेक्ष स्वरूप के अज्ञान के साथ, अपने असली अमर स्वरूप के सार के अज्ञान के साथ और अपनी असली श्रेष्ठता के सज्ञान के साथ खेलता है ।

पहले होता है ''मै हूं'' उसके बाद अपरिमित अहंकारी इच्छाए उत्पन्न होती है, वह अनिवार्य रीति से पूरी हो जाती है क्यो कि उनकी हम उपेक्षा नही कर सकते, जिसका कारण है मनुष्य की इच्छा–शक्ति की संपुर्ण स्वतंत्रता। मनुष्य महान एकता के सत्य का वाहक है, लेकिन मनुष्य को अपने इच्छाओं का फल पुरी तरह भुगतना पडता है, (जब तक यह इच्छाए नष्ट नही होती तब तक यह फल भुगतना पडता है) ।

इस प्रकार मनुष्य अपनी इच्छा-शक्ति की मदद से, जिसका स्वरूप निरपेक्ष होता है, खुद को अपनी इच्छा से कर्म की अटुट श्रृंखलाओ से बांध देता है, यह उसके इच्छाओं के परिणामो की श्रृंखलाए होती है, स्वतंत्रता की विवशता की श्रृंखलाए है। मनुष्य खुद की इच्छा के कारण अहंकार, अलगाव, अपनी इच्छाओंका फल भुगतने के लिए विवश करता है, उसे अपने असली सार के अज्ञान का, आत्म-सन्मान का फल भुगतना पडता है। उसे जीवन और मृत्यु के एक दुसरे मे बदलनेवाली अनंत कतार मे संपुर्ण एकता से बनावटी अलगाव का फल भी भुगतना पडता है।

जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य, जीवन का सर्वोच्च अर्थ हमारे सामने अलगाव के महान भ्रम से मुक्ति के रूप मे प्रकट होता है, इस भ्रम को दूर करने के रूप मे, अज्ञान को दूर करनेके रूपमे प्रकट होता है। यह भ्रम वास्तविकता मे बनावट होता है और बनावट चिजों मे असली होता है। यह सर्वोच्च उद्देश्य और सर्वोच्च अर्थ मनुष्य के खुद के अंदर जीवन अस्तित्व के सभी चिजों के एकता के बारे मे सर्वोच्च सत्य के रूप मे प्रकट होते है, मनुष्य महान एकता की कल्पना का वाहक है, इस सत्य को मनुष्य ने समझने के रूप मे प्रकट होते है, मनुष्य अपनी संपुर्ण स्वतंत्रता और बंधनमुक्त अवस्था को समझने मे प्रकट होते है, मनुष्य अपना असली अमर स्वरूप, अपरिमित श्रेष्ठता, अनंत शक्ति और अनंत ज्ञान को समझने के रूप मे प्रकट होते है, मनुष्य खुद को सर्वोच्च वास्तविकता के रूप मे समझने मे प्रकट होते है, क्लेश से मुक्ति के रूप मे प्रकट होते है, अहंकारी इच्छाओंसे मुक्ति के रूप मे, बनावटी अस्तित्व के त्याग के रूप मे, अहंकार की श्रृंखलाओ से मुक्ति के रूप मे, कर्म की बेडियों से मुक्ति के रूप मे, माया की जादु से मुक्ति के रूप मे, द्वैत से मुक्ति के रूप मे, काल्पनिक दुर्बलता और क्षीणता से मुक्ति के रूप मे, जीवन अस्तित्व की कभी न मिटनेवाली प्यास से मुक्ति के रूप मे, अनुराग से मुक्ति के रूप मे, संक्रमण की अनेकता से मुक्ति के रूप मे, परिमित की शाश्वतता से मुक्ति के रूप मे, अज्ञान के जाल से संपुर्ण मुक्ति के रूप मे प्रकट होते है ।११-२६/२-१९८५

अध्याय – ३

एकाग्रता

- मन क्या है, विचार–प्रक्रिया क्या है?
- मन और विचार–प्रक्रिया एक अपुर्ण का कर्ता और उसे विरोध करनेवाले अनेक वस्तुओ मे विघटन है और उसके बाद अनेकता का एक संपुर्ण मे वापस आना है, अनेकता गहरी एकाग्रता के माध्यम से एकता मे घुलाना है।
- हमारे मन का उद्देश्य क्या है, विचार–प्रक्रिया का अंतिम लक्ष्य क्या है?
- मन का अंतिम उद्देश्य है : सत्य का विचारो की वस्तुओ मे प्रत्यक्ष चिंतन, वस्तुओं मे घुल जाना, उनके साथ जुड जाना, उनका हिस्सा बन जाना, गहरी एकाग्रता, समाधी।
- ध्यान और चिंतन क्या है ?
- चिंतन और ध्यान बंद पुस्तक की मौन की तरह होते है, वे पर्वत से गिरनेवाले बरफ के प्रवाह का विश्राम है, महासागर की धूसर शांती है, जीवन–अस्तित्व का स्रोत है, वह खिलनेवाली फुल की विशालता है।
- चिंतन और ध्यान महान शास्त्र का सृजन है, एकाग्रता की असीम शक्ति है, बुध्दि की सबकुछ उजागर करनेवाली चिनगारी है, महान एकता के शाश्वत सत्य को समझने का अव्यक्त परमसुख है, सत्य को प्रत्यक्ष समझना है।
- चिंतन और ध्यान प्रकटीकरण के बिजली की चमकनेवाली दिप्ती की तरह होते है, उनका मतलब है मन की मदद से मन के उपर उठना मन को हृदय मे लुप्त करना, जीवन अस्तित्व के महासागर से मिलना, जीवन–अस्तित्व के शाश्वतता के महासागर मे, प्रकाश के महासागर मे, अस्तित्वहीन अवस्था के महासागर मे, सर्वोच्च जीवन–अस्तित्व के महासागर मे घुलाना।

मन अपने कार्य के स्वरूप के कारण अनिवार्य रीति से कर्ता और वस्तु का द्वैत मानता है। कुछ विचारोंकी वस्तुए हमेशा होती है, विचारों के लिए हमेशा कुछ लक्ष्य होते है, हमेशा विचारोंका कर्ता होता है, विचार करनेवाला कोई मनुष्य होता है । दुसरे शब्दों मे कहा जाए तो विचार-प्रक्रिया हमारा अलगाव हमारे बाहर होनेवाली कुछ चिजों से, हमारे ''स्व'' के विपरीत होनेवाली कुछ चिजों से जोडती है ।

दुसरी तरफ अंत मे मन अनिवार्य रीति से सत्य को समझने की दिशा मे निर्देशीत होता है, यह सभी चिजों की एकता होती है और जीवन अस्तित्व की महान एकता का मनुष्य केंद्र है ।

इस प्रकार मन के स्वरूप मे कभी न मिटनेवाला विरोध छिपा होता है, यह एक प्रकार की आंतरिक शत्रुता है जिसे दुर करना चाहिए । विचार-प्रक्रिया कर्ता और विचार की वस्तुओं के बिच विरोध उत्पन्न करके निर्माण होती है और उसका अंतिम लक्ष्य इस द्वैत को हटाना, अल्गाव को, अहंकार को, आत्म-सन्मान को हटाना यह है, जिसका अंतमे अर्थ है : मनुष्य का अपने असली निरपेक्ष स्वरूप के, अपनी असली श्रेष्ठता के बारे मे अज्ञान को नष्ट करना ।

इसलिए इस आंतरिक शत्रुता मे निरपेक्ष को सापेक्ष के माध्यम से, अनश्वर को संक्रमण के माध्यम से प्राप्त करने के प्रयास शामिल है, परिमित के जादू का उपयोग करके शाश्वतता को पकडने के प्रयास भी इसमे शामिल है। मन संक्रमक के माध्यम से एकता को संक्रमक की अनेकता मे डालके एकता के सत्य को प्राप्त करने का विफल प्रयास करता है ।

मन के इस खुद के साथ चल रहे संघर्ष को निपटना मन का उद्देश्य और उसे प्राप्त करने के लिए साधनों के बिच विरोध, विचार-प्रक्रिया और इस विचार-प्रक्रिया का अंतीम लक्ष्य इनके बिचे का विरोध-इन सबका मतलब है आपने खुद गहरी एकाग्रता मे, सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन मे मन की मदद से, मन को दूर करना ।

अब हम कह सकते है की मन का अंतिम उद्देश्य विचार प्रक्रिया मे, प्रत्यक्ष चिंतन मे खुद को दुर करना, जो गहरी एकाग्रता मे विचारो के कर्ता का विचारोंकी वस्तु मे घुलने मे व्यक्त होता है।

विचार प्रक्रिया को विचार-प्रक्रिया के दौरान दूर करना, विचारों के कर्ता का विचारो की वस्तु मे चिंतन के दौरान क्रमिक विलय यह सब सिर्फ आत्मसंज्ञान की कृति मे संभव है जब हमारा ''स्व'' खुद का प्रत्यक्ष चिंतन करता है, एक साथ वस्तु और कर्ता बन जाता है । जब मनुष्य खुद के अंदर एकता के सत्य को कार्यान्वित करता है, यह चिंतन क्रमिक रीति से सभी संज्ञान के लिए इस्तेमाल होता है, वह सभी संभाव्य ज्ञान प्राप्त करता है और सभी जीवन-अस्तित्व को व्याप्त करता है ।

इस प्रकार वस्तुए और घटनाओंके गहरे सार को प्रत्यक्ष समझना, प्रकटीकरण के पवित्र स्वरूप को समझना- ये सब विचार-प्रक्रिया मे प्राप्त करना संभव नही है। विचार-प्रक्रिया के माध्यम से मन अपनी सीमाए निर्धारीत करता है । प्रत्यक्ष चिंतन की संभाव्य क्षमता विचार-प्रक्रिया मे छिपी होती है, लेकिन वह मन का महत्व कम नही करती है, उसकी मनुष्य ने खुद के अंदर, महान एकता के शाश्वत सत्य को समझनेमे सर्वव्यापी भुमिका का मूल्य नही घटाती है ।

मनका अंतिम उद्देश्य प्राप्त नही हो सकता है। वह प्राप्त नही हो सकता, लेकिन फिर भी वह उद्देश्य है। कभी प्राप्त न होनेवाले इस उद्देश्य का पिछा करना, अव्यक्त को व्यक्त करने के प्रयास, जिसका विफल होना पहले से ही निश्चित है, विचार-प्रक्रिया के सीमा के बाहर चिजों के बारे मे विचार करने का प्रयास, अप्राप्य चिजों को प्राप्त करने का प्रयास ये सब निरर्थक है, लेकिन ये मन के कुछ माया की अव्यक्त, विचार-प्रक्रिया के बाहर होनेवाली, समझ के बाहर होनेवाली चिजों को शब्द और धारणा की मदद से पकडने के प्रयास का सार है। ऐसे अंत न होनेवाले प्रयासो के कारण मन की क्षमताए निशक्त हो जाती है और मन गहरी एकाग्रता मे,

विचारों की वस्तु मे घुलने के दौरान इस वस्तु से विलय के दौरान, समाधी मे मन अपनी सीमाओं से बाहर आ जाता है।

इस प्रकार मन निरंतन अप्राप्य चिजों को खोजता है अथवा विचार-प्रक्रिया के क्षेत्र से बाहर आ जाता है।

गहरी एकाग्रता मे, समाधी मे सत्य का प्रत्यक्ष चिंतन यह मन का अंतीम उद्देश्य है, जिसको अब हम मन की मदद से और मन के माध्यम से मन के उपर उठना अथवा विचार-प्रक्रिया को विचार-प्रक्रिया से और सिर्फ विचार-प्रक्रिया के माध्यम से दुर करना ऐसा कह सकते है।

एक तरफ मन परिमित, संक्रमक बदलनेवाली, चिजों की ओर, संक्रमकता की अनेकता की ओर निर्देशीत होता है। दुसरी तरफ मन को स्थिर चिजों की, शाश्वतता की अनंतता की, एकता के सत्य की महत्वाकांक्षा होती है। सबसे पहले वह एकता को अनेकता मे डालनेके प्रयास मे, परिमित की अनेकता को एकता मे बदलने के प्रयास मे व्यक्त होती है ।

इसलिए मन, विचार-प्रक्रिया, संक्रमण और अविनाशी के बिच, आंतरिक और बाहय के बिच, निरपेक्ष और सापेक्ष के बिच, असली और बनावट के बिच एक प्रकार का पुल है। जितनी जादा गहरी एकाग्रता उतनी इस पुल की लंबाई कम होती है। इसके विपरीत गहरी एकाग्रता की क्षमता जितनी कम उतनी जादा इस पुल की लंबाई होती है। एकाग्रता जैसे गहरी हो जाती है, मन क्रमिक रीति से चिंतन मे घुल जाता है, सापेक्ष निरपेक्ष के साथ जुड जाता है, (अगर जादा उचित शब्दों मे कहा जाए तो निरपेक्ष मे बह जाता है), इस प्रकार शाश्वत और अशाश्वत, परिमित और अपरिमित, संक्रमक और अनश्वर इनके बीच की सीमा क्रमिक रीति से लुप्त हो जाती है ।

यह वायुमंडल की तरह है, वह विरल हो जाता है और अंत मे उसका अनंत अंतरिक्ष मे विलय हो जाता है। वायुमंडल और अंतरिक्ष के बिच कोई सीमा नही होती है । एक दुसरे मे

क्रमिक रीति से बह जाता है। यह बात एकता के लिए भी सही है, जिसका चिजों की और घटनाओंकी अनेकता मे परिवर्तन हो जाता है, लेकिन उसका मूल स्वरूप नही बदलता, अनेकता एकता मे घुल जाती है, जो ऐसी अनेकता की संभाव्य क्षमता धारण करती है ।

मन और अंतर्ज्ञान के बिच कोई सीमा नही होती है, विचार-प्रक्रिया और चिंतन, बंधन की अवस्था और मुक्ति के बिच भी कोई सीमा नही होती है।

तुम्हारे ''स्व'' का अनिवार्य रीति से मतलब है जो तुम्हारा ''स्व'' नही है उसका भी अस्तित्व है, और इसलिए तुम्हे बाह्य वस्तुओं का, अनुभव की दुनिया का, संवेदनाओंकी समझ की दुनिया का अस्तित्व मानना पडेगा, इसका मतलब है, तुम्हारा ''स्व'' खुद से जिन चिजों के विरोध मे रखता है उसका ही अस्तित्व तुम्हे मानना पडता है। दुसरे शब्दों मे कहा जाए तो द्वैत, अलगाव, अहंकार, मनुष्य का अपने असली अमर स्वरूप का अज्ञान 'स्व' के सार मे छिपे होते है।

बिलकुल उसी प्रकार मन की गतिविधीया और विचार-प्रक्रिया के कारण हमे कर्ता और विचार-प्रक्रिया की वस्तु का अस्तित्व मानना पडता है, इसका मतलब है अनिवार्य रीति से द्वैत, अलगाव और आत्मसन्मान उत्पन्न होते है ।

मन की मदद से ''स्व'' अपना संज्ञान देखता है। विचार-प्रक्रिया के कारण हमारे ''स्व'' की मर्यादा निर्धारीत होती है। मै खुद को समझ नही सकता, मै हमेशा खुद के बाहर होनेवाली चिजों के बारे मे सोचता हूं । इसके बाबजुद मनका उद्देश्य विचार-प्रक्रिया के दौरान इस विरोध को दूर करना होता है, इसका मतलब है विचार-प्रक्रिया के दौरान यह सब होता है (उसे इस प्रकार कहना सही होगा : इस विरोध की प्रक्रिया मे अथवा विरोध से विरोध को दूर करके) ''मै विचार करता हूँ '' इसका मतलब है मै खुद के विरोध मे कुछ तो रखता हूं, उसे खुद से अलग करता हूं। जब मै खुद की ओर देखता हूँ तब मै इस विरोध को दूर करता हूं।

सिर्फ मनुष्य अपने विचार खुद की ओर निर्देशीत कर सकता है और विचार-प्रक्रिया को विचार-प्रक्रिया के दौरान दूर कर सकता है क्यों कि खुद के अंदर देखना, खुद की ओर देखना इसका मतलब दुसरा कुछ नही सिर्फ चिंतन है। मनुष्य खुद के बारे में विचार नही कर सकता, अपने ''स्व'' के बारे मे विचार नही कर सकता क्यों कि जैसा मै पहले कह चुका हूं विचार प्रक्रिया का मतलब है कर्ता और वस्तु का विरोध। इस विरोध का मतलब है मनुष्यने खुद का खुद के खिलाफ चिंतन मे रखना, लेकिन यह असंभव है और अगर यह संभव दिखाई देता है तो उसका सिर्फ चिंतन किया जा सकता है, इसका मतलब है हम सिर्फ अपने ''स्व'' के विरोध मे होनेवाली ''स्व'' के बाहर होनेवाली चिज के बारे मे विचार कर सकते है। ''स्व'' ''स्व'' के बाहर होनेवाली चिज को खुद के खिलाफ रखता है और यह सिर्फ विचार-प्रक्रिया मे होता है और विचार-प्रक्रिया के माध्यम से गहरी एकाग्रता मे, सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन मे, गहरे आत्मसंज्ञान मे यह विरोध दुर किया हाता है ।

विचार प्रक्रिया को हम निरपेक्ष और सापेक्ष के बिच विरोध, सापेक्ष ने निरपेक्ष को नष्ट करना ऐसा कह सकते है। 'निरपेक्ष' अपनी अस्तित्वहीन अवस्था उत्पन्न करता है, सापेक्ष, संक्रमक के रूप मे खुद को नकारता है, और बाद मे इस नकारनेकी प्रक्रिया नष्ट करता है, सापेक्ष और निरपेक्ष का विलय हो जाता है, अगर इस बात को हम मन को लागू करते है, तो इसका मतलब होता है मन का (याने विचार प्रक्रिया का) अंतर्ज्ञान मे संक्रमण होना, गहरी एकाग्रता के दौरान विचार-प्रक्रिया और चिंतन का विलय होना ।

- एकाग्रता क्या है ?
- एकाग्रता का मतलब है विचार-प्रक्रिया का चिंतन मे परिवर्तन होना, मन अंतर्ज्ञान मे घुल जाना, कर्ता का विचार के वस्तु मे विलय होना, दुसरे शब्दों मे यह मन की मदद से, विचाराधीन

होनेवाली वस्तुपर मन एकाग्र करके मन को दूर करना और बाद मे इस विचार के वस्तु का ध्यान करना, प्रत्यक्ष चिंतन करना ।

इस अर्थ मे हम जीवन अस्तित्व को निरंतर चलनेवाली विचार-प्रक्रिया कह सकते है, अगर अधिक यथार्थ शब्दो मे कहा जाए तो यह चिंतन से निरंतर चलनेवाली विचार-प्रक्रिया है, इसलिए विचार-प्रक्रिया गहरी एकाग्रता के माध्यम से चिंतन मे बदल जाती है । यह निर्माण की प्रक्रिया (अंतर्ज्ञान का बुध्दि मे संक्रमण, चिंतन का कर्ता और वस्तु के द्वैत के माध्यम से, विचार-प्रक्रिया मे संक्रमण, वह ''स्व'' के अलगाव के कारण उत्पन्न होता है) सुरक्षित रखने की प्रक्रिया (विचार प्रक्रिया, कर्ता और वस्तु का विरोध, ज्ञान, ज्ञान प्राप्त करना और उसका संचय करना) और नाश (कर्ता और वस्तु का विलय, बुध्दि का अंतर्ज्ञान मे घुलना, विचार-प्रक्रिया का गहरी एकाग्रता के माध्यम से चिंतन मे घुलना) - यह निर्माण, सुरक्षित रखनेकी और नाश की आदि अवस्था की प्रक्रिया कभी रूकती नही है और उसका कारण और परिणामों के अंतहीन कतार में परिवर्तन हो जाता है, कारण - परिणाम के निर्माण के प्रवाह मे परिवर्तन हो जाता है, चिंतन के महासागर से बाहर आनेवाले और फिर इस कभी न मिटनेवाली अहंकारी इच्छाओं के माध्यम से गहरी एकाग्रता के अनंत शांती के शाश्वत महासागर मे बहनेवाले मन के तेजस्वी प्रवाह मे परिवर्तन हो जाता है ।

तुम्हारे खुद के ''स्व'' का एहसास, आत्मसंज्ञान यह मन और विचार-प्रक्रिया के आधार है और इच्छाओं की तरह मन और विचार-प्रक्रिया ''स्व'' के मुख्य गुण है। जैसे जैसे एकाग्रता विचार-प्रक्रिया के दौरान गहरी हो जाती है, मन प्रत्यक्ष चिंतन मे घुल जाता है, संज्ञान का कर्ता क्रमिक रीति से लुप्त हो जाता है, ज्ञान के वस्तु मे घुल जाता है, सत्य मे उसका विलय हो जाता है, जो सभी जगह होता है, और इसका मतलब है मनुष्य खुद के अंदर महान एकता के सत्य को साकार करता है।

हमारे ''स्व'' की सीमाए, जो हमारा व्यक्तित्व बनाती है, क्रमिक रीति से लुप्त हो जाती है और अविनाशी बन जाती है, उनका गहरे हो जानेवाले आत्मसंज्ञान मे अनंतता तक विस्तार होता है। मनुष्य खुद की सभी चिजो के साथ एकता को महसुस करता है, सभी चिजों की एकता को अपने हृदय से समझता है, खुद को विश्व का केंद्र समझता है।

ज्ञान, आत्म-चेतना के करीब आता है, सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन के करीब आता है, मेरे चारो ओर होनेवाली चिजों को समझके मै खुद को समझता हूं , मेरा असली सार समझता हूं । जब मै खुद के अंदर सत्य का चिंतन करता हूं , मै संपूर्ण जीवन-अस्तित्व को समझता हूं क्यों कि सत्य मेरे चारो ओर है, वह सभी चिजो छिमा हुआ है । अलगाव, आत्मवाद, अहंकार क्रमिक रीति से लुप्त हो जाते है, जो मुक्ति के मार्ग मे मुख्य्र रूकावटे होती है ।

मेरा अस्तित्व सभी चिजों मे है और सभी चिजो का अस्तित्व मेरे अंदर है - यह मुक्ति का सूत्र अब मन के अंतिम उद्देश्य को साकार करेने मे बदल जाता है । मन का अंतिम उद्देश्य है, मनकी मदद से मन को दूर करना। मन की क्षमताए निश्शक्त हो जाती है और मन खुद को सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन मे, जीवन अस्तित्व के गहरे सार के चिंतन मे, मनुष्य के अपने असली निरपेक्ष सार के प्रत्यक्ष चिंतन मे, अपने असली अगर स्वरूप के चिंतन मे घुला देता है ।

एकाग्रता गहरी हो जाती है, संपुर्ण ज्ञान का सर्वोच्च ज्ञान मे विलय हो जाता है, वह आत्मसंज्ञान की, कृति बन जाती है, जो मनुष्य के आत्मचिंतन मे जीवन-अस्तित्व के सर्वोच्च सत्य के रूप मे सभी चिजों पर लागू होती है ।

गहरी एकाग्रता के प्रक्रिया मे गहरा हो जानेवाला आत्मसंज्ञान और एकता के सत्य को समझने सी प्रक्रिया के मर्यादा को पार करके बाहर आना, जिसे हम आत्म-चिंतन, मनुष्य की अपने निरपेक्ष स्वरूप का प्रत्यक्ष चिंतन, मनुष्य को खुद के अंदर जीवन-अस्तित्व के महान एकता के सत्य का चिंतन, मनुष्य का सर्वोच्च वास्तविकता के रूप मे प्रत्यक्ष आत्म-चिंतन,

सभी चिजो की महान एकता के केंद्र, जीवन–अस्तित्व की महान एकता के निरपेक्ष कल्पना का वाहक ऐसा भी मान सकते है, ये जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य है, जीवन का सर्वोच्च अर्थ है।

१७/१२–१९८५–

२१/१–१९८६

अध्याय – ४

अस्तित्वहीन अवस्था

- अस्तित्वहीन अवस्था क्या है ?
- अस्तित्वहीन अवस्था सर्वोच्च जीवन–अस्तित्व है, यह जीवन–ास्तित्व की आदि अवस्था की संभाव्य क्षमता है ।
- वह कुछ नही है जो समझ के बाहर होनेवाले रीति से कुछ तो बनाता है ।
- वह मौन का किनारा न होनेवाले महासागर है, जो रचना का निरंतर बहनेवाला प्रवाह है, एक दुसरे को निर्माण करनेवाले कारण और परिणामोंका प्रवाह है, एक दुसरे मे बदलनेवाले जीवन और मृत्यु का प्रवाह है, इसका मतलब है अलगाव के महान भ्रम के अद्‌भूत प्रवाह से निरंतर पानी पिना है।

इस परिभाषा से स्पष्ट होता है कि अस्तित्वहिन अवस्था की समस्या का दोनो बाजुओ से विचार करना चाहिए : एक तरफ अस्तित्वहीन अवस्था जीवन–अस्तित्व की संभाव्य क्षमता है, वह जीवन–अस्तित्व का कभी निश्शक्त न होनेवाला स्त्रोत है। दुसरी तरफ अस्तित्वहीन अवस्था का मतलब है, जीवन–अस्तित्व के सर्वोच्च जीवन–अस्तित्व के रूप मे दूर करना, अहंकार की श्रृंखलाओं से मुक्ति देना, अज्ञान की जाल से संपुर्ण मुक्ति देना ।

- शाश्वतता और अमरत्व क्या है ?
- शाश्वतता और अमरत्व को हम सापेक्ष के अंदर निरपेक्ष, अनश्वर के अंदर संक्रमक, बदलनेवाली चिजों के अंदर अचल, अस्तित्व मे होनेवाली चिजों के अंदर असलियत मान

सकते है। वह परिमित के अंदर अनंतता है, एकता का द्वैत है, अवास्तविकता की वास्तविकता है, अस्तित्वहीन अवस्था का जीवन–अस्तित्व है ।

- शाश्वतता और अमरत्व का मतलब है बोधगम्य न होनेवाली चिजों को समझना है, अद्‌भूत चिजों के बारे मे सोचता है, यह अव्यक्त की परिभाषा है, अप्राप्य चिजो को प्राप्त करना है, मन का कभी प्राप्त न होनेवाला उद्देश्य है, मन की मदद से मन के उपर उठना है ।
- शाश्वतता और अमरत्व निर्माण का प्रशंसनीय स्तोत्र है, बुध्दि का बजनेवाला गीत है, सत्य की चमकनेवाली प्रतिमा है, संज्ञान मे व्यस्त मनुष्य का महान सृजन है, महान एकता की शांती है।

अज्ञान के अमर्याद महासागर मे नाम ‘‘स्व’’ अपने नि:संदिग्ध गुणाँ के साथ प्रकट होता है: अलगाव विचार–प्रक्रिया और इच्छाए।

अलगाव की कल्पना के बाद अनिवार्य रीति से ‘‘स्व’’ न होनेवाली चिजों का अस्तित्व हमे मानता पडता हूं, जिनको हम संवेदनाओं के माध्यम से समझते है, इसका मतलब है हमे हमारे ‘स्व’ के विरोध मे होनेवाली चिजो का अस्तित्व मानना पडता है । अगर यथार्थ ढंग से कहा जाए तो अलगाव का मतलब है जीवन–अस्तित्व की आदि अवस्था की कल्पना, जो जीवन–अस्तित्व का सबसे पहला नि:संदेह सत्य है – ‘‘मै हूं’’

मन अपनी गतिविधियों से विचार प्रक्रिया के कर्ता का और उसे विरोध करनेवाले अनेक कर्ताओं का निर्माण करता है ।

इच्छा का निर्माण के कारण–परिणामों के अनिश्चित प्रवाह मे, निर्दय कर्म के प्रवाह मे, वास्तविकता मे जिनका अस्तित्व नही है ऐसे जन्म और मृत्यु के प्रवाह मे परिवर्तन हो जाता है, जो अंतहीन अवस्था के बोधगम्य न होनेवाले महासागर से निकलता है और इस परम सुख के अनंत शाश्वत महासागर मे घुल जाता है ।

जीवन–अस्तित्व के प्रधान कारण के निरंतर खोज के दौरान मन अनिवार्य रीति से द्वंद्वात्मक विकास का दुसरा नियम खोजता है, जो जीवन–अस्तित्व के शास्त्र का सूत्र है और उसे

हम कारणोंकी पदानुक्रम का नियम कह सकते है, उसे हम इस प्रकार सूत्रित कर सकते है : कारण जितना सामान्य होता है उतने ही जादा उससे परिणाम निकलते है, इसका मतलब है कारण जितना जादा सामान्य उतने जादा परिणाम वह निर्माण करता है ।

नियत अर्थ मे प्रकृति मे कारण और परिणामोंका स्वतंत्र अस्तित्व नही होता है । हर कारण उससे जादा सामान्य कारण से उत्पन्न होता है और उस जादा सामान्य कारण की तुलना मे परिणाम बन जाता है । वह कारण कम सामान्य प्राकृतिक घटना निर्माण करता है और खुद उसके लिए कारण बन जाता है । दुसरे शब्दों मे कहा जाए तो हर प्राकृतिक घटना को हम एक साथ कारण और परिणाम मान सकते है। इस कारण और परिणाम की कतार को, जिसे निर्माण का प्रवाह कहते है, हमारे ''स्व'' के दोनो तरफ अनंतता तक उसके अचल गुणों के साथ याने अलगाव, विचार-प्रक्रिया और इच्छाओं के साथ, बढाया जा सकता है ।

इसका मतलब है विलंब की गतिविधिया अपरिमित कारणों के एकत्रित कृतियों से सुनिश्चित हो जाती है, उसमे से किसी भी कारण को हम उससे जादा सामान्य कारण की तुलना मे कारण कह सकते है जब यह कारण परिणाम बन जाता है।

कारणो के पदानुक्रम के नियम का कार्य और जीवन-अस्तित्व के शास्त्र के सूत्र का कार्य, विश्व इनका आधार मन का सहज - विरोध है, जो उसके स्वरूप मे छिपा होता है । निरपेक्ष सत्य का, जो अश्राव्य है और जिसका अस्तित्व सर्वोच्च वास्तविकता मे होता है, पिछा करते हुए मन को ऐसी परिस्थितीयों का सामना करना पडता है, जिनका सार है : कारण जितना जादा सामान्य होता है, उतना जादा उसके बारे मे विचार करना कठिन होता है और उसका सार पर्याप्त रीति से निर्धारित करना भी उतना ही जादा कठिन होता है।

इस दुनियामे बहुत सत्य है, लेकिन उनमे एक सर्वोच्च सत्य है, जो बाकी सारे सत्यों को नियंत्रीत करता है। यह सत्य का पदानुक्रम है अथवा सत्य की तुलना मे कारणों का पदानुक्रम है - यह दर्शन का मुख्य उद्देश्य है ।

- सत्य क्या है, सर्वोच्च ज्ञान क्या है?
- सत्य आरंभ और अंत है, स्त्रोत और चैनल है, मार्ग और उद्देश्य है, वह सर्वोच्च पांण्डित्य की शाश्वत शांती है, जीवन-अस्तित्व की सर्वोच्च एकता है ।
- सत्य और सर्वोच्च ज्ञान अव्यक्त होते है, लेकिन वह हर ध्वनी मे व्याप्त है। यह कुछ तो ऐसा है जो समझ के बाहर होता है लेकिन वह हमारे विचार को प्रेरणा देता है, यह कुछ तो बोधगम्य नही है, लेकिन वह अनिवार्य रीती से हर चिज मे प्रकट होता है, यह मन का कमी प्राप्त न होनेवाला उद्देश्य है, यह मन की मदद से मन के उपर उठना है।
- सत्य खिलने की सर्वोच्च एकता है, वह जीवन-अस्तित्व का आधार है, जीवन-अस्तित्व का स्त्रोत है, वह खुद जीवन-अस्तित्व है, वह सर्वोच्च विवेकी परम सुख है ।
- सत्य अंतहीन स्थिर शाश्वतता है, मौन का किनारा न होनेवाला महासागर है, प्रकाश का महासागर है, अस्तित्वहीन अवस्था का महासागर है, सर्वोच्च जीवन-अस्तित्व का महासागर है ।

जीवन-अस्तित्व के सर्वोच्च सत्य की तुलना मे बाकी सारे सत्य संकुचित क्षेत्र मे लागू होते है और अंतमे वह उसके उपर ही आधारीत होते है लेकिन ऐसा और जादा सामान्य सत्यों के माध्यमसे होता है। दुसरे शब्दों मे कहा जाए तो दुसरे सारे सत्यों का निर्माण प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रीति से जीवन-अस्तित्व के सर्वोच्च सत्यसे ही होता है और वह जादा व्यापक सामान्यता से प्राप्त होता है।

यह कारण जीवन-अस्तित्व के सर्वोच्च सत्य के जितना जादा करीब होता है उतना ही जादा वह सामान्य होता है, वह उतने ही जादा सामान्य सत्य धारण करता है और संकुचित क्षेत्र मे उपयुक्तता होनेवाले और जादा सत्य उसमे से निकलते है । इसलिए हम ऐसा निष्कर्ष निकाल सकते है की अंत मे सत्य एक ही होता है और उसका अस्तित्व हर चिज मे होता है, यहां प्रश्न सिर्फ इस सत्य के सच्चाई का होता है, अगर ऐसा कहना उचित है, इसका मतलब है संकुचित

क्षेत्र मे लागू होनेवाला यह सत्य जीवन-अस्तित्व के सर्वोच्च सत्य को कितने यथार्थ ढंग से व्यक्त करता है, वह जीवन अस्तित्व के सर्वोच्च सत्य के कितने करीब पहुंच सकता है - यह प्रश्न महत्वपुर्ण है।

यह सत्य जीवन-अस्तित्व के सत्य से जितना जादा दूर होता है, उतनी ही कम इसमे शक्ति होती है, इसके विपरीत यह संकुचित क्षेत्र मे लागू होनेवाला सत्य जीवन-अस्तित्व के सर्वोच्च सत्य को जितने जादा अच्छी तरह से व्यक्त करता है, जितने जादा वह करीब होते है, उतना ही जादा वह सत्य व्याप्त होता है, इतनी ही जादा उसकी शक्ति होती है और इसके परिणाम स्वरूप वह जादा सच्चा होता है ।

यहां एक और बात का जिक्र करना आवश्यक है : संकुचित क्षेत्र मे लागू होनेवाले सत्य, सिर्फ जादा सामान्य सत्य की पुष्टि करते है, जिसके उपर वे आधारित होते है, लेकिन सबसे जादा सामान्य सत्य इन सत्योपर आधारीत नही होता है, जिस प्रकार कारण परिणामों का निर्माण करते है, जो उससे निर्माण होता है, लेकिन वह इन परिणामोंपर आधारीत नही होता है ।

हम निष्कर्ष निकाल सकते है कि सत्य दर्शन का विषय है इसलिए दार्शनिक अन्वेषण की सबसे अमोघ रीति है : तर्क से अनुमान की ओर से सर्वसामान्य नियम खोजना, अगर हम तर्क से अनुमान की रीति को सरलता से सामान्य मे विशिष्ट निष्कर्ष निकालना और सर्वसामान्य नियम की खोज को एकता से (विशिष्ट से) सामान्य की ओर संक्रमण मानते है । इस तर्क की अनुमान की ओर से सर्वसामान्य नियम खोजने की रीति की परिभाषा से हम कह सकते है कि इस रीति का अर्थ है : जादा सामान्यीकरण से कम सामान्य प्रकार के निष्कर्ष की ओर संक्रमण करना और दार्शनिक अन्वेषण के दौरान विशिष्ट से सामान्य की ओर संक्रमण की मदद से सामान्य वक्तव्य की ओर वापस आना ।

एकाग्र विचार की मदद से अंततः हम सर्वसामान्य नियम को खोजते है जिसके आधारपर बाद मे हम कम सामान्य समस्याए सुलझा सकते है । ये समस्याए हमे और जादा

विशिष्ट निष्कर्ष की ओर ले लाती है, इसके विपरीत भी सही है, हम सामान्य अनुभव के सिध्दान्त से और जादा सामान्य सिध्दान्त प्राप्त करते है और यह प्रक्रिया जब तक हम अनुभवों की दुनिया का अंतिम आधार नही खोजते तब तक चलती रहती है – प्राय: हमारा अंतिम सामान्य नियम यह अंतिम आधार ही है। यह अन्वेषण का प्रारूप आसान किया हुआ है यह बात अलग से बताने की आवश्यकता नही है।

वस्तुत: जीवन–अस्तित्व खुद इस प्रारूप का उपयोग करके परिपुर्ण हो जाता है । इसका मतलब है यह सामान्य के विशिष्ट मे से उत्पन्न होने की और विशिष्ट और जादा सामान्य मे घुल जानेवाली प्रक्रिया जैसा है । दुनिया, विश्व एक साथ ही विकास और आत्म–विकास की प्रक्रियाए है अथवा हमकह सकते है कि प्रकृति का विकास के माध्यम से विस्तार होता है और संक्रमकता की विविधता कम होती है, अनेकता आत्म–विकास के माध्यम से एकता मे वापस आती है। अचल, अनंतता और शाश्वतता की एकता विकास की प्रक्रिया के दौरान परिमित की विविधता बन जाती है और संक्रमकता के विविधता मे बदल की प्रक्रिया अचल अनंत और शाश्वत एकता मे आत्म–विकास के दौरान वापस आ जाती है।

हमारा मूर्त ''स्व'' अपने अनिवार्य गुण अलगाव, विचार–प्रक्रिया और इच्छाओं के कारण खुद को अलगाव के महान भ्रम के खेल मे परिपुर्ण बनाता है, यह खेल ऐसा है जहां निरपेक्ष की एकता आपेक्ष की अनेकता से खेलती है यह शाश्वत और अशाश्वत का, अनंत और परिमित का, संक्रमक और अनश्वर का खेल है।

सबसे जादा सामान्य की एकता एक की विविधता बन जाती है, उसी वक्त विशिष्ट की विविधता सबसे जादा सामान्य के उंचाई तक पहुंच जाती है और उसके अंदर घुलने तक यह प्रक्रिया जारी रहती है।

अब यह बात स्पष्ट है कि दार्शनिक विचारों का अंतिम सामान्य नियम इस प्रकार है : सभी चिजो की एकता जीवन–अस्तित्व का सर्वोच्च सत्य है और मनुष्य जीवन–अस्तित्च के

इस महान एकता का केंद्र है, यह जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च सार है, जीवन-अस्तित्व की सर्वोच्च वास्तविकता है। मेरा अस्तित्व सभी चिजो मे है और सभी चिजो का अस्तित्व मेरे अंदर है - यह जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च सत्य है ।

बाकी सारे सत्य प्रत्यक्ष रूप मे अथवा सापेक्षत: (उनके सामान्यीकरण के स्तरपर निर्भर करके, इसका मतलब है सामान्यीकरण के उनके मर्यादापर निर्भर कर के) इस जीवन-अस्तित्व के इस सर्वोच्च सत्य से निर्धारीत होते है और उसकी तुलना मे उन्हे जादा विशिष्ट मान सकते है । उदाहरण के लिए हम कह सकते है : भलाई और बुराई का सबसे अच्छा और एक ही मानक सभी चिजोंकी एकता का सत्य है । सत्य की ओर जानेवाला सबकुछ अच्छा या भला है, लेकिन सत्य से दूर ले जानेवाला सबकुछ बुरा है। जीवन- अस्तित्व के सभी चिजों के एकता के सर्वोच्च सत्य की परिभाषा से अंतिम सामान्य नियम मे हम भलाई की परिभाषा इस प्रकार निर्धारीत कर सकते है : भलाई का मतलब है एकता की तरफ ले जानेवाला सबकुछ, अस्तित्व मे होनेवाली चिजो को जोडनेवाला सबकुछ और बुराई की परिभाषा है: एक संपुर्ण से अलग करनेवाली कुछ चिजे ।

उदाहरण के लिए हम कह सकते है की स्वार्थ और आत्म-हित संबंधों को तोड देते है और अहंकार बढाते है, एक संपुर्ण से अलगाव की ओर ले जाते है, इसलिए अनिवार्य रीति से वे बुराई है। नि:स्वार्थता से हम बनावटी व्यक्तित्व का त्याग करते है, इसलिए यह मार्ग हमे एकता की ओर, सामान्यता की ओर ले जाता है और इसलिए वह भलाई का मार्ग है। उसी प्रकार हम दयालुता और द्वेष का और ईमानदारी और बेईमानी का, पवित्रता और अपवित्रता, संयम और चित्त का आवेग, पैसे हडप नही करना और लोभ इनका भी मुल्यांकन कर सकते है ।

एक सबको परिचित नैतिक आदेशक को इस भलाई और बुराई के परिभाषा से जोडना चाहिए : ऐसी कोई भी कृति कभी भी नही करना जो आप खुद के साथ घटित हो ऐसा नही

चाहते है, इसके विपरीत आप हमेश ऐसी कृती करने का प्रयास करे जो आप दुसरे लोग आपके साथ करना चाहते है। अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजे एकत्रित है इसलिए सबको सब कुछ मालुम है इसके बावजुद की यह ज्ञान कुछ समय के लिए हमारे अंदर छिपा होता है । हमारी सभी कृतिया शीघ्र या बाद मे हमारी ओर योग्य नियमित रीति से क्लेश और परम सुख के रूप मे वापस आ जाती है। जो मनुष्य दुसरो को जान बुझकर क्लेश देता है उसे उसी तरह क्लेश भोगने पडते है – यह जीवन–अस्तित्व के सर्वोच्च सत्य का, महान एकता के सत्य का एक प्रकटीकरण है। इसलिए हम क्लेश और परमसुख के सार के बारे मे निष्कर्ष निकाल सकते है। क्लेश का मतलब है बुराईका खुद की ओर वापस आना और परम सुख और आनंद का मतलब है भलाई का खुद की और वापस आना ।

जब हम हमारे ''स्व'' की ओर, हमारे असली सार की ओर चित्त एकाग्र करते है, जब हम आत्मसंज्ञान की कृति को पूर्ण करने का प्रयास करते है तब हम कारणोंके पदानुक्रम के नियम को हमारे अंदर ''स्व'' के पदानुक्रम के रूप मे देख सकते है। मायकेल जितना जादा मारकेल को खुद के अंदर पा सकता है और अलेक्झांदर जितना जादा खुद के अंदर अलेक्झांदर को पा सकता है, उतना ही जादा अहंकार और अलगाव हमारे अंदर छिपा रहता है और उतना की कम हम महान एकता के सत्य को हमारे अंदर साकार करते है और इसके परिणाम स्वरूप हम हमारे असली ''स्व'' से हमारे असली अमर स्वरूप से और जादा दूर चले जाते है । अपरिमित अहंकारी इच्छाओंके गड्डे मे डुबना, क्लेश के रसातल मे डुबना, वस्तु और घटनाओंकी दुनिया के शब्द और आकारो के प्रति अमर्याद बंधन, परिमित की अपरिमित दुनिया, संक्रमक की अनेकता, बदलनेवाली चिजों की अचलता इन सब के कारण मनुष्य खुद को अपने ''स्व'' के समान मानने लगता है, इसका मतलब मनुष्य खुद को शरीर, संवेदना और मन इनका संयोग ही मानने लगता है। हमारा असली निरपेक्ष ''स्व'' किसी तरह जादा से जादा अनुभवजन्य ''स्व'' से जुड जाता है, अज्ञान का अंधेरा गाढा हो जाता है, विचार–प्रक्रिया

आत्म-चिंतन के सर्वोच्च ज्ञान की, खुद के अंदर सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन की जगह लेती है, उसके बाद तर्क शक्ति, संवेदनाएँ और भावनाए इस विचार-प्रक्रिया की जगह लेते है।

इसके बिल्कुल विपरीत हमारा असली सार जितना जादा स्पष्ट हो जाता है, उतनी ही जादा अच्छी तरह से सामान्य चिजे, जो हम सब जानते है और सभी चिजों मे व्याप्त है और जीवन-अस्तित्व की महान एकता को निर्धारीत करते है, हमे स्पष्ट हो जाती है और उतना ही जादा सत्य हमारे अंदर चमकता है, उतनी ही जादा गहराई तक हम शक्ति-ज्ञान-प्रेम-नि:स्वार्थता के मार्गपर हम हमारी सभी चिजों के साथ एकता को समझते है और उतना ही जादा असली ''स्व'', हमारा अमर निरपेक्ष सार स्पष्ट हो जाता है, उतनी ही जादा विचार-प्रक्रिया और अलगाव सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन के अंतर्ज्ञान मे, सर्वोच्च अंतर्ज्ञान मे (यह परमानंद के प्रकटीकरण की क्षणिक दीप्ति नही होती है, बल्कि यह अंतर्ज्ञान की संकल्प की कृति होती है, अंतर्ज्ञान की गहरे हो जानेवाले एकाग्रता मे नियंत्रित प्रक्रिया होती है) घुल जाते है और इसका आधार हमारी बलवान इच्छा-शक्ति, बुध्दि, गुण, चित्त के आवेग का त्याग, दार्शनिक का आत्मत्याग है, जो दृढ यथाक्रम एकाग्रता के व्यायाम, निरंतर ज्ञान प्राप्त करना, इच्छा-शक्ति, नि:स्वार्थता और सर्वव्यापी प्रेम इनके उपर आधारीत होते है ।

हमारा असली ''स्व'' हमारे असली निरपेक्ष ''स्व'' की अनेक अवस्था धारण करता है, वह हमारा असली सार और आध्यात्मिकता के बाहर होनेवाली निचले स्तर की चिजो को भी धारण करता है, अज्ञान के कारण उत्पन्न हुए अलगाव के रसातल के अंधेरे से, बंधन के क्लेश से और अहंकारी इच्छाओ से चित के आवेग के त्याग के सर्वोच्च पाण्डित्य की चमकनेवाली उंचाई तक, आत्मत्याग तक, गहरी एकाग्रता मे प्रकटीकरण के सर्वोच्च ज्ञान तक, आत्मसंज्ञान और आत्म-चिंतन के सर्वोच्च अंतर्ज्ञान के परम सुख तक सब कुछ हमारे ''स्व'' मे शामिल होता है।

‘‘स्व’’ के पदानुक्रम की परिभाषा से शुरूआत करके, इसका मतलब है ‘‘स्व’’ के अंदर निरपेक्ष और सापेक्ष के बिच सहसंबंध से शुरूआत करके, निरपेक्ष ‘‘स्व’’ और अनुभवजन्य ‘‘स्व’’ के बिच सहसंबंध से शुरूआत करके अब हम इन दो पदानुक्रम की परिभाषा देने का प्रयास कर सकते है, जिनको हम सबसे महत्वपूर्ण दार्शनिक पदानुक्रम मान सकते है और उनका सार अंतरिक्ष और समय है ।

अंतरिक्ष खुदकी निरपेक्षता का चिंतन करनेवाला ‘‘स्व’’ जैसे होता है, इसका मतलब है हमारे व्यक्तित्व के बावजुद हमारे सबके बिच कुछ चिजे सामान्य होती है और वे है : हमारे ‘‘स्व’’ की निरपेक्षता, जो चिंतन का विषय बन जाती है, वह चिंतन का चिंतन है, वह खुद का खुद की ओर वापस आना है, वह स्थिर अनंत शाश्वतता है, चिंतन का चिंतन है, अस्तित्वहीन अवस्था का जीवन अस्तित्व है ।

समय खुद का काल्पनिक ओछेपनका चिंतन करनेवाला ‘‘स्व’’ है, इसका बनावटी अलगाव है और वास्तविकता मे अवास्तव होनेवाली सापेक्षता है । अगर अलगाव ‘‘स्व’’ की एक विशेषता है, जो जीवन-अस्तित्व की प्रधान कल्पना है और जी ‘‘स्व’’ के विरोध मे ‘‘स्व’’ के बाहर होनेवाली किसी चिज का अस्तित्व मानती है, याने की ‘‘स्व’’ के खुद के विरोध मे किसी चिज का अस्तित्व मानती है, तो समय इस विरोध का, अस्थिरता का, जीवन-अस्तित्व के प्रवाह के परिवर्तनका चिंतन है ।

समय अथवा आत्म-चिंतन, ‘‘स्व’’ की निरपेक्षता, जो चिंतन के स्वरूप मे होती है और समय किसी तरह मन और अंतर्ज्ञान की द्वंद्वात्मक एकता है, सर्वसामान्य रूप मे चिंतन की एकता है, सृजनशील कृति के रूप मे चिंतन है और आदि अवस्था के सृजन की निश्चित परिभाषा है, बोध की प्रक्रिया मे व्यस्त ‘‘स्व’’ के विरोध मे चल रहे महान सृजना की अभिव्यक्ति है, इसका मतलब है विचार के कर्ता के रूप मे ‘‘स्व’’ का विरोध है और विचारों के वस्तुओं की अनेकता के रूप मे ‘‘स्व’’ का विरोध है ।

जिस प्रकार समय मनुष्य के असली अविनाशी स्वरूप के प्रत्यक्ष चिंतन मे अनंत शाश्वतता के अचलता के साथ बहता है, उसी प्रकार उसका निरपेक्ष ''स्व'' उसकी निरपेक्षता, मन और विचार-प्रक्रिया गहरी एकाग्रता के चिंतन मे घुल जाते है, इसका मतलब है गहरी एकाग्रता के समाधी के दौरान मनुष्य खुद के अंदर सत्य का वही प्रत्यक्ष चिंतन करता है।

नियत अर्थ मे अंतरिक्ष ओर समय की परिभाषा इस प्रकार दे सकते है: अंतरिक्ष अनेकता मे एकता है और समय एकता मे अनेकता है । अंतरिक्ष के बाहर कोई समय नही होता और समय के बाहर कोई अंतरिक्ष नही होता है - अंतरिक्ष और समय के बिच द्वंद्वात्मक संबंध है । अगर अंतरिक्ष चिंतन का चिंतन है, तो समय चिंतन का निर्माण है, अंतरिक्ष को भरना है, अनंतता की बनावटी परिमितता है, अपने खुद की छाया का निरंतर पीछा करना है, असत्य भ्रम की असत्य सीमा है, पानी के सतह पर तुरंत लुप्त होनेवाले अपरिमित अक्षर है, अस्थिरता की हमेशा पिघलनेवाली मृगमरीचिका है, वास्तविकता मे प्रकट होनेवाला जादु का खेल है ।

अंतरिक्ष निरपेक्षता है, ''स्व'' की वास्तविकता है, चिंतन का चिंतन है, इसका मतलब है चिंतन को ''चिंतन बनानेवाला कुछ तो है''। समय ''स्व'' के निरपेक्षता का अस्वीकार है, तो ''स्व'' के खुद के निरपेक्षता के अस्वीकारके निर्माण के दौरान करनेके निरंतर चिंतन की आकांक्षा रूप मे व्यक्त होता है। ये कुछ तो ऐसा है जो चिंतन का निर्माण मे परिवर्तन करता है, निरपेक्षता मे चिंतन और सापेक्षता का निर्माण करता है। दुसरे शब्दों मे कहा जाए तो समय ''स्व'' के निरपेक्षता की काल्पनिक और बनावटी सीमा का अनंत अशाश्वता तक विस्तार है, इस निरपेक्षता की अस्वीकार की सीमा है ।

शुरूआत से ही हमारे ''स्व'' को आत्म-चिंतन के परम सुख की आकांक्षा होती है ।

इस आदि अवस्था के, ''स्व'' के अंदर दिये हुए स्वरूप के कारण आत्म-चिंतन की आवश्यकता उत्पन्न होती है, जो दर्शन के मौलिक प्रश्न का संतोषजनक उत्तर देता है; ये प्रश्न है

: निरपेक्ष किस प्रकार, क्यो ओर किस उद्देश्य के लिए सापेक्ष बन जाता है, अचल, अनंत और शाश्वत संक्रमक, परिमित और बदलनेवाला बन जाता है ।

शुरूआत से ही आत्म-चिंतन के परम सुख की आकांक्षा यह ''स्व'' की अनिवार्य रीती से विशेषता है और इसके कारण हम जीवन-अस्तित्व और विश्व की परिभाषा इस प्रकार दे सकते है:

जीवन-अस्तित्व और विश्व ''स्व'' की आत्म-चिंतन के प्रवृत्ति का प्रकटीकरण है, ''स्व'' का इस निरपेक्षता के अस्वीकार के दौरान, खुद की अनिवार्य विशेषताए: अलगाव, विचार-प्रक्रिया और इच्छाओं की मदद से इस अस्वीकार को विरोध करके इस निरपेक्षताका आत्मचिंतन है। ''स्व'' के अंदर की अलगाव, विचार, प्रक्रिया और इच्छाओंकी एकता यह जीवन-अस्तित्व का सार है।

''स्व'' न होनेवाली चिज का निर्माण करके खुद के अस्वीकार के माध्यम से आत्म-चिंतन साकार करता है, इसका मतलब है निर्माण के माध्यम से ''स्व'' खुद की निरपेक्षता सीमित करता है और उसे दूर करता है, इस अस्वीकार को अस्वीकार करके निरपेक्षता की ओर वापस आ जाता है।

''स्व'' अनजाने मे आत्म-चिंतन की कभी न मिटनेवाली आकांक्षा पुरी कर देता है, अगर अधिक उचित शब्दों मे कहा जाए तो ''स्व'' जादा जानकारी से निरंतर आत्म-चिंतन के माध्यम से खुद की अस्तित्वहीन अवस्था निर्माण करता है और अनजाने मे हुए इस निर्माण के परिणामों का जानकारी के साथ इस्तेमाल करता है, यह सब आत्मचिंतन से होता है और इसके लिए निरंतर निर्माण के प्रवाह को आशा, इच्छा-शक्ति और कृतियों से भर दिया जाता है। यह निर्माण, सुरक्षीत रखना और नाश का महान सृजनशील कार्य निरंतर चलता रहता है और कभी भी रूकता नही है। इसके बाद एक साथ प्रकृति या आत्मा की विकास और आत्म-विकास की

प्रक्रिया चलती रहती है जो प्रकृति की दुनिया के विस्तार मे व्यस्त होती है, इस प्रकृति के विकास के प्रक्रिया के दौरान नाजुक चिजे सख्त बन जाती है (यह ‘‘स्व’’ के निरपेक्षता का प्रथम अस्वीकार है) और प्रकृती आत्म-विकास मे व्यक्त होती है, इस प्रक्रिया के दौरान प्रकृति की दुनिया कम हो जाती है और सख्त चिजों की तिव्रता कम हो जाती है (यह दुसरा अस्वीकार है, ‘‘स्व’’ के निरपेक्षता के अस्वीकार का अस्वीकार है)।

अंत मे ‘‘स्व’’ की आत्म-चिंतन के परम सुख की कभी निशक्त न होनेवाली आकांक्षा, जो बनावटी आत्म सीमितता के माध्यम से व्यक्त होती है, अहंकारी इच्छाओं की कभी न मिटनेवाली प्यास के रूप मे व्यक्त होती है, यहां एक और बात कहना भी उचित होगा : ‘‘स्व’’ की आत्म-चिंतन की इस आकांक्षा का अंत मे अपरिमित अहंकारी इच्छाओमे परिवर्तन हो जाता है, जो पतिमित के बदलो के प्रवाह मे, संक्रमक के अग्राह्यता मे, एक दुसरे को निर्माण करनेवाले कारण और परिणामो के निरंतर प्रवाह मे, निर्माण के अनिश्चित प्रवाह मे अलगाव के महान भ्रम के प्रवाह मे बह जाती है ।

समय अंतरिक्ष की परिपुर्णता को मान देता है, इसका मतलब है वह ‘‘स्व’’ की निरपेक्षता को सीमित करता है और उसका अस्वीकार करता है, ‘‘स्व’’ का संपुर्ण से अलगाव को अस्वीकार करता है । समय इस परिमित की सीमितता के सापेक्ष स्वरूप का प्रतिक है, वह एकता की अनेकता की परिमितता की, अलगाव के महान भ्रम के सापेक्ष स्वरूप की अनिवार्य शर्त है ।

इस प्रकार के मार्ग पर हम समय के कडी की परिभाषा दे सकते है : वर्तमान अतीत से निकलता है, वर्तमान भविष्य का आधार है। इसका अर्थ है हमारा वर्तमान अस्तित्व हमारे अतीत की कृतियो से निर्धारीत होता है, और हमारे वर्तमान की कृतिया हमारे भविष्य के अस्तित्व को निर्धारीत करती है । हर क्षण मे अतीत वर्तमान का भविष्य है, वर्तमान अतीत है,

जो भविष्य बन जाता है और भविष्य वर्तमान है, जो अतीत बन जाता है । दुसरे शब्दों मे कहा जाए तो भविष्य वर्तमान का अतीत मे बदलने के लिए विवश करता है।

अगर हम आगे बढे और समय के इस कडी का आधार क्या है यह खोजने का प्रयास करे तो अनिवार्य रीति से हम कर्म की परिभाषा तक पहुंच जाते है अथवा हम कह सकते है कि स्वतंत्रता से निर्माण हुई आवश्यकता हमे मिलती है, जिसका मतलब है अंत मे इस दुनिया मे सब कुछ वस्तुत: निर्दिष्ट है और एक दुसरे से जुडा हुआ होता है और एक सुदरे से संबंधीत है। यह निर्धारण मनुष्य के खुद के अहंकारी इच्छाओंका, अतीत के कृतियोंका फल भोगने की आवश्यकता से उत्पन्न व्यापक सामान्यता का परिणाम है और यह आवश्यकता उत्पन्न होने का और एक कारण है : मनुष्य के इच्छा-शक्ति की संपुर्ण स्वतंत्रता क्योकि मनुष्य जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च सत्य है, जीवन-अस्तित्व के सर्वोच्च एकता का केंद्र है, जीवन-अस्तित्व की सर्वोच्च वास्तविकता है ।

आत्मसंज्ञान और आत्म-चिंतन की मनुष्य की अनुली क्षमता, गहरी एकाग्रता का अंतर्ज्ञान, समाधी, खुद के असली अमर स्वरूप का प्रत्यक्ष चिंतन, खुद के अंदर सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन की अमुल्य क्षमता ये मनुष्य के इच्छा-शक्ति का संपुर्ण स्वतंत्रता के कारण है।

अगर आगे बढ के हम मनुष्य के इस असली अनश्वर स्वरूप के सार की परिभाषा देने का प्रयास करे, इसका मतलब है अगर हम हमारे निरपेक्ष ''स्व'' की जीवन-अस्तित्व के प्रधान कारण के रूप मे, अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजो के मुख्य तत्व के रूप मे परिभाषा देने का प्रयास करे तो हम एक निर्विवाद तथ्य खोजते है : इस सार का सिर्फ गहरी एकाग्रता मे, समाधी मे, प्रत्यक्ष चिंतन हो सकता है, लेकिन इस सार की पर्याप्त परिभाषा नही है और नही भी हो सकती । ऐसा होता है क्यो कि शाश्वत को परिमित से नापना अनश्वर को संक्रमक से नापना संभव नही है। परमेश्वर, आत्मा ऐसी संकल्पनाए सिर्फ हमारे निरपेक्ष सार की परिभाषा देने के लिए प्रतिक है, और उनके अंदर आवश्यक जानकारी नही होती है । हम कह सकते है कि

शक्ति, बुध्दी, सर्वव्यापी प्रेम जीवन-अस्तित्व के प्रधान कारण के सबसे अच्छे प्रकटीकरण है। हम शक्ति-ज्ञान-प्रेम-नि:स्वार्थता इस चार - स्तर के मार्ग की बात कर सकते है, जो हमे गहरी एकाग्रता की स्थिती प्राप्त करने की ओर ले जाता है, इस मार्ग पर चलते हुए हम खुद के अंदर जीवन-अस्तित्व के सभी चिजों की एकता के सर्वोच्च सत्य को साकार कर सकते है और मनुष्य इस जीवन-अस्तित्व की महान एकता का केंद्र है इस तथ्य को समझ सकते है, लेकिन हमारे असली अमर स्वरूप की परिभाषा निर्धारीत करना, इस निरपेक्ष सत्य की परिभाषा निर्धारीत करना, इस सर्वोच्च वास्तविकता को जीवन-अस्तित्व के प्रधान कारण को, जिसका अस्तित्व हर चिज मे है, शब्दो मे व्यक्त करना बिलकुल संभव नही है। इसलिए भारतीय दर्शन मे वे इस प्रधान कारण की नकारात्मक परिभाषा देते है : नेती, नेती (यह नही, वह नही)

२०/१-१९८६ - ३१/१२/१९८७.

अध्याय – ५

ज्ञान, मन और अंतर्ज्ञान

- ज्ञान क्या है?
- ज्ञान की परिभाषा हम इस प्रकार दे सकते है : ज्ञान का मतलब है मन के माध्यम से सत्य को समझना, यह सत्य का चेतना मे प्रतिबिंब है, अचल, अनंत और शाश्वत का संक्रमक मे, परिमित मे और बदलनेवाली चिजो मे प्रतिबिंब है, यह परिमित की निरपेक्षता है ।
- ज्ञान मनुष्य की अप्राप्य, विचारो के बाहर और बोधगम्य न होनेवाली, चिजो का निरंतर पीछा करने की मन के आदि अवस्था से चली आ रही प्रवृत्ती का प्रतिबिंब है ।
- ज्ञान ''स्व'' के आत्म-चिंतन के परम सुख की अनिवार्य और निरंतर आकांक्षा का प्रतिबिंब है, यह माया का रूपांतरित होना है, यह अनंतता की शाश्वतता है, यह शाश्वत, विवेकी परम सुख है।
- सर्वोच्च ज्ञान क्या है?
- सर्वोच्च ज्ञान की परिभाषा हम इस प्रकार दे सकते है: यह मनुष्य का खुद के अंदर सत्य का प्रत्यक्ष चिंतन है, यह आत्मसंज्ञान और आत्म-चिंतन का सर्वोच्च अंतर्ज्ञान है, यह गहरी एकाग्रता मे, समाधी मे मनुष्य ने महान एकता के सत्य के परम सुख को समझना है, यह मनुष्य ने खुद की निरपेक्षता को, अपनी शाश्वत स्वतंत्रता का और संबंधहीन अवस्था को समझना है, अपनी असली श्रेष्ठता को, अंतहीन स्वरूप को समझना है, इसका मतलब है मनुष्य ने खुद को जीवन-अस्तित्व की सर्वोच्च वास्तविकता के रूप मे समझना, जीवन-अस्तित्व के सर्वोच्च सत्य के रूप मे समझना, खुद को जीवन-अस्तित्व का महान एकता के केंद्र के रूप मे समझना।

प्रत्यक्ष चिंतन के वस्तु को प्रयाप्त मात्रा मे शब्दो मे व्यक्त करना संभव नही है । वस्तुत: यह थीसिस ज्ञानेंद्रियी की मदद से अंतर्ज्ञान के चिंतन के बारेमे है। उदाहरण के लिए हम पिला

रंग क्या है अथवा कडवा स्वाद क्या है इनकी उचित परिभाषा नही दे सकते है, उसी प्रकार हम उचे स्वरमान का ध्वनि क्या होता है अथवा दृढता क्या होती है यह सब उचित शब्दो मे स्पष्ट नही कर सकते है। उसी प्रकार हम समाधी मे जो चिज खोजते है उसे उचित ढंग से व्यक्त नही कर सकते, उसी प्रकार गहरी एकाग्रता मे सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन को हम स्पष्ट नही कर सकते, लेकिन इसका मतलब यह नही है कि हम संवेदना के माध्यम से चिंतन और अंतर्ज्ञान, अंतर्ज्ञान की चरम सीमा, गहरी एकाग्रता मे सत्य का प्रत्यक्ष चिंतन समान है ऐसा नही मान सकते। उदाहरण के लिए हम कह सकते है : अपने विचार कम शब्दो मे व्यक्त करना यह पाण्डित्य का एक प्रकटीकरण है, लेकिन यह विशेषता बहुत अज्ञानी मनुष्य की और निर्जिव वस्तुओंकी भी हो सकती है, जो हमेशा शांत होते है । यहां हम पहले अवसर मे ज्ञान के मौन का (अथवा शांती का) विचार करते है और दुसरे अवसर मे हम अज्ञान के मौन की बात करते है जब मनुष्य को क्या कहना यह मालुम नही होता है ।

अगर हम बाहर देखते है तो हमारे लिए एक बात स्पष्ट हो जाती है : हम खुद का चिंतन करते है, हमारे ‘‘स्व’’ को चिंतन के वस्तु के रूप मे समझते है, हमारे ‘‘स्व’’ को सीमित रूप मे समझते है । इस संवेदना के माध्यम से चल रहे चिंतन मे हम हमारे अलगाव के अज्ञान का प्रत्यक्ष चिंतन करते है, हमारे ‘‘स्व’’ का उसके खुद के मर्यादा के रूप मे चिंतन करते है, उसकी निरपेक्षता की मर्यादा का चिंतन करते है (यहां मै आपको एक बात की याद दिलाना चाहता हूं: हमारे अलग-अलग व्यक्तित्व के बावजुद हमारे सब के अंदर ‘‘स्व’’ की निरपेक्षता होती है)। इंद्रियागम्य चेतना की मदद से ‘‘स्व’’खुद का चिंतन के वस्तु मे परिवर्तन करता है और एकता की अनेकता की इंद्रियगम्य और वस्तुनिष्ठ दुनिया का निर्माण करता है, संक्रमक की अनेकता की अनुभवसिध्द दुनिया का, परिमित की अनंतता का निर्माण करता है। यद्यपि इंद्रियगम्य चिंतन मे ‘‘स्व’’ खुद का बनावटी अलगांव प्रत्यक्ष समझ लेता है, भ्रामक सीमा समझ लेता है, इस चिंतन का स्वरूप संकुचित होता है (यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि ‘‘स्व’’ का अलगाव

बनावटी अलगाव है, अनंतता की सीमा अथवा शाश्वतता की सीमा जितनी बनावट होती है, अथवा एकता की अनेकता जितनी बनावट होती है उतनी ही यह बात बनावटी होती है।

जब हम हमारे अंदर देखते है, हमारी खुद की तरफ देखते है तब हम हमारे ''स्व'' का खुद को समझनेवाले ''स्व'' के रूप मे चिंतन करते है। इस चिंतन की कोई सीमा नही होती है क्योकि सत्य की कोई सीमा नही होती और वह अनंत होता है। जैसे - जैसे एकाग्रता गहरी हो जाती है, यह आंतरिक चिंतन का (अगर हम इंद्रियगम्य चिंतन को बाह्य चिंतन कहते है) क्रमिक रीति से प्रत्यक्ष अंतर्ज्ञान के चिंतन मे (जो समाधी मे सत्य होता है) परिवर्तन हो जाता है, खुद के असली निरपेक्ष ''स्व'' के, अमर स्वरूप के प्रत्यक्ष चिंतन मे परिवर्तन हो जाता है ।

इससे एक बात स्पष्ट हो जाती है : जीवन-अस्तित्व और विश्व, एक तरफ, निरंतर ''स्व'' की निरपेक्षता विकास की प्रक्रिया मे अथवा नाजुक चिजो को रास्त बनाने के माध्यम से प्रकृति के दुनिया के विस्तार की प्रक्रिया मे दूर करते है और दुसरी तरफ जीवन-अस्तित्व एक साथ ''स्व'' की निरपेक्षता का दावा करता है। यह सब आत्म-विकास के प्रक्रिया मे सख्त चिजो की तिव्रता कम करने के माध्यम से ''स्व'' की खुद बनाई हुई सीमा कम करनेसे प्राप्त होता है।

अब हम कह सकते है की मन और विचार-प्रक्रिया जानने की प्रक्रिया मे व्यस्त ''स्व'' और पहले ही यह समझने की प्रक्रिया पुरी किए हुए ''स्व'' के बिच की कडीया है, उसी प्रकार ज्ञान और ज्ञान का संग्रह घुलनेवाले मन का अंतर्ज्ञान मे ध्यान करते है, इस प्रक्रिया के दौरान गहरी एकाग्रता मे जानने के प्रक्रिया मे व्यस्त ''स्व'' और जानने की प्रक्रिया पुरी किए हुए ''स्व'' का क्रमिक रीति मे विलय हो जाता है, यह प्रक्रिया आत्मसंज्ञान और आत्मचिंतन के सर्वोच्च अंतज्ञान मे भी चलती रहती है ।

ज्ञान यह स्थिर भ्रामक किनारा है जो मन और अंतर्ज्ञान को अलग करता है। विचार-प्रक्रिया और चिंतन को अलग करता है। यह किनारा अचल और गतिहीन नही है, वह

गतिशील है, वह सक्रिय है और निरंतर विचार-प्रक्रिया के अथवा चिंतन के पास जाता है। जब तक कम होनेवाला अंतर्ज्ञान यह मन की परिभाषा मान ली जाती है, अंतर्ज्ञान के चिंतन का स्तर ज्ञान के अंतर्ज्ञान के स्तर के साथ कम हो जाता है। अंतर्ज्ञान, गहरी एकाग्रता का सर्वोच्च ज्ञात,ज्ञानी मनुष्य का विचारमग्नता के कारण मौन इनकी जगह तर्कयुक्त निर्माण की बकवास लेती है, जो सिर्फ शब्दो के बारे मे रसहीन शब्द होते है और जिन्हे हम समझ नही सकते है। इसके विपरीत अगर चिंतन कम होनेवाली विचार-प्रक्रिया है ऐसा हम मान लेते है तो इसका मतलब है हमारा यह फिसलनेवाला किनारा गहरी एकाग्रता के माध्यम से चिंतन के पास जाता है, मन और विचार-प्रक्रिया का लगातार अंतर्ज्ञान मे विलय हो जाता है, उनका जीवन-अस्तित्व के गहरे सार के प्रत्यक्ष चिंतन मे परिवर्तन हो जाता है, जो सबसे पहले विचार-प्रक्रिया की बढती स्पष्टता मे, परिभाषाओ की यथार्थता मे, ज्ञान के अंतर्ज्ञान की क्षमता के स्तर बढने मे, इसका मतलब है कम शब्दो मे जादा अर्थ व्यक्त करने की क्षमता मे, व्यक्त होता है।

एकाग्रता की गहराई का स्तर यह ज्ञान के अंतर्ज्ञान की क्षमता के स्तर का वस्तु और घटनाओ के मुख्य सार को व्याप्त करने की गहराई का मानक है, एकाग्रता की गहराई नि:संदेह और अनिवार्य रीति से ज्ञान के गुप्तता का भी मानक है। यह एकाग्रता की गहराई बढती है जब मनुष्य खुद के अंदर शक्ति-ज्ञान-प्रेम-नि:स्वार्थता इस चार स्तर के मार्गपर चलते हुए जीवन-अस्तित्व की महान एकता का सत्य साकार करता है।

दुसरे शब्दों मे कहा जाए तो ज्ञान का संचय और बडावा एक प्रक्रिया का अर्थ स्पष्ट करते है और यह प्रक्रिया है: गहरी हो रही एकाग्रता के माध्यम से मन का अंतर्ज्ञान मे परिवर्तन होना। इसके विपरीत भी सच है: कम होनेवाला ज्ञान, जो सबसे पहले जीवन-अस्तित्व की बढनेवाली प्यास मे व्यक्त होता है, धन, कीर्ति, शक्ति इन चिजों की बढनेवाली प्यास मे व्यक्त होता है, इंद्रियगम्य परमसुख और आनंद के पीछा करनेकी प्रक्रिया मे भी यह व्यक्त होता है। इसका मतलब है अंतर्ज्ञान कम होना, मनुष्य का खुद के असली निरपेक्ष स्वरूप के बारे मे

अज्ञान बढना, अहंकारी इच्छाओं के कभी न कम होनेवाले रसातल मे क्रमिक रीति से डुबना, इसका मतलब है परिमित के बदलनेवाली दुनिया मे, संक्रमक की अग्राह्यता मे, एकता की अस्थिरता मे नाम और आकारो के प्रति कभी निश्शक्त न होनेवाले बंधनो के क्लेश।

जब तक ज्ञान, मन और अंतर्ज्ञान के बिच होता है, वह एक साथ मन और अंतर्ज्ञान से जुडा हुआ होता है। खुद को धारणाओ मे व्यक्त करने की क्षमता का अर्थ है ज्ञान मनसे जुडा हुआ है। जब एकाग्रता गहरी हो जाती है, ज्ञान क्रमिक रीति से वस्तु और घटनाओं के अंदर के सार का प्रत्यक्ष चिंतन का परिणाम बन जाता है, वह हमारे पास दु:खदायी दुविधा,खोज, अटकले और कल्पना इन अवस्थाओं से गुजरे बिना ही हमारे पास आ जाता है।

यहा और एक बात का जिक्र करना आवश्यक है : जब ज्ञान विचार-प्रक्रिया और निष्कर्ष के पास जाता है, ज्ञान के धारणाओं की क्षमता, तर्कयुक्तता और इंद्रियगम्यता बढ जाते है, इसका मतलब है धारणाओ मे व्यक्त करने की क्षमता बढ जाती है। लेकिन उसके साथ ही ज्ञान के अंतर्ज्ञान का स्तर, उसकी गुप्तता और गहराई कम हो जाते है, वह सत्य से दूर चला जाता है, जो सबसे पहले शब्दों की बढती हुई संख्या मे और उनमेसे निकलनेवाली कम जानकारी मे व्यक्त होता है। सत्य संदिग्ध बन जाता है, शब्दो के प्रवाह मे डुब जात है, उसका अपरिमित विभाजन हो जाता है, अनेक गिनतीयों के परिभाषाओ के और अनुच्छेदा के प्रवाह मे ज्ञान डुब जाता है, जो ज्ञान को इस मार्गपर व्यक्त करने का प्रयास करते है और विशेष रूप से जो ऐसी वाणीयों के ज्ञान को खोजनेका प्रयास करते है उनके लिए वह वास्तव मे अप्राप्य बन जाता है ।

दुसरी तरफ जब ज्ञान अंतर्ज्ञान के पास जाता है, इसका अर्थ है की विचार-प्रक्रिया के दौरान एकाग्रता और जादा गहरी हो जाती है, उसका स्तर अंतर्ज्ञान के चिंतन के और ज्ञान के गुप्तता के स्तर के समान हो जाता है। यहा सत्य विचार-प्रक्रिया के लिए जादा भ्रामक बन जाता है, लेकिन पहले अवसर मे जादा धारणाओं की क्षमता और ज्ञान की तर्कयुक्तता बढ जाते है,

मुख्य समस्या इस तथ्य मे छिपी होती है कि यहा समझनेके लिए, पकडने लिए कुछ भी नही है, यहां जब ज्ञान के चिंतन और अंतर्ज्ञान का स्तर बढ जाता है, कम शब्दो मे जादा अर्थ और जानकारी, जादा गुप्तता होती है। इस प्रकार गुप्तता को व्यक्त करनेके लिए गहरे एकाग्रता की आवश्यकता है। इसलिए सत्य का सिर्फ अंतर्ज्ञान के माध्यम से प्रत्यक्ष चिंतन होता है ऐसा माना जाता है, उसे समझा नही जाता, लेकिन इससे सत्य को समझने मे मन का एकाग्र विचार का महत्व कम नही होता है, ऐसा देखतेही लग सकता है, लेकिन वास्तव मे ऐसा नही है। इसके बिल्कुल विपरीत अंतर्ज्ञान का चिंतन और समाधी को हमेशा हम मुख्य एकाग्र विचार, ज्ञान प्राप्त करने की कमी निशक्त न होनेवाली प्रक्रिया मान सकते है । अगर ऐसा नही है तो प्रकटीकरण के परमानंद की यह दीप्तिया अंत मे गतिरोध मे फस जाएगी और उनमे से बाहर निकलने का मार्ग नही मिलेगा ।

मन की क्षमताओ को निशक्त करना आवश्यक है- सिर्फ मन खुद को अंतर्ज्ञान के चिंतन मे घुला सकता है। जैसे-जैसे एकाग्रता गहरी हो जाती है, मन की क्षमताए निशक्त हो जाती है। लेकिन यहा सबसे दिलचस्प बात यह है कि जब ये क्षमताए निशक्त हो जाती है, वे शिघ्र ही फिरसे बढ जाती है और नया स्तर प्राप्त करती है। यह कहना भी उचित होगा कि अंतर्ज्ञान सर्वोच्च मन है, विस्तारीत प्रक्रिया है, लेकिन यह सब नये स्तर मे होता है। संख्यात्मक रीति से ज्ञान प्राप्त करना, एकाग्रता के निर्धारण के साथ व्यायाम करना, निरंतर आत्म-परिपुर्णता, सत्य की अनिवार्य आकांक्षा इन सबके कारण विचार-प्रक्रिया मे मौलिक गुणात्मक बदल हो जाते जै, इसके अलावा व्यक्तित्व के इस प्रक्रिया की कोई सीमा नही होती है क्यों कि यह सीमा मन से निकल जाती है, जो अलगाव और इच्छाओ के साथ हमारे ''स्व'' की एक अनिवार्य विशेषता है, वह निरंतर महान भ्रम की ओर जाती है, दृष्टी के महासागर के असीम गहराई तक जाती है। अगर हम गहरी हो जानेवाली एकाग्रता के बारेमे बात करे तो हम गहरे होनेवाली कल्पना के बारे मे अथवा कल्पनाओ के पदानुक्रम के बारे मे विचार करते है ।

- कल्पना क्या है ?
- कल्पना ऐसी चिज है जो चिंतन और अंतर्ज्ञान का मानवीकरण करते है, उन्हे विचार-प्रक्रिया का कभी निश्शक्त न होनेवाला स्त्रोत बनाते है, अंतर्ज्ञान के मन मे संक्रमण का मानवीकरण करते है, प्रत्यक्ष चिंतन का विचार-प्रक्रिया मे संक्रमण का मानवीकरण करते है।
- दुसरी तरफ कल्पना का मतलब है मन से प्रत्यक्ष अंतर्ज्ञान के चिंतन मे छलांग लगाना, जो संख्यात्मक रीति से ज्ञान प्राप्त करने से और एकाग्रता के निर्धारण के साथ व्यायाम करने से साकार होता है ।
- कल्पना विचारो का ढेर है, विचार करने की क्षमता है, यह ऐसा कुछ तो है जो विचारो के अर्थ प्रदान करता है और उसका सार निर्धारीत करता है, विचारो को निर्देशीत करता है और उनका पोषण करता है। इसलिए वह विचार प्रक्रिया का आधार और स्त्रोत है । यह विचारोंका ढेर, जिसे हम कल्पना कहते है, जादा महत्वपुर्ण हो जाता है जब इस कल्पना के अंतर्ज्ञान की क्षमता का स्तर उचा होता है और इसके परिणामस्वरूप कल्पना जादा गहरी होती है।
- दुसरी तरफ कल्पना ऐसा कुछ है जिसमे किसी तरह विचार बहता है, जो गुणात्मक छलांग के स्वरूप मे विचार-प्रक्रिया के किसी स्थिती को पुर्ण करता है। यह कल्पना, जो ''छलांग'' का परिणाम है, एकाग्र विचार की नयी स्थिती को उत्पन्न करती है और उसका पोषण करती है, जो अंतर्ज्ञान के विस्फोट से, नये कल्पना तक अंतर्ज्ञान के छलांग से परिपुर्ण हो जाती है और यह प्रक्रिया अंतहीन है ।

- दुसरे शब्दो मे कहा जाए तो कल्पना ऐसा कुछ है जो मन और अंतर्ज्ञान जहां एक दुसरे से मिलते है वहां होता है, अगर अधिक यथार्थ शब्दो मे कहा जाए तो यह ऐसा कुछ है जो ज्ञान को मन और अंतर्ज्ञान के बिच की गतिमान सीमा बना देता है, विचार-प्रक्रिया और सत्य के प्रत्यक्ष

चिंतन के बिच की, कर्ता और कर्म के द्वंद्व और अंतर्ज्ञान के प्रत्यक्ष चिंतन मे कर्ता और वस्तु के विलय के बिच की गतिमान सीमा बना देता है।

एकाग्रता की गहराई कल्पनाओ के पदानुक्रम मे निर्णयकारी भूमिका निभाती है। एकाग्रता की गहराई का स्तर और ज्ञान की योग्य मर्यादा अंतर्ज्ञान का स्तर, गहराई और कल्पना की गुप्तता निर्धारीत करते है।

- परिणाम स्वरुप अगर कल्पना की गहराई, उसके अंतर्ज्ञान की क्षमता का स्तर सबसे पहले एकाग्रता के गहराई पर निर्भर करते है और बाद मे प्रतिभा और अपूर्व बुध्दि के मनुष्य की परिभाषा दे सकते है।
- हम किसको अपूर्व बुध्दि का मनुष्य कह सकते है?
- जिस मनुष्य के पास गहरी एकाग्रता की क्षमता होती है, जो सामान्य स्तर से जादा ही होती है, उसे हम अपूर्व बुद्धि का मनुष्य कहते है। इसके अनुसार प्रतिभा का मतलब है गहरी एकाग्रता की क्षमता, जो सबसे पहले ज्ञान से पुष्ट होनेवाली निरंतर चलनेवाली नि:स्वार्थ गतिविधी मे व्यक्त होती है, जो एकाग्र मन से प्राप्त होती है और सर्वव्यापी प्रेम से उजागर होती है।

कल्पनाओ का पदानुक्रम यह जीवन-अस्तित्व के दार्शनिक सुत्र का और एक प्रकटीकरण है, जो कारणो के पदानुक्रम के नियम मे व्यक्त होता है, यह नियम इस प्रकार है : कल्पना जितनी जादा गहरी होती है, उतनी जादा उसकी व्याप्ती होती है, उतनी जादा वह निर्धारीत कर सकती है, उतनी जादा वह धारण कर सकती है, उतनी जादा वह निचले स्तर की कल्पनाओ का वाहक बन सकती है। उदाहरण के लिए हम मनुष्य के इच्छा-शक्ति की संपूर्ण स्वतंत्रता की कल्पना का, मनुष्य के निरपेक्ष सार की कल्पना का, मनुष्य जीवन-अस्तित्व के महान एकता का केंद्र होने की कल्पना का जिक्र कर सकते है। यह कल्पना निर्दय कर्म की अनिवार्यता की कल्पना धारण करती है, जो दुनिया पर राज करती है, कर्म की कल्पना, मुक्ति की कल्पना उत्पन्न करती है।

अब यह बात स्पष्ट है कि कल्पनाओ का पदानुक्रम कल्पनाओ का द्वद्ववाद है, कल्पना की निरंतर गतिशीलता है, यह ज्ञान के द्वंद्ववाद जैसा है, जो जीवन–अस्तित्व के द्वंद्ववाद को प्रतिबिंबीत करता है, शाश्वतता से बहनेवाले विश्व की गतिशीलता को व्यक्त करता है, एक दुसरे को उत्पन्न करनेवाले शाश्वतता के माध्यम से शाश्वतता की ओर बहनेवाले कल्पनाओ के प्रवाह को व्यक्त करता है, सत्य के निर्माण के कारण और परिणामो को प्रवाह को व्यक्त करता है, मन के तेजस्वी प्रवाह को व्यक्त करता है, जो बोधगम्य न होनेवाली अवस्था के महासागर से निकलता है और परम सुख के शांत महासागर की ओर, अस्तित्वहीन अवस्था के महासागर की ओर बहता है , सर्वोच्च जीवन–अस्तित्व के महासागर की ओर बहता है।

दुनिया मे अनेक नियम है, लेकिन उनमेसे एक सर्वोच्च नियम है, जो दुसरे सारे नियमो को नियंत्रीत करता है। यह नियमो का पदानुक्रम है।

- नियम क्या है?
- नियम सत्य की प्राकृतिक घटना है, कल्पना के रुप मे सत्य का प्रकटीकरण है, सत्य के विश्वव्यापकता का प्रकटीकरण है।
- नियम दुनिया के एकत्रीकरण का एक प्रकटीकरण है, जो घटनाओ को जोडता है, वह जीवन–अस्तित्व की महान एकता का प्रतिबिंब है।
- नियम, नियमितता, वस्तु और घटनाओ के गहरे सार का प्रतिबिंब है, जो सतह पे आता है, यह निरपेक्ष का सापेक्ष मे प्रकटीकरण है, अंतर्ज्ञान का मन मे और चिंतन का विचार–प्रक्रिया मे प्रकटीकरण है।
- ऐसा क्या है जो नियम को नियम बनाता है?
- सत्य के प्रकटीकरण, सत्य के प्राकृतिक घटना का स्तर, जो घटनाओ का मुख्य सार होता है, घटनाओ का गुप्त सार होता है।

नियम सिर्फ सत्य का बाहरी प्रकटीकरण है। इसलिए सिर्फ विशिष्ट नियम (इसका मतलब है नियम जिसकी उपयुक्तता सीमीत है) किस प्रकार कार्यान्वित होता है यह महत्वपूर्ण नही है, बल्कि इस नियम का आधार क्या है, यह नियम किस बात की पुष्टी करता है, यह किसका प्रकटीकरण है, इस नियम के माध्यम से सत्य कैसे प्रकट होता है और सत्य के किस पहलु का इस नियम मे प्रतिबिंब है ये सब जानना उतना ही महत्वपूर्ण है।

एक बात बिल्कुल स्पष्ट है: संभवत: जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च नियम वही हो सकता है जो जीवन-अस्तित्व के सर्वोच्च सत्य का, इसका मतलब है एकता के सत्य का संपूर्ण मानवीकरण करता है (उसे मूर्त स्वरुप देता है)। यह निर्दय और निष्पक्ष कर्म का नियम है, जो घटनाओ की संपूर्ण दुनिया को जोडता है, सभी चिजो की मनुष्य मे एकता के कल्पना से विश्व को जोडता है। यह नियम जादातर मनुष्य की इच्छा-शक्ति की स्वतंत्रता मे, मनुष्य जीवन-अस्तित्व की महान एकता का केंद्र है, इस कल्पना मे साकार होता है। इसलिए कर्म का नियम जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च नियम है।

स्पष्ट रुप से कहा जाए तो हम कर्म के नियम के सारे भेदो के प्रकटीकरण का पिछा नही कर सकते , लेकिन हम विश्वास के साथ कह सकते है की दुनिया मे सबकुछ कारणो से होता है और अंत मे सबकुछ इस जीवन-अस्तित्व के सर्वव्यापी सर्वोच्च नियम के पकड मे आ जाता है, यह नियम अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजो को एकत्रित करता है।

- विशिष्ट नियम का नियमो के पदानुक्रम मे क्या स्थान है?
- विशिष्ट नियम ऐसी स्थिती मे होता है जो सामान्यता के स्तर से उत्पन्न होता है। नियम के सामान्यता के स्तर का सत्य के इस नियम से प्रकटीकरण के स्तर से प्रत्यक्ष संबंध है। सत्य के प्रकटीकरण का स्तर यह नियम जीवन-अस्तित्व के सर्वोच्च सत्य के कितने पास है इस बात पर निर्भर करता है, इस सर्वोच्च नियम के अनुरुपता के स्तर पर भी निर्भर करता है, इस विशिष्ट नियम का कार्य और सर्वोच्च नियम का कार्य इनके बिच कितना मेल है इसपर भी निर्भर करता

है। सत्य के इस नियम मे प्रकटीकरण का स्तर जितना उंचा होता है, उतनी ही जादा परिपुर्ण रीती से वह जीवन–अस्तित्व के महान एकता के सर्वोच्च कल्पना को साकार करता है और उतना ही जादा वह जीवन–अस्तित्व के सर्वव्यापी सर्वोच्च नियम के पास होता है, उतना ही जादा यह नियम विश्वव्यापी होता है, उतना ही जादा यह नियम शक्तिमान होता है, उतना ही ज्यादा उसके सामान्यता का स्तर होता है, और इसके परिणाम स्वरुप इस सर्वोच्च नियम से इन विशिष्ट नियमो का निर्माण होता है।

जब एकाग्रता गहरी हो जाती है, वस्तु और घटनाओ का गुप्त सार प्रकट होता है, मन ज्ञान के महासागर के गुप्त गहराईया को व्याप्त करता है, उसी समय खुद को सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन के अंतर्ज्ञान मे घुला देता है, जो सभी चिजो मे व्याप्त है, उसका बुध्दि मे प्रकटीकरण मे, आत्मसंज्ञान और आत्म–चिंतन के सर्वोच्च मन मे परिवर्तन होता है और कारण–परिणामो की तर्कसंगत श्रृंखला टुट जाती है। जब एकाग्रता गहरी हो जाती है, सत्य का प्रत्यक्ष बोध हो जाता है, वह किसी तरह विचार–प्रक्रिया को टालकर हमारे पास आता है। यह मन और अंतर्ज्ञान का विलय, विचार प्रक्रिया के माध्यम से विचार–प्रक्रिया को दूर करना नियंत्रीत प्रक्रिया बन जाती है, वह दार्शनिक के इच्छा–शक्ति की कृति बन जाती है, लेकिन हर हालत मे दृढ एकाग्र विचार इस प्रक्रिया का आधार है।

गहरी एकाग्रता के माध्यम से विचार–प्रक्रिया की मदद से विचार प्रक्रिया को दुर करने का असत्याभास जीवन–अस्तित्व के ज्ञान का सूत्र है, जो मन के आंतरिक विरोध के नियम मे व्यक्त होता है (इसका हम बादमे विस्तार से विवरण देंगे), मन की मदद से मन के उपर उठने की प्रक्रिया मे व्यक्त होता है।

मन और अंतर्ज्ञान विचार–प्रक्रिया और चिंतन इनके बिच होनेवाली सहसंबंध की तुलना हम अंतरिक्ष और समय के अन्योन्य अवलंबित्व के द्वंद्वात्मक नियम से कर सकते है। समय के बाहर अंतरिक्ष नही होता और अंतरिक्ष के बाहर समय नही होता है। यह बात अंतर्ज्ञान

के लिए भी सही है, जिसका मन के बाहर अस्तित्व नही होता है और अंतर्ज्ञान के बाहर मन का अस्तित्व नही होता है।

मन का अंतर्ज्ञान के बाहर अस्तित्व नही होता है और अंतर्ज्ञान का मन के बाहर अस्तित्व नही होता है – इसका मतलब है एकाग्रता कितनी भी गहरी क्यो न हो, वह सर्वोच्च ज्ञान के कितने भी पास क्यो न हो, हमारे अंदर सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन के पास क्यो न हो, हमेशा हमारे ''स्व'' की अल्प मात्रा बाकी रह जाती है और इसके परिणाम स्वरुप उसकी अनिवार्य विशेषता–विचार–प्रक्रिया भी कुछ हद तक बाकी रह जाती है। अंतर्ज्ञान का चिंतन, एकाग्र विचार के हृदय से उत्पन्न होता है, अगर यथार्थ शब्दो मे कहा जाए तो यह पुर्नजन्म है, सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन का जन्म है। यह मनुष्य के असली निरपेक्ष सार का प्रत्यक्ष चिंतन है। आदर्श अवस्था मे हम मन का चिंतन मे संपूर्ण घुलना प्राप्त कर सकते है, गहरी एकाग्रता के दौरान मन को खुद की मदद से दुर करना प्राप्त कर सकते है, लेकिन इसका अर्थ है हमने जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य, सर्वोच्च लक्ष्य और जीवन–अस्तित्व का सर्वोच्च अर्थ प्राप्त किया है, इसका मतलब है हमने मुक्ति प्राप्त की है। ऐसी स्थिती मे हमारे ''स्व'' की सीमाओ का अनंतता तक विस्तार हो जाता है और अंतमे वे लुप्त हो जाती है, मन परम सुख के महासागर मे घुल जाता है, बोधगम्य न होनेवाली अवस्था के महासागर मे घुल जाता है, इस बात का हम सकारात्मक ढंग से मुल्यांकन नही कर सकते, जिस प्रकार बोधगम्य न होनेवाली चिजो को हम व्यक्त नही कर सकते है, समझ के बाहर होनेवाली चिजो को समझ नही सकते, अव्यक्त चिजो का हमे बोध नही होता है उसी प्रकार यह सबकुछ होता है।

मन के बाहर अंतर्ज्ञान का अस्तित्व नही है, चिंतन के बाहर विचार–प्रक्रिया का अस्तित्व नही है – इसका मतलब है चिंतन विचार–प्रक्रिया का स्त्रोत है, मन निरंतर चिंतन के बाहर आ जाता है, मन का प्रकाश अंतर्ज्ञान को उजागर करता है, लेकिन चिंतन और अंतर्ज्ञान का कभी भी मन मे परिवर्तन नही होता है, जिस प्रकार महासागर प्रवाह का स्त्रोत हो सकता है,

लेकिन वह इस प्रवाह से कभी भी निशक्त नही हो सकता है, उसी प्रकार यह बात होती है। निर्माण के शाश्वत प्रवाह का स्त्रोत अस्तित्वहीन अवस्था का असीमित महासागर होता है और वह शांती के बोधगम्य न होनेवाले महासागर मे, चिंतन मे, समाधी मे बहता है, लेकिन यह प्रवाह महासागर का शोषण नही कर सकता। सत्य महान भ्रम मे लुप्त नही हो सकता है। एक संपूर्ण अनेकता मे लुप्त नही हो सकता, अचल को संक्रमक के बदलाव निगल नही सकते, अनंतता खुद को परिमित की अनेकता मे निशक्त नही कर सकती।

मन और अंतर्ज्ञान के बिच सीमा के रुप मे ज्ञान का द्वंद्ववाद और गतिशीलता जीवन-अस्तित्व का सबसे अच्छा प्रतिबिंब हैम और वह विश्व प्रकृति के विकास और आत्म-विकास की एक साथ चलनेवाली प्रक्रिया है इस बात को स्पष्ट करते है। विकास का मतलब है प्रकृति के दुनिया का विस्तार होता है, नाजुक चिजे सख्त होने के माध्यम से यह होता है, उसके बाद धारणाओ की क्षमता, तर्कयुक्तता, ज्ञान की इंद्रियगम्यता बढ जाती है, अंतर्ज्ञान की मात्रा कम हो जाती है। इसके विपरित आत्मविकास के प्रक्रिया के दौरान जब सख्त चिजो की तिव्रता कम हो जाती है तब अंतर्ज्ञान गुप्तता और ज्ञान की आध्यात्मिकता बढ जाती है।

इंद्रियगम्य चिंतन तुम्हारे मन को अन्न देता है। उसके आंतरिक सहज-विरोध के कारण, जो सबसे पहले अंतिम लक्ष्य और उसे प्राप्त करने के साधनो के बिच विरोध मे प्रकट होता है, मन खुद ही प्रयास करके गहरी एकाग्रता मे सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन से, इसका मतलब है विचार-प्रक्रिया को विचार-प्रक्रिया की मदद से दूर करके, इस विरोध को नष्ट करता है।

मन को मन की मदद से विचार-प्रक्रिया के दौरान दूर करना यह अस्वीकार का अस्वीकार के नियम का अच्छा उदाहरण है। यह द्वंद्ववाद का महत्वपुर्ण नियम है। अगर इंद्रियगम्य चिंतन मे अभी भी विचार-प्रक्रिया नही है, अगर ऐसा नही होता तो इस चिंतन की परिभाषा देने मे कोई कठिनाई नही है, मन किसी तरह अंतर्ज्ञान के प्रत्यक्ष बोध मे, गहरी एकाग्रता के चिंतन मे, समाधी मे किसी तरह अनुपस्थित होता है। मन खुद को दूर करता है,

और विचार–प्रक्रिया के अंतिम लक्ष्य के प्रति अनंत और शाश्वत आकांक्षा मे आत्मसंज्ञान और आत्म–चिंतन के सर्वोच्च अंतर्ज्ञान मे क्रमिक रीती से घुला देता है, मन का अंतिम लक्ष्य और सर्वोच्च अर्थ बन जाता है, जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य बन जाता है– यह सर्वोच्च लक्ष्य है: क्लेश से मुक्ति, अलगाव के महान भ्रम से संपूर्ण मुक्ति। विचार–प्रक्रिया को दूर करके प्रत्यक्ष चिंतन दोहराया जाता है, लेकिन यह उंचे स्तर पे गहरी एकाग्रताके अंतर्ज्ञान मे, विचार–प्रक्रिया के कर्ता और वस्तु के विलय मे, समाधी मे होता है।

यह बात स्पष्ट है की मन को कुछ हद तक संवेदनाओ का ऋणी रहना चाहिए, संवेदनाओ के पास खुद का कुछ नही होता है और हम उनसे कुछ प्राप्त नही कर सकते है। जब हम विचार करते है तब हमारे मन का यह ‘‘कुछ तो’’ निश्शक्त हो जाता है और बादमे गहरी एकाग्रता के अंतर्ज्ञान मे, सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन मे, समाधी मे घुल जाता है। यह ‘कुछ तो’ क्या है, जो संवेदनाओ के उपर निर्भर नही होता है और उसका सार क्या है? अगर संवेदना और संवेदनाओ के प्रकटीकरण पर प्रक्रिया करना मनुष्य और पशुओ मे समान होता है, यह ‘कुछ तो’, जो मन संवेदनाओ के अविष्कार मे जलता है और उसका संवेदनाओ मे अस्तित्व नही होता है ऐसी चिज है जो मनुष्य को दुसरे जीवो से अलग करती है, जो हमे दुसरे जीवो से उंचा बना देती है इसलिए यह ‘कुछ तो’ मनुष्य के अमूर्त विचार करने की क्षमता है, यह सिर्फ मन की विशेषता है। सिर्फ मन के पास संवेदनाओ पर निर्भर न रहके उंचे सत्य के बारे मे विचार करने की क्षमता है, जीवन–अस्तित्व के बारे मे उंचे स्तर के प्रश्न पूछ के उनका उत्तर खोजने की क्षमता है, जीवन–अस्तित्व के मूल के बारे मे, उसमे मनुष्य के स्थान के बारेमे, सत्य के बारेमे, जीवन के उद्देश्य के बारे मे सोचने की क्षमता है।

संवेदनाओ के प्रकटीकरण पर निर्भर न रहके अमूर्त विचार करने की क्षमता नैतिक आदर्शो का आधार है, यह दुनिया के कल्याण के लिए नि:स्वार्थ कार्य का भी आधार है, जो सिर्फ मनुष्य की विशेषता है और दुसरी अनेक चिजे है जो सभी चिजो की तुलना मे असीम

उंचाई पर रख देते है और हमे जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य, जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च लक्ष्य और अर्थ, जो मुक्ति है, साकार करने मे मदद करते है।

मन अपनी गतिविधीया मे अनिवार्य रीती से गहरी एकाग्रता की आकांक्षा रखता है, विशेषता यह बात संवेदनाओ पर निर्भर न रह के दार्शनिक अमूर्त विचारो मे जादा स्पष्ट होती है इसका मतलब यह बात जादा स्पष्ट रीती से सर्वोच्च दार्शनिक सत्यो के विचारो मे प्रकट होती है।

गहरी हो जानेवाली एकाग्रता का अनिवार्य रीती से अर्थ है मन का अंतर्ज्ञान मे जादा परिपूर्ण घुलना, ये तब होता है जब मन गहरी एकाग्रता मे क्रमिक रीती से खुद को दूर करता है और प्रकटीकरण अथवा समाधी मे सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन मे बदल जाता है, जो सभी चिजो मे व्याप्त है।

इस जानकारी के अधार पर हम विचार-प्रक्रिया के द्वंद्वात्मक नियम को सूत्रित कर सकते है, यह नियम जीवन-अस्तित्व के ज्ञान का सूत्र है और उसे मन के आंतरिक विरोध का नियम कहते है। इस नियम का सार स्पष्ट है: एकाग्रता जितना जादा गहरी, उतना जादा सर्वव्यापी अंतर्ज्ञान और उतनी कम विचार-प्रक्रिया, उतनी जादा मन की जगह प्रत्यक्ष चिंतन लेता है, उतना जादा उसका अंतर्ज्ञान मे विलय होता है, उतना जादा उसका प्रकटीकरण मे परिवर्तन हो जाता है, उतना जादा वह सत्य के महासागर मे, ज्ञान के महासागर मे, अस्तित्वहीन अवस्था के महासागर मे बह जाता है, सर्वोच्च जीवन-अस्तित्व मे, समाधी मे बह जाता है।

विचार-प्रक्रिया के लिए अनिवार्य रीती से एकाग्रता की आवश्यकता होती है, उसके लिए मन की वस्तु (जिसका हम अध्ययन करते है) के प्रति एकाग्रता की आवश्यकता होती है और उसके बाद हमेशा गहरी एकाग्रता मे विचार-प्रक्रिया का कर्ता और वस्तु का लगातार विलय होता है और यह विलय बढता रहता है। इसका मतलब है विचार-प्रक्रिया के दौरान

विचार-प्रक्रिया को दूर करना, मन विचार-प्रक्रिया के, गहरी एकाग्रता के माध्यम से खुद को दूर करता है।

यह मन के आंतरिक सहज-विरोध का, उसके आंतरिक विरोध का सार है। इसका मतलब है। गहरी एकाग्रता मे मन के उपर उठने की मन की आकांक्षा, इसका दुसरा अर्थ है समाधी मे सत्य का प्रत्यक्ष चिंतन करना, मनुष्य का खुद के अंदर सत्य का प्रत्यक्ष चिंतन, आत्मसंज्ञान और आत्म-चिंतन, अंतर्ज्ञान, प्रकटीकरण, सर्वोच्च ज्ञान।

अगर दुसरे शब्दो मे कहा जाए विचार-प्रक्रिया की दूर करन यह अनिवार्य रीती से विचार-प्रक्रिया का आधार है और एकाग्रता के लिए आत्मसंज्ञान की कृति मे, जो अंदर गहरी हो जाती है और बाहर उसका विस्तार होता है, कर्ता और वस्तु के विलय के माध्यम से अंतत: विचार-प्रक्रिया को दूर करना आवश्यक है।

हमे हमेशा याद रखना चाहिए कि मन का अंतर्ज्ञान मे और विचार-प्रक्रिया का प्रत्यक्ष चिंतन मे परिवर्तन यह क्रमिक प्रक्रिया है और वह कभी भी समाप्त नही होती क्योकि जब वह अपने सीमा के पास होती है, इसका मतलब है मुक्ति के पास होती है, तो इसका मतलब है जीवन-अस्तित्व को दूर करना, जीवन-अस्तित्व को अस्तित्वहीन अवस्था मे घुला देना।

सबसे अधिक संक्षेप मे मन और अंतर्ज्ञान, विचार-प्रक्रिया और अंतर्ज्ञान का चिंतन, गहरी एकाग्रता मे सत्य का प्रत्यक्ष चिंतन इनके बिच संबंधो को हम इस प्रकार व्यक्त कर सकते है: विचार-प्रक्रिया कम होनेवाला चिंतन है और चिंतन कम होनेवाली विचार-प्रक्रिया है।

यह बात स्पष्ट है कि हम परमानंद के अंतर्ज्ञान का विचार नही करते क्योंकि परमानंद का मतलब है जबरदस्ती से विचार-प्रक्रिया को दूर करना। इस प्रकार विचार-प्रक्रिया को दूर करना कृत्रिम है और उसकी तुलना हम बिजली के दीप्ति से कर सकते है जो सिर्फ कुछ क्षण के लिए अंधेरे मे चमकती है और बादमे लुप्त हो जाती है। यह बात परमानंद के प्रकटीकरण के लिए भी सही है, जो अज्ञान के अंधेरे को दूर नही करती और अंतमे उसको और जादा गाढा बनाती है,

जो अंधश्रध्दा के बनावटी पुण्य और पाखंड की ओर ले जाती है, तीव्र कट्टरता और विरोध न सहने की प्रवृती की ओर ले जाता है क्योंकि ऐसा प्रकटीकरण अहंकारी आकांक्षा निर्माण करता है और उसे हम निरंतर ज्ञान प्राप्त करने की अथवा दृढतापुर्व एकाग्र विचार नही मान सकते और इसके परिणाम स्वरुप वह कृत्रिम है।

यहां हम गहरी एकाग्रता के चिंतन के बारे मे, नियंत्रीत कृति के रुप मे अंतर्ज्ञान के बारे मे, ज्ञान के प्रकाश से उजागर होनेवाले और दार्शनिक की शक्तिमान इच्छा-शक्ति से नियंत्रीत हुए अंतर्ज्ञान के बारेमे बात कर रहे है।

बुध्दि का सर्वोच्च लक्षण हम इस प्रकार व्यक्त कर सकते है: कम से कम शब्दो मे जादा से जादा अर्थ। इस प्रकार एकाग्रता जितनी जादा गहरी होती है, उतना ही जादा अर्थ कम शब्दो मे उसके अंदर छिपा होता है और इसके विपरित एकाग्रता की गहराई जितना कम होती है कम अर्थ जादा शब्दो मे छिपा होता है। दुसरे शब्दो मे कहा जाए तो इस स्वयंसिध्द सूत्र के अंतर्ज्ञान का स्तर एकाग्रता के गहराई के अनुरुप होता है। दुसरी तरफ इस सूत्र मे छिपा हुआ पूरा ज्ञान इस सूत्र के अंतर्ज्ञान के स्तर के अनुरुप होता है, अगर दुसरे शब्दो मे कहा जाए तो वह एकाग्रता के गहराई के अनुरुप होता है।

एकाग्रता की गहराई यह दृढ एकाग्रता के व्यायाम के साथ यथाक्रम प्राप्त किए गये ज्ञान का परिणाम है: नि:स्वार्थतता, सर्वव्यापी प्रेम, निरंतर आत्म-परिपुर्णता ये भी इस प्रक्रिया को प्रेरणा देनेवाले अन्य घटक है। सभी लोगो को सभी समय लागू होनेवाले नैतिक आदर्श दृढतापुर्वक साकार करके शरीर और मन शुध्द हो जाते है और हम आत्म-परिपूर्णता प्राप्त कर सकते है। ये नैतिक आदर्श इस प्रकार है: किसी को हानि नही पहुंचाना, दयालुता, अपने क्रोधा को शांत करना, ईमानदारी, दुसरो की चिजे हडप नही करना, सच्चाई, विनय, संयम, नरमी, चित्त के आवेग का त्याग, उपहार नही स्विकार करना,उदारता, पैसे नही लुटना, आत्मत्याग,

बाह्य और आंतरिक शुध्दता,समाधान, आत्म-दमन, ज्ञानी लोगो के उपदेश का अध्ययन और उसे दोहराना, सत्य के प्रति निष्ठा।

इसिलिए कृत्रिम रीती से मन को दूर करना और तुम्हारे अंतर्ज्ञान का प्रकटीकरण का मार्ग खुला करना पुरी तरह अविवेकी है। आपने सिर्फ गहरी एकाग्रता के प्रशिक्षण से मन की क्षमताए निशक्त होनेकी आकांक्षा रखनी चाहिए सिर्फ उसके बाद मन गहरी एकाग्रता मे प्रत्यक्ष चिंतन मे खुद को दूर करेगा और अंतर्ज्ञान मे घुला देगा।

मन का इस प्रकार सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन मे क्रमिक रीती से विलय, एकाग्रता गहरी हो जाने के साथ अंतर्ज्ञान मे परिवर्तन गहरी एकाग्रता के सर्वोच्च अंतर्ज्ञान मे विलय हमे अमूर्त विचारो की अनोखी क्षमता देता है, उसी तरह आत्मसंज्ञान और आत्म-चिंतन की, गहरी एकाग्रता मे सत्य के चिंतन की, समाधी मे सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन की, क्षमता देता है, क्षमता, जो हमे इस दुनिया के सभी जीवो की तुलना मे उच्च बनाते है और जो हमे सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ, विश्व का अच्छा स्वामी, प्रभु, जो निर्दय, निष्पक्ष कर्म की दुनिया पर राज करता है, भी देता है।

''स्व'' आत्मसंज्ञान मे अपरिमित सुधार ला सकता है, वह खुद को लंबे समय तक समझ सकता है, लेकिन अंत मे खुद को पुरी तरह समझ नही सकता। हमारा ''स्व'' सिर्फ उसके संपुर्णता का, असली अमर सार का प्रत्यक्ष चिंतन कर सकता है। गहरे हो जानेवाले आत्मसंज्ञान मे पाण्डित्य का लगातार और क्रमिक रीती से चिंतन मे विलय हो जाता है, वह सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन मे घुल जाता है, उसका आत्म-चिंतन के सर्वोच्च अंतर्ज्ञान के प्रकटीकरण मे परिवर्तन हो जाता है।

यथार्थ ढंग से कहां जाए तो ज्ञान की हर कृति उसी समय आत्मसंज्ञान की भी कृति होती है, फर्क सिर्फ इस अज्ञान के कृति के अंतर्ज्ञान के स्तर मे होता है, जो एकाग्रता की गहराई मे

व्यक्त होता है और वह मनुष्य के अंदर महान एकता के सत्य को साकार होने का स्तर दिखाता है।

मेरा अस्तित्व सभी चिजो मे है और सभी चिजो का अस्तित्व मेरे अंदर है – इसका अर्थ है जिस प्रकार हमारे अंदर, हमारे ''स्व'' के अंदर सत्य होता है उसी प्रकार सभी चिजो के अंदर सत्य व्याप्त होता है, हमारा निरपेक्ष सार ओर हमारा निरपेक्ष ''स्व'' भी व्याप्त होता है। कुछ तो अपवादात्मक, जो शब्दो मे व्यक्त नही हो सकता है, लेकिन उसका गहरी एकाग्रता मे, समाधी मे चिंतन किया जो सकता है, कुछ तो जो सभी चिजो को जोडता है जीवन–अस्तित्व की महान एकता को निर्धारीत करता है, जो हमारे सबकी विशेषता है, लेकिन उसका कोई नाम या आकार नही होता है, जिसका अस्तित्व सभी चिजो मे होता है और उसी समय वह एक ही होता है ऐसा हम मानते है, कुछ तो जिसे हम जीवन–अस्तित्व का आधार मानते है, जीवन–अस्तित्व का स्त्रोत मानते है, जीवन–अस्तित्व ही मानते है – ऐसा हमारा निरपेक्ष ''स्व'' होता है।

इसलिए तुम्हारे खुद के अंदर असली निरपेक्ष सार को खोजने मे जीवन–अस्तित्व का सर्वोच्च उद्देश्य और जीवन–अस्तित्व का सर्वोच्च अर्थ, जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य व्यक्त होते है, यह गहरी एकाग्रता के सर्वोच्च अंतर्ज्ञान मे, अलगाव के महान भ्रम से मुक्ति के अव्यक्त परम सुख मे, समाधी मे सभी चिजो मे व्याप्त होता है।

२१/१/१९८६ – ३१/१२/१९८७

अध्याय ६

जीवन–अस्तित्व का एकत्रित सूत्र

जीवन–अस्तित्व, उसके आकार कुछ भी हो, खुद का असली सार साकार करके, खुद के गहरे अर्थ के पास जाकर, खुद के आधार के पास जाकर खुद को इस गुप्त सार मे, शाश्वतता के महासागर मे, अस्तित्वहीन अवस्था के महासागर मे, सर्वोच्च जीवन–अस्तित्व के महासागर मे घुला देता है – यह महान आत्म–धारण का नियम है अथवा जीवन–अस्तित्व का सामान्य दार्शनिक सूत्र है।

समझने की प्रक्रिया मे व्यस्त ''स्व'' की तुलना मे भिन्न दिखनेवाला जीवन–अस्तित्व अपने अस्तित्व के कारण व्यवहार मे ''स्व'' की ''स्व'' के माध्यम से मुक्ति की अनिवार्य आकांक्षा निरंतर साकार करता है, अपने खुद का असली गुप्त सार खोजने से, ''स्व'' को इस गहरे सार मे घुला के उसके आधार मे घुला के और इस तरह ''स्व'' की अपने निरपेक्ष स्वरुप की ओर वापस आनेकी कभी न बुझनेवाली प्यास को प्रतिबिंबित करके, निरपेक्ष मे खुद को गुलाने की इच्छा–शक्ति को व्यक्त करके, प्रकाश के महासागर मे, अस्तित्वहीन अवस्था के महासागर मे, सर्वोच्च जीवन–अस्तित्व के महासागर मे घुला के भी यह साकार हो सकता है।

महासागर सभी प्रवाहो को धारण करता है और अंत मे पानी देता है। यह बात महान धारण के नियम के लिए भी सही है, जो जीवन–अस्तित्व का एकत्रित दार्शनिक सूत्र है, जो जीवन–अस्तित्व के सभी नियमो को धारण करता है, जो नियमो के महान नियम की तुलना मे विशिष्ट होते है (इसका मतलब है उनकी उपयुक्तता सीमित होती है)।

उदाहरण के लिए हम जीवन–अस्तित्व के सर्वोच्च नियम–कर्म के नियम के बारेमे बात कर सकते है। यह नियम कारण–परिणामो के कतार की, निर्माण के कारण–परिणामो की शर्त है। वह खुद को क्रमिक रीती से कारणो के पदानुक्रम के नियम को कार्यान्वित करके, जीवन–

अस्तित्व के मूल मे घुला देता है, कारणो के पदानुक्रम का नियम जीवन–अस्तित्व के सामान्य दार्शनिक शास्त्र का सूत्र है, लगातार सामान्य कारणो के कतार के माध्यम से कारण का परिणाम मे परिवर्तन होता है, परिणाम नये कारण मे घुल जाता है और जीवन–अस्तित्व के मूल तक, निरपेक्ष ''स्व'' तक पहुंचने तक यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। इच्छाए कम अहंकारी और जादा आध्यात्मिक बन जाती है, अगर इच्छाओ का इस प्रकार विवरण देना सही है। जब अहंकारी इच्छाए कर्म मे लुप्त हो जाती है, कर्म के नियम का क्रमिक रीती से विस्तार हो जाता है, वह जीवन–अस्तित्व के महान एकता मे घुल जाता है, इस एकता के साथ जुड जाता है। मनुष्य जीवन–अस्तित्व के सर्वोच्च सत्य का प्रकटीकरण बन जाता है, जीवन–अस्तित्व के महान एकता का सत्य मनुष्य के अंदर साकार होता है, मनुष्य खुद का असली अमर स्वरुप समझ लेता है, खुद के इच्छा शक्ति की दुनिया के लिए निरपेक्षता अपना निरपेक्ष सार, अपना ईश्वरीय स्वरुप समझ लेता है।

महान एकता के सत्य को हृदय से समझ के मनुष्य अपना असली सार उजागर करता है, वह महासागर बन जाता है, जिसमे सारी चिजो का अस्तित्व होता है। हमारे ''स्व'' की सीमाओ का अनंतता तक विस्तार हो जाता है और अंतमे वे लुप्त हो जाती है। हमारा ''स्व'' ''स्व'' के पदानुक्रम से गुजरता है, आध्यात्मिक स्तर की उपर जानेवाली कतार को पार करता है और अंत मे खुद को उसकी निरपेक्षता मे घुला देता है, निरपेक्ष ''स्व'' मे खुद का विलय कर देता है।

जीवन–अस्तित्व और विश्व को हम मन मान सकते है। इसलिए महान आत्म–धारण के नियम की आंतरिक आत्म–घुलाने के नियम की गतिविधीया सबसे अधिक स्पष्ट रीती से मन के आंतरिक विरोध के नियम की गतिविधिया प्रतिबिंबित करते है। यह नियम जीवन–अस्तित्व के ज्ञान का सूत्र है, जो मन की मन के मदद से गहरी एकाग्रता मे, सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन मे, समाधी मे मन के उपर उठने की मुख्य आकांक्षा को व्यक्त करता है।

मन को अनिवार्य रीती से उसके अप्राप्य उद्देश्य की,निरपेक्ष सत्य की आकांक्षा होती है और वह खुद की मदद से विचार-प्रक्रिया के माध्यम से दूर करता है, अपनी मर्यादा को पार करता है और प्रत्यक्ष चिंतन मे, आत्मसंज्ञान और आत्म-चिंतन के सर्वोच्च अंतर्ज्ञान मे, समाधी मे घुला देता है और इस प्रकार आदि अवस्था के महत्वपुर्ण विरोध को हल करता है: यह विरोध विचार-प्रक्रिया, जो अनिवार्य रीती से कर्ता और उसके विरोध मे विचार-प्रक्रिया के वस्तुओ की अनेकता के द्वैत को मान लेता है, और मन का अंतिम उद्देश्य-एकता के सत्य को समझना, विचार के वस्तुमे घुला देना, समाधी मे सत्य का प्रत्यक्ष चिंतन, जो अनिवार्य रीती से कर्ता और विचार-प्रक्रिया के वस्तु के विलय की ओर ले जाता है, यह उद्देश्य मन के लिए पुरी तरह अप्राप्य है क्योंकि इसका मतलब है मन का खुद के माध्यम से खुद को दूर करना, विचार-प्रक्रिया के गतिविधीयो के माध्यम से दूर करना गहरी एकाग्रता के माध्यम से दूर करना।

जैसे की कल्पनाओ के पदानुक्रम मे बताया जा चुका है, चिंतन और अंतर्ज्ञान विचार-प्रक्रिया जे एक प्रकार के कभी निश्शक्त न होनेवाले स्त्रोत है, जो कल्पना के रुप मे आवेग देते है, जो एकाग्र विचारो के विशिष्ट स्तर के लिए विचारो का समूह है। विचार-प्रक्रिया का यह स्तर अंतर्ज्ञान के विस्फोट से परिपुर्ण बन जाता है और हम नयी गहरी कल्पना मे गुणात्मक छलांग लगाते है, जो विचार-प्रक्रिया के नये स्तर की एकाग्रता की गहरी अवस्था मे निर्माण करती है और यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक हम जीवन-अस्तित्व के मूल तक नही पहुंच जाते, जब तक मन पुरी तरह खुद को अपने स्त्रोत मे, आधार मे, गहरी एकाग्रता मे सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन मे, कर्ता और विचार-प्रक्रिया के वस्तु के विलय मे, समाधी मे घुला नही देता।

जिस प्रकार प्रकाश प्रकाश को निगलता है और प्रकाश से पुष्ट हो जाता है, प्रकाश का एक स्त्रोत दुसरे और जादा शक्तिमान स्त्रोत मे घुल जाता है और अंतमे वे सभी प्रकाश के

महासागर के साथ सर्वोच्च जीवन–अस्तित्व के महासागर के साथ जुड जाते है, उसी प्रकार यह प्रक्रिया भी होती है।

अपनी क्षमताओ को निशशक्त करके, खुद को निशशक्त करके मन गहरी एकाग्रता के माध्यम से क्रमिक रीति से अपने आधार के पास, स्त्रोत के पास, सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन के पास आ जाता है, उसी समय खुद को खुद की मदद से दूर करता है और क्रमिक रीती से खुद को योग के अंतर्ज्ञान मे घुला देता है, चिंतन मे, आत्मा के किनारा न होनेवाले महासागर मे, शांती के असीम महासागर मे, बुध्दि के चमकनेवाले महासागर मे, बोधगम्य न होनेवाली अवस्था के महासागर मे, सत्य के महासागर मे, अस्तित्वहीन अवस्था के महासागर मे, सर्वोच्च जीवन–अस्तित्व के महासागर मे घुला देता है।

शाश्वत प्रतिबिंब का नियम, जो जीवन–अस्तित्व के महान एकता का दार्शनिक सूत्र है और उसके साथ ही महान धारण का नियम सभी जगह कार्यान्वित होते है। उसका मुख्य सार इस प्रकार है: उच्च स्तर की संगति निचले स्तर की संगति मे व्यक्त होती है, लेकिन वह उंचे स्तर मे ही रह जाती है, निरपेक्ष सापेक्ष मे प्रकट होता है, शाश्वत संक्रमक मे प्रकट होता है, अनंत परिमित मे प्रकट होता है, लेकिन वे निरपेक्ष, अचल, अनंत और शाश्वत रह जाते है, आत्मा के महासागर मे, महान एकता के महासागर मे होती है।

एक दुसरे से बिल्कुल विरोधी लगनेवाली चिजे बिल्कुल समान होती है लेकिन उसी समय वे एक दुसरे से अलग होते है, यहां हम प्राकृतिक वस्तु और उसके स्थान पर दुसरी वस्तु का उदाहरण दे सकते है, यहां और एक उदाहरण दिया जा सकता है: सर्वोच्च उत्तेजकता से प्राप्त की गयी परमानंद की अवस्था, और दार्शनिक विचारक और योगी की चिंतन की अवस्था, जो गहरी एकाग्रता मे प्राप्त होती है, अज्ञान का बुध्दिहीन मौन और बुध्दि की संक्षिप्तता, दुर्बलता की उदासीनता और आत्म–विश्वास से परिपुर्ण शक्ति का अटूट चित्त के आवेग का त्याग – ये सब चिजे मौलिक और उसकी नकल की तरह एक दुसरे के साथ जुडी होती है, अगर हम और

यथार्थ ढंग इस बात को पेश करेंगे तो कह सकते है। यह मूल वस्तु और उसके प्रतिबिंब जैसे होता है, स्वरुप और उसके सार की तरह होता है।

जीवन–अस्तित्व की सर्वोच्च एकता के रुप मे मनुष्य का निरपेक्ष सार मनुष्य के इच्छा–शक्ति के स्वतंत्रता की निरपेक्षता मे प्रतिबिंबित होता है, जो उसके बनावटी सापेक्षता के माध्यम से साकार होता है, अपरिमित अहंकारी इच्छाओ के माध्यम से प्राप्त होता है जो निर्दय निष्पक्ष कर्म के नियम को उत्पन करता है।

इसलिए जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य है मनुष्य ने खुद के असली निरपेक्ष सार के अज्ञान से मुक्ति प्राप्त करना। मृत्यु मुक्ति का मूलरुप है, उसका निचले स्तर की अवस्था मे प्रतिबिंब है।

आदि अवस्था का मृत्यु का रहस्य जो वास्तव मे गूढ नही होत है, एक जीवन से दुसरे जीवन मे, एक अवतार से दुसरे अवतार मे संक्रमण है, शरीर का बदल है, जो हमारे इस जीवन के इच्छा, इच्छा–शक्ति और कृतियो पर निर्भर करता है, यह दृढ भक्तो के लिए एक जीवन से दूसरे जीवन मे महान संक्रमण होता है, और अज्ञानी लोगो के लिए मृत्यु से मृत्यु तक संक्रमण होता है। इस मृत्यु के प्राचिन शाश्वत गूढ पहेली को हम जीवन–अस्तित्व के प्रथम महान धार्मिक संस्कार के रुप मे निर्दीष्ट कर सकते है।

उंचे आसमान बादलो मे बसनेवाला परमेश्वर नही होता है, जो हमारे भाग्य पर राज करता है। परमेश्वर मनुष्य है और मनुष्य ही खुद के साथ खेलनेवाला परमेश्वर है, विश्व का निर्माता और स्वामी है, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और सबका निर्माता प्रभु है, जो निर्दय निष्पक्ष कर्म के दुनिया पर राज करता है। मनुष्य परमेश्वर के सामने बिल्कुल तुच्छ है इससे जादा बेतका वक्तव्य नही हो सकता है, मनुष्य ने निर्दय भाग्य के आगे दास की तरह पेश आना चाहिए, और दुसरी तरफ मनुष्य ने अपने भाग्य के खिलाफ अंधा विद्रोह करना चाहिए ये दोनो बाते बिल्कुल गलत है।

शक्ति ज्ञान से प्राप्त करनी चाहिए और उसके बाद अनिवार्य रीती मे शुध्दता और जादा परिपुर्णता की आवश्यकता होती है। अगर ऐसा नही हुआ तो सत्य को समझने की आध्यात्मिक शक्ति के बाद क्लेश और पीडा उत्पन्न होंगे।

ज्ञान जो शक्ति का कभी निशक्त न होनेवाला स्त्रोत है, हमे सत्य को समझने की ओर ले जाता है, जीवन–अस्तित्व की महान एकता के सत्य को समझने के बाद चित्त के आवेग का त्याग, आत्मत्याग, नि:स्वार्थतता और स्थिर मित्रता आ जाते है।

अगर ज्ञान के शक्ति के बाद, समझने की शक्ति के बाद अगर ये गुण नही आते है, जो आध्यात्मिकता का, जीवन–अस्तित्व का महान एकता के सर्वोच्च सत्य को समझने के स्तर का प्रकटीकरण है, तो असमन्वय निर्माण होगा, तुम्हारा खुद के साथ संघर्ष उत्पन्न होगा, शुध्द करनेवाले क्लेश निर्माण होंगे, जो अज्ञान की बुराई जला देगा और शक्ति का स्तर और शुध्दता की कमी इनके बिचका दु:खदायी असंतुलन नष्ट होगा, अगर ऐसा कहना सही है, अंदर एकता के सत्य को साकार करना और नैतिक परिपुर्णता का स्तर, नैतिक तैयारी का स्तर, पूर्व–कथित चार गुणो का अपर्याप्त प्रकटीकरण जिनमे चित्त के आवेग का त्याग और आत्मत्याग शामिल है –ये बुध्दि के अनिवार्य गुण है, और मित्रता के साथ नि:स्वार्थतता – जो पहले दो गुणों की अपरिहार्य विशेषताए है, उनमे से निकलनेवाले और उनके कारण निर्माण होनेवाले सहभाव, इनके बिचका असंतुलन नष्ट होगा।

बुराई खुद को नष्ट करती है। निर्दय कर्म के शक्ति के क ारण बुराई अनिवार्य रीती से खुद की ओर वापस आती है, इस वापसी के कारण क्लेश के शुध्द करनेवाले ज्योती मे खुद को जला देता है।

इसलिए हम क्लेश को शुध्दता का महान साधन, शुध्द करनेवाली ज्योति, आध्यात्मिकता का कभी न सोनेवाला पहरेदार, अज्ञान के बुराई को जलानेवाली शाश्वत

प्रक्रिया अथवा अगर अधिक यथार्थ ढंग से कहा जाए तो खुद की ओर वापस आनेवाली और खुद को जलानेवाली बुराई, ऐसा हम कह सकते है।

मृत्यु सिर्फ भूसे से भरा शेर है। मृत्यु का डर जीवन-अस्तित्व का सबसे बडा डर है और इसका कारण है: ज्ञान की कमी कभी निश्शक्त न होनेवाले अज्ञान के साथ खेल, जीवन के अभी प्राप्त न हुए लक्ष्य के बारेमे, याने की मुक्ति के बारे मे अस्पष्ट चेतना। यह ज्ञान है जो प्राप्त किया जा सकता है लेकिन अभी प्राप्त नही हुआ है, यह मनुष्य की अभी प्रकट नही हुई असीम क्षमताए है, यह जीवन-अस्तित्व के महान एकता मे छिपा हुआ और अभी पुरी तरह नही समझा गया सत्य है, यह सत्य मनुष्य की अपरिमित श्रेष्ठता मे छिपा होता है, मनुष्य जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च सार है, मनुष्य जीवन-अस्तित्व की सर्वोच्च वास्तविकता है, मनुष्य जीवन-अस्तित्व के महान एकता का केंद्र है।

वर्तमान अतीत से निकलता है, वर्तमान भविष्य का आधार है। मनुष्य परमेश्वर है, जो अलगाव के महान भ्रम के साथ खेलता है, यह परमेश्वर है जो खुद के ईश्वरीय स्वरुप के साथ खेलता है, अपने अमर निरपेक्ष सार के साथ खेलता है। अमरत्व- यह मृत्यु के वास्तविकता मे अस्तित्व न होनेवाले महान रहस्य का उत्तर है। यह एक दुसरे मे बदलेवाले जन्म और मृत्यु के अनंत कतार का महान संस्कार का हल है, जन्म और मृत्यु की यह कतार खुद के अंदर अपना अस्तित्व निर्माण करती है।

मृत्यु अच्छा या बुरा नही है, यह सिर्फ अस्तित्व की अनिवार्य शर्त है, संक्रमक के साथ खेलनेवाली शाश्वतता का मुख्य नियम है, जीवन-अस्तित्व की अनिवार्य शर्त है, यह महान संक्रमण है, जिसके उपर कर्म के नियम का कार्य निर्भर है, जीवन-अस्तित्व के सर्वोच्च नियम का कार्य निर्भर है,जो घटनाओ के कारण-परिणाम संबंधो का आधार है, शाश्वतता के माध्यम से शाश्वतता की ओर बहनेवाले प्रवाह के निर्माण का आधार है।

मृत्यु का समरुप, उसका निचले स्तर का प्रतिबिंब–सपना यह एक अवतार मे सजगता से सजगता तक चाल है और वह हर जगह एक जैसा है, जब उंचे स्तर का निचले स्तर मे प्रकटीकरण होता है, लेकिन वह उंचे स्तर मे ही रहता है। सबकुछ सिर्फ जीवन–अस्तित्व के एकत्रित सूत्र का उपयोग करके ही बनाया जाता है। शाश्वत प्रतिबिंब का नियम, सबसे निचले स्तर के समरुप का, सबसे निचले स्तर के मूलरुप का नियम, सबसे उंचे स्तर से निचले स्तर मे प्रकटीकरण क नियम हर जगह कार्यान्वित होते है। शाश्वत सत्य, आत्मसंज्ञान और आत्म–चिंतन का सर्वोच्च पाण्डित्य हर जगह होते है। नाजुक चिजो को सख्त बना कर निरपेक्ष निचे के तरफ अनेक अवस्था पार करता है और अंतमे बनावटी पतितता के अंतिम स्तर पे पहुंचता है – योग मे इसे मूलाधार कमल कहते है, यह सोनेवाले ईश्वरीय शक्ति का स्थान है (जिसे कुंडलीनी कहते है), और उसके बाद सख्त चिजो की तिव्रता कम करने की अवस्था पार करके वह खुद की ओर वह अवस्था पार करके, लेकिन उपर की ओर, वापस आ जाता है। लेकिन हर हालत मे निरपेक्ष हमेशा वैसा ही रहता है, अपनी निरपेक्षता कभी नही खोता है और जीवन–अस्तित्व की आदि अवस्था की महान एकता को अस्तित्व मे होनेवाली सभी चिजो की एकता को प्रेरित करता है।

शाश्वत प्रतिबिंब का नियम, निर्माण, रक्षा करना और नष्ट करना इस निरंतर चल रही प्रक्रिया मे स्पष्ट होता है। लेकिन क्या निर्माण होता है, किसकी रक्षा होती है और क्या नष्ट होता है? इसका जवाब बहुत आसान है: यह अज्ञान है। अज्ञान अपरिमित नाम और आकारो मे व्यक्त होता है, जो निरंतर प्रकट होते है और लुप्त होते है।

निरपेक्ष निर्माण करता है, अगर अधिक यथार्थ शब्दो मे कहा जाए तो खुद का सापेक्ष मे परिवर्तन करता है, सापेक्ष को महसूस करता है, अपने निरपेक्षता की अज्ञान मे डुब जाता है और बाद मे परस्पर विरोधी चिजो का जीवन–अस्तित्व की महान एकता मे विलय के माध्यम से, बनावटी बदलाव वास्तविकता मे घुलाके, परिमितता, संक्रमण की सापेक्षता, अचल मे,

अनंतता मे घुला के गहरी एकाग्रता के दौरान सत्य का चिंतन करके, समाधी मे सत्य का चिंतन करके, असली गुप्त सार साकार करके अपनी निरपेक्षता की ओर वापस आ जाता है और यह प्रक्रिया दोहराई जाती है। यह कहना जादा यथार्थ होगा कि यह प्रक्रिया कभी समाप्त न होनेवाले निर्माण मे निरंतर चलती रहती है।

परस्पर विरोधी चिजो की एकता और संघर्ष मे प्रतिबिंब का नियम स्पष्ट होगा। इसके अलावा यह कहना सही होगा कि शाश्वत प्रतिबिंब का नियम परस्पर विरोधी चिजो की एकता और दिखनेवाले विरोध का सबसे अच्छा प्रकटीकरण है। अगर नियत अर्थ मे कहा जाए तो ऐसी परस्पर विरोध चिजो का अस्तित्व नही होता है, यहा सिर्फ कम होनेवाली, अथवा बढनेवाली निरपेक्षता होती है, कम होनेवाली अथवा बढनेवाली आध्यात्मिकता होती है और निरपेक्षता का बनावटी कम होना जितना गहरा होता है उतना जादा उग्र यह विरोध होता है, जो सिर्फ एकही उंचे स्तर के निचे स्तर मे होनेवाले प्रकटीकरण का वाहक है, निरपेक्षता का सापेक्षता मे प्रकटीकरण का, समान्य का विशिष्ट मे, एकता का अनेकता मे, अनंतता का परिमित मे, शाश्वतता का संक्रमक मे प्रकटीकरण का वाहक है। यहां सवाल सिर्फ बढनेवाले अथवा कम होनेवाले भाटे अथवा प्रवाह के स्तर का है, निरपेक्षता, आध्यात्मिकता के अस्तित्व का है, सत्य और अंतमे विशिष्ट प्राकृतिक घटना के अस्तित्व का है।

अव्यक्त को व्यक्त करनेवाले चिजो की परिभाषा पेश करना सचमुच बहुत ही कठिन है और यह विचार और समझ के बाहर भी है। कुछ तो ऐसा है जिसे हम जीवन–अस्तित्व का सार, आधार और स्त्रोत मानते है, लेकिन उसी समय वह जीवन–अस्तित्व के, विचारो के बाहर होता है, मन और कल्पना शक्ति के सीमाओ के बाहर होता है। लेकिन ‘‘निरपेक्ष’’ और ‘‘निरपेक्षता’’ यहा सबसे यथार्थ है।

- निरपेक्षता का मानक क्या है, अगर इस स्थिती मे मानक खोजना सही है, जो हमे किसी चिजो को दुसरे से उंची है ऐसा समझनेका हक देता है, उपर उठने का और आध्यात्मिकता का मानक क्या है, आध्यात्मिकता क्या है?
- आध्यात्मिकता शक्ति, बुध्दि और प्रेम का ऐक्यपूर्ण संयोग है जो ज्ञान का सहभाव है, विश्व का आधार है। बुध्दि शक्ति की मित्र है और प्रेम की माता है।

प्रेम जीवन–अस्तित्व का अमृत है, एकता के सत्य की छाया है।

दुर्बलता, अपनी क्षमताओपर अविश्वास और कायरता शक्ति की आग मे जल जाते है।

- शक्ति के आग का इंधन क्या है?
- आत्म–दमन और वैराग्य।
- इस आग का सार क्या है?
- मन को जीतना और मन की गतिविधीया शांत करना।
- इस आग का स्वरुप क्या है?
- अपनी संवेदनाओ का दमन करना, तुम्हारी संवेदनाओ को वातावरण से दूर करना, बाहर नही बल्कि तुम्हारे अंदर देखना, मन का दमन करना।
- शक्ति का स्त्रोत क्या है?
- ज्ञान और श्रध्दा।
- शक्ति की आग को कैसे प्रज्वलित करते है?
- यथाक्रम और दृढतापुर्वक एकाग्रता के व्यायाम से, पाच महान प्रतिज्ञाओ को निरंतर कार्यान्वित करके: किसी को हानि नही पहुंचाना, ईमानदारी, दुसरो की चिजे हडप नही करना, संयम और उपहार स्विकार नही करना।

बुध्दि की आग मे अज्ञान, गलतिया और अंधापन जल जाते है।

- बुध्दि की आग का इंधन क्या है?

- एकाग्रता और एकाग्र विचार।
- इस आग का सार क्या है।
- अहंकारी इच्छाओ का त्याग करना, इंद्रियगम्य परम सुख और पिछा करना छोड देना, शक्ति, कीर्ति, बल, धन और जीवन–अस्तित्व की प्यास को नष्ट करना।
- इस आग का स्वरुप क्या है?
- चित्त के आवेग का त्याग, संयम और सादगी।
- बुध्दि के आग का स्रोत क्या है।
- समाधी मे मनुष्य ने अपने असली ''स्व'' का चिंतन करना, अपने असली अमर स्वरुप का चिंतन करना, श्रेष्ठता और सर्वशक्तिमानता का चिंतन करना, अनंत ज्ञान का और अनंत शक्ति का चिंतन करना, मन की मदद से मन के उपर उठना।
- बुध्दि की आग को कैसे प्रज्वलित किया जाता है।
- अध्ययन और विचार से, मार्ग की खोज करनेवाले लोगो से. ज्ञानी लोगो से बात करके। सभी चिजो के प्रति क्रोध, गुस्सा, द्वेष और अहंकार सर्वव्यपी प्रेम की आगमे जल जाते है।
- इस प्रेम की आग का इंधन क्या है?
- शुध्दता।
- इस आग का सार क्या है।
- नाम और आकारो के प्रति बंधन को दूर करना।
- इस आग का स्वरुप क्या है?
- अहंकार की श्रृंखलाओ को नष्ट करना, द्वंद्व दुर करना, आत्म–सन्मान जीवन–अस्तित्व के महासागर से अलगाव दुर करना।
- प्रेम का स्रोत क्या है?
- समाधी मे सत्य के चिंतन का परम सुख तुम्हारा मन हृदय मे घुला देना।

- प्रेम की आग को कैसे प्रज्वलित करते है?
- सभी चिजो की ब्राह्मण-आत्मा मे, मनुष्य मे एकता के वेदांत के सर्वोच्च सत्य को समझ के।

अब हम निरपेक्षता, उंचाईया और आध्यात्मिकता के सवाल की ओर वापस आते है तो यह स्पष्ट हो जाता है कि यहा सिर्फ सत्य ही मानक है। सभी चिजो की एकता यह जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च सत्य है और मनुष्य इस जीवन-अस्तित्व के महान एकता का केंद्र है। इसलिए सबकुछ जो एकता की ओर ले जाता है, एकत्रित करता है, जीवन-अस्तित्व की महान एकता को प्रतिबिंबित करता है, वह जादा निरपेक्ष है, असली है, आध्यात्मिक है और उसके निरपेक्षता का स्तर और जादा उंचा है।

मनुष्य जीवन-अस्तित्व के महान एकता का केंद्र है, जीवन-अस्तित्व का सर्वोच्च सार है, सबकुछ जो मनुष्य की असीम श्रेष्ठता को प्रतिबिंबित करता है वह उंचा बन जाता है।

सिर्फ मनुष्य ही खुद के अंदर सत्य को समझ सकता है, खुद की निरपेक्षता को समझ सकता है, खुद की ओर वापस आता है, जो उसी समय जीवन-अस्तित्व का आधार है, स्रोत है और खुद जीवन-अस्तित्व ही है। सिर्फ मनुष्य गहरी एकाग्रता प्राप्त कर सकता है, जो मनका प्रत्यक्ष चिंतन मे परिवर्तन कर सकती है। मनुष्य के पास एकाग्रता की क्षमता है, जो विचार-प्रक्रिया के द्वंद्व का, अज्ञान के व्यथा का, अलगाव और बंधन के क्लेश का ज्ञान के सर्वोच्च पाण्डित्य के परम सुख की महान एकता मे, चित्त के आवेग के त्याग के और आत्मत्याग के पाण्डित्य मे, आत्मसंज्ञान और आत्म-चिंतन के सर्वोच्च अंतर्ज्ञान मे परिवर्तन करता है।

परस्पर विरोधी चिजो के जोडे मे एक घटक की मात्रा दुसरे घटक से जादा होती है। उदाहरण के लिए हम कह सकते है: कोई दुर्बलता नही होती है। मनुष्य परमेश्वर है, सर्वोच्च सत्य है और सत्य दुर्बल नही हो सकता। यही बात द्वेष. स्वार्थ, अज्ञान, चित्त का आवेग, बंधन और अहंकार के लिए भी सही है। कोई दुर्बलता नही होती है, सिर्फ कम होनेवाली शक्ति हो सकती है। कोई द्वेष, क्रोध और गुस्सा नही होते है, सिर्फ कम होनेवाली नि:स्वार्थतता होती है।

कोई स्वार्थ, अहंकार नही होते है, सिर्फ कम होनेवाली नि:स्वार्थतता होती है। कोई बंधन नही होते है, सिर्फ कम होनेवाला आत्मत्याग होता है। कोई अज्ञान नही होता है, सिर्फ कम होनेवाला ज्ञान होता है।

परस्पर विरोधी चिजो की एकता निरपेक्ष का निरपेक्षता के बारेमे अज्ञान को नष्ट करने की प्रक्रिया को प्रतिबिंबित करती है, जीवन-अस्तित्व की खुद के माध्यम से खुद से मुक्ति की, आकांक्षा को प्रतिबिंबित करती है, अपने असली सार के साथ विलय करके मुक्ति प्राप्त करने की आकांक्षा को प्रतिबिंबित करती है। एक विरोध खुद को दुसरे उंचे विरोध मे घुला देने की आकांक्षा रखता है और निरपेक्ष मे जीवन-अस्तित्व के एकता के सर्वोच्च सत्य को साकार करता है।

एकता अनेकता को उत्पन्न करती है, खुद का अनेकता मे परिवर्तन करता है, लेकिन सबकुछ होने के बावजुद वह एकता रह जाता है - यह जीवन-अस्तित्व का दुसरा महान धार्मिक संस्कार है, जो जीवन-अस्तित्व के महान एकता मे, एकता के सत्य मे, वह सत्य के महासागर मे सभी जगह व्याप्त होता है। इसलिए हम कह सकते है कि शाश्वतता परिमित की शाश्वतता है, संक्रमक की अनंतता है, अनेकता की एकता है, अस्तित्वहीन अवस्था का जीवन-अस्तित्व है। परस्पर विरोधी चिजो क संघर्ष सापेक्ष का निरपेक्ष से निर्माण और कायम रखने की, अनश्वर से संक्रमक के निर्माण और कायम रखनेकी, शाश्वत से परिमित के निर्माण की और कायम रखने की आदि अवस्था की प्रक्रिया को प्रतिबिंबित करता है। यहां ऐसा कहना और जादा उचित होगा : निरपेक्ष की खुद को सापेक्ष बनाने की प्रक्रिया संक्रमक, परिमित, बदलनेवाली हो जाती है, लेकिन वह निरपेक्ष रह जाता है, अचल, अनंत और शाश्वत रह जाता है।

निरपेक्ष सापेक्ष क्यो हो जाता है, अचल, अनंत और शाश्वत का संक्रमक, परिमित और बदलनेवाली चिजोमे परिवर्तन हो जाता है? नि:संदेह यह दार्शनिक प्रश्न है, लेकिन यह स्पष्ट है कि इसका यथार्थ उत्तर नही है।

हम निरंतर इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास कर सकते है, लेकिन यह कभी भी परिपुर्ण उत्तर नही होगा। ऐसा क्यो होता है? इसका कारण यह है कि इस प्रश्न का उत्तर प्रश्न मे ही छिपा हुआ है अथवा अधिक यथार्थ शब्दो मे कहा जाए तो उत्तर प्रश्न के अनुपस्थिती मे छिपा हुआ है। किसी तरह निरपेक्ष का सापेक्ष मे परिवर्तन हो जाता है, वह संक्रमक, परिमित बननेवाला हो जाता है, लेकिन वस्तुत: यह परिवर्तन ही सापेक्ष है, वह बनावटी है क्योंकि निरपेक्ष के इस बनावटी परिवर्तन के बावजुद वह निरपेक्ष ही रह जाता है, अचल, अनंत और शाश्वत रह जाता है। इसलिए एक बात स्पष्ट है : निरपेक्ष का सापेक्ष मे परिवर्तन नही होता है और अगर किसी तरह यह होता है तो इस परिवर्तन को हम सत्य का खुद से अलगाव का महान भ्रम मान सकते है।

उत्तर जीवन के इस सर्वोच्च उद्देश्य को साकार करने मे छिपा हुआ है: अज्ञान से मुक्ति, अलगाव के महान भ्रम से मुक्ति। लेकिन निरपेक्ष खुद को सापेक्ष निर्माण करके और बचाके रखके भी निरपेक्ष रह जाता है। इसलिए मनुष्य खुद को कर्म की श्रुंखला मे बांध देता है, इस बंधन को और अपूर्णता को महसूस करता है, लेकिन, वह कभी भी अपनी संपूर्ण स्वतंत्रता को असली श्रेष्ठता को, अमरत्व को, ईश्वरीय स्वरुप को नही खो देता है। इसलिए हम इस मुख्य दार्शनिक प्रश्न का सामान्य तरीके से उत्तर नही दे सकते है, क्योंकि अंधे मनुष्य को हम रंग क्या है यह समझा नही सकते, समाधी मे सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन का परम सुख क्या है यह हम शब्दो मे समझा नही सकते, बोधगम्य न होनेवाली चिजो को व्यक्त करना, अव्यक्त को समझना, विचार प्रक्रिया के बाहर होनेवाली चिजो को समझना संभव नही है।

हर मनुष्य इस सर्वोच्च प्रश्न का उत्तर देख सकता है और उसी समय कोई भी इस प्रश्न का उत्तर नही दे सकता है क्योंकि इसका उत्तर हमारे अंदर छिपा होता है और उसे वहा खोजने की आवश्यकता है, बाकी कौनसी भी जगह मे नही। उत्तर तुम्हारे पास सिर्फ अंदर से आयेगा, यह सिर्फ संतोषजनक उत्तर है, अगर ऐसा कहना सही है।

अगर हम दर्पण के प्रतिबिंब के बारेमे विचार करेंगे और इस घटना की फोटो उतारने का प्रयास करेंगे तो हमे पता चलेगा कि निरपेक्ष मूल है, मूर्त ''स्व'' दर्पण है और प्रकृति प्रतिबिंब है।

अलगाव जीवन-अस्तित्व का मूल है। अब एक बात स्पष्ट हुई है : निरपेक्ष का सापेक्ष मे परिवर्तन का मुख्य दार्शनिक प्रश्न अंत मे संस्कार का प्रश्न बन जाता है : अस्तित्वहीन अवस्था के , कर्ता के, आत्म-चेतना के, नाम ''स्व'' के और इसके विपरित ''स्व'' न होनेवाले महासागर मे अलगाव की कल्पना कैसे प्रकट होती है। यह ''स्व'' न होनेवाला ''स्व'' के तीन विशेषताओ के माध्यम से प्रकट होता है: अलगाव, विचार-प्रक्रिया और इच्छाए, प्रकृति की दुनिया, सापेक्ष की दुनिया, संक्रमक, परिमित, बदलनेवाला, अनेकता, लेकिन सबकुछ होने के बावजुद वह निरपेक्ष, एकत्रित, अनंत, शाश्वत और अचल रह जाता है इनके महासागर मे अलगाव की कल्पना कैसे प्रकट होती है यह भी महत्वपुर्ण प्रश्न है। सबकुछ ''स्व'' के अलगाव के बाद शुरु होता है और सबकुछ तब पुरा हो जाता है जब ''स्व'' अपनी निरपेक्षत मे घुल जाता है, जब ''स्व'' की सीमाओ की अनंतता तक विस्तार हो जाता है और अंत मे वे लुप्त हो जाती है, जब निरपेक्ष ''स्व'' मे, बोधगम्य न होनेवाले अवस्था के महासागर से विलय पुरा हो जाता है।

एक बात स्पष्ट है : जीवन-अस्तित्व का मूल स्वरुप अलगाव की कल्पना हमे ''स्व'' का और उसके विपरित ''स्व'' न होनेवाली चिज का प्रकृति के दुनिया का सर्वोच्च विरोध देते है, जो ''स्व'' की तुलना मे अलग जीवन-अस्तित्व होता है। बाकी सारे अपरिमित विरोध, जो

कारण और परिणामो के निर्माण के अनंत शाश्वत प्रवाह मे व्यक्त होते है, किसी तरह इस आदि अवस्था के सर्वोच्च विरोध पर आधारीत होते है।

फिर से हम इस परस्पर विरोधी चिजो के पदानुक्रम मे कारण के पदानुक्रम के नियम को साकार हुए देख सकते है। यह नियम जीवन-अस्तित्व के शास्त्र का सूत्र है। एक विरोध को नष्ट करनेका मतलब है दुसरे विरोध मे संक्रमण करना, उंचे स्तर के विरोध मे संक्रमण करना, जो और जादा सामान्य होता है और उसे दुसरे विरोध मे संक्रमण करने की आकांक्षा होती है, जो अधिक उंचे स्तर पे होता है। यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक विरोध लुप्त नही हो जाता।यह मनुष्य मे जीवन-अस्तित्व की एकता का सर्वोच्च सत्य साकार होना है, एकाग्रता मे विचार-प्रक्रिया घुला देना है, मन आत्मसंज्ञान और आत्म-चिंतन के सर्वोच्च अंतर्ज्ञान मे घुला देना है, गहरी एकाग्रता मे, समाधी मे सत्य के प्रत्यक्ष चिंतन मे कर्ता और विचार-प्रक्रिया की वस्तु का विलय करना है।

हमारे ‘‘स्व’’ मे माया के परिमित आकारो के रुप मे प्रतिबिंबित होकर निरपेक्ष खुद को सापेक्ष मे साकार करता है, लेकिन वह निरपेक्ष रह जाता है। प्रतिबिंब दर्पण पर निर्भर करता है, लेकिन दर्पण पर प्रतिबिंब का कोई परिणाम नही होता है। दर्पण गलती से खुद को प्रतिबिंब के समान मान सकता है, लेकिन वह अपना मूल स्वरुप नही बदलता और कभी भी प्रतिबिंब नही बनता, वह सिर्फ मूल स्वरुप का प्रतिबिंब बना सकता है। मूल स्वरुप का अस्तित्व प्रतिबिंब पर निर्भर नही होता है, उसका दर्पण मे प्रतिबिंब है या नही इस पर निर्भर नही होता है, इसके विपरित प्रतिबिंब का अस्तित्व सिर्फ दर्पण के उपस्थिती मे होता है और जब तक दर्पण रहता है तब तक ही प्रतिबिंब रहता है। माया के अपरिमित आकार, अलगाव का विश्वव्यापी स्वरूप इनका हमारे असली ‘‘स्व’’ के उपर कोई असर नही होता है, इस तथ्य के बावजुद कि हम हमेशा गलती से हमारा ‘‘स्व’’ को अज्ञान के खेल मे उसकी निरपेक्षता के अज्ञान के समान मानते है।

हमारा ‘‘स्व’’ और निरपेक्ष के बिच दर्पण और प्रतिबिंब के संबंधो जैसा संबंध होता है। अगर दर्पण है तो वहां प्रतिबिंब होगा, अज्ञान, अलगाव का विश्वव्यापी भ्रम कारण और परिणामो का निर्माण का प्रवाह भी होगा, निरपेक्ष सापेक्ष के साथ खेलेगा, शाश्वत परिमित के साथ खेलेगा। यहां सर्व विनाशी समय है, जो शाश्वतत की छाया है, अस्तित्वहीन अवस्था का जीवन-अस्तित्व है। अगर दर्पण नही है, तो प्रतिबिंब भी नही होगा, शाश्वतता होगी, लेकिन शाश्वतता की छाया नही होगी।

निरपेक्ष खुद को दर्पण मे बदल लेगा क्योंकि वहा अतिरिक्त परम सुख है और खुद के सापेक्ष के आकार मे, संक्रमक और बदलनेवाली चिजो के स्वरुप मे, जीवन-अस्तित्व के रुप मे प्रतिबिंबित करेगा और बादमे खुद के अंदर दर्पण को घुला देगा और यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहेगी। दुसरे शब्दो मे कहा जाए तो अलगाव के माध्यम से निरपेक्ष दर्पण और उसके साथ ही प्रतिबिंब और मूल स्वरुप भी हो सकता है, इसका मतलब है, निरपेक्ष ‘‘स्व’’ और प्रकृति एक साथ ही हो सकता है।

‘‘स्व’’ की निरपेक्षता का मतलब है उसका अस्तित्व हमेशा दर्पण के प्रतिबिंब पर निर्भर नही करेगा, वह दर्शक है, जो माया खुद के अपरिमित आकारोमे किस प्रकार प्रकट होती है यह देखता है। ‘‘स्व’’ की बनावटी सापेक्षता का मतलब है वह गलती से खुद को खुद के अंदर के प्रतिबिंब के समान मानने लगता है।

मनुष्य अपनी इच्छा-शक्ति के इच्छाओ के और कृतियो के माध्यम से खुद को निर्दय कर्म की अटूट श्रृंखलाओ से बांध लेता है, खुद को बंधक अवस्था मे महसुस करता है, खुद को अपूर्ण और मर्त्य मानने लगता है, लेकिन वह खुद की संपूर्ण स्वतंत्रा नही खो देता है, खुद का अमर स्वरुप, असीम क्षमताए, ईश्वरीय स्वरुप, न बदलनेवाला निरपेक्ष सार कायम रखता है।

यह जीवन-अस्तित्व का तिसरा महान धार्मिक संस्कार है - महान भ्रम, माया, मनुष्य का अपने असली निरपेक्ष स्वरुप के बारे मे अज्ञान जो ‘‘स्व’’ को अपने साधन के, इसका

मतलब है शरीर के समान, संवेदना और मन के समान मानने से निर्माण होता है, अपरिमित अहंकारी इच्छाए जो एक दुसरे को उत्पन्न करती है और जो कभी मिटती नही है, क्योंकि जब आप सोते हो तब प्यास बुझती नही है, इनके कारण भी यह महान भ्रम उत्पन्न होता है।

मनुष्य कभी भी अपनी संपूर्ण स्वतंत्रता खो नही देता है, वह हमेशा सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ संपूर्ण अच्छा परमेश्वर रहता है। मनुष्य अपनी असीम श्रेष्ठता, अमर स्वरुप, अमर सार कभी नही खो देगा, लेकिन वह खुदको बंधक, दुर्बल और अज्ञानी महसुस करता है।

- अज्ञान से, अलगाव के विश्वव्यापी महान भ्रम से कैसे मुक्ति प्राप्त की जा सकती है, जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य – मुक्ति कैसे प्राप्त किया जा सकता है?
- निरंतर, बिना रुके एकाग्रता के व्यायाम से, योग के चार स्तर के मार्ग का नियमीत रुप मे और दृढता से साकार करके।
- चार स्तर के योग का मार्ग क्या है?
- चार स्तर के योग का मार्ग है शक्ति ज्ञान–प्रेम–नि:स्वार्थतता का मार्ग, यह चार तेजस्वी योग: राज–योग, ज्ञानयोग, भक्ति योग और कर्म–योग इनका ऐक्यपूर्ण संयोग है।

राज–योग एकाग्रता की शक्ति है यह आठ स्तर का पतंजली योग है।

१ यम–मनुष्य का सामाजीक आचरण, पांच महान प्रतिज्ञाए : किसी को हानी नही पहुंचाना,ईमानदारी, दुसरो की चिजे हडप नही कारण, संयम, उपहार स्विकार नही करना।

२ नियम–योगी का व्यक्तिगत आचरण, योगी की पाच व्यक्तिगत प्रतिज्ञाए : आंतरिक और बाह्य शुध्दता, समाधान, आत्म–दमन, अध्ययन और सत्य के प्रति निष्ठा।

३ आसन–शारीरीक स्थिती और व्यायाम, शरीर के उपर संपूर्ण नियंत्रण।

४ प्राणायाम–सांस का प्रशिक्षण, तुम्हारे सांस के उपर संपुर्ण नियंत्रण।

५ प्रत्यहार–तुम्हारे संवेदनाए बाह्य वस्तुओ से दुर हटाना, तुम्हारी संवेदनाओ का दमन, मन को काबु मे रखना।

६ धारणा–तुम्हारे मन की एकाग्रता ।

७ ध्यान–एकाग्र विचार।

८ समाधी–चिंतन, तुम्हारे विचार के वस्तु मे विलय।

ज्ञान–योग ज्ञान का प्रकाश है, सर्वोच्च ज्ञान है, सभी चिजो की ब्राह्मण–आत्मा मे, मनुष्य मे एकता के जीवन–अस्तित्व के सर्वोच्च सत्य को समझना है।

भक्ति–योग–सर्वव्यापी प्रेम, जो सभी चिजो की एकता के वेदांत के शाश्वत सत्य को समझने का परिणाम है।

कर्म–योग–अहंकारी इच्छाओ के बिना, वैयक्तिक लाभ की इच्छा के बिना नि:स्वार्थ कार्य, बनावटी व्यक्तित्व का त्याग, जो सर्वोच्च ज्ञान पर आधारित है।

चार स्तर का योग का मार्ग शक्ति है, जो ज्ञान से उजागर होती है, प्रेम से उसे प्रेरणा मिलती है और नि:स्वार्थतता से वह शुध्द हो जाती है। वह ज्ञान है जो शक्ति से पुष्ट हो जाता है, प्रेम से उसे प्रेरणा मिलती है और नि:स्वार्थतता से वह शुध्द हो जाता है।

वह प्रेम है जो शक्ति से पुष्ट हो जाता है, ज्ञान से उजागर हो जाता है और नि:स्वार्थतता से शुध्द हो जाता है।

वह नि:स्वार्थतता है, जो शक्ति से पुष्ट हो जाती है, ज्ञान से उजागर हो जाती है और प्रेम से उसे प्रेरणा मिलती है।

सिर्फ जब अहंकारी इच्छाए क्रमिक रीति से योग के चार स्तर के मार्ग पर – शक्ति ज्ञान–प्रेम नि:स्वार्थतता के मार्ग पर लुप्त हो जाती है, मन चिंतन मे घुल जाता है, दर्पण क्रमिक रीती से लुप्त हो जाता है, वह जादा पारदर्शक बन जाता है, मूल स्वरुप के साथ जुड जाता है, दुसरे ‘‘स्व’’ की सीमओ का अनंतता तक विस्तार हो जाता है और ‘‘स्व’’ निरपेक्ष के साथ जुड जाता है, निरपेक्ष ‘‘स्व’’ बन जाता है, महासागर बन जाता है, जहां सभी चिजो का अस्तित्व है, अचल, अनंत शाश्वतता बन जाता है, जीवन–अस्तित्व का आधार, जीवन–अस्तित्व का

स्त्रोत बन जाता है, जीवन-अस्तित्व बन जाता है, इसका मतलब है जीवन के अर्थ को साकार करना, जीवन के सर्वोच्च उद्देश्य को प्राप्त करना, उसका मतलब है क्लेश के माध्यम से क्लेश से मुक्ति प्राप्त करना, कर्म की श्रृंखलाओ से मुक्ति प्राप्त करना, अहंकारी इच्छाओ से, अहंकार की बेडी से, मृत्यु की शक्ति से, मुक्ति प्राप्त करना, अज्ञान के जाल से, अलगाव के महान भ्रम से संपूर्ण मुक्ति प्राप्त करना।

२१/९/१९८८-११/९/१९८९

नाम और विशेष परिभाषाओ का स्पष्टीकरणात्मक शब्द कोश

अद्वैत – वेदांत शब्द का अर्थ देखो।

आसन – स्थिती, तुम्हारे शरीर की स्थिर स्थिती, तुम्हारे शरीर का नियंत्रण, आठ स्तर के पतंजली के क्लासिकी राज–योग का तिसरा स्तर।

आत्मा – ''मै हू'' निरपेक्ष ''स्व'' निरपेक्ष कर्ता।

ब्राह्मण – ''सर्वोच्च'', परमेश्वर, निरपेक्ष, जीवन–अस्तित्व का आधार और स्त्रोत ।

वेदांत – ''वेदो का अंत'', उपनिषद, उपनिषदो का दर्शन। यह बादमे श्री शंकराचार्य के एक ही स्वरुप के अद्वैत–वेदांत के रुप मे भारत के छह कट्टरपंथी दार्शनिक प्रणालीयोमे से एक प्रणाली बन गयी।

वेद – ''मार्ग दिखाना''। यह प्राचिन भारत का पवित्र धार्मिक तत्व। चार वेद है : ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद

विजनन् – सत्य को समझना

गीता – गीत

ज्ञान – ज्ञान, पाण्डित्य

धर्म – नियम, ऋण, कर्तव्य जो मनुष्य अपने कर्म के अनुरुप करता है।

कर्म – भाग्य, अतीत के अस्तित्व से प्रचलित अस्तित्व का निर्माण। वर्तमान अतीत से निकलता है और भविष्य को निर्धारीत करता है – यह कर्म के सिध्दांत की मुख्य कल्पना है।

माया – अलगाव का महान भ्रम, जो मनुष्य के असली अमर स्वरुप को छिपा देता है।

मंत्र – जादु के सूत्र, मोहन–मंत्र, जो गुप्त अर्थ धारण करते है और वे कुछ जादु के गुणो के वाहक होते है।

ध्यान – गहरी एकाग्रता मे विचार करना।

पद – दिशा, मार्ग।

पार्वती – ''पर्वत की कन्या'' (हिमवन की कन्या) भगवान शीव की पत्नी, दुनिया की माता, उसे उमा, दुर्गा और काली भी कहते है।

प्राण – ''सास'', ''जीवन''. आवश्यक उर्जा, जीव-विज्ञानी उर्जा, आवश्यक कार्य का आधार।

प्राणायाम – सांस का, योग का प्रशिक्षण, सांस के व्यायाम, तुम्हारे सांस के उपर नियंत्रण। पतंजली के राज-योग का चौथा स्तर।

समाधी – गहरी एकाग्रता मे सत्य का प्रत्यक्ष चिंतन, विचार की वस्तु मे विलय, पतंजली के राज-योग की सर्वोच्च आठवी अवस्था।

संसार – अवतारो का चक्र, जन्म और मृत्यु की निरंतर कतार, एक दुसरे मे बदलनेवाले अवतार,

तापस – वैराग्य, वैराग्य से, आत्म-दमन की गरमी से, देह को क्लेश देकर मजबूत बनाना।

शंकर (७८८-८२०) – महान भारतीय ज्ञानी, दार्शनिक, योगी, अद्वैत-योग के संप्रदाय के संस्थापक, जो भारत के छह कट्टरपंथी दार्शनिक प्रणाली मे से एक प्रणाली है।

शीव – ''अच्छा'', सर्वोच्च परमेश्वर, योग का गुरु, वैराग्य का प्रभु, अज्ञान का विनाशक।

यम – मृत्यु का परमेश्वर, न्याय का परमेश्वर क्योंकि वह लोगो को उनके कर्म के अनुरुप, कृतियो के अनुरुप फल देता है।

अनुक्रमणिका

ज्ञानकृष्ण के महान एकता का दर्शन...२

उद्देश्य और गंतव्य..५

दार्शनिक निबंध..७

तुम्हारे लिए ७६

बिजली की चमक...७८

ध्यान–गीत ८३

गहराई ८४

मार्ग ८५

प्रकाश की ओर ८८

अंधेरे मे ९०

शााश्वतता की छाया ९३

समय का बंधन ९५

शुध्दता ९७

शम्बाला का गीत १००

कर्म १०३

महान एकता १०५

शाश्वत मार्ग १०७

महान संक्रमण १०९

ज्ञानी १११

समर्पण ११४

अध्याय १ ....११५

अध्याय २ ....११७

अध्याय ३ ....११९

अध्याय ४– शक्ति का गीत १२२

अध्याय ५– ज्ञान का गीत १२४

अध्याय ६– प्रेम का गीत १२६

अध्याय ७– अमरत्व का गीत १२८

जनगीता,उपनिषदीय कविता १३१

अध्याय१ ....१३२.

अध्याय२..१३६

अध्याय३.. १३९

अध्याय ४...१४२

अध्याय ५...१४५

अध्याय ६...१४८

अध्याय ७...१५१

अध्याय ८...१५५

विजनपाद (एकाग्रता का दर्शन)...१५९

दर्शन की परिभाषा...१६०

पुस्तक१ ....१६१

अध्याय १ ....१६१

आत्म–सिध्दि १८३

अध्याय २ ....१९५

तीन मूल्य २१८

शुध्दता का महान साधन २१९
अध्याय ३ ....२५७.
तीन प्रकार की आग २६५
तीन प्रकारो का समय २६६
तीन प्रकारो का पुरुष २८८
अध्याय ४ ....२९७
शुध्दता २९७
तीन प्रकारो का ब्राह्मण २९८
निर्माण २९९
क्लेश ३००
सर्वोच्च ३०३
अज्ञान ३०३
आनंदी और विपत्ती ३०४
प्रकाश के तीन स्त्रोत्र ३०५
बुध्दि की आंख ३०८
कर्म ३०९
आत्म-बलिदान ३०९
सर्वोच्च के बारे मे ३१०
जीवन और मृत्यु ३१०
मृत्यु और अमरत्व ३१२
विश्व ३१३
मनुष्य ३१६

प्रकाश और अंधेरा ३१८

गरमी और ठंड ३१९

तीन आग ३२१

सुख ३२४

अन्न ३२५

बुध्दि ३३०

जानेवाले मनुष्य के लिए ३३१

ज्ञान ३३२

महान संक्रमण ३३३

भलाई और बुराई ३३४

निरपेक्ष और सापेक्ष ३३७

सर्वोच्च ज्ञान ३३९

समय ३४०

जीवन–अस्तित्व ३४२

चार स्तर का मार्ग ३४३

सत्य ३४५

ध्यान ३४६

दर्शन का मौलिक प्रश्न ३४६

विकास और आत्म–विकास ३४७

शाश्वतता ३४७

अस्तित्व मे होनेवाली चिजो का सत्य ३४९

बुध्दि का फूल ३५१

पुस्तक २ ....३५२

अध्याय १ मुक्ति ३५२

अध्याय २ सर्वोच्च वास्तविकता ३५४

अध्याय ३ एकाग्रता ३५८

अध्याय ४ अस्तित्वहीन अवस्था ३६३

अध्याय ५ ज्ञान, मन और अंतर्ज्ञान ३८२

अध्याय ६ जीवन–अस्तित्व का एकत्रित सूत्र ४०१